Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्रीश्रुतकेवलीभद्रबाहुरचित निर्युक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम भाग पाञ्चमो ॥

(मूळ अने शीलाङ्काचार्ये रचेली टीकाना भाषांतरसहित)

जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाइ शामजीना स्मरणार्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

सवंत् १९९१ पडतर किंमत रु. २-८-० प्रति २००

श्री जैन भास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं—जामनगर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचाराङ्गसूत्रम् ॥

(मूळ अने शिलाङ्काचार्ये रचेली टीकानुं भाषांतर)

॥ भाग पांचमो ॥

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)

आठमो उद्देशो.

सातमो कहीने हवे आठमो कहे छे, तेनो संबंध आ प्रमाणे छे, गया उद्देशाओमां कह्युं के रोगादि संभवमां काळपर्याये आवेलुं भक्त परिज्ञा, इंगित,, के पादपोपगमन मरण करवुं युक्त छे, अने अहीं तो अनुक्रमे विहार करता साधुओनुं काळ पर्याये आवेलुं मरण कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

For Private and Personal Use Only

अनुष्टुप् छंद.

अणुपुव्वेण विमोहाइं, जाइं धीरा समासज्ज ॥ वसुमन्तो, मइमन्तो, सव्वं नच्चा अणेलिसं ॥१॥
दुविहंपि विइत्ता णं; बुद्धा धम्मस्स पारगा ॥ अणुपुव्वीइ सङ्खाए, आरंभाओ (य) तिउट्टई ॥२॥
कसाए पयणू किच्च, अप्पाहारे तितिक्खए ॥ अहभिक्खू गिलाइज्जा, आहारस्सेव अन्तियं ॥३॥
जीवियं नाभिकंखिज्जा, मरणं नोवि पत्थए ॥ दुहओऽवि न सज्जिज्जा, जीविए मरणे तहा ॥४॥

अनुक्रमे दीक्षा लीधी. हित शिक्षा मळी, सूत्रार्थ मेळवी स्थिर मति थया पछी एकाकी विहार विगेरे प्रतिमा स्वीकारी होय, अथवा अनुपूर्वी ते बार वर्षनी संलेखना विधि जेमां चार वरस विकृष्ट तप विगेरे अनुक्रमे पूर्वे तप बताव्यो छे ते जाणवुं, त्यार-पछी मोह रहित ते जेमांथी के जेनाथी मोह दूर थयो, तेवाने भक्त परिज्ञा इंगित के पादपोपगमन अणसण अनुक्रमे करवानां छे, तेमां धीर ते, क्षोभायमान न थाय, तेवा वसु (संयम) वाळा तथा मनन, ते मति होय उपादेय छोडवुं लेवुं ते संबन्धी विचार कर-नार मतिमंत छे, तथा सर्वे कृत्य अकृत्य जाणीने जे साधुने भक्त परिज्ञा विगेरे कोइ मरण उचित लागे तथा पोतानी धैर्यता संघ-यण विगेरे विचारी अद्वितीय (उत्तम) रीते जाणीने तेवा मरणे समाधिनुं पालन करे, (१) बे प्रकारनी अवस्था तथा तपनी बाह्य अभ्यंतर अवस्थाने विचारी पालन करीने, अथवा मोक्षाधिकारमां बे प्रकारनुं मुकावुं छे, तेमां पण बाह्य ते शरीर उपकरण विगेरे तथा अभ्यंतर रागादि छे तेने हेयपणे जाणे अने त्यागीने आरंभथी दूर थाय एटले, ज्ञाननुं फळ हेयने त्यागवानुं छे, कोण त्यागे?

बुद्धिमान पुरुषो, ते तत्वने जाणनारा श्रुत चारित्र नामनो धर्म छे, तेनी पार पहोंचनारा छे, अर्थात् सम्यग् जाणनारा छे, ते पंडितो धर्म स्वरूपने जाणनारा प्रव्रज्याना अनुक्रमे संयम पाळीने जाणे के हवे मारा जीववाथी कंइ विशेष गुण नथी, एथी हवे मोक्षनो अवसर मळ्यो छे, एथी हुं क्या मरणे मरवा योग्य छुं एम विचारीने शरीर धारण करवामाटे अन्न पान विगेरे शोधवारुप आरंभथी छुटे छे, (अहीं पांचमीनां अर्थमां चाथी विभक्ति छे,) तथा कोइ प्रतिमां (कम्मुणाओ तिअट्टई) पाठ छे, एटले आठ भेदवाळा कर्मथी पोते छुटे छे, (व्याकरणना नियम प्रमाणे वर्त्तमानना समीपमां वर्त्तमान माफक थाय छे) पा. ३-३-१३१ना नियम प्रमाणे भविष्यकाळना अर्थमां वर्त्तमान काळ छे, [२]

अने ते अभ्युदत मरण माटे संलेखना करतो प्रधान भूत (श्रेष्ट भावे संलेखना करे ते बतावे छे. एटले कष ते संसार छे. तेनो आय ते कषायो छे. ते क्रोध विगेरे चार छे, तेने पातळा [ओछा] करतो थोडुं खाय, ते बतावे छे:—

ते पण वधारे प्रमाणमां नहि, ते बतावे छे, अल्पाहारी (थोडुं खानारो) ते छठ अठम विगेरे संलेखनाना अनुक्रमे आवेला तपने करतो पारणामां पण अल्प खाय, अने अल्प आहार खावाथी क्रोधनो उद्भव थाय, तेनो उपशम करवो. ते बतावे छे-तुच्छ माणसथी पण तिरस्कारनां वचन सांभळे, तो पण सहन करे, अथवा रोग विगेरे पण बरोबर रीते सहन करे, ते प्रमाणे संलेखना करतो आहारने ओछा प्रमाणमां लेवाथी ते मुमुक्षु भिक्षु ग्लानता पामे, ते समये आहारनी अंत अवस्थाने स्वीकारे, एटले चार विकृष्ट विगेरे संलेखनाना क्रमनो तप छोडीने भोजन करे, अथवा ग्लानता पाम्याथी आहारनी समीपमां न जाय. ते आ प्रमाणे-हमणां थोडा दिवस खाइ लउं, अने पछी बाकीनी संलेखनानो तप करीश एवीआहार खावानी भावनामां न जाय. ॥३॥ वळी-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते संलेखनामां रहेलो अथवा आखी जींदगी सुधी हमेशां ते साधु प्राण धारवा रुप जीवितने न चाहे, तथा भूखनी वेदनाथी कंटाळी मरण पण न वांछे तथा जीवित तथा मरणमां संग [ध्यान] न राखे (४) त्यारे ते साधु केवो होय ? ते कहे छेः—

मज्झत्थो निज्जरापेही, समाहिमणुपालए ॥ अन्तो वहिं विऊसिज्ज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ॥५॥

जं किंचुवक्कमं जाणे, आऊखेमस्समप्पणो ॥ तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खिज्ज पण्डिए ॥६॥

गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ॥ अप्पपाणं तु विन्नाय, तणाइं संथरे मुणी ॥७॥

अणाहारो तुयट्टिज्जा. पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ नाइवेलं उवचरे, माणुस्सेहि विपुट्ठवं ॥८॥

रागद्वेषनी वचमां रहे ते मध्यस्थ छे, अथवा जीवित मरणनी आकांक्षा रहित ते मध्यस्थ छे, ते निर्जरानी अपेक्षा राखनार ते निर्जरापेक्षी छे. तेवो साधु जीवन मरणनी आ शंसा रहित समाधि जे अंत वखतनी छे, तेनुं पालन करे, अर्थात् कालपर्यायवडे जे मरण आवे ते समाधिमां रही पाळे तथा अंदरना कषायोने तथा बहारना शरीर उपकरण विगेरेनो ममत्व छोडी दे, अने अध्यात्मा ते अंतःकरणने शुद्ध करे, एटले मनमां थता रागद्वेष विगेरेनां बधां जोडकां दूर थवाथी विस्रोतसिका (चंचळता) रहित अंतःकरणने वांछे, वळी उपक्रम ते उपक्रम उपाय छे, तेवा कोइ पण उपायने जाणे.

प्र०—कोना उपक्रम ? आयुष्यनुं क्षेम ते सम्यक् प्रकारे पाळवुं. प्र०—कोना संबन्धी ते आयु छे ? उ०—ते आत्मानुं—तेनो परमार्थ आ छे. के आत्मा पोताना आयुष्यनो क्षेमथी प्रतिपालन करवा जे उपायने जाणे ते तेने शीघ्र शीखवे, एटले बुद्धिमान

For Private and Personal Use Only

साधु ते प्रमाणे वर्त्ते, पण ते संलेखनाना काळमां बार वर्ष पूरा थता पहेलांज अधवचमां शरीरमां वायु विगेरेना रोकाणथी शीघ्र जीवलेण रोग उत्पन्न थाय तो समाधि मरणने वांछतो तेना उपशमना उपायने एषणीय विधिए तेल चोळवुं विगेरे करे, अने फरी पाछी संलेखना शरु करे, अथवा आत्मानुं आयु (जीवित) ने कंइ पण आयुना पुद्गलोनुं संवर्त्तन (उपक्रमण) उत्पन्न थएलुं जाणे तो ते संलेखखनाना तपमांज अनाकुल मतिवाळो बनीने शीघ्रज भक्त परिज्ञा विगेरेने बुद्धिमान साधु शीखवे [आदरे] (६) संलेखना वडे शुद्ध कायवाळो बनीने मरण काळ आवेलो जाणीने शुं करे? ते कहे छे.

ग्राम--शब्द जाणीतो छे. पण तेनो अर्थ अहीं प्रतिश्रय उपाश्रय बताव्यो छे, प्रतिश्रयज तेने स्थंडिल [संथारानी जग्या] छे. तेने जोइने संथारो करे आवा अरण्य एटले उपाश्रयनी बहार अर्थ बताव्यो, उद्यान अथवा पर्वतनी गुफामां संथारानी जग्या प्रथम निर्जीव जुए, अने गाम विगेरेथी याची लावेला दर्भ विगेरेना सुका घासमां यथा उचित काळनो जाणनारो साधु संथारो करे, घास पाथरीने शुं करे? ते कहे छे–

आहार रहित ते अनाहारी बने, तेमां शक्ति अनुसारे त्रण अथवा चारे आहारनुं प्रत्याख्यान करी पंच महाव्रतनुं फरी स्वयं आरोपण करी बधा प्राणी समूहने खमावेलो बनी सुख दुःखमां समभाव राखी पूर्वे मेळवेला पुण्यना समूहवडे मरणथी न डरतो संथारामां पासुं फेरववुं करे, परिसह उपसर्गो आवे तेने देह ममत्व छोडेल होवाथी सम्यक् प्रकारे सहन करे, तेमां मनुष्यना अनुकूल प्रतिकूल परीसह उपसर्ग आवतां मर्यादानुं उलघन न करे, तेम पुत्र स्त्री विगेरेना सम्बन्धथी आर्त्त ध्यानने वश न थाय, तेमज प्रतिकूल परीसह उपसर्गोथी क्रोधथी हणायलो न थाय, तेज बतावे छे—

संसप्पगा य जे पाणा, जेय उड्ढमहाचरा ॥ भुञ्जन्ति मंससोणियं न छणे न पमज्जए ॥९॥
पाणा देहं विहिंसन्ति, ठाणाओ नवि उब्भमे ॥ आसवेहिं विवित्तेहिं, तिप्पमाणोऽहियासए ॥१०॥
गन्थेहिं विवित्तेहिं, आउकालस्स पारए ॥ पग्गहिय तरगं चेयं, दवियस्स वियाणओ ॥११॥
अयंसे अवरे धम्मे, नायपुत्तेण साहिए ॥ आयवज्जं पडीयारं; विजहिज्जा तिहा तिहा ॥१२॥

संसर्पन करे, ते कीडी क्रोष्टु (शियाळ) विगेरे जे प्राणीओ छे, तथा उंचे उडनार गीध विगेरे छे, तथा बीलमां नीचे रहेनारा साप विगेरे छे, तथा सिंह वाघ विगेरे आवीने मांस भक्षण करे, तथा डांस मच्छर विगेरे लोही पीए, ते समये ते जीवोने आहार अर्थे आवेला जाणीने अवंति सुकुमार माफक तेमने हणे नहीं. तेम रजोहरण विगेरेथी उडाडीने खावामां अंतराय न करे (९) वळी आवेलां प्राणीओ मारी कायाने हणशे, पण मारां ज्ञानदर्शन चारित्रने नहीं हणे, तेम विचारी कायानो मोह छोडेल होवाथी तेने खातां अन्तरायना भयथी पोते न रोके, अने ते स्थानथी पोते भयना कारणे बीजे खसे नहि. प्र०—केवो बनीने ?

उ०—प्राणातिपात विगेरे पांच आश्रवो अथवा विषय कषाय विगेरेथी दूर रहीने शुभ अध्यवसाय वाळो बनीने डांस मच्छर विगेरेथी लोही पीवातो पण अमृत विगेरेथी सिंचन थवा माफक तेओनी करेली पीडाने पोते तप्या छतां पण सहन करे; (१०) वळी बाह्य अभ्यंतर ग्रंथ तथा शरीरना प्रेम विगेरेथी पोते दूर रही तथा अंग उपांग विगेरे जैन आगमथी आत्माने भावतो शुक्ल ध्यान ने धर्म ध्यानमां रक्त बनी मृत्यु कालनो पारगामी बने एटले ज्यां सुधी छेवटना श्वासोश्वास होय त्यां सुधी तेवी समाधि

राखे, आ भक्त प्रत्याख्यान मरणथी मोक्षमां जाय, अथवा देवलोकमां जाय.

भक्त परिज्ञा कहीने हवे इंगित मरण अडधा श्लोकथी कहे छे. प्रकर्षथी ग्रहित माटे प्रकर्ष ग्रहि छे, अने ते प्रकर्षथी लीधाथी प्रग्रहित तर छे. [अनेक, प्रत्यय लागवाथी] प्रग्रहित तरक छे. हवे इंगित मरण कहे छे कारण के आ भक्त प्रत्याख्यानना नियमथीज चार आहरनुं प्रत्याख्यान छे तथा इंगित प्रदेशमां संथारानी जग्यामांज विहार लेवाथी विशिष्टतर घृति संहनन विगेरेथी युक्त होय, तेज प्रकर्षथी ले छे,

प्र०—आ कोने होय छे ? द्रव्य (संयम जेने होय ते द्रविक छे, अने ते गीतार्थनेज छे, अने ते जघन्यथी पण नव पूर्वनुं ज्ञान होय तेवाने छे. बीजाने नथी, अहीं इंगित मरणमां पण संलेखनामां कहेल तृण संथारो विगेरे समजवुं. (११)

आ अपर विधि छे ? ते कहे छे. आ उपर बतावेलो विधि भक्त परिज्ञाथी जुदो इंगित मरणनो विधि विशेष प्रकारे वीर वर्द्धमान स्वामीए सम्यक् प्रकारे प्राप्त कर्यो छे, आ बन्ने जोडे कहेवाथी अने प्रत्यक्ष समान कहेवाथी (इदं) 'आ' विशेषण मुक्युं छे, आ इङ्गित मरणमां पण प्रव्रज्या विगेरेनो विधि कहेवो, संलेखना पूर्व माफक जाणवी, तेज प्रमाणे उपकरण विगेरे त्यजीने संथारानी जग्या बरोबर देखीने आलोचना करी पापथी पाछो हटीने पंच महा व्रत फरी उच्चरीने चार आहारनुं प्रत्याख्यान करीने संथारामां बेसे, अहीं आटलुं विशेष छे.

आत्माने छोडे एटले अंग संबन्धी वेपार विशेष प्रकारे त्यजे. त्रिविधि त्रिविधि ते त्रण मन वचन कायाथी करवुं करावबुं अनुमोदवुं विगेरे बधुं आत्म वेपार शिवायनुं त्यागे. जरुर पडतां पासुं फेरववुं पडे हालवुं पडे अथवा पेशाब विगेरे करवो होय

तो जातेज करे [बीजानी मदद न ले] वळी बधी रीते प्राणीनुं रक्षण वारंवार करवुं ते बतावे छे.

हरिएसु न निवज्जिज्जा, थंडिलं मुणियासए ॥ विओसिज्ज अणाहारो, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥१३॥
इंदिएहिं गिलायंतो, समियं आहरे मुणी ॥ तहावि से अगरिहे, अचले जे समाहिए ॥१४॥
अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए ॥ काय साहारणट्ठाए, इत्थं वावि अचेयणो ॥१५॥
परिक्कमे परिकिलन्ते, अदुवा चिट्ठे अहायए ॥ ठाणे ण परिकिलन्ते, निसीइज्जा य अंतसो ॥१६॥

हरित ते द्रोना अकुरा विगेरेमां न सूए, पण निर्दोष जग्या जोइने सूए, तथा बाह्य अभ्यन्तर उपधि छोडीने अनाहारी बनीने परिसहो तथा उपसर्गथी फरसायलो पण संथारामां बेठेलो रही सम्यक् प्रकारे सहन करे, (१३) वळी आहारना अभावे मुनि इन्द्रियोथी ग्लान भाव पामे, तोपण आत्माने समाधिमां राखे एटले शमिनो भाव शमिता एटले समभावने धारण करी आर्तध्यान न करे. तथा जेम समाधान रहे तेम बेसे. एटले संकोचथी खेद पामे तो हाथ विगेरे लांबा करे. तेनाथी पण खेद पामे तो स्थिर चित्ते बेसे. अथवा मुकरर जग्यामां फरे. तेमां पण आ पोते छुट राखेली होवाथी निंदवा जोग नथी ते केवी छे, ते कहे छे. अचळ ते समाधिमां रहे ते इङ्गित प्रदेशमां पोतानी मेळे शरीर चलावे. पण खेदथी कंटाळी अभ्युदत्त मरणथी चलायमान न थाय. तेथी ते अचळ छे. (शरीरथी हाले पण शुभ ध्यानथी चलायमान न थाय.) पोते धर्म ध्यान के शुक्लध्यानमां मन राखे. अने भावथी निश्चळ रहीने इङ्गित प्रदेशमां संक्रमण विगेरे करे. (१४) ते बतावे छे.

प्रज्ञापकनी अपेक्षाए संमुख ते अभिक्रमण छे. अर्थात् संथाराथी दूर जाय. तथा प्रतीप एटले पाछो संथारा तरफ आवे पोताना मुकरर भागमां जा आव करे तथा निष्पन्न अथवा निषन्न रहीने जेम समाधि रहे तेम भुजा विगेरेने संकोचे अथवा लांबा करे.

प्र०—शा माटे ? उ०—ते बतावे छे. शरीरनी प्रकृतिना कोमळपणाना साधारण कारणथी करवुं पडे छे. अने कायने साधारणपणुं होवाथी पीडा थतां आयुना उपायना परिहार वडे पोतानो आयुनी स्थिति क्षय थवाथी मरण थाय. [शरीरनो तेवो स्वभाव होवाथी ते करवुं पडे छे. पण तेमने महा सत्वपणुं होवाथी शरीरनी पीडा थवाथी चित्तमां खोटो भाव थाय तेम न जाणवुं.]

शंका—जेणे कायानो बधो व्यापार रोकेलो छे. ते सुका लाकडा माफक अचेतन पणे पडेलो होय. तेने पुन्यनो समूह घणो एकठो थयेलो छे. तो शा माटे कायाने हलावे ?

उ०—तेवो नियम नथी, शुद्ध अध्यवसायथी यथाशक्ति भारवहन करवा छतां तेनी बरोबरज कर्म क्षय छे. अहीं वा अव्यय होवाथी जाणवुं के, पादपोपगमनमां अचेतन अक्रिय माफक इङ्गित मरणवाळो सक्रिय होय. तो पण बन्ने समाजन छे. (बन्नेनी भावमां समानता छे. काया संबन्धि इङ्गित मरणमां सक्रिय छे. अने पादपोपगमनमां कायाने हलाववानी नथी. माटे अक्रिय छे.

अथवा इंगित मरणमां अचेतन सुका लाकडा माफक सर्व क्रिया रहित जेम पादपोपगमनवाळो होय तेम पोते शक्ति होय तो निश्चळ रहे. (१५) तेवुं सामर्थ्य न होय तो आ प्रमाणे करे. ते कहे छे. जो बेठे अथवा न बेठे. गात्र भंग थाय तो त्यांथी उठीने फरे ते समये सरळ गतिए नियमित भागमां आवजा करे अने थाकी जाय तो जेम समाधि रहे तेम बेसे अथवा उभो रहे. जो स्थानमां खेद पामे तो बेसे, अथवा पलांठी मारीने अथवा अडधी पलांठी मारीने अथवा उत्कुटुक आसने बेसे अने थाके तो सीधो

बेसे तेमां पण उत्तानक (सीधो उंचे मोढुं राखीने) सुवे अथवा पासुं फेरवे अथवा सीधो सुवे अथवा लगंडशायी सुवे जेम समाधि रहे तेम करे. (१६) वळी–

आसीणेऽणेलिसं मरणं, इन्द्रियाणि समीरए ॥ कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरे सए ॥१७॥
जओ वज्जं समुपज्जे, न तत्थ अवलम्बए ॥ तउ उक्कसे अप्पाणं, फासे तत्थऽहियासए ॥१८॥
अयं चाययतरे सिया, जो एवमणुपालए ॥ सव्वगायनिरोहेऽवि, ठाणाओ नवि उब्भमे ॥१९॥
अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे ॥ अचिरं पडिलेहित्ता; विहरे चिट्ठ माहणे ॥२०॥

प्र०—शुं आश्रयीने ? उ०--अपूर्व आ मरण छे. अने ते सामान्य माणसने विचारवुं पण दुर्लभ छे.

प्र०—तेवो बनीने शुं करे ? ते कहे छे. इन्द्रियोना इष्ट अनिष्ट पोताना विषयोथी रागद्वेष न करतां तेने समभावे भेरे कोलावास (घुणना कीडानुं स्थान) अथवा उधइनो समुह चोंटेलो देखीने जे चीज होय अथवा तेमां नवी जीवात उत्पन्न न थाय तेवुं जोइने खुल्लुं देखातुं पोलाण रहित पोताने टेको लेवा शोधे. (१७)

इंगित मरणने आश्रयी जे निषेध छे. ते कहे छे. आ अनुष्ठानथी अथवा टेका विगेरेथी वज्र माफक दूर रहे अर्थात् कीडाने थतुं दुःख साधुने वज्र लेप माफक त्यां दोष लागे माटे ते घुणवाळा लाकडानो टेको विगेरे ले नहीं, तथा उंची निची कायाने करतां अथवा खराब वचनथी अथवा आर्तध्यान विगेरे मनना योगथी पोताना आत्माने दोष लागतो जाणीने तेनाथी दूर रहे अर्थात्

पाप लागवा न दे अने तेमां धैर्य अने संहनन विगेरे मजबुत होय तो शरीरनी वैयावच्च न करे, अने चडता शुभ भावना कंडकवाळो बनी अपूर्व भावनी धाराए चढीने सर्वज्ञना कहेला आगम अनुसारे पदार्थना स्वरुपना निरुपणमां पोतानी मति स्थिर करीने आ शरीर आत्माथी जुदु छे. माटे त्यागवा जोग छे एवो विचार करीने बधा दुःखना स्पर्शोने तथा अनुकूळ प्रतिकूळ आवेला उपसर्ग परीसहोने तथा वातपित्त कफना द्वंद्व अथवा जुदा रोगो आवे तो मारे कर्मक्षय करवानो होवाथी हुं उठ्यो छुं माटे मारेज आ पूर्वे करेलां पापने भोगववा जोइए. आवो विचार करीने दुःख सहे.

कारण के में जे शरीरने त्याग्युं छे. एनेज उपद्रव करशे, पण जे धर्म आचरणने करवु छे, तेने बाधा लगाडे तेम नथी. माटे तेवु विचारीने सहे. (१८) इङ्गित मरण कह्युं हवे पादपोपगमन अणसण कहे छे. ते जोडाजोड कहेल होवाथी आ विशेषणवडे मरणनो विधि बताव्यो छे. आ आयत तर छे ते बतावे छे. मर्यादानी विधिमां आ उपसर्ग छे. ते संपूर्ण यत थतां आयत शब्द छे. अने उपरना बे अणसण करतां वधारे आयत छे, माटे आयत तर छे.

अथवा उपरना बन्ने अणसणथी अतिशय आत्त छे. माटे आत्ततर छे अर्थात् यत्नथी अध्यवसायवाळा छे. प्रथम कहेला बे अणसण करतां पादपोपगमन वधारे दृढतर छे एमां पण इङ्गित मरणमां कह्या मुजब प्रव्रज्या संलेखना विगेरे बधु जाणवुं.

प्र०—जो आ आयततर छे तो शुं करवु ? उ०—कहे छे. जे भिक्षुक आ कहेली विधिएज पादपोपगमन विधिने पाळे तथा शरीरना बधा व्यापार छोडवाथी काया तपे अथवा मूर्छा पामे अथवा मरण समुद्घात आवे, अथवा लोही मांस शियाळीया गीध कीडीओ विगेरेथी खवाय, पीवाय, तो पण महा सत्वना कारणे पोते जाणे के आ इच्छित मोटुं फळ आव्युं छे तेथी ते स्नानथी

द्रव्यथी, अने भावथी ते शुभ अध्यवसायथी चळायमान न थाय. न बीजा स्थाने जाय. (१९) वळी आ अंतःकरणमां उत्पन्न थवाथी प्रत्यक्ष मरण विधि छे. अने ते सौथी श्रेष्ठ होवाथी पादप उपगमन रुप मरणनो धर्म [विशेष] विधि छे. उत्तम पणाना कारणा बतावे छे. [सूत्रमां छट्ठी छे, तेनो पांचमीमां अर्थ लइए तो पूर्व स्थानथी एटले भक्त परिज्ञा तथा इंगित मरणना रुपथी आ प्रकर्षथी ग्रह छे; माटे पूर्व स्थान प्रग्रह छे. अर्थात् प्रग्रहिततर छे. ते प्रमाणे जे इङ्गित मरणमां कायाने हलाववानी छुट हती ते पण अहींया नथी. झाडनुं मूळ जमीनमां होय, ते पोते बळातुं के छेदातुं स्थानथी खसतुं नथी. तेम पोते साधु झाड माफक चेष्टा क्रिया रहित दुःखमां आवेलो होय तो पण चिलाती पुत्र माफक स्थानथी खसतो नथी. पण त्यांज स्थिर रहे छे ते बतावे छे. अचिर स्थान ते पोताना संथारानी जग्या प्रथमथी जोइने कहेली विधिए तेमां रहे. आ पादपउपगमनना अधिकारथी विहरणनो अर्थ विहार न लेतां पोते विधिए पालण करे एम जाणवुं. पण स्थानथी न खसे तेज बतावे छे. बधा गात्रना निरोधमां पण स्थिर रहे पण खसे नहीं.

प्र०—आवो कोण छे? उ०—माहण साधु छे. ते बेठो होय उभो होय तो पण शरीरनी खबर राख्या विना जेवी रीते पोते प्रथम कायाने स्थापि होय तेमज अचेतन माफक रहे हाले नहीं (२०) आज वातने बीजी रीते कहे छे.

अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं ॥ वोसिरे सव्वसो कायं, न मे देहे परीसहा ॥२१॥
जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा इति सङ्ख्या ॥ संवुडे देहभेयाए, इय पन्नेऽहियासए ॥२२॥
भेउरेसु न रज्जिज्जा, कामेसु बहुतरेसुवि ॥ इच्छा लोभं न सेविज्जा, धुववन्नं सपेहिया ॥२३॥

सासएहिं निमन्तिज्जा, दिव्वमायं न सद्दहे ॥ तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विहूणिया ॥२४॥

चित्त जेमां न होय ते अचेतन (जीव रहित) छे अने तेवी संथारानी जग्या अथवा पाट्युं विगेरे मेळवीने तेना उपर समर्थ पुरुष बेसे अथवा कोइ लाकडाउपर त्यां आत्माने स्थापन करे अने चार प्रकारनो आहार त्यागीने मेरु पर्वत माफक निश्प्रकंप रहे प्रथम गुरु पासे आलोचना विगेरे क्रिया करीने आत्माथी देहने दूर करे (मोह छोडे) ते समये जो कोइ परीसह उपसर्गो आवे तो भावना भावे के आ मारी देह हवे नथी कारणके में तेने त्यागी छे तो परिसह मने केवी रीते लागे? अथवा मारा शरीरमां परीसहो नथी, कारणके सारी रीते सहेवाथी ते संबन्धी पीडाना उद्वेगनो अभाव छे. एथी परीसहोने कर्म शत्रुने नजीवा माफक अपरीसहोज माने (शत्रुने जीतवाथी आनंद माने तेम परीसहोने जीते) (२१)

प्र०—ते क्यां सुधी सहेवा? आवी शंका दूर करवा कहे छे. आखी जींदगी सुधी परीसह अने उपसर्ग सहेवा एम जाणीने तेने सहन करे अथवा मने आखी जींदगी सुधी परिसह उपसर्गो नथी एम जाणीने सहे अथवा ज्यां सुधी जीवित छे त्यां सुधी परिसह उपसर्गनी पीडा थाय छे. तो थोडा आंखना पलकारा सुधी आ अवस्थामां हुं रहेल छुं तेवाने तो आ अल्प मात्र छे एम जाणीने कायाने बरोबर संवरीने शरीर त्याग माटे उठेलो छुं एम मानीने ते मुनि उचित विधानने जाणनारो कायाने पीडा करनारां जे जे कष्ट आवे ते बरोबर सहे. (२२)

आवा साधुने जोइने [आश्चर्य पामीने] कोइ राजा विगेरे भोगोनी निमंत्रणा करे ते बतावे छे. एटले जे भेदावाना स्वभाववाळा छे ते भिदुर शब्द विगेरे पांच काम गुणो छे. तेमां राग न करे (मुनि तेनाथी न ललचाय) अथवा बीजी प्रतिमां "कामेसु

बहुलेसुवि" पाठ छे. एटले इच्छा मदनरुप जे काम छे. ते घणा प्रमाणमां होय तेमां न ललचाय अर्थात् ते राजा पोतानी कन्यानुं दान वीगेरे आपवा लोभावे. तो पण तेमां गृद्ध न थाय तथा इच्छा रुप लोभ ते इच्छा लोभ छे ते मुनी आ अणसणनुं फळ आवता भवमां मने चक्रवर्तीनुं पद अथवा इन्द्रनी पदवी विगेरे मळो. तेवा अभिलाषनुं नियाणुं पोते निर्जरानी अपेक्षा राखीने सेवे नहीं (नियाणुं न करे.) जेम देवतानी रिद्धि समान सनत्कुमार चक्रवर्तीनी रिद्धि देखीने ब्रह्मदत्ते पूर्व भवमां नियाणुं कर्युं तेम पोते न करे ते प्रमाणे आगममां कह्युं छे.

आ लोकनी आशंसा माटे तप न करे (१) तथा परलोकनी आशंसा माटे न करे (२) तथा जीवितनी आशंसा न करे. (३) मरणनी आशंसा (४) काम भोगनी आशंसा (५) माटे संलेखना तप न करे, विगेरे छे.

वर्ण--संयम अथवा मोक्ष ते दुःखे करीने जणाय छे. अथवा पाठांतरमां धुववन्न पाठ छे तेनो अर्थ आ छे के अव्यभिचारी ते ध्रुव छे ते ध्रुव वर्ण [संयम] ने अथवा शाश्वती यशकीर्तिने विचारीने काम इच्छा लोभने दूर करे. [२३]

वळी आखी जींदगी सुधी क्षय न थवाथी शाश्वत छे अथवा प्रतिदिन दान देवाथी शाश्वत अर्थ छे. तेवा सारा विभववडे कोइ ललचावे तो गुरु शिष्यने समजावे छे के तारे तेमां ललचावुं नहीं पण विचारवुं के आ धन शरीर माटे लेवाय पण ते नाशवंत छे. माटे धन नकामुं छे.

तेज प्रमाणे कोइपण रीते देवतानी मायाथी न ललचाय ते कहे छे. जो कोइ देवता परीक्षा करवा अथवा शत्रुपणाथी अथवा भक्तिथी अथवा कौतुक विगेरेथी जुदी जुदी रिद्धिओ बतावी ललचावे तो पण आ देव माया छे एम तुं जाण अने ललचाता नहीं.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारण के जो ए माया न होय तो आ पुरुष एकदम क्यांथी आवे अने: आटलुं बधुं दुर्लभ द्रव्य आवा क्षेत्रमां काळमां के भावमां कोण आपे ? आ प्रमाणे देव मायाने तुं जाणी ले अथवा कोइ देवी दिव्यरुप धारण करीने ललचावे तो पण पोते न ललचाय. तेवुं तुं समज. हे साधु ! तुं आ बधी मायाने अथवा कर्म बन्धने जाणीने देव वीगेरेनी कपट जाळने समजीने ललचातो नहीं. (२४)

सव्वट्ठेहिं अमुच्छिए, आउकालस्स पारए ॥ तितिक्खं परमं नच्चा, विमोहन्नयरं हियं ॥२५॥

तिबेमि विमोक्षाध्ययनमष्टमं समाप्तम् । उद्देशः ॥ ८–८ ॥

बधा अर्थो, इन्द्रियोना विषयो पांच प्रकारना छे. ते काम गुण छे अथवा तेने प्राप्त करावनार द्रव्य समूह छे. तेमां तुं मूर्छा न पामतो एटले प्राप्त करावनार द्रव्य समूह छे तेमां पोते मूर्छा न पामतो आयु पहोंचे त्यां सुधी पोते स्थिर रहे. अने तेनो एटले क्षय थाय त्यां सुधी रहे ते पारग छे एटले उपर बतावेली विधिए पादपउपगमन अणसणमां रहीने चढता शुभ भाव वडे पोताना आयुना काळनो पार पहोंचनारो थाय. आ प्रमाणे पादपउपगमननी विधि बतावीने समाप्त करवा भक्त परिज्ञा विगेरे त्रणे मरणोना काळक्षेत्र पुरुषनी अवस्थाने वीचारीने योग्यता प्रमाणे करे ते छेल्ला बे पदमां बताव्युं छे. परीसह उपसर्गथी जे दुःख आवे ते बधुं सारी रीते सहन करवुं. ते त्रणे मरणमां मुख्य छे ते विचारीने मोह रहितनां जे मरणे भक्त परिज्ञा इंगित मरण पादपउपगमन छे. ते त्रणेमां काळ क्षेत्र विगेरेने आश्रयी उत्तम भावे ते करवाथी बधामां समान फळ छे. माटे अभिमेत अर्थ मळवाथी हित छे, माटे यथाशक्ति त्रणमांनुं कोइ पण पोतानी शक्ति प्रमाणे ते अवसरे करवुं. [हाल तेवुं संघयण न होवाथी धैर्य न रहे तेम आयुष्यनो

काळ बतावनार ज्ञानी साधुना अभावे तेवुं अणसण थतुं नथी पण यथाशक्ति सागरिक एक बे उपवासनुं अथवा कलाक बे कलाकनुं अणसण वैयावच्च करनार मांदा साधुनी स्थिरता जोइ करावे छे. अने तेमां निर्मळ भावनी प्रधानता होवाथी पूर्वना मरण जेवोज लाभ छे.] आ प्रमाणे सुधर्मास्वामिए कह्युं नय विचार विगेरे तेमां थोडुं आवी गयुं छे. आठमा अध्ययननो आठमो उद्देशो समाप्त थयो. अने अध्ययन पण समाप्त थयुं [टीकाना श्लोक १०२०] आठमुं अध्ययन समाप्त.

उपधान श्रुत नामनुं नवमुं अध्ययन.

आठमुं अध्ययन कह्युं, हवे नवमुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे. के पूर्वे आठ अध्ययनोमां जे आचारनो विषय कह्यो हतो, तेवो श्री वीर वर्द्धमानस्वामिए पोते पाळेलो छे, तेथी ते नवमां अध्ययनमां कहे छे. तेनो आठमा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे, के तेमां अभ्युद्यत मरण त्रण प्रकारनुं बताव्युं, तेवा कोइ पण अणसणमां रहेलो साधु आठमा अध्ययनमां बतावेल विधिए अति घोर परीसह उपसर्ग सहन करी अने सन्मार्गनो अवतार प्रकट करी चार घाति कर्मनो नाश करीने अनंतज्ञान विगेरे अतिशयोवाळुं अप्रमेय महाविषयोनुं स्व तथा परनुं प्रकाशक एवुं केवळज्ञान मेळवनार श्री महावीर प्रभुने समोसरणमां बेठेला अने सत्वोना हित माटे देशना करे छे तेमने पोते ध्यानमां ध्यावे, एटला माटे आ अध्ययन कहे छे. आवा संबन्धे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वार कहेवा, तेमां उपक्रमद्वारमां अर्थाधिकार बे प्रकारे छे, अध्ययन अर्थाधिकार तथा उद्देशार्थ अधिकार तेमां अध्ययननो अर्थाधिकार टुंकाणमां पहेला अध्ययनमां कहेल छे, अने तेनेज खुलासावार निर्युक्तिकार कहे छे—

जो जइया तित्थयरो, सो तइया अप्पणो य तित्थम्मि । वण्णेइ तवोकम्मं, ओहाणसुयंमि अज्झयणे ॥२७६॥

जे समये जे तीर्थंकर उत्पन्न थाय छे, ते पोताना तीर्थमां आचरनो विषय कहेवाने छेवटना अध्ययनमां पोते करेला तपनुं वर्णन करे छे, (के बीजा जीवोने पण तेम करवानी रुचि थाय) आ बधा तीर्थंकरोनो कल्प छे, अहीं तो उपधान श्रुत नामनुं छेल्लुं अध्ययन [ते विषयनुं] छे, तेथी तेने उपधान श्रुत कहे छे. कोइने शङ्का थाय के जेम बधा तीर्थंकरनुं केवळ ज्ञान समान छे, तेम तप अनुष्ठान समान छे, के ओछुं वधतुं छे ? ते शङ्कानुं निवारण करवा कहे छे;

सव्वेसिं तवोकम्मं निरुवसग्गं तु वण्णिय जिणाणं; । नवरं तु वद्धमाणस्स, सोवसग्गं मुणेयव्वं; ॥२७७॥

तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झियव्वय धुवम्मि; । अणिगूहियबलविरिओ, तवोविहाणंमि उज्जमइ ॥२७८॥

किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं । होइ न उज्जमियव्वं सपच्चवायंमि माणुस्से ? ॥२७९॥

(त्रणे गाथानो अर्थ सरळ होवाथी टीका नथी तो पण टुंकामां लखीए छीए)

बधा तीर्थङ्करोनो तप शास्त्रमां उपसर्ग रहित बताव्यो छे [पार्श्वनाथनो थोडो होवाथी गण्यो नथी] पण वर्द्धमानस्वामिनो तप उपसर्गवाळो जाणवो. (तेमने संगम देवता विगेरेना घणा उपसर्ग आवेला छे, (२७७)

तीर्थङ्कर दीक्षा लीधा पछी तुरत मनःपर्यवज्ञान प्रकट थतां चार ज्ञानवाळा थाय छे, देवताओथी पूजाय छे, निश्चये मोक्षमां जनारा छे, तोपण पोतानुं बळ वीर्य न गोपवतां तप विधानमां उद्यम करेछे, (२७८) तो बीजा समान्य गीतार्थ साधु विगेरे ए (तपनो फायदो जाण्या पछी) अने मनुष्यपणानुं जीवन सोपक्रम (विघ्न वाळुं होवाथी शा माटे तपमां यथाशक्ति उद्यम न करवो ?

हवे अध्ययननो अर्थाधिकार बतावीने उद्देशानो अर्थाधिकार कहे छे—

चरिया १ सिज्जा य २ परीसहाय ३, आयंकिया (ए) चिगिच्छा (४) य ॥ तत्रचरणेणऽहिगारो, चउसुद्देसेसु नायव्वो २८०

'चरण' चराय ते चर्या, एटले 'वर्द्धमानस्वामिना विहारने आ पहेला उद्देशामां वर्णव्यो छे.

बीजा उद्देशामां शय्या ते वसति (रहेवानुं स्थान) जेवुं महावीरे वापर्युं छे तेनुं वर्णन छे.

त्रीजा उद्देशामां परीसहो आवेथी निर्जरामाटे चारित्र मार्गथी भ्रष्ट न थतां साधुए तेने सहन करवा, अने तेना उपलक्षणथी अनुकूल तथा प्रतिकूल वर्द्धमानस्वामिने जे परीसहो थया ते बतावे छे.

चोथा उद्देशामां भूखनी पीडामां विशिष्ट अभिग्रहनी प्राप्तिमां आहारवडे चिकित्सा [उपाय] करे, अने तप चरणनो अधिकार तो चारे उद्देशामां चाले छे, (गाथार्थ)

त्रण प्रकारे निक्षेपो छे, ओघनिष्पन्न, नाम, अने सूत्रालापक तेमां ओघमां अध्ययन, नाममां उपधानश्रुत एवुं बे पदनुं नाम छे, ते उपधान अने श्रुतना यथाक्रमे निक्षेपा करवा ए न्याये उपधान निक्षेपनुं वर्णन करे छे.

नामंठवणुवहाणं दव्वे भावे य होइ नायव्वं । एमेव य सुत्तस्सवि निक्खेवो चउव्विहो होइ ॥२८१॥

नामस्थापना द्रव्य अने भाव एम चार प्रकारे उपधानना निक्षेपा छे, तेज प्रमाणे श्रुतना पण चारज छे, तेमां द्रव्यश्रुत अनुपयुक्त (उपयोग विना)नुं छे. अथवा द्रव्य मेळववा माटे जैनेतरनुं छे.

अने भावश्रुत ते अंग उपांगमां रहेलुं जे श्रुत छे, तेमां उपयोग होय ते, हवे सुगमनामस्थापना छोडीने द्रव्य विगेरे उप·

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धान बताववा कहे छे.

दव्वुवहाणं सयणे भावुवहाणं तवो चरित्तस्स । तम्हा उ नाणदंसणतवचरणेहिं इहाहिगयं ॥२८२॥

समीपमां रहीने धारण कराय ते उपधान छे. द्रव्य संबन्धी होय ते द्रव्य उपधान छे. ते पथारी विगेरेमां सुखे सुवा माटे माथा नीचे टेको लेवा ओशीकुं विगेरे मुकाय छे. ते द्रव्य उपधान छे.

अने भावनु उपधान ते भावोपधान छे, ते ज्ञानदर्शन चारित्र अथवा बाह्यअभ्यंतरतप छे. कारण के तेनावडे चारित्रमां परिणत थयेला भाववाळाने उपष्टंभन [आधार] कराय छे.जेथी ते प्रमाणे ज्ञान दर्शन तप अने चरणवडे अहींयां अधिकार छे. गाथार्थ

प्र०—शा माटे चारित्रना आधार माटे तपनु भाव उपधान कहे छे? उ०—कहीए छीए.

जह खलु मइलं वत्थं सुज्झइ उदगाइएहिं दव्वेहिं । एवं भावुवहाणेण सुज्झए कम्ममट्ठविहं ॥२८३॥

(यथा उदाहरणना उपन्यास माटे छे. जेमके आ छे. एम बीजुं पण जाणवुं. खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे.) जेम मेलुं वस्त्र प्रथम पाणी विगेरेथी शुद्ध कराय छे, तेम जीवने पण भाव उपधानरुप बाह्य अभ्यन्तर तपवडे आठे कर्मथी शुद्ध कराय छे. अने अहींया कर्मक्षयना हेतु माटे तपस्यानु उपधान श्रुतपणे लेवाथी पर्यायो लेवा जोइए. [तत्त्व भेद अने पर्यायोवडे व्याख्या थाय छे.] माटे पर्यायो कहे छे. अथवा तप अनुष्ठानवडे अवधूनन विगेरे कर्म ओछां थवाना जे विशेष उपायो संभवे छे ते बतावे छे.

ओधूणण धूणण नासण विणासणं झवण खवण सोहिकरं । छेयण भेयण फेडण, डहणं धुवणं च कम्माणं ॥२८४॥

तेमां अवधूनन, ते अपूर्वकरणवडे कर्म ग्रन्थि भेदनु उपादान जाणवुं. अने ते तपना कोइ पण भेदना सामर्थ्यथी आ क्रिया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थाय छे. एटले बाकीना अगीयार भेदमां पण आ जाणवुं. तथा 'धूनन' ते भिन्न ग्रन्थिवाळाने अनिवृत्तिकरणवडे सम्यक्त्वमां रहेवुं, तथा 'नाशन' कर्म प्रकृतिनुं स्तिबुक सङ्क्रमणवडे एक प्रकृतिनुं बीजी प्रकृतिमां सङ्क्रमण थवुं, 'विनाशन' शैलेशी अवस्थमां सम्पूर्णताथी कर्मनो अभाव करवो, 'ध्यापन' उपशमश्रेणिमां कर्मनुं उदयमां न आववुं, क्षपण ते अप्रत्याख्यानादि क्रमवडे क्षपकश्रेणिमां मोह विगेरेनो अभाव करवो, शुद्धिकर–अनंतानुबन्धीना क्षयना प्रक्रमथी क्षायिक सम्यक्त्व मेळववुं, 'छेदन' उत्तरोत्तर शुभ अध्यवसायमां चडवाथी स्थितिनी ओछाश करवी, 'भेदन' ते बादर संपराय अवस्थामां संज्वलनना लोभना खंड खंड करी नाखवा, (फेडण) त्ति—चौठाणीआ रसवाळी अशुभ प्रकृतिने त्रण रसवाळी विगेरे बनाववी. 'दहन' ते केवलीसमुद्घातरुप ध्यान अग्निवडे वेदनीयकर्मनुं राखतुल्य बनाववुं, अने बाकीना कर्मनुं बळेलां दोरडा माफक बनाववुं, 'धावन' ते शुभ अध्यवसायथी मिथ्यात्व पुद्गलोनुं सम्यक्त्वभावे बनाववुं, आ बधी कर्मनी अवस्थाओ प्राये उपशमश्रेणी क्षपकश्रेणी केवलि समुद्घात शैलेशी अवस्था प्रकट करवाथी प्रभूत रीते प्रकट थाय छे, [आत्मा निर्मळ करवा कराय छे] एटला माटे प्रक्रमाय (आरंभाय) छे, तेमां उपशमश्रेणीमां प्रथमज अनंतानुबन्धीओनी उपशमनी कहेवाय छे. अहीं असंयतसम्यग्दृष्टि देशविरति प्रमत्त अप्रमत्तमांथी कोइ पण बीजा योगमां जतां आरंभक होय छे, तेमां दर्शन सप्तक एकवडे उपशमाय छे, ते कहे छे.

अनंतानुबन्धी चोकडी, उपरनी त्रण लेश्यामां विशुद्ध होवाथी साकार उपयोगवाळो अंत:कोटीकोटी स्थितिनी सत्तावाळो परिवर्त्तन थती शुभ प्रकृतिओनेज बांधतो प्रति समये अशुभ प्रकृतिओना अनुभागने अनंतगुण हानीए ओछी करतो शुभ प्रकृतिओने अनन्त गुण वृद्धिए अनुभाग (रस) मां व्यवस्था करतो पल्योपमना असंख्य भाग हीन उतरोत्तर स्थितिबन्ध करतो करणकालथी

For Private and Personal Use Only

पण पहेलां अन्तर्मुहुर्त्तमां विशुद्ध मान बनीने त्रण करण करे छे, ते प्रत्येक अंतर्मुहूर्त्तना छे. ते कहे छे–(१) यथा प्रवृत्त (२) अपूर्व (३) अनिवृत्तिकरण छे–अथवा चोथी उपशांतथी थाय छे. तेमां यथा प्रवृत्त करणमां दरेक समये अनंत गुण वृद्धिवाळी विशुद्धिने अनुभवे छे. तेमां स्थिति घात, रसघात, गुण श्रेणि, गुण सङ्क्रमण आमांथी कोइ पण होतुं नथी तेज प्रमाणे बीजा अपूर्वकरणमां छे. तेनो परमार्थ कहे छे के तेमां अपूर्व अपूर्व क्रियाने मेळवे छे. तेथी अपूर्व करण छे. तेमां प्रथम समयेज स्थिति घात रस घात गुणश्रेणि गुण सङ्क्रमण अने अन्य स्थिति बन्ध ए पांच पण अधिकार साथे पूर्वे न होता, अने हवे छे, तेथी अपूर्व करण छे. ते प्रमाणे अनिवृत्तिकरणमां अन्य अन्यने परिणामो उल्लंघता नथी. माटे ते अनिवृत्ति करण छे. एनो सार आ छे के पहेले समये जे जीवोए आकरण फरस्यो ते बधामां तुल्य परिणाम छे. ए प्रमाणे बीजा समयोमां पण जाणवुं. अहींया पण पूर्वे बतावेला स्थितिघात विगेरे पांचे पण अधिकार साथे वर्त्ते छे. तेथीज आ त्रण करणवडे उपर बतावेला क्रमवडे अनंतानुबंधीना कषायोने उपशमावे छे.

उपशमनुं वर्णन.—जेम धूळ पाणीथी छांटीने लाकडाना थाळावडे कुवो करतां चोंटी जवाथी वायु विगेरेथी उडाडवा छतां ते धूळ उडती नथी, तेम कर्म धूळ पण विशुद्धि भावरुप पाणीवडे भिंजावी अनिवृत्ति करण थाळावडे हणतां कर्मरज शांत थवाथी उदय उदीरण सङ्क्रम निधत्त निकाचनारूप करणोने अयोग्य थाय छे. (चीकणो कर्म बंध न थाय) तेमां पण प्रथम समये कर्मदलिक थोडुं उपशांत थाय. अने बीजा त्रीजा विगेरे समयमां असंख्येय गुण वृद्धिए उपशमता अंतर्मुहूर्त्तमां बधुं शांत थाय छे. आ प्रमाणे एक मतवडे अनन्तानुबन्धीनो उपशम बताव्यो.

बीजा आचार्योनो मतभेद.—अनंतानुबन्धीनी विसंयोजना बतावे छे, तेमां क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीवो चार गतिमां रहेला

छे. तेमां पण अनंतानुबन्धीना विसंयोजको छे. तेमां नारक अने देव अविरत सम्यग्दृष्टिओ छे, तथा तिर्यंचो अविरत देशविरत छे. मनुष्यो अविरत देश विरत प्रमत्त अप्रमत्त छे.

ए बधा पण यथा संभव विशोधि विवेक वडे परिणत थयेला अनंतानुबन्धीनी विसंयोजना माटे पूर्वे कहेल करण त्रण करे छे. तेमां पण अनंतानुबन्धीनी स्थितिने अपवर्तन करतो पल्योपमना असंख्येय भाग मात्र बनावे छे. अने पल्योपमना असंख्येय भाग जेटली मोह प्रकृतिओ जे बन्धाय छे, तेने प्रति समये सङ्क्रमावे छे. तेमां पण प्रथम समये स्तोक अने त्यार पछीना समयोमां असंख्येय गुण सङ्क्रमावे छे.ए प्रमाणे छेल्ला समयमां बधासङ्क्रमवडे आवलिका जेटलाने छोडी बाकीनी सर्वे सङ्क्रमावे छे.अने पछी आवलिकामां रहेल पण स्तिबुक सङ्क्रमवडे वेदांती बीजी प्रकृतिओमां सङ्क्रमावे छे.ए प्रमाणे अनंतानुबन्धी कषायो विसंयोजित थायछे.

दर्शन त्रिकनी उपशमना.—तेमां मिथ्यात्वनो उपशमक मिथ्यादृष्टि छे, अथवा वेदक सम्यग्दृष्टि छे पण सम्यक्त्व के सम्यग् मिथ्यात्वनो वेदक तेज उपशमक छे.

तेमां मिथ्यात्वनो उपशम करतो तेनुं अंतर करीने प्रथम स्थितिने विपाकवडे भोगवीने मिथ्यात्वनो उपशम करतो, उपशांत मिथ्यात्वी बने छे. अने उपशम सम्यग्दृष्टि थाय छे. हवे वेदक सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणीने स्वीकारतो अनंतानुबन्धीने वीसंयोजीने संयममां रहेलो आ विधिए दर्शनत्रिकने उपशमावे छे तेमां यथा प्रवृत्त विगेरे पहेला बतावेल त्रण करणोने करीने अंतरकरण करतो वेदक सम्यक्त्वनी पहेली स्थितिने अंतर्मुहूर्त्तनी बनावे छे. अने बाकीनी आवलिका मात्र बनावे छे. त्यार पछी थोडी ओछी एवी मुहूर्त मात्रनी स्थिति खंड खंड करीने बध्यमान प्रकृतिओने स्थितिबन्ध मात्र काळवडे ते कर्मना दळियाने सम्यक्त्वनी

प्रथम स्थितिमां प्रक्षेप करतो आ प्रक्रियावडे सम्यक्त्वना बन्धना अभावथी अंतर क्रियमाण करेलुं थाय छे. मिथ्यात्व सम्यक् मिथ्यात्व प्रथम स्थिति दलिकने आवलिकाना परिमाण मात्र सम्यक्त्वनी प्रथम स्थितिमां स्तिबुक सङ्क्रमवडे सङ्क्रमावे छे. तेमां पण सम्यक्त्वनी प्रथम स्थिति क्षीण थतां उपशांत दर्शनत्रिकवाळो थाय छे. त्यार पछी चारित्रमोहनीयने उपशमावतो पूर्व माफक त्रण करण करे छे. एमां विशेष आ छे.यथा प्रवृत्त करण अप्रमत्त गुणस्थानेज थाय छे. अने बीजुं अपूर्वकरण तो आठमुं गुणस्थान छे. तेना प्रथम समयेज स्थितिघात, रसघात,गुणश्रेणि,गुणसङ्क्रम, अपूर्वस्थितिबंध, ए पांचे अधिकार साथे प्रवर्त्ते छे. तेमां अपूर्वकरणना संख्येय भाग जतां निंद्रा प्रचलाना बंधनो व्यवच्छेद थाय छे. तेमां पण घणां हजार स्थितिनां कंडको गये छते छेल्ला समयमां बीजा भवनी नाम प्रकृतिनी त्रीस प्रकृतिना बंधनो व्यवच्छेद करे ते आ प्रमाणे छे.

(१) देवगति (२) अनुपूर्वी (३) पंचेंद्रिय जाति, (४) वैक्रिय (५) आहारक शरीर अने ते (६–७) बन्नेना अंगोपांग, (८) तेजस (९) कार्मण शरीर (१०) समचतुरस्र संस्थान (११ थी १४) वर्ण गंध रस स्पर्श (१५) अगुरुलघु (१६) उपघात (१७) पराघात (१८) उच्छ्वास (१९) प्रशस्तविहायोगति (२०) त्रस (२१) बादर (२२) पर्याप्त (२३) प्रत्येक (२४) स्थिर (२५) शुभ (२६) सुभग (२७) सुस्वर (२८) आदेय (२९) निर्माण (३०) तीर्थङ्करनाम तेथी अपूर्व करणना छेल्ला समयमां हास्य रति भय जुगुप्साना बंधनो व्यवच्छेद थाय छे. अने हास्यादि षटकना उदयनो व्यवच्छेद थाय छे. बधा कर्मनो अप्रशस्तनो उपशम निद्धत निकाचना करवानुं व्यवच्छेद थाय छे. (टीकाना कांउसमां लख्युं छे के देशना उपशमनो व्यवच्छेद थाय छे) तेथी ए प्रमाणे असंयत सम्यग्दृष्टि विगेरेथी अपूर्वकरणना अंत सुधी सात कर्मोनो उपशांत मेळवाय छे. त्यार पछी अनिवृत्तिकरण छे.

अने ते नवमो गुण (गुणस्थान) तेमां रहेलो एकवीस मोह प्रकृतिनो अंतर करीने नपुंसक वेदने उपशमावे छे. त्यारपछी स्त्री वेद पछी हास्यादि षटक पछी पुरुष वेदना बन्ध उदयनो व्यवच्छेद थाय छे. त्यार पछीं बे आवलिकामां एक समय ओछे पुं वेदनो उपशम थाय छे. त्यार पछी बे क्रोधनो अने पछी संज्वलन क्रोधनो, पछी एज प्रमाणे मानत्रिक अने मायात्रिकनो उपशम करे छे. त्यार पछी संज्वलन लोभना सूक्ष्म खंडो बनावे छे. अने ते करणना काळना चरम समयमां वचला बे लोभने उपशमावे छे. आ प्रमाणे अनिवृत्तिकरणना अंतमां सतावीस प्रकृति उपशांत थाय छे, त्यार पछी सूक्ष्म खंडोने अनुभवतो सूक्ष्मसंपरायवाळो थाय छे. (दशमुं गुणस्थान फरसे छे.) तेना अंतमां ज्ञान अंतराय दशक दर्शनावर्ण चतुष्क यशकीर्त्ति अने उंच गोत्र एम सोळ प्रकृतिना बन्धनो व्यवच्छेद थाय छे. ए प्रमाणे मोहनीय कर्मनी २८ प्रकृति संज्वलन लोभ उपशमावतां उपशांत वीतराग थाय छे, (अगीयारमुं गुणस्थान फरसे छे.)

अने ते जघन्यथी एक समय अने ते उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त्त छे. अने ते गुणस्थानेथी पडवानुं कारण कांतो मनुष्य भव समाप्त थाय अथवा काळ क्षय थाय. अने ते जेम चडेलो छे अने बंधादि व्यवच्छेद करे छे, तेज प्रमाणे पाछो पडतां कर्म बंध बांधे छे. अने तेमांथी कोइ पडतां मिथ्यात्व नामना पहेला गुणस्थाने पण जाय छे. अने जे भवक्षयथी पडे छे, तेने पहेला समयमांज बधा करणो प्रवर्त्ते छे. कोइ तो एक भवमां पण बे वार उपशमश्रेणि करे छे.

क्षपकश्रेणिनुं वर्णन.

आ श्रेणी करनार मनुष्यज आठ वरसनी उपरनो 'आरंभक' होय छे. अने ते प्रथमज करणत्रयपूर्वक अनंतानुबन्धी कषायोने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसंयोजे छे. (दूर करे छे.) पछी करण त्रण पूर्वकज मिथ्यात्वने अने तेमां बाकी रहेल भागने सम्यग् मिथ्यात्वमां नांखतो खपावे छे. ए प्रमाणे सम्यग् मिथ्यात्वने पण खपावे पण विशेष एटलुं छे के तेमां बाकी रहेलने सम्यक्त्वमां नांखे छे एज प्रमाणे सम्यक्त्वने खपावे छे. अने तेना छेल्ला समयमां वेदक (क्षयउपशम) सम्यग् दृष्टि थाय छे त्यार पछी क्षायिक सम्यग् दृष्टि थाय छे. आ सात कर्म प्रकृतिओ असंयत सम्यग् दृष्टिथी लइने अप्रमत्त गुणस्थान सुधी खपावे छे अने आ सम्यक्त्व पाम्या पहेलां जो आयु बन्धायुं होय तो श्रेणिक राजा माफक त्यांज टके छे. पण जेणे आयु बांध्युं नथी अने क्षायिक समकित मेळव्युं छे. तेवो कषाय अष्टकने खपाववा करणत्रय पूर्वक आरंभे छे. त्यां यथा प्रवृत्त करण अप्रमत्तनेज होय छे अपूर्व करणमां तो स्थितिघात विगेरे पूर्वनी माफक निद्राद्विक अने देवगति विगेरे त्रीस तथा हास्यादि चतुष्कनो यथाक्रम बंध व्यवच्छेद उपशमश्रेणिना क्रम माफक कहेवो अने अनिवृत्तिकरणमां तो थीणद्धि त्रिक नरक तिर्यंच गति तेनी अनुपूर्वि एकेंद्रिय आदि चार जाति आतप उद्योत स्थावर सूक्ष्म साधारण ए सोळ प्रकृतिनो क्षय थाय छे. पछी आठ कषायनो क्षय थाय छे.

बीजा आचार्यने मते प्रथम कषाय अष्टकने खपावे छे. त्यारपछी उपर कहेली सोळ प्रकृति खपावे छे. त्यार पछी नपुंसक वेद त्यार पछी हास्यादि षटक पछी पुरुष वेद पछी स्त्री वेद खपावे छे. पछी अनुक्रमे क्रोधथी माया सुधी त्रण संज्वलन कषायने खपावे छे. अने संज्वलन लोभना खंड खंड करी तेमांना बादर खंडोने खपावतो अनिवृत्ति बादर गुणस्थानवाळो होय छे. अने सूक्ष्म खंडोने खपावतो सूक्ष्म संपराय होय छे. तेना अंतमां ज्ञानावरणीनी दर्शनावरणीनी अतरायनी तथा यशकीर्ति उंच गोत्र मळी सोळ प्रकृतिनो बंध व्यवच्छेद करे छे. पछी क्षीण मोही बनीने अंतर्मुहूर्त रहीने तेना अन्तमां छेल्ला समयना पहेलामां बे निद्राने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खपावे छे.अन्त समयमां ज्ञान आवरण अने अंतराय पंचक तथा दर्शन आवरण चतुष्क खपावीने आवरण रहित ज्ञान दर्शनवाळो केवळी (सर्वज्ञ) बने छे. अने ते फक्त एकज सातावेदनीय कर्मने सयोगी गुणस्थान सुधी बांधे छे. आ गुणस्थाने जघन्यथी केवळी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पूर्व कोडीमां थोडुं ओछुं आयु सुधी होय छे. त्यार पछी आ केवळी भगवानने मालम पडे के अंतर्मुहूर्त आयु बाकी छे. अने वेदनीय कर्म घणुं वधारे छे तो बन्नेनी स्थिति सरखी करवा केवळी समुद्घात अनुक्रमे करे छे.

केवळी समुद्घातनुं वर्णन.

औदारिक कायना योगवाळो आ लोकना अंत सुधी उंचे नीचे पहोंचे त्यां सुधी शरीरना परीणाह (अव-गाहनाना) प्रमाणनो प्रथम समयमां दंड आकार बनावे छे. बीजा समयमां तीर्छी दिशामां लोकांत पुरवा माटे कपाट (कमाड) माफक औदारिक कार्मण शरीरना योगमां रहीने बनावे छे. त्रीजा समयमां खुणाओ पुरवा माटे कार्मण शरीर योगमां रहीने मन्थान (मथणी) माफक बनावे छे. अने ते सम श्रेणि पछी श्रेणि लेवाथी लोकनो घणो भाग प्राये पुराय छे. अने चोथा समयमां कार्मण योगवडेज मंथानना वचमां रहेला आंतरा पुरवा माटे निष्कुटवडे पुरे छे तेज प्रमाणे उलटा क्रमे बीजा चार समयमां ते व्यापारने संकेलता ते ते यो-गवाळो थाय छे. फक्त 'छट्ठा' समयमां मंथाननो उपसंहार करतां औदारिक मिश्रयोगी थाय छे. ते प्रमाणे केवळी भगवान समु-द्घातने संहरीने पछी फलक विगेरे पोते जे गृहस्थ पासे लीधुं होय ते पाछुं सोंपीने योगनो निरोध करे छे.

योग निरोधनुं वर्णन.

प्रथम बादर मन योगने रोके छे. पछी वचन योगने अने काय योग जे बादर होय तेने रोके छे पछी एज क्रमे सूक्ष्म मनो-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योग रोके छे. पछी सूक्ष्म वचनयोग रोके छे. त्यार पछी सूक्ष्म काय योगने रोकतो अप्रतिपाति नामना शुक्लध्यानना त्रीजा भेदने आरोहे छे अने सूक्ष्म क्रियाने रोकतो विशेषे करीने क्रिया रोकीने अनिवृत्ति नामना शुक्लध्यानना चोथा पायाने आरोहे छे.

अने तेमां आरुढ थयेलो अयोगी केवळी भावने पामेलो अन्तर्मुहूर्त जघन्य उत्कृष्टथी रहे छे. तेमां जे जे कर्मनो उदय आवेल नथी ते ते कर्मोने स्थितिना क्षयवडे खपावतो अने वेदाति प्रकृतिने बीजी प्रकृतिमां संक्रमावतो खपावतो छेवटना पहेला समयमां आवे छे. ते वखते देवगति साथेनी कर्म प्रकृतिओ खपावे छे.

देवगति अनुपूर्वी वैक्रिय आहारक शरीर बन्नेनां अंगोपांग अने बन्धन अने सङ्घात तथा बीजी प्रकृतिओ खपावे छे औदारिक तेजस कार्मण ए त्रण शरीर तेनां बन्धन अने सङ्घातन छ संस्थान छ सङ्घयण औदारिक शरीरना अंगोपांग वर्ण गंध रस फरस मनुष्य अनुपूर्वी अगुरु लघु उपघात पराघात उच्छ्वास प्रशस्त अप्रशस्त विहायोगति तथा अपर्याप्ति प्रत्येक स्थिर अस्थिर शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर दुःस्वर अनादेय, अयशकीर्ति निर्माण नीचगोत्र कोइ पण एक वेदनीय कर्म खपावे छे.

अने छेल्ला समयमां तो १ मनुष्य गति २ पचेन्द्रिय जाति ३ त्रस ४ बादर ५ पर्याप्त ६ सुभग ७ आदेय ८ यशः कीर्ति ९ तिर्थंकर नाम १० कोइ एक वेदनीय कर्म ११ आयु १२ उच गोत्र ए बार प्रकृतिओ तीर्थङ्कर खपावे छे, अने कोइ आचार्यने मते अनुपूर्वी सहित तेर प्रकृतिओ खपावे छे, अने तीर्थङ्कर न होय, ते प्रथम बतावेली बार अथवा अग्यार खपावे छे, संपूर्ण कर्म क्षय कर्या पछी तुरतज अस्पर्श गतिए एकांतिक अत्यंतिक अनाबाध लक्षणवाळा सुखने अनुभवतो सिद्ध स्थान जे लोकना अग्र भागे छे, त्यां पहोंचे छे.

For Private and Personal Use Only

हवे उपसंहार करता तीर्थङ्करना आ सेवनथी बीजा जीवोने परोचनता थाय, ते बतावता कहे छे.

एवं तु समणुचिन्नं, वीरवरेणं महाणु भावेणं । जं अणुचरित्तु धारा, सीवमचलं जन्ति निव्वाणं ॥२८४॥

आ प्रमाणे कहेली विधिए ज्ञानादि भाव उपधान अथवा तपने वीरवर्द्धमान स्वामिए स्वयं आदर्यो छे, तो बीजा पण मोक्षाभिलाषीए आदरवो. (गाथार्थ)

ब्रह्मचर्य अध्ययननी निर्युक्ति समाप्त थइ.

हवे सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारवुं ते कहे छे—

अहासुयं वइस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाए ॥ संखाए तंसि हेमंते, अहुणो पव्वइए रीइत्था ॥१॥

आर्य सुधर्मास्वामीने पूछवाथी जंबूस्वामीने पोते कहे छे, यथाश्रुत अथवा यथा सूत्र हुं कहीश, ते आ प्रमाणे—

ते श्रमण भगवान् महावीर स्वामी उद्यत विहार स्वीकारीने सर्व अलंकार (भूषण) त्यागीने पांच मुठी लोच करीने इंद्रे आपेला एक देवदूष्य वस्त्र धारण करी सामायिकनी प्रतिज्ञा उच्चरीने मनपर्यवज्ञान उत्पन्न थएला आठ प्रकारना कर्म क्षय करवा माटे अने तीर्थ प्रवर्त्तावता माटे उद्यत विहारवाळा बनीने तत्वने जाणीने ते हेमंत रुतुमां मागशर (गुजराती कारतक) मासमां वद १०ना रोज प्राचीनगामिनी छाया (आथमतो सूर्य) थतां दीक्षा लइने विहार कर्यो. अने कुंड ग्रामथी बे घडी दीवस बाकी रहे कर्मार गामे आव्या अने त्यां भगवान आव्या पछी अनेक प्रकारना अभिग्रह धारण करीने घोर परीसह सहन करता महासत्वपणे म्लेच्छोने पण शांति पमाडता बार वर्षथी कांइक अधिक छद्मस्थपणे मौनव्रत लइ तप आदर्यो अहीयां भगवाने सामायक उचर्युं, त्यारपछी इंद्रे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भगवान उपर देवदूष्य वस्त्र खभे मुक्युं तेथी भगवाने पण निःसंग अभिप्रायवडेज धर्मोपकरण विना बीजा मुमुक्षुओथी पण धर्म थवो अशक्य छे. ए कारणनी अपेक्षाए मध्यस्थ वृत्तिए तेज प्रमाणे धारण कर्युं, पण तेना उपभोगनी इच्छा नथी, एम जाणवुं ते बताववा कहे छे.

णो चेविमेण वत्थेण पिहिस्सामि तंसि हेमंते । से पारए आवकहाए, एयं खु अणुधम्मियं तस्स ॥२॥

चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाणजाइया आगम्म । अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुसिया णं तत्थ हिंसिंसु ॥३॥

संवच्छरं साहियं मासं जं न रिक्कासि वत्थगं भगवं । अचेलए तओ चाइ तं वोसिज्ज वत्थमणगारे ॥४॥

भगवान विचारे छे के इंद्रे आपेला आ वस्त्रवडे आ मारा शरीर आत्माने ढांकीश नहीं. अथवा हेमंत (शीयाळा) नी ऋतुमां ते वस्त्रवडे शरीरनुं रक्षण करीश नहीं अथवा लज्जा माटे वस्त्र धारण नहीं करूं. ते भगवान केवा छे? ते बतावे छे.

ते भगवान प्रतिज्ञाने पुरी करे छे. अथवा परीषहो अथवा संसारथी पार जाय छे.

प्र०—केटलो काळ? ते कहे छे. आखी जींदगी सुधी. प्र०—शा माटे आम राखे छे?

उ०—ते वस्त्र धारण करवाथी एम बताव्युं के पूर्वना तीर्थङ्करोए ते प्रमाणे वस्त्र धारण कर्युं छे. (खु अवधारणना अर्थमां छे. अने ते भिन्न क्रम बतावे छे) बीजा तीर्थङ्करोनुं वस्त्र धारण करवुं आगम पाठथी बतावे छे.

" से बेमि जे य अईया जे य पडुप्पन्ना जे य आगमेस्सा अरहंता भगवन्तो जे य पव्वयन्ति जे अ पव्वइ-

For Private and Personal Use Only

स्सन्ति सव्वे ते सोवही धम्मो देसिअव्वोत्तिकट्टु तित्थधम्मयाए एसाऽणुधम्मिगत्ति एगं देवदूसमायाए पव्वइंसु वा पव्वयंति वा पव्वइस्सन्ति व " त्ति,

ते हुं कहुं छुं, पूर्वे जे अनन्ता तीर्थङ्करो थया जेओ हाल उत्पन्न थाय छे. अने भविष्यमां थशे. जेमणे दीक्षा लीधी छे अने भविष्यमां लेशे. तेओ बधाए उपधिवाळो धर्म शिष्यो माटे बताववो एम विचारी पोते आ धर्मनो मारग छे एम जाणीने एक देव दूष्य इन्द्र पासे दीक्षामां लीधु छे. वर्तमानमां ले छे अने भविष्यमां लेशे. वळी कह्यु छे के—

गरियस्त्वात्सचेलस्य, धर्मस्यान्यैस्तथागतैः। शिष्यस्य प्रत्ययाच्चैव, वस्त्रं दध्रे न लज्जया ॥ १ ॥

वस्त्र सहित साधुना धर्मनु विशेषपणु होवाथी बीजा तीर्थङ्करोए पण शिष्यना विश्वास माटे वस्त्र धारण कर्युं छे. पण लज्जाने माटे धारण कर्युं नथी. तथा भगवाने दीक्षा लीधा पछी जे देवता संबंधी सुगंध पट लागेल हतो (देवताए सुगंधीनुं विलेपन कर्युं हतुं) तेथी तेनी सुगंधीथी खेंचाइ आवेला भमरा विगेरे भगवानना शरीरने दुःख आपता हता ते बतावे छे. चार महीनाथी पण वधारे घणा प्राणीओ भमरा विगेरे शरीरमां डंख मारता हता अने मांस लोहीना अर्थी बनीने करडीने आम तेम दुःख देता हता (ते प्रभुए समभावे सह्युं.) प्र०—भगवान पासे क्यां सुधी ते देव दूष्य वस्त्र रह्युं.

उ०—ते इंद्रे आपेलुं वस्त्र एक वरसथी कांइक अधिक मास सुधी रह्युं त्यां सुधी भगवान कल्पमां रह्याछे. माटे त्याग्युं नहीं. त्यार पछी वस्त्रने त्यागनारा थया अर्थात् भगवान वस्त्र त्यागीने अचेल थया, अने ते सुवर्ण वालुका नदीना पूरमां आवेला कांटामां भरायलुं ब्राह्मणे लीधुं, वळी—

अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं चक्खुमासज्ज अन्तो सो झायइ । अह चक्खुभीया संहिया ते हन्ता हन्ता बहवे कंदिंसु ॥ ५ ॥ सयणेहिं वितिमिस्सेहिं इत्थिओ तत्थ से परिन्नाय । सागारियं न सेवेइ य, से सयं पवेसिया झाइ ॥ ६ ॥ जे के इमे अगारत्था मीसीभावं पहाय से झाई । पुट्ठोवि नाभिभासिंसु गच्छई नाइवत्तइ अंजू ॥ ७ ॥ णो सुकरमेयमेगेसिं नाभिभासे य अभिवायमाणे । हयपुव्वे तत्थ दण्डेहिं लूसियपुव्वे अप्पपुण्णेहिं ॥ ८ ॥

पछी पुरुष प्रमाण पोरसी आत्म प्रमाण वीथी (मारग) जग्या शोधता विहार करे छे. अर्थात् साधुने चालतां तेज ध्यान छे के पोतानी उंचाइ जेटली जग्या शोधीने चालवुं.

प्र०—केवी वीथी छे ? उ०—तीर्यग भिति गाडानी धुंसरी प्रमाण मोढा आगळ सांकडी अने आगळ जतां पहोळी होय छे ते प्रमाणे भगवान जुए छे. प्र०—केवी रीते जुए छे ? उ०—आंखे बरोबर ध्यान राखीने तेमां जुए छे. तेवी रीते चालनारने जोइने कोइ वखत कोइ बाळक कुमार विगेरे पीडा करे ते बतावे छे.

(अहीं चक्षु शब्ददर्शननो पर्याय छे.) एटले तेमना दर्शनथीज डरेला एकठा थयेला घणां बाळक विगेरे धूळनी मुठी विगेरेथी हणी हणीने चाळा पाडवा लाग्या. अने बीजा बाळकोने बोलावीने कहुं—जुओ ! आ नागो मुंडीओ छे. तथा आ कोण छे ? क्यांथी आव्यो छे ? अने आ कोना संबन्धी छे ? आवी रीते कोलाहल कर्यो. (५) वळी जेनामां सुवाय ते शयन ते रहेवानुं स्थान

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे. तेमां कोइ निमित्तथी भेगा मळेला गृहस्थ अथवा बीजा दर्शनवाळाओथी भेगा थतां तेमने एकला जोइने कोइ वखत स्त्रीओ प्रार्थना करे छे. तेथी तेओ शुभ मार्गमां भुंगळ समान ज्ञ परिज्ञावडे तेमने जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे त्यागता मैथुनने सेवता नथी. अने ज्यारे पोते एकला पण शून्य घरमां होय त्यारे भाव मैथुन पण सेवता नथी. आ प्रमाणे ते भगवान पोताना आत्मावडे वैराग्य मार्गे आत्माने दोरीने धर्मध्यान अथवा शुक्लध्यान ध्याय छे. (६)

तेज प्रमाणे केटलाक घरमां रहेनार अगारस्थ जे गृहस्थो छे. तेओ साथे कारण पडतां एकमेक थतां पण द्रव्यथी अने भावथी मिश्र भाव छोडीने ते भगवान धर्मध्यान ध्याय छे. (तेमनी साथे कोइ पण जातनी वातचीत करता नथी.)

प्र०—शा माटे भगवान बोलाव्याथी अथवा न बोलाव्याथी बोलता नथी. उ०—पोताना कार्य माटेज जाय छे. तेटला माटे तेओ बोलावे तो पण भगवान मोक्ष पंथने अथवा पोताना ध्यानने छोडता नथी. कारण के पोते संयम अनुष्ठानमां वर्त्तता होवाथी ऋजु (सरळ) छे आ संबंधमां नागार्जुनीया कहे छे.

पुट्ठो व सो अपुट्ठो व, णो अणुन्नाइ पावगं भगवं ॥

कोइ ग्रहस्थ पूछे, अथवा न पण पूछे, तो पण भगवान पोते पापनी संमति आपता नथी—

प्र०—हवे कहेवाती वात बीजाओने सुकर नथी (पण दुष्कर छे) तेथी अन्य प्राकृत पुरुषोथी पळाय तेम नथी, छतां पण भगवाने शा माटे ते आचर्यु ? ते बतावे छे—बोलावनारा बोलावे तो पण प्रसन्न थइने बोलता नथी, अने जे नथी बोलावता, तेमना उपर कोपता नथी, तेमज प्रतिकूल उपसर्ग करवाथी पण भगवान तेना उपर विरुप भाव करता नथी ते बतावे छे, भगवान ज्यारे

For Private and Personal Use Only

अनार्य (जंगली) देश विगेरेमां विचर्या त्यारे भगवानने ते अनार्य पापीओए प्रथम दंडावडे मार्या, तेज प्रमाणे केश विगेरे खेंची तोडीने दुःखी कर्या वळी—

फरुसाइं दुत्तितिक्खाइ अइअच्च मुणी परक्कममाणे । आघायनट्टगीयाइं दण्डजुद्धाइं मुट्ठिजुद्धाइं ॥९॥

परुष (कर्कश) वचनोथी बीजा पापीओ दुःख देतां, तेवा कठोर तिरस्कारने भगवाने न गणतां जगतना स्वभावने जाणता भगवान चारित्रमां पराक्रम बतावी सहन करता तथा (कोइनां प्रेमभावना) गायेलां गीतो अने करेला नाचोथी पोते कौतक मानता नहोता. तथा दंड युद्ध तथा मुक्काबाजीनी कुस्ती थवानी सांभळी आश्चर्य मानीने खीलेला नेत्रवाळा तथा रोमराजी विकस्वरवाळा उत्सुक थता नहोता.

गढिए मिहुकहासु समयंमि नायसुए विसोगे अदक्खु । एयाइ से उरालाइं गच्छइ नायपुत्ते असरणयाए ॥१०॥

अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभुच्चा निक्खन्ते । एगत्तगए पिहियच्चे से अहिन्नायदंसणे सन्ते ॥११॥

ए प्रमाणे कोइ मांहोमांहे कथा करता होय. अथवा कोइ पोताना सिद्धांतमां कदाग्रही होय. अथवा बे स्त्रीओ पोतानी कथामां रक्त होय. ते समये भगवान महावीर हर्ष शोक छोडीने ते बधानी कथामां मध्यस्थ रहीने जोता हता. अने ए तथा बीजा अनुकूल प्रतिकूल परिषह उपसर्ग थतां उदार (अतिशय) न सहन थाय तेवा दुःखो आवे तो पण पोते न गणतां संयमअनुष्ठानमां रहेला छे. तथा ज्ञात नामना जे क्षत्रीओ तेमना वंशमां जे जन्मेला छे ते ज्ञात पुत्र महावीर आ दुःखने स्मरणमां लावता

नथी. (पण चारित्र निर्मळ पाळे छे.)

अथवा शरण ते घर छे. ते नथी माटे अशरण छे. अने ते संयम छे ते माटे पोते यत्न करे छे. ते बतावे छे. एमां आश्चर्य शुं छे के भगवान अतिशय बळ पराक्रमवाळा महाव्रत पाळवानी प्रतिज्ञारूप मेरु पर्वते चढेला पराक्रम करे छे ? ते भगवान महावीरे ज्यारे दीक्षा नहोती लीधी त्यारे पण निर्दोष प्रासुक आहारथी निर्वाह करता हता ते संबंधी कथा कहे छे. ज्यारे भगवान महावीरना माता पिता देवलोकमां गयां त्यारे भगवान महावीरे मातानां गर्भमां जरा न हालवाथी माने अतिशय दुःख थयुं हतुं अने ज्यारे पोते हाल्या त्यारेज माताने धीरज थइ हती, तेथी ते समये अवधिज्ञाने मातानो अभिप्राय जाणानार महावीरप्रभुए अभिग्रह कर्यो हतो के मारा वियोगथी माता पिता कमोते न मरो, ते हेतुने ध्यानमां राखी 'मारे माता पिता जीवतां सुधी दीक्षा न लेवी.' अने ते प्रमाणे अठावीस वरसनी पोतानी उमर थतां माता पिता देवलोकमां गयां. त्यारे अभिग्रहनी प्रतिज्ञा पुरी थइ एम जाणीने दीक्षा लेवानी तैयारी करी ते समये नंदीवर्धन नामना मोटाभाइ तथा ज्ञाति बंधुओए प्रभुने प्रार्थना करी के हे प्रभु ! 'घा उपर खार छांटवा जेवु' माता पिताना वियोगना दुःखमां तमारो वियोग न करो. भगवान महावीरे आ सांभळीने अवधिज्ञाने जाण्युं के मारा आ दीक्षाना समयमां घणा मनुष्यो घेला थशे, अने मरी जशे, एवुं विचारीने तेओने कह्युं के मारे केटलो काळ रोकावुं पडशे ? तेओए कह्युं के अमने बे वरसमां शोक दूर थशे. प्रभुए कह्युं के ठीक छे, पण आहार विगेरे लेवुं ते मारी इच्छाए थशे पण ते इच्छा तोडवा तमारे न आववुं. तेओए विचार्युं के कोइ पण रीते भगवान रहो एम मानीने तेमणे हा पाडी, त्यारपछी भगवान ते वचनने अनुसारे निर्दोष आहार लइने गृहस्थपणामां पण साधु वृत्तिए हता, पछी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने

संसारनी असारता विशेष प्रकारे जाणीने तीर्थप्रवर्त्तन माटे उद्यम करे छे. ते बतावेछे. (१०) भगवान महावीर बे वरसथी कांइक अधिक काळ सुधी काचुं पाणी त्यागीने पग धोवा विगेरे क्रिया पण प्रासुक जळवडेज करता जेवी रीते पहेलुं व्रत जीवदयानुं पाळ्युं तेज प्रमाणे बीजां व्रतो पण पाळ्यां. तेज प्रमाणे एकत्व भावनावडे भावित अंतःकरणवाळा बनीने अर्चारूप क्रोध ज्वाळाने जेणे अटकावी छे. अथवा पिहित अर्चे एटले शरीरने गुप्त राख्युं छे. (के कोइ पण जीवने पोतानी कायाथी पीडा थवा देता नथी.)

ते भगवान महावीर दीक्षा लीधा पछी छद्मस्थ काळमां सम्यक्त्वभावनावडे भावित हता, (तेमने धर्म उपर निर्मळ श्रद्धा हती) तथा इंद्रियो अने मनवडे पोते शांत हता. (उन्मार्गे जवा देता नहोता) एवा भगवान गृहवासमां पण छेवटना बे वरसमां सावद्य आरंभना त्यागी हता तो पछी दीक्षा लीधा पछी चारित्रकाळमां शा माटे निःस्पृह न होय? ते बतावे छे.

पुढविं च आउकायं च तेउकायं च वाउकायं च । पणगाइं बीयहरियाइं तसकायं च सव्वसो नच्चा ॥१२॥

एयाइं सन्ति पडिलेहे, चित्तमन्ताइ से अभिन्नाय । परिवज्जिय विहरित्था इय सङ्खाय से महावीरे ॥१३॥

अदु थावरा य तसत्ताए तसा य थावरत्ताए । अदुवा सव्वजोणिया सत्ता कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला ॥१४॥

आ भगवान् महावीर पृथ्वीकाय अप्काय वायुकाय विगेरे जीवोने सचित्त जाणीने तेनो आरंभ त्यागीने पोते विचरे छे. ते बतावे छे. पृथ्वीकाय सूक्ष्म अने बादर बे भेदे छे. ते सूक्ष्म सर्वत्र छे. अने बादर पण कोमळ अने कठण एम बे भेदे छे. तेमां कोमळ माटी धोळा विगेरे पांच रंगनी छे. पण कठण पृथ्वी तो पृथ्वी शर्करा वालुका विगेरेथी छत्रीस भेदवाळी छे. ते प्रथम शस्त्र

परिज्ञा नामना पहेला भागमां ( ) पाने छे. त्यांथी समजवुं. अपकाय पण सूक्ष्म बादर बे भेदे छे. तेमां सूक्ष्म सर्वत्र छे. पण बादर अग्नि अङ्गारा विगेरे पांच भेदे छे.

वायुनुं पण तेमज छे. फक्त बादर वायु काय उत्कालिक विगेरे पांच भेदे छे. वनस्पति पण सूक्ष्म बादर बे भेदे छे. सूक्ष्म सर्वत्र छे. अने बादर अग्र मूळ स्कंध पर्व बीज संमूर्छन एम सामान्यथी छ भेदे छे.

वळी ते दरेक प्रत्येक अने साधारण एम बे भेदे छे. प्रत्येक वृक्ष गुच्छा वगेरे बार भेदे छे. अने साधारण तो अनेक प्रकारे छे. ते अनेक भेदवाळो छतां वनस्पतिकाय सूक्ष्म सर्वगत होवाथी अने अतींद्रिय होवाथी तेने छोडीने फक्त भेदोमां बादरकाय लीधो छे ते बतावे छे. पनक लेवाथी बीज अंकुर भाव रहित पनक विगेरे उल विगेरे अनंत काय लेवा अने बीजना ग्रहणथी अग्र बीज विगेरे लेवां हरित शब्दथी बीजा भेद लेवा (१२) आ प्रमाणे पृथ्वी विगेरे भूतो छे. एम जाणीने तथा ते चेतनावाळा छे एम जाणीने भगवान महावीर तेमनो आरंभ छोडीने विचर्या पृथ्वीकाय विगेरे जंतुना त्रस स्थावरपणे भेदो बतावीने हवे एमनामां परस्पर अनुगम पण छे, ते बतावे छे. (१३) स्थावर ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पति छे. ते त्रसपणे एटले बेइंद्रिय विगेरे कर्म वशथी जाय छे. अने त्रस जीवो कृमि विगेरे पृथ्वी विगेरेमां कर्मने लीधे जाय छे. ते प्रमाणे बीजे पण कह्युं छे.

" अयण्णं भन्ते ! जीवे पूढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुवे ?, हंता गोअमा ! असइं अदुवा-ऽणंतखुत्तो जाव उववण्ण पुव्वे " त्ति

गौतमनो प्र०—हे भगवान ! आ जीव पृथ्वी काय पणेथी लइ त्रसकायपणे पूर्वे उत्पन्न थयेल छे ?

उ०—हा, अनेक वार अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थयेल छे, अथवा बधी योनिओ जे जीवोनां प्रति स्थान छे, ते सर्व योनिक जीव छे, अने जीवो बधी गतिमां जनारा छे, ते जीवो (मंद बुद्धिथी) बाल छे, अने राग द्वेषथी व्याप्त थइ चीकणां कर्म बांधी पोताना करेलां कर्मनां फळ जुदी जुदी रीते सर्व योनियोमां भोगववावडे कल्पित (व्यवस्था करायला) छे. कह्युं छे केः—

णत्थि किर सो पएसो, लोए वालग्गकोडिमित्तोऽवि । जम्मणमरणाबाहा अणेगसो जत्थ णवि पत्ता ॥ १ ॥

आ लोकमां वाळना अग्रभाग जेटलो प्रदेश मात्र पण एवो नथी, के ज्यां आ जीवे जन्म मरणनी बाधा अनेक वार प्राप्त करी नथी! वळी

रंगभूमिर्न सा काचिच्छुद्धा जगति विद्यते । विचित्रैः कर्म्मनेपथ्यैर्यत्र सत्त्वैर्न नाटितं ॥ २ ॥

तेवी शुद्ध रंगभूमि जगत्मां कोइ विद्यमान नथी, के ज्यां कर्मने पथ्य (शणगार) पहेरीने सर्व सत्त्वो नाच्या नथी! विगेरे छे. (१४) वळी—

भगवं च एवमन्नेसिं सोवहिए हु लुप्पई बाले; कम्मं च सव्वसो नच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ॥१५॥

दुविहं समिच्च मेहावि किरियमक्खायऽणेलिसं नाणी; आयाणसोयमइवायसोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा ॥१६॥

भगवान महावीरे तेमज बीजी रीते जाण्युं के उपधि सहित ते द्रव्यथी तथा भावथी उपधि सहित जे वर्त्ते ते कर्मथी लेपाय, पछी ते बाळ अज्ञ साधु दुःखोने अनुभवे छे अथवा (हुनो हेतुमां अर्थ लइए तो) सोपधिक बाळ साधु कर्मथी लेपाय छे, तेथी बधी रीते कर्म बंधातुं जाणीने उपधिनुं कर्म त्यागी दीधुं. एटले अंदरथी अने बहारथी जे उपधिरूप पापकर्मनुंअनुष्ठान हतुं ते भगवाने त्यागी दीधुं. (जरुर होय त्यां सुधी शक्तिना अभावमां उपधि साधुए राखवी, अने पाछळथी शक्तिमान थतां त्यागी देवानो मार्ग

भगवाने बताव्यो) (१५) वळी बे प्रकारवाळा ते द्विविध कर्म छे, इर्या प्रत्यय, अने सांपरायिक छे, ते बन्नेने पण सर्वज्ञ प्रभुए जाणीने संयम अनुष्ठानरूप जे कर्म छेदवाने माटे अन्यत्र नथी, तेवी अनन्य सदृशी क्रिया बतावी.

प्र०—भगवान केवा हता ? उ०—ज्ञानी, (केवळज्ञान प्राप्त थया पछी तेमणे आ क्रिया बतावी.)

प्र०–वळी तेमणे बीजुं शुं कह्युं ? उ०–जेनावडे नवां कर्म लेवाय ते आदान खोटुं ध्यान छे, तथा इंद्रियोना विकार संबंधी ते स्रोत छे. माटे जे आदान स्रोत छे, तेने जाणीने तथा जीव हिंसारूप तथा तेना लक्षणथी मृषावाद विगेरे पापोने तथा मन वचन कायाना व्यापारवाळुं दुर्ध्यान छे ते बधे प्रकारे कर्म बंधने माटे छे एम जाणीने तेमणे संयम लक्षणवाळी निर्दोष क्रिया बतावी. वळी—

अईवत्तियं अणाउट्टिं सयमन्नेसिं अकरणयाए; जस्सित्थिओ परिन्नाया, सव्वकम्मावहा उ स अदक्खु ॥१७॥

आकुट्टी (हिंसा) ने त्यागवाथी अहिंसा छे, ते पापथी अति क्रांत होवाथी निर्दोष छे, ते महावीर प्रभुए पोतेज प्रथम अहिंसा स्वीकारीने बीजाओने पण हिंसानी प्रवृत्तिथी दूर राख्या, तथा जेमने स्त्रीओ स्वरूपथी तथा विपाकथी कडवां फळ आपनारी छे, एवुं ज्ञान छे, ते परिज्ञात भगवान छे, तथा तेज स्त्रीओ सर्व कर्म समूहो एटले सर्व पापोना उपादान भूत छे. ते पण एमणे जोयुं छे, तेथीज तेओ संसारनुं रूप जाणनारा थया तेनो भावार्थ ए छे केः—स्त्रीना स्वभावना आवा परिज्ञानथी तथा ते जाणीने त्यागवाथीज भगवान परमार्थदर्शी थया छे मूळ गुणो बतावीने हवे उत्तर गुण प्रकट करवा कहे छेः—

अहाकडं न से सेवे सव्वसो कम्म अदक्खू; यं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियड भुंजित्था ॥१८॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोइ गृहस्थे साधुने पूछीने अथवा विना पूछे (छानुं) आधा कर्मादि भोजन विगेरे कर्युं होय तो पोते ते लेता नथी.

प्र०—शा माटे ? उ०—तेमणे जोयुं के, ते लेवाथी बधी रीते आठे प्रकारना कर्मनो बंध थाय छे, तेवुं दोषित बीजुं पण सेवता नथी, ते कहे छे, जे कंइ पापवाळुं एटले जेनावडे भविष्यमां पापनुं कारण थाय तेवुं भगवाने न लीधुं, पण विकट (प्रासुक निर्दोष) भोजन विगेरे लीधुं. (१८) वळी—

णो सेवइ य परवत्थं, परपाएवी से न भुञ्जित्था; परिवज्जि याण उमाणं, गच्छइ संखडिं असरणयाए ॥१९॥

मायण्णे असणपाणस्स, नाणुगिद्धे रसेसु अपडिन्ने; अच्छिंपि नो पमज्जिज्जा, नोवि य कंडूयए मुणी गायं

पोते प्रधान (पर) वस्त्र भोगवता नथी. तेम किंमती पात्रमां खाता नथी, तथा पोते अपमान छोडीने आहारने माटे (ज्यां आहार रंधाय तेवी रसोडानी जग्या) संखडीमां कोइनुं पण शरण (आलंबन) लीधा विना अदीन मनवाळा 'आ मारो कल्प' छे एम जाणीने परीषहो 'जीतवा' माटे जाय छे. (१९)

आहारनी मात्रा (माप) जाणे छे, माटे मात्रज्ञ प्रभु छे, प्र०—क्यो आहार? उ०—खवाय ते भात विगेरेनुं भोजन, पीवाय ते पाणी, द्राखनुं धोवण विगेरे–तेमां पोते लोलूपी नथी, तेम रस [छवीगइ] मां गृहस्थपणामां पण लोलूपी नहोता, तो पछी दीक्षा लीधा पछीनुं तो शुं कहेवुं रस लेवाथी एम सूचव्युं, के पोते तेवा पदार्थमां अभिग्रह न धारे के आजे सिंह केसरीया लाडुज खावा! पण आवी प्रतिज्ञा राखे के आजे कुल्मास अडदना बाकळा विगेरे खावा; तथा आंखमां रज पडी होय, तो ते दूर करवा

For Private and Personal Use Only

माटे पण आंख मसळे नहीं! तथा खणज आवे तो लाकडाना छांडा विगेरेथी पण खणे नहीं. (२०) वळी—

अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पिं पिट्ठओ पेहाए। अप्पं बुइएऽपडिभाणी, पंथपेहि चरे जयमाणे ॥२१॥
सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोसिज्ज वत्थमणगारे। पसारित्तु बाहुं परक्कमे, नो अवलंबियाण कंधंमि ॥२२॥
एस विहि अणुक्कन्तो माहणेण मईमया। बहुसो अपडिन्नेण भगवया एवं रियन्ति ॥२३॥
त्तिबेमि ॥ उपधानश्रुताध्ययनोद्देशः ॥ १ ॥ ९ ॥ १ ॥

(अल्प शब्द अभावना अर्थमां छे.) भगवान महावीर विहारमां तीरछी दिशामां जोता नथी तेम बंने बाजुए जोता नथी. तेम मार्गमां चालतां कोइ पूछे तो पण बोलता नथी. मौनज चाले छे. ते बतावे छे के पोते रस्तामां चालतां पग नीचे जीवोने पीडा न थाय तेज यतना राखता हता. (२१) वळी शियाळामां मार्गमां खरी ठंडमां पण देवदूष्य वस्त्र छोड्या पछी बे बाहु लांबी करीने चाले छे. पण ठंडथी पीडातां हाथने वांका वाळी संकोचता नथी. तेम पोताना खभा उपर पण हाथ राखीने उभा रहेता नथी.हवे समाप्त करवा कहे छे. (२२) आ विहारनो विधि बताव्यो ते भगवान महावीरस्वामी जेओ तत्त्वना जाणनारा छे. अने कोइ जातनुं नियाणुं कर्युं नथी, तथा ऐश्वर्य विगेरे गुणोथी युक्त छे, तेमणे पोते आचर्यो छे. एज प्रमाणे बीजा मोक्षाभिलाषी साधुओ संपूर्ण कर्म क्षय करवा माटे आचरे छे. आवुं सुधर्मास्वामि कहे छेः—

उपधानश्रुतअध्ययननो पहेलो उद्देशो पुरो थयो.

पहेलो कहीने जोडाजोडज बीजा उद्देशानी सूत्र गाथानी व्याख्या टीकाकार कहे छे. तेमां प्रथम संबन्ध कहे छे. पहेला उद्देशामां भगवानननी चर्या बतावी. अने तेमां कोइपण शय्या (वसति) मां रहेवुं पडे, तेथी आ बीजा उद्देशामां तेनुं वर्णन आवशे. आ संबन्धे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

बीजा उद्देशानी सूत्र गाथाओ

चरियासणाइं सिज्जाओ एगइयाओ जाओ बुइयाओ। आइक्ख ताइं सयणासणाइं जाइं सेवित्था से महावीरे ॥
आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो । अदुवा पलियठाणेसुपला लपुञ्जेसु एगया वासो ॥२॥
आगन्तारे आरामागारे तह य नगरे व एगया वासो । सुसाणे सुण्णगारे वा रुक्खमूले व एगया वासो ॥३॥
एएहिं मुणी सयणेहिं समणे आसि पतेरसवासे । राइं दिवंपि जयमाणे अपमत्ते समाहिए झाइ ॥४॥

चरिया (चर्या) मां जे जे शय्या आसन विगेरे जरुरनां होय ते शय्या फलक (पाटीयुं) विगेरे सुधर्मास्वामिए जंबूस्वामिना पूछवाथी भगवान महावीरे जे प्रमाणे उपयोगमां लीधेल छे. ते बतावेल छे. (आ टीकाकार लखे छे के तेना पहेलांनी टीकामां आ गाथानो अधिकार वर्णव्यो नथी, तेनुं कारण ते सुगम छे के सूत्रमां नथी ते सूचन पुस्तकमां जणातुं नथी तेथी अमे पण तेमनो अभिप्राय समजता नथी.) (१)

जंबूस्वामिना प्रश्ननो उत्तर आपे छे. भगवान महावीरने आहारना अभिग्रह माफक प्रतिमा सिवाय प्राये शय्यानो अभिग्रह नथी.

फक्त ज्यां छेल्लो पहोर (चरम पोरसी) थाय त्यांज मालीकनी आज्ञा लइने रहे ते बतावे छे. सर्वथा ज्यां रहेवाय ते आवेश छे.

आवेशन—शून्यगृह—तथा 'सभा' ते गाम नगर विगेरेमां त्यांना लोकोने माटे तथा आवेला नवा माणसोने सुवा माटे भींतोवाळुं मकान बनावे छे (गुजरातमां जेने चोरो कहे छे) प्रपाणी पावानी जग्या, (जेने परब कहे छे) ते आवेशन, सभा प्रपा तेमां भगवाने वास कर्यो, तथा पण्यशाळा (दुकान) तथा पलिय एटले लोहार, सुतारनी ओसरीमां तथा पलालना ढगलामां अथवा मांचो उपर लटकाव्यो होय तेना नीचे रहे, पण तेना उपर न बेसे कारण के मांचो पोकळ होय छे. (२)

वली प्रसङ्गे आवेला अथवा आवीने त्यां बेसे ते मुसाफरखानुं के धर्मशाळा ते गाममां होय अथवा गाम बहार होय तथा आराम ते घर आराम तथा आगारमां कोइ वखत वास करे, तथा मसाणमां अथवा शून्य घरमां वास करे, (आवेशन तथा शून्य घरनो भेद ए छे के पेलानी भींत मजबुत होय पण बीजामां तेम नहीं कोइ वखत झाडना मूळ नीचे वास कर्यो. (३)

उपर बतावेल शयन ते वसतिमां त्रण जगतने जाणनारा ऋतुबद्ध काळमां अथवा चोमासामां भगवान तपस्यामां उद्युक्त बनीने अथवा ध्यान राखनारा बनीने वास कर्यो.

प्र०—केटलो काळ ? ते कहे छे. प्रकर्षथी तेरमा वरस सुधी एटले बार वरसथी कंइक अधिक मुदत सुधी आखी रात अने दिवस संयम अनुष्ठानमां उद्यमवाळा बनीने अप्रमत्त एटले निद्रा विगेरे प्रमाद रहित तथा विस्रोतसिकारहित धर्म ध्यान अथवा शुक्ल ध्यान ध्याय छे वळी—

णिदंपि नो पगामाए, सेवइ भगवं उट्ठाए । जग्गावइ य अप्पाणं इसिं साई य अपडिन्ने ॥५॥

संबुज्झमाणे पुणरवि आसिंसु भगवं उट्ठाए । निक्खम्म एगया राओबहि चंकमिया मुहुत्तागं ॥६॥
सयणेहिं तत्थुवसग्गा भीमा आसी अणेगरूवा य । संसप्पगा य जे पाणा अदुवा जे पक्खिणो उवचरन्ति ॥७॥
अदु कुचरा उवचरन्ति गाम रक्खा य सत्तिहत्था य । अदु गामिया उवसग्गा इत्थी इगइया पुरिसा य ॥८॥

भगवान पोते प्रमाद रहित बनीने निद्रा पण वधारे लेता नथी. अने तेज प्रमाणे बार वरसमां अस्थिक गाममां व्यन्तरना उपसर्ग पछी कायोत्सर्गमां रहीने अन्तर्मुहूर्त सुधी स्वप्नो देखतां सुधी एकवार निद्रा करी हती त्यारपछी उठीने आत्माने कुशळ अनुष्ठानमां प्रवर्तावे छे अहींया पण पोते प्रतिज्ञा रहित छे. एटले पोते मनमां इच्छीने सुता नथी. (५)

वळी ते वीर प्रभु जाणे छे के आ प्रमाद संसार भ्रमण माटे छे. एम जाणीने संयम उत्थानवडे उठीने विचरे छे. जो अन्दर रहेतां निद्रा प्रमाद थाय तो त्यांथी नीकळीने शियाळानी रात विगेरेमां खुल्ली जग्यामां मुहूर्त मात्र निद्रा प्रमाद दूर करवा ध्यानमां उभा रह्या. (६) वळी ज्यां आगळ उत्कुटुक आसन विगेरेथी आश्रय लेवाय तेवा स्थानमां अथवा ते स्थानोवडे ते भगवानने भय करावनारा अनेक जातिना ठन्ड ताप विगेरेथी अथवा अनुकूळ प्रतिकूलरूपे परिषह उपसर्गो थया तथा शून्य घर विगेरेमां अहिं नकुळ (साप नोळीया) विगेरे भगवाननुं मांस विगेरे खाता हता, अथवा मसाण विगेरेमां गीध विगेरे पक्षीओ मांस खाता हता, (तो पण भगवान रागद्वेष करता नहोता.) (७)

वळी कुचर ते चोर परदार लंपट विगेरे कोइ शून्य घर विगेरेमां भगवानने दुःख देता हता तथा गाम रक्षा करनारा कोटवाळ

विगेरे त्रिक चोतरा विगेरे उपर उभेला भगवानने जोइने पूछतां जवाब न आपवाथी हाथमां शक्ति कुंत (भाला) विगेरे राखनारा भगवानने पीडा करता हता. तथा इन्द्रियोर्थी उन्मत्त थयेल स्त्रीओ भगवान पासे एकांतमां भोगनी याचना सुंदर रुप जोइने करती हती. अथवा शरीर सुगंधी जोइने अथवा पोतानुं तेवुं सुंदर शरीर बनाववा इच्छता पुरुषो भगवान पासे उपाय पूछता हता. जवाब न मळवाथी भगवानने दुःख पण देता हता.

इहलोइयाइं परलोइयाइं भीमाइं अणेगरूवाइं । अवि सुब्भि दुब्भिगन्धाइं सद्दाइं अणेगरूवाइं ॥९॥
अहियासए सया समिए फासाइं विरूवरूवाइं । अरइं रइं अभिभूय रीयइ माहणे अबहुवाई ॥१०॥
स जणेहिं तत्थ पुच्छिसु एगचरावि एगया राओ । अव्वाहिए कसाइत्था पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥११॥
अयमंतरंसि को इत्थ ? अहमंसित्ति भिक्खुआहट्टु । अयमुत्तमे से धम्मे तुसिणीए कसाइए झाइ ॥१२॥

आ लोकमां एटले मनुष्ये करेला दुःखना स्पर्शो तथा देवताए करेला दिव्य स्पर्शो तथा तिर्यचोए करेला उपसर्गोनां दुःखो तथा पर भवे करेलां पापोथी उदयमां आवेलां दुःखोने पोते समताथी सहे छे. अथवा आज जनममां जे दंडाना महार विगेरे दुःख दे छे. तथा ते शिवायना परलोक संबंधी भीम (भयंकर) जुदा जुदा उपसर्गो आवे छे. ते बतावे छे. एटले सुगंधीवाळा ते फुलनी माळा तथा चंदन विगेरे छे. अने कोहेलां मुडदां विगेरे दुर्गंधवाळा छे तेज प्रमाणे वीणा वेणुं मृदंग विगेरेथी मधुर अवाज तथा कमेलक (उंट) नुं बराडवुं विगेरे कानमां कठोर अवाज लागे छे. ते बन्नेमां भगवान रागद्वेष करता नथी. [९]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा बधो काळ पांचे समितिओथी युक्त छे अने जे कंइ दुःखना स्पर्शो आवे तो संयममां अरति लावता नथी तेम सुंदर भोगोमां रति लावता नथी एम बन्ने परिषहमां समभाव धारीने संयम अनुष्ठानमां वर्ते छे. पोते कोइ पण जीवने दुःख न देवुं, एवा माहण बनेला जरुर पडतां एक बे उत्तर आपता विचरे छे. (१०)

ते भगवान महावीर साडा बार पक्ष वधारे एवा बार वरस (बार वरस अने साडा बार पखवाडीयां) सुधी एकला विचरता शून्यगृह विगेरेमां रहेता लोकोथी पूछाता के तमो कोण छो ?

केम अहीं उभा छो अथवा क्यांथी आव्या छो. ते समये पोते मौन रहेता, तथा दुराचारीओ विगेरे एकला भटकता त्यां आवीने कोइ वखत रातमां अथवा दिवसमां पूछता. पण भगवाने उत्तर न आपवाथी क्रोधमां आवी भगवानने मौन देखी तेओ अज्ञानथी दृष्टि छवाइ जतां दंड मुक्की विगेरेथी मारीने पोतानुं अनार्यपणुं आचरता हता. पण भगवान तो समाधिमां रही धर्म ध्यानमां चित्त राखीने सारी रीते सहेता हता. प्र०-भगवान केवा हता ? उ-प्रतिज्ञा रहित एटले तेनुं वेर लेवुं एवी इच्छा राखता नहोता.

प्र०—ते आवेलाओ केवी रीते पूछता हता ? उ०—अत्र कोण रहेलुं छे ? एम संकेत करीने दुराचारीओ अथवा काम करनाराओ पोताना साथीओनी राह जोइ भगवानने पूछता हता. वळी हंमेशां त्यां रहेला दुष्ट ध्यानवाळा पूछे छे. पण भगवान मौन रहेला हता. पण कोइ वखतघणोज दोष थतो होय तो टाळवाने माटे थोडुं बोलता पण हता. प्र०-केवी रीते ? उ०—हुं भिक्षु छुं, आम बोलतां जो तेओ संमति आपे तो त्यां रहेता, पण ते आवेला दुष्टोनी इच्छामां विघ्न थतुं होय, तो क्रोधायमान थइने मोहांध बनी वर्तमान लाभ देखनारा तुच्छ बुद्धिथी कहे के अमारा मुकामथी हमणां निकळ, तो भगवान आ अप्रीतिनुं स्थान छे, एम

For Private and Personal Use Only

विचारि तुर्त नीकळी जता. अथवा भगवान पोते प्रथमथी त्यांना मुख्य धणीनी आज्ञा लीधेली होवाथी नीकळता नहोता, अने आ मारुं ध्यान उत्तम धर्म छे. मारो आचार छे, एम विचारी ते आवनार गृहस्थनां कडवां वचन विगेरे सहन करी मौन रही जे थवानुं होय ते थाय, एम मानी दुःख सहन करे, पण ध्यानथी चलायमान थता नहोता. वळी शुं करता ते कहे छे.

जंसिप्पेगे पवियन्ति सिसिरे मारुए पवायन्ते। तंसिप्पेगे अणगारा हिमवाए निवायमेसन्ति ॥१३॥
संघाडीओ पवेसिस्सामो एहा य समादहमाणा। पिहिया व सक्खामो अइदुक्खे हिमगसंफासा ॥१४॥
तंसि भगवं अपडिन्ने अहे विगडे अहीयासए। दविए निक्खम्म एगया राओ ठाइए भगवं समियाए ॥१५॥
एस विहि अणुक्कन्तो माहणेण मईमया। बहुसो अपडिण्णेण भगवया एवं रीयन्ति ॥१६॥
त्तिबेमि ॥ नवमस्य द्वितीय उद्देशकः ९—२ ॥

शियाळाथी ऋतुमां केटलाक माणसो कपडांना अभावे दांत वीणा विगेरे युक्त कंपता हता. अथवा ठंडीना दुःखनो अनुभव करी आर्त्त ध्यानमां पडता हता. तेवा हिम पडवाना समयमां ठंडो वा वातां केटलाक साधु जेओ पासत्था जेवा हता, तेओमांना केटलाक तेवी घणी ठंड पडतां दुःखी थइने ठंडने दूर करवा माटे भडको करता अथवा अङ्गारानी सगडी शोधता तथा प्रावार (कामळो) विगेरे याचता अथवा अनगार ते पार्श्वनाथ भगवानना तिर्थमां रहेला गच्छवासी साधुओज ठंडथी पीडाइने ज्यां वायरो न आवे, तेवी शाळा विगेरे बंध जग्या शोधता हता. (१३)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वळी (सङ्घाटी शब्दवडे ठंड दूर करनारां बे अथवा त्रण वस्त्र जाणवां.) ते सङ्घाटी शोधवा माटे ठंडथी पीडाएला विचारता के अमे क्यांयथी मागी लावीए. अने अन्य धर्मीओ तो एवा समिध बाळवानां लाकडां शोधता हता. के जेने बाळीने ठंड दूर करवा शक्तिवान थइशुं. तथा सङ्घाटीवडे एटले कामळो विगेरे ओढीने रहेता.

प्र०—शा माटे एवुं करे छे ? उ०—कारण के आ हिमनो ठंडो पवन दुःखे करीने सहन थाय छे.

आवी सखत ठंडी ऋतुमां कोइ अन्य तापस विगेरे तापणुं तापी ठंड दूर करता, कोइ आ जैन साधु कामळो ओढी निभावता, तेवे समये भगवान शुं करता ? ते कहे छेः—आवी ककडती ठंडी अने ठंडा पवनमां बधा शरीरने पीडा थवा छतां भगवान् जेओ ऐश्वर्य आदि गुण युक्त छे, तेओ समभावे ठंडने (तापणुं के कपडा विना) सहे छे.

प्र०—भगवान केवा छे ? उ०—प्रतिज्ञा रहित छे. एटले तेओ ज्यां ठंडी न आवे तेवुं बंध कबजावाळुं मकान रहेवा विगेरे माटे याचता नथी. प्र०—तेओ कइ जग्याए ठंड सहे छे ?

उ०—बाजुनी भींतो रहित तथा उपरनुं ढांकण होय के नहीं, तेवा स्थानमां रहेता, तथा फरी भगवानना गुण कहे छे, राग द्वेष दूर थवाथी शुद्ध आत्मा द्रव्यवाळा अथवा कर्मग्रंथि दूर थवाथी द्रव्य संयम छे. ते द्रववाळा द्रविक (संयमी) छे, तेम मकानमां ठंडी सहेतां कदाच घणी सखत ठंडी पीडे, तो ते ढांकेला मकानथी बहार नीकळी कोइ वार रात्रीमां बे घडी सुधी त्यां रही ठंडी सहन करी पाछा तेज मकानमां आवीने समताथी खच्चरना दृष्टांतथी सहेवाने शक्तिवान थतां.

बीजो उद्देशो समाप्त थयो.

For Private and Personal Use Only

त्रीजो उद्देशो कहे छे.

बीजो उद्देशो कहीने हवे त्रीजो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां भगवाननी शय्या (वसति) नुं वर्णन कर्युं. अने ते स्थानोमां जे उपसर्गो अने परीषहो सहन कर्या, ते बताववा आ उद्देशो कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानी आ सूत्र गाथाओ छे.

तणफासे सीयफासे य तेउ फासे य दंसमसगे य । अहियासए सया समिए फासाइं विरूवरूवाइं ॥१॥
अह दुच्चरलाढमचारी वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च । पंतं सिज्जं सेविंसु आसणगाणि चेव पंताणि ॥२॥
लाढेहिं तस्सुवसग्गा बहवे जाणवया लूसिंसु । अह लूहदेसिए भत्ते कुक्कुरातत्थ हिंसिंसु निवइंसु ॥३॥
अप्पे जणे निवारेइ लूसणए सुणए दसमाणे । छुच्छुकारिंति आहंसु समणं कुक्कुरा दसंतुत्ति ॥४॥

कुश दर्भ विगेरे तृणना कठोर फरसो, तथा ठंडीना स्पर्शो तथा ग्रीष्म ऋतुमां उनाळा विगेरेनो ताप दुःखदायी हतो अथवा भगवानने चालतां तेज (अग्नि) कायज हतो, तथा डांसमच्छरो विगेरे हता, तेवा जुदी जुदी जातिना स्पर्शोने भगवान समताथी अथवा समितिवडे सहन करता.

वळी दुःखथी विहार थाय, तेवो दुश्कर देश लाढ छे, तेमां पण पोते विचर्या, तेना बे भाग छे, एक वज्र भूमि तथा बीजी शुभ्र भूमि छे, ते बंने जग्याए विचर्या छे, तथा प्रांत ते शून्य ग्रह विगेरे वसतिमां रहीने अनेक उपद्रवो भगवाने सहन कर्या,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा धूळना ढगला, जाडी रेती वेकर (वेळु) तथा माटीनां ढेफां विगेरेना प्रांत (तुच्छ) आसनो तथा लाकडां जेवां तेवां पडेलां तेना उपर पोते बेसता, (१) तथा ते लाढा देशमां जे बे विभाग उपर बताव्या तेमां माये लोकोना आक्रोश तथा कूतरांना करडवा विगेरेना घणा प्रतिकूल उपसर्गो थया, ते बतावे छे.

जनपदते देश—अने तेमां उत्पन्न थयेला ते जानपद माणसो छे, ते अनार्य देश होवाथी अनार्यो छे, तेथी ते दुष्टोए दांतथी करडवुं, भारे दंडनो प्रहार विगेरेथी दुःख देवुं; (अपि शब्दना अर्थमां अथ शब्द छे, तेथी एम जाणवुं, के) त्यां भोजन पण लुखुं अंतप्रांत आपता, तथा अनार्यपणाथी स्वभावथीज क्रोधी हता अने रुना अभावे घासवडे शरीर ढांकता, तेओ भगवान उपर विरूप आचरता हता, अने शीकारी कूतराओ भगवान उपर करडवा आवता (३) अने ते देशमां भाग्येज हजारमां एक दयाळु जन हतो के जे करडवा आवेला कूतराने अटकावे, उलटा भगवानने लाकडी विगेरेथी मारीने कूतराने तेना उपर दोडाववा सीत्कार (छुछु) करता के कोइ रीते आ साधुने ते कूतराओ करडे ! आवा दुष्ट अने भयङ्कर देशमां पण भगवान् छ मास सुधी रह्या वळी—

एलिक्खए जणा भुज्जो बहवे वज्जभूमि फरुसासी । लट्ठिं गहाय नालियं, समणा तत्थ य विहरिंसु ॥५॥
एवंपि तत्थ विहरंता, पुट्ठपुव्वा अहेसिं सुणिएहिं । संलुच्चमाणा सुणएहिं दुच्चराणि तत्थ लाढेहिं ॥६॥
निहाय दंडं पाणेहिं तं कायं वोसज्जमणगारे । अह गाम कंटए भगवंते, अहियासए अभिसमिच्चा ॥७॥
नागो संगामसीसे वा पारए, तत्थ से महावीरे । एवंपि तत्थ लाढेहिं अलद्धपूव्वोवि एगया गामो ॥८॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपर बतावेल कष्ट आपनार ज्यां माणसो छे, तेवा देशमां भगवान वारंवार विचर्या, अने ते वज्र भूमिमां घणा माणसो लुखुं खानारा होवाथी क्रोधी हता, अने तेथी साधुने देखीने कदर्थना करे छे, तेथी बीजा साधुओ बौद्ध विगेरेना हता; तेओ शरीर प्रमाण अथवा तेथी चार आंगळ वधारे लांबी नळी (लाकडी) कुतरा हाकवा माटे हाथमां राखीने विचरता हता. (५)

वळी लाकडी विगेरेनी सामग्री राखवाथी बुद्ध मतना साधुओ विचरी शकता, अने ते प्रमाणे कूतराओथी करडावानो डर तथा तेमने निवारण करवानुं मुश्केल होवाथी अनार्य लोकना लाढ देशमां गाम विगेरेमां विचरवुं मुश्केल हतुं. ॥६॥

प्र०—आवा कठण देशमां भगवान् त्यारे केवी रीते विचर्या : ते कहे छे—प्राणीओ जेनावडे दंडाय ते दंड मन वचन काया संबन्धी छे, ते दंडने भगवाने छोडी दीधो, तेज प्रमाणे कायानो मोह छोडीने ते अणगार (भगवाने) गाम कंटक ते गाम-डाना नीच लोकोनां कठोर वाक्यो निर्जरानुं कारण मानीने समताथी सहन कर्या. (७)

प्र०—केवी रीते सहन कर्या ? ते दृष्टांत बतावीने कहे छे.

जेम हाथी संग्रामना मोखरे आगळ वधीने शत्रुना लश्करने भेदीने तेनी पार जाय छे, ते प्रमाणे भगवान महावीर ते लाढ देशमां परीषहनी सेनाने जीतीने तेनाथी पार उतर्या, तथा ते लाढ देशमां गामो थोडां होवाथी कोइवार कोइ स्थळे गाम वखते मळतुं पण नहोतुं (जंगलमां पण पडी रहेतां.)

उवसंकमन्तमपडिन्नं, गामंतियमि अप्पत्तं; । पडिनिक्खम्मित्तु लूसिंसु, एयाओ परं पलेहीत्ति ॥९॥

For Private and Personal Use Only

हयपुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु कुंतफलेण; । अदु लेलुणा कवालेण, हंता बहवे कंदिसु ॥१०॥

गोचरी लेवा जतां अथवा मकानमां रहेवा जतां भगवान प्रतिज्ञा रहित हता, एटले गाम पासे आवेलुं होय, अथवा गाम न आव्युं होय, तो एम नहोता करता के; हुं अहीं हमेशां रहीश, अथवा अहीं नहीं रहुं, तथा त्यां अनार्य लोको भगवाननी पासे आवीने प्रथम मारता, अने कहेता के आ गामथी दूर जाओ. (९) तथा कदी गाम बहार रहेता तो त्यां पण अनार्य लोको आ-वीने प्रथम दंड (लाकडी) अथवा मुक्कीथी मारता, अथवा भालानी अणीथी माटीना ढेफाथी अथवा घडाना ठीकराथी मारी मारीने अनार्य लोको बीजाने बोलता के आवो आवो ! तमे जुओ तो खारा के आ कोण छे ? ए प्रमाणे कलकल करता हता. (१०)

मंसाणि छिन्नपुव्वाणि उट्ठंभिया एगया कायं; । परीसहाइं लुंचिंसु, अदुवा पंसुणा उवकारिंसु ॥११॥
उच्चा लइय निहणिंसु, अदुवा आसणाउ खलइंसु । वोसट्ठकायपयणाऽऽसी दुक्खसहे भगवं अपडिन्ने ॥१२॥

कोइ वखत तो भगवान पासे आवीने तेमना शरीरने झालो राखीने तेमांथी मांस कापी काढता, तथा बीजा पण दुःख देनारा परीषहो आपता, अथवा धूळथी हेरान करता. (११)

वळी कोइ वखत भगवानने उंचे उंचकीने नीचे पटकता हता, अथवा गोदोहिक उत्कुटुक वीरासन विगेरेथी धक्को मारी पाडी देता, आवुं दुःख थवा छतां पण भगवाने तो कायानो मोह मुकी दीधेलो होवाथी परिषह सहन करवामां लीन हता, अने मुश्केलीथी सहन थाय, तेवा परिषहोना दुःखने सहेता, पण ते दुःखने दूर करवानी अथवा देवा करवानी इच्छा न धरावताथी अप्रतिज्ञावाळा हता.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुःख सहेनारा भगवान केवी रीते हता ते दृष्टांतथी बतावे छे.

सूरो संगामसीसे वा संवुडे तत्थ से महावीरे। पडिसेवमाणे फरुसाइं; अचले भगवं रीयित्था ॥१३॥
एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया। बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रियंति ॥१४॥

जेम संग्रामना मोखरे शूरवीर पुरुष शत्रुना सैन्यना भाला विगेरेथी भेदावा छतां पण बखतर पहेरेलुं होवाथी पाछो हठतो नथी, तेज प्रमाणे भगवान महावीर पण ते लाढ विगेरे देशोमां परिषहरूप शत्रुओए पीडा करवा छतां पण कठोर परीषहोना दुःखोने मेरु माफक निष्कंप बनीने धीरजवडे संवृत्त अंगवाळा बनीने सहेता ज्ञान दर्शन चारित्ररूप मोक्ष मार्गमां विचरे छे. (१३) आज प्रमाणे गया उद्देशामां बताव्या प्रमाणे बुद्धिमान भगवान महावीर कदाग्रह विना दुःखो सहेता विचर्या—

नवमा अध्ययननो त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

चोथो उद्देशो कहे छे.

त्रीजो उद्देशो कहीने हवे चोथो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे के त्रीजा उद्देशामां भगवाने सहेला उपसर्ग परीषहोनुं वर्णन छे, अने आ उद्देशामां पण रोग आतंक पीडा आवतां पण तेनी चिकित्सा (उपाय) छोडी दइने भयंकर रोग उत्पन्न थया छतां पण बरोबर सहेता, अने एकांत तप चरणमां उद्यम करता, ते बतावशे. आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छेः—

For Private and Personal Use Only

ओमायरियं चाएइ, अपुट्ठेऽवि भगवं रोगेहिं; । पुट्ठे वा अपुट्ठे वा, नो से साइज्जई तेइच्छं ॥१॥
संसोहणं च वमणं च, गायब्भंगणं च सिणाणं च । संबाहणं च न से कप्पे दंतपक्खालणं च परिन्नाए ॥२॥

उपर बतावेला शीतोष्ण दंशमशक आक्रोश ताडना विगेरे परिषहोमां थोडुं दुःख होवाथी सहेवा शक्य हता, पण उणोदरी (ओछुं खावुं) ते शक्य न होतुं,पण भगवान महावीर तो वातादि क्षोभना अभावे रोगमां सपडायां न होता छतां,पण ओछुं खावाने शक्तिवान थया एटले लोको तो रोगमां सपडाया होय, त्यारे ते रोग दूर करवा ओछुं खाता हता, पण भगवान तो ते रोगना अभावमां पण ममत्व ओछो करवा ओछुं खाता, अथवा खांसी के दम विगेरेना द्रव्य रोगथी पीडाया नहोता, छतां पण भविष्यमां आववाना भावरोगरूप कर्मने दूर करवा माटे उणोदरी तप करता हता.

प्र०—शुं भगवानने तेवा खांसी दम विगेरेना रोगो थता नहोता ? के भाव रोगो दूर करवाना कारणे उणोदरी तप कर्यो ?

उ०—कहे छे भगवानने खांसी विगेरे रोगो स्वभावथीज काया साथे थता हता, अने नवा तो शस्त्रना घा विगेरे लागवाथी थता, ते बतावे छे. ते भगवान महावीर कुतरांना करडवाथी अथवा खांसी श्वास विगेरेना रोगोथी पीडाय, छतां पण ते चिकित्सा (रोगना उपाय) ने करता नथी, अर्थात् तेओ रोगनी शांति करवा औषध लेवानी इच्छा करता नहोता. (१)

ते बतावे छे, शरीरनुं बरोबर रीते शोधवुं ते निःसोत्र (निसोतर) सुवर्णमुखी विगेरेथी जुलाब लेता नहोता, तथा मदनफळ (मींढळ विगेरेथी उलटी (वमन) करता नहोता, तथा सहस्र पाक तेल विगेरेथी शरीरनुं अभ्यंगन (चोळवुं) करता नहोता. तथा

उद्वर्त्तन विगेरेथी स्नान करता नहोता. हाथ पग विगेरेनुं संबाधन (दबाववुं) करावता नहोता. तथा आखुं शरीर अशुचि (गंदकी) थी भरेलुं छे, एम जाणीने दातण विगेरेथी दांत साफ करता नहोता.

विरए गामधम्मेहिं, रीयइ माहणे अबहुवाई। सिसिरंमि एगया भगवं, छायाए झाइ आसीय ॥३॥

आयावइ य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभित्तावे। अदु जाव इत्थ लूहेणं, ओयणमंथुकुम्मासेणं ॥४॥

वळी पांचे इंद्रियोना विषयोमां शब्द विगेरेथी मोह न पामतां संयम अनुष्ठानमां तेने दोरे छे, तेथी तेओ विरत छे, तथा माहन (जीवोना रक्षक) प्रभु अबहु (थोडुं) बोलनारा छे, (एक वार बोले तेथी अबहु शब्द लीधो छे, बाकी तो अवादी छे एवुं बोलाय) तथा कोइ वखत शिशिर ऋतु (शीयाळा)मां भगवान धर्म ध्यान अथवा शुक्ल ध्यानमां स्थिर हता. (३)

वळी (छट्ठी विभक्तिने सातमीना अर्थमां लेतां) ग्रीष्म ऋतुमां भगवान् (खुल्ला मेदानमां) आतापना लेता ते बतावे छे. उत्कुटुक आसने भगवान् सूर्यना तडका सन्मुख बेसता, अने धर्मना आधाररूप देहने लुखा एवा कोदरा भातथी तथा बोरकूट विगेरेनो साथवो, तथा अडद (जे उत्तर दिशामां थाय छे) अथवा बाफेला वासी अडद अथवा सिद्ध मासा विगेरेथी कायानो निभाव करता.

हवे ते काळ अवधि (मुदत)ना विशेषणवडे बतावे छे.

एयाणि तिन्नि पडिसेवे, अट्ठ मासे अ जावयं भगवं;। अपि इत्थ इगया भगवं अद्धमासं अदुवा मासंपि ॥५॥

अवि साहिए दुवे मासे छप्पि मासे अदुवा विहरित्था;। राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायमेगया भुंजे ॥६॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कदाच कोइने एवी शंका थाय के प्रथम बतावेला भात मंथु तथा अडद साथे मेळवी खाता हशे, तेथी ते दूर करवा कहे छे. के ते त्रणे जो साथे मळे तो साथे लेइ खाता, अने त्रणेमांथी कोइ जुदुं जुदुं मळे तो तेम लेता अथवा एकलुं मळे तो तेम लेता अर्थात् त्रणमांथी जे मळे ते लेइ निर्वाह करता.

प्र०—आ केटली मुदत सुधी आम करता, ते कहे छे. (शीयाळा उनाळानी आठ मासनी ऋतुने ऋतुबद्ध काळ कहे छे. ते) आठे मास सुधी भगवाने तेवा लुखा भोजनथी निर्वाह कर्यो तथा तेज प्रमाणे पाणी पण अडधो मास के एक मास भगवाने तेवुं (सादुं) पीधुं. (५) तथा बे मासथी अधिक अथवा छ मासथी पण वधारे भगवाने पाणी पण पीधा विना रात दिवस निर्वाह करी लीधो, हुं पाणी 'पीश' तेवी इच्छा (प्रतिज्ञा) पण न करी, तथा कोइवार वासी (खवाय तेवुं) मळ्युं होय तो कोइ वार खाइ पण लेता. (६)

छट्ठेण एगया भुंजे अदुवा अट्ठमेण दसमेणं, । दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिंन्ने ॥७॥

णच्चा णं से महावीरे नोऽविय पावगं सयमकासी, । अन्ने हिंवाण कारित्था, कीरंतंपि नाणुजाणित्था ॥८॥

वळी कोइ वखत छट्ठनो तप करी पारणुं करे छे,एटले प्रथमना दिवसे एक वखत खाय. त्यारपछी बे दिवस उपवास करे,अने चोथे दिवते पाछुं एकवार खाय,एटले प्रथमनो एक वचला चार अने चोथादिवसनो एक टंक मळी छ वखत न खावाथी छठ भक्त थाय छे. ए प्रमाणे बे बे टंक एकेक दिवसना वधारतां आठ भक्त त्यागवाथी अठम अने तेवी रीते दशम तथा बार भक्त पच्चक्खाण

For Private and Personal Use Only

कर्युं. एटले वचमां पांच उपवास करे अने प्रथमनां दिवसे तथा सातमा दिवसे एक वार खांय. आ बधो तप पोते शरीरमां समाधि राखीने करता पण मन मेलुं करता नहोता, तथा नियाणुं (प्रतिज्ञा) करता नहोता, (७) तथा हेय उपादेय वस्तु तत्वने महावीरे जाणीने ते महावीर प्रभुए कर्मनी प्रेरणा करवामां वीर बनीने पाप कर्म पोते जाते न कर्युं, न बीजा पासे कराव्युं, अने अन्य पाप करनारने पोते प्रशंस्या नहीं, (८)

गामं पविसे नगरं वा घासमेसे कडं परट्ठाए । सुविसुद्धमेसिया भगवं, आयतजोगयाए सेवित्था ॥९॥

अदु वायसा दिगिंच्छत्ता जे अन्ने रसेसिणो सत्ता । घासेसणाए चिट्ठंति, सययं निवइए य पेहाए ॥१०॥

भगवान् महावीर गाम अथवा नगरमां पेसीने गोचरी शोधता, पण ते पर माटे बनावेलुं एटले उद्गम दोष रहित होय ते लेता, तथा सुविशुद्ध एटले उत्पाद दोष रहित लेता, आ प्रमाणे एषणा (गोचरी) ना दोष त्यागीने भगवान आयत ते संयम अने मन वचन कायाना योग (व्यापार) वाळा बनीने ज्ञान चतुष्टयवडे त्रणे गुप्ति पाळता आयत योगवाळो भाव (ते आयत योगता) छे, ते वडे शुद्ध आहार लावी गोचरी करतां पांच दोष थाय, ते टाळीने गोचरी करता [अहींयां पण ४२ दोष गोचरी लेतां अने '५' गोचरी करतां एम ४७ दोष टाळवानुं जाणवुं] [९]

हवे भगवान ज्यारे गोचरीए नीकळता, त्यारे मार्गमां भूखथी पीडायेला कागडा तथा बीजां रस [पाणी] नी इच्छावाळां कपोत कबुतर विगेरे सत्वो [प्राणीओ] तथा खावानुं शोधवा माटे जे प्राणीओ रस्तामां बेठेलां होय, तेमने जमीन उपर बरोबर

जोइने तेमने खावा पीवामां अडचण न पडे तेवी रीते हमेशां पोते धीरे धीरे गोचरीने माटे चाले छे. [१०]

अदुवा माहणं च समणं वा गाम पिण्डोलगं च अतिहिं वा; । सोवागमूसियारिं वा कुक्कुरं वावि विट्ठियं पुरओ वित्तिच्छेयं वज्जन्तो तेसिमप्पत्तियं परिहरन्तो; । मंदं परक्कमे भगवं अहिंसमाणो घासमेसित्था ॥१२॥

अथवा ब्राह्मणने लाभ माटे उभेलो जाणीने तथा बौद्ध मतना साधु आजीविक [गोशाळाना मतना] साधु तथा परिव्राट तापस अथवा पार्श्वनाथना अनुयायी जैन साधुमांथी कोइपण होय, अथवा गामना भीखारीओ जे होजरी भरवा माटे भटकता होय, अथवा कोइ अतिथि [परोणा] मुसाफर होय, तथा चांडाळ के बीलाडी कूतरुं के कोइपण प्राणी मोढा आगळ उभेलुं होय तो [११]

तेमनी वृत्तिने छेदवा विना अने मनमांथी दुर्ध्यान काढीने तेमने जरा पण त्रास आप्या विना भगवान् मंद मंद चाले छे, तथा पर एवा कुंथुवा विगेरे नाना जंतुओने दुःख दीधा विना पोते गोचरीमां फरे छे. (१२)

अवि सूइयं वा सुक्कं वा सीयं पिंडं पुराणकुम्मासं । अदु बुक्कसं पुलागं वा लद्धे पिंडे अलद्धे दविए ॥१३॥

अवि झाइ से महावीरे आसणत्थे अकुक्कुए झाणं । उड्ढं अहेतिरियं च पेहमाणे समाहिमपडिन्ने ॥१४॥

दहीं विगेरेथी भोजन भींजावेलुं होय, तेमज वालचणा विगेरे सुकुं होय, अथवा ठंडु होय अथवा घणा दिवसना रांधेला जुना कुल्माष होय अथवा बुक्कस ते जुनुं धान्य के भात विगेरे होय' अथवा जुनो साथवो बोरकुट विगेरे होय, अथवा घणा दिवसनुं भरेलुं गोरस अने घउंना मंडक (ढेबरां) होय, तथा जवना निष्पाव विगेरे पुलाक होय, ए प्रमाणे ठंडो उनो सारो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माडो रसिक अरसिक गमे तेवो पिंड मळे तो पण रागद्वेष छोडीने वापरता द्रविक (संयमवाळा) भगवान विचरे छे. एटले जो पुरी अथवा सारी गोचरी मळी होय तो अहंकारी थता नथी, तथा न मळतां ओछी मळतां खराब मळतां पोते पोतानी के आपनार गृहस्थनी निंदा करता नथी, (१३) पण तेवो आहार मळतां खाइने अने न मळतां भूख्या रहीने पण सारुं ध्यान महावीर प्रभु करे छे केवी अवस्थामां रहीने ध्यान करे छे, ते बतावे छे.

उत्कुटुक गोदोहिक वीरासन विगेरे आसन धारीने मुख विगेरेनी चंचळ चेष्टाने छोडीने धर्म ध्यान के शुक्ल ध्यान ध्याये छे.

प्र०—त्यां शुं ध्येयने भगवान धारे छे? ते कहे छे. उंचे, नीचे तथा तीरच्छा लोकमां जे परमाणु तथा जीव विगेरे विद्यमान छे, तेने द्रव्य पर्याय नित्य अनित्य विगेरे रुपपणे ध्यावे छे. तथा अंतःकरणनी पवित्र समाधिने देखता प्रतिज्ञा रहित बनीने ध्यान करे छे. (१४)

अकसाई विगयगेही य सद्दरूवेसु अमुच्छिए झाई। छउमत्थोऽवि परक्कममाणो; न पमायं सइंपि कुविरथा ॥१५॥ सयमेव अभिसमागम्म, आयएजोगमायसोहीए। अभिनिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समियासी ॥१६॥ एस विहि अणुक्कंतो, माहणेण मईमया। बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रियंति ॥१७॥ त्तिबेमि ९-४ ब्रह्मचर्यश्रुतस्कंधे नवमाध्ययने चतुर्थ उद्देशकः

कषाय रहित (क्रोध विगेरेथी पांपण विगेरे चडाव्या विना) तथा गृद्ध पणुं दूर करीने तथा शब्द विगेरेमां मूर्च्छा राख्या

For Private and Personal Use Only

विना ध्यान करे छे; मनने अनुकूलमां राग नथी तेम प्रतिकूलमां द्वेष नथी. तथा ज्ञानआवरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अंतराय, ए चार कर्म विद्यमान होवाथी छद्मस्थ हता, तो पण तेमणे विविध संयमना अनुष्ठानमां पराक्रम बतावीने कषाय विगेरे प्रमादने एकवार पण न कर्यो, (१५) तथा पोते पोताना आत्माथी तत्वने जाणीने संसार स्वभाव जाणनारा भगवान स्वयंबुद्ध बनी तीर्थ प्रवर्तन करवा उद्यम कर्यो. कह्युं छे केः—

आदित्याद्यैर्विबुधविसरः सारमस्यां त्रिलोक्या—मास्कन्दन्तं पदमनुपमं यच्छिवं त्वामुवाच; ॥
तीर्थं नाथो लघुभवभयच्छेदि तूर्णं विधत्स्वे—त्येतद्वाक्य त्वदधिगतये नो किमु स्यान्नियोगः ? ॥१॥

आदित्य विगेरे विबुधोनो समूह (नव लोकांकित देवो) छे, तेमणे तेमने कह्युं के हे नाथ ! आ त्रण लोकमां साररूप अनुपम जे शीघ्र भवोना भय छेदनार अने शिवपद आपनार तीर्थ (जैन शासन) छे. तेमने शीघ्र स्थापन करो ! आ प्रमाणे आवुं वाक्य तमारी स्मृति माटे काने न पड्युं होत, तो आ नियोग केवी रीते थात ? तथा तीर्थ प्रवर्त्तन माटे केवी रीते भगवाने उद्यम कर्यो ते बतावे छेः—

आत्म शुद्धिवडे एटले पोतानां कर्मनो क्षय उपशम तथा क्षय करवावडे सुप्रणिहित मन वचन कायाना योगो जे आयत योग छे, तेमने निर्मळ करी तथा विषय कषायो विगेरेने उपशम विगेरेथी दूर करवाथी ठंडी गुण प्राप्त करेला (शांत) भगवान छे. तथा माया रहित तेज प्रमाणे क्रोध मान लोभ रहित बनी जीवतां सुधी पांच समितिए समित (उपयोग राखी वर्त्तन करनारा) तथा त्रण गुप्तिथी गुप्त बनीने रह्या हता. (१६)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देशो समाप्त करवा कहे छे. आ प्रमाणे शास्त्रमां बतावेली विधिए श्री वर्द्धमानस्वामी जेओ चार ज्ञान युक्त छे, तेमणे अनेक प्रकारे नियणुं कर्या विना आचर्यो, कारण के ते प्रमाणे बीजो मुमुक्षु पण भगवानना दाखलाथी मोक्ष आपनार मार्गवडे आत्महितने आचरतो विचरे, आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. ते हुं कहुं छुं. जे वीर प्रभुना चरणनी सेवा करतां में सांभळ्युं छे.

आ प्रमाणे सूत्रानुगम तथा सूत्रालापक निष्पन्न निक्षेप सूत्र स्पर्शिक निर्युक्ति सहित वर्णव्यो छे. हवे नयोनुं वर्णन करे छे.

नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र शब्द समभिरुढ एवंभूत ए प्रमाणे सामान्यथी ७ नय छे. ते संमतितर्क विगेरेमां लक्षणथी अने विधानथी विस्तारथी कह्या छे, माटे अहींया तेज नयोने ज्ञान क्रिया ए बंने नयोमां समावीने समासथी कहीए छीए.

आ आचारांग सूत्रना अधिकारमां ज्ञान क्रिया एम बे नयोनो समावेश थाय छे, तेथी तथा ते ज्ञान क्रियाने आधिन मोक्ष होवाथी, अने मोक्ष माटे शास्त्रनी प्रवृत्ति छे, एम जाणवुं, अने अहींआं ज्ञान तथा क्रिया परस्पर संबंध राखीनेज विवक्षित कार्य सिद्धिमां समर्थ छे, पण एकलुं ज्ञान के एकली क्रिया समर्थ नथी, माटे अहीं ते बे ज्ञान क्रिया नयने समजावीए छीए.

ज्ञान नयवाळानो अभिप्राय.

ज्ञान प्रधान छे, पण क्रिया नहीं, कारणके समस्त (बधा) हेय पदार्थने त्यागवा, उपादेयने स्वीकारवा, ए प्रवृत्ति ज्ञानने आधीन छे. तेज बतावे छे, के सारी रीते निश्चय करेला सम्यग् ज्ञानथी प्रवर्त्तन करनारो अर्थ क्रियानो अर्थी पोतानुं कार्य बगाडतो नथी. कह्युं छे के.

विज्ञप्तिः फलदा पुंसां, न क्रिया फलदा मता। मिथ्याज्ञानात् प्रवर्त्तस्य, फलासंवाददर्शनाद् ॥ १ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुषोने जे ज्ञान छे, ते फळ देनारुं छे, पण क्रिया फळदायी नथी. कारण के मिथ्या ज्ञानवाळो क्रिया करवा जाय तो तेनुं अयोग्य फळ साक्षात् देखाय छे, अने सम्यग् प्रकारे ज्ञानथीज पार पहोंचाय छे, तथा विषय व्यवस्थितिनुं समाधान ज्ञान पूर्वक थाय छे, तथा बधा दुःखोनो नाश ज्ञानथीज थाय छे, अने ज्ञाननुंज अन्वयव्यतिरेकपणुं छे. एटले ज्ञान होय तो फळनी सिद्धि अने ज्ञान न होय तो फळनी असिद्धि छे; माटे दरेक रीते ज्ञाननुं प्रधानपणुं छे, ते बतावे छे. ज्ञानना अभावे अनर्थ दूर करवा माटे तैयारी करे तो पण करवा जतां अज्ञानताथी पतंगीया माफक अनर्थमां झीपलाइ जाय छे, अने ज्ञानना सद्भावे बधा अर्थोने अने अनर्थना संशयोने विचारीने यथाशक्ति विघ्नोने दूर करे छे, तेमज आगम पण कहे छे, "पढमं नाणं तओ दया" सूत्र छे. आ बधुं क्षायोपशमिकज्ञान आश्रयी कह्युं, अने क्षायिकने आश्रयी पण तेज प्रधान छे, कारण के नमेला सुर असुर देवताना मुकुटोना समुदायोनी वेदिकामां जेमना चरण युगलनी पीठ छे, तथा भव समुद्रना तटे पहोंच्या छे.

तथा दीक्षा लीधी छे, त्रण लोकना बंधु छे, तप चारित्र सारीरीते आदरवा छतां पण ज्यां सुधी जीव अजीव विगेरे बधा पदार्थोनुं परिच्छेद करनार घनघाति कर्म समूह क्षय थवारूप केवळज्ञान प्राप्त न थाय त्यां सुधी ते भगवानने मोक्ष प्राप्ति थती नथी, माटे ज्ञानज युक्तिए युक्त आ लोक परलोक फळनी इच्छित प्राप्ति करनार सिद्ध थाय छे,

क्रिया वादीनो नय (अभिप्राय)

क्रियाज आलोक परलोकनुं इच्छित फळनी प्राप्तिनुं कारण छे. कारण के ते युक्तिए युक्त छे. जो तेम न होय तो ज्ञानवडे देखवा छतां पण अर्थ क्रियाना समर्थन अर्थमां प्रमाता प्रेक्षा पूर्वकारी छतां पण जो छोडवा लेवारूप प्रवृत्ति क्रिया न करे तो तेनुं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञान पण निष्फळ जाय छे, कारण के ते ज्ञाननुं अर्थपणुं क्रिया साथे छे, कारण के जेनी जे अर्थ माटे प्रवृत्ति होय, तेनुं तेमां प्रधानपणुं छे, अने ते सिवायनुं अप्रधान (गौण) छे, ए न्याय छे, संविद् वडे विषय व्यवस्थाननुं पण अर्थ क्रियापणाथी अर्थपणुं क्रियानुं प्रधानपणुं बतावे छे, अन्वय व्यतिरेको पण क्रियामां सिद्ध थाय छे, कारण के सम्यक् चिकित्सानी विधि जाणनारो यथार्थ औषधनी प्राप्ति करे, तो पण उपयोग क्रिया रहित होय तो ते वैद रोगने दूर करी शकतो नथी. तेज कहुं छे. के—

शास्त्राण्यधीत्यापि भवंति मूर्खाः। यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् ॥
संचिन्त्यतामौषधमातुरं हि। किं ज्ञानमात्रेण करोत्यऽरोगम् ॥१॥

शास्त्रोने भणीने पण केटलाक क्रिया न करनारा मूर्खा होय छे, पण जे थोडुं भणेलो होय पण क्रिया करनारो होय ते विद्वान् छे. कारण के औषध चिंतवो, पण ते चिंतवेलुं औषध विना क्रिया करे शुं रोगीने निरोगी बनावी शकशे के ? वळी—

क्रियैव फलदा पुंसां, न ज्ञानं फलदं मतं; यतः स्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो, न ज्ञानात् सुखितो भवेत् ॥ १ ॥

पुरुषोने क्रियाज फलदायी छे. पण ज्ञान फलदायी नथी कारण के स्त्री,खावाना पदार्थ, तथा भोगववानी वस्तुओनो जाणनार एकला ज्ञानथी सुखीओ थतो नथी! पण ते क्रियाथी युक्त होय ते माणस पोतानी इच्छा प्रमाणे अर्थ मेळवनारो थाय छे.

जो पूछता हो के केवी रीते ! तो कहुं छुं. के " निश्चयथी देखेलामां न उत्पन्न थएलुं नथी, " अने ज्यां सकल (बधा) लोकमां प्रत्यक्ष सिद्ध अर्थ होय त्यां बीजुं प्रमाण मागी शकाय नहीं. ! तथा परलोकनुं सुख वांच्छतां होय, तेमणे पण तप चारित्रनी क्रियाज करवी, जिनेश्वरनुं वचन पण तेज कहे छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेइयकुलगणसंघे, आयरियाणं च पवणय सुए य। सव्वेसुऽवि तेण कयं, तवसंजममुज्जमन्तेणं ॥ १ ॥

चैत्य कुळ गण संघ आचार्य प्रवचनश्रुत, ए बधामां पण तेणे तप अने संयममां उद्यम करवाथी कर्युं जाणवुं, माटे आ क्रियाज स्वीकारवी, कारण के तीर्थंकर विगेरेए पण क्रिया रहित ज्ञानने पण अफळ कह्युं छे वळी कह्युं छे के—

सुबहुं पि सुअमधीतं, किं काहि चरण विप्पहूण (मुक्क) स्स ? अंधस्स जह पलित्ता, दीवसतसहस्सकोडिवि ॥१॥

घणाए सिद्धांत भण्यो होय, पण जो चारित्र रहित होय तो ते शुं करी शके ? जेमके घरमां लाखो करोडो दीवा कर्या होय तो पण अंधो केवी रीते कार्य सिद्ध करी शके ? अर्थात् देखवानी क्रियामां विफल होवाथी तेने दीवा नकामा छे. वळी क्षायोपशमिक ज्ञानथी क्रिया प्रधान छे, एम नहि, पण क्षायिक ज्ञानथी पण क्रिया प्रधान छे, जेमके जीव अजीव विगेरे संपूर्ण वस्तु परिच्छेदक केवळज्ञान विद्यमान होय, पण ज्यां सुधी क्रिया समाप्त करनारुं अयोगी गुणस्थाननुं 'ध्यानरूप क्रियापणुं' न फरसे, त्यां सुधी भवधारणीय कर्मनो उच्छेद थाय नही, अने तेनो उच्छेद न थवाथी मोक्ष प्राप्ति पण न थाय, माटे ज्ञान प्रधान नथी, पण चरणनी क्रियामां आलोक अने परलोकना इच्छित फळनी प्राप्ति छे, माटे ते क्रियाज प्रधान फळने अनुभवे छे.

आ प्रमाणे ज्ञान विना सम्यक् क्रियानो अभाव छे. अने ते क्रियाना अभावथी अर्थ सिद्धि माटे ज्ञाननुं वैफल्य छे. आ प्रमाणे बंने नयवाळो पोताना नयनी सिद्धि करी तेथी सामान्य बुद्धिवाळो शिष्य व्याकुल मतिवाळो बनीने गुरुने पूछे छे के आमां सत्य तत्व शुं छे ? आचार्यनो उत्तर—हे देवोने प्रिय भाइ ! अमे तो कह्युं छेज ? पण तुं भूली गयो ! कारण के ज्ञान तथा क्रियाना अभिप्रायो बन्ने एक बीजाने आधारेज बधा कर्म कंदना उच्छेदरूप मोक्षनां कारणो छे तेनुं दृष्टांत.

For Private and Personal Use Only

आवुं नगर ज्यारे बळ्युं, त्यारे अंदर रहेला आंधळो पांगळी बन्ने मळी जवाथी सुखेथी बहार नीकळ्या, तेज कह्युं छे. संजोयसिद्धीऍ फलं वदन्तीति. कारण के एक पैडाथी रथ चालतो नथी, बन्नेनो संयोग थतां कार्यनी सिद्धि थाय छे. पण स्वतंत्र प्रवृत्तिमां तो विवक्षित कार्यनी सिद्धि थती नथी, ए प्रसिद्धज छे. वळी क्रिया विनानुं ज्ञान हणायुं छे, आगममां पण सर्व नयोना उपसंहारना द्वार वडे आज विषय कह्यो छे. जेमके—

सव्वेसिंपि णयाणं बहुविहवत्तवय णिसामेत्ता । तं सव्वणय विसुद्धं जं चरण गुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥

बधा नयोनुं घणा प्रकारनुं वक्तव्य सांभळीने बधा नयथी विशुद्ध मंतव्यने चरण गुणमां स्थित साधु होय ते माने, तेथी आ आचारांगसूत्र ज्ञान क्रियारूप छे, तेने जाणेला सम्यग् मार्गवाळा साधुओ जेमणे कुश्रुत नदी कषाय माछलानां कुळथी आकुळ बनेल तथा प्रियनो वियोग अप्रियनो संयोग विगेरे अनेक दुःखथी मळेल महा आवर्त्तवाळुं मिथ्यात्व पवननी प्रेरणानी उपस्थापित भय शोक हास्य रति अरति विगेरे तरंगवाळुं विश्रसा वेलाथी चित थयेलुं सेंकडो व्याधि मगरना समूहना रहेवासवाळुं महा गंभीर भय आपनार त्रास उत्पादक महा संसार अर्णव (समुद्र) ने साक्षात् देखेलो छे, तेवा साधुओ ते संसार समुद्रथी पार जवा इच्छता होय तेमने आ आचारांग सूत्रमां बतावेलुं ज्ञान तथा क्रिया अव्याहत (निर्विघ्न) यानपात्र (वहाण) छे, एटला माटे मुमुक्षुए आत्यंतिक, एकांतिक, अनाबाध, शाश्वत, अनंत अजरामर, अक्षय, अव्याबाध तथा समस्त रागद्वेष विगेरे द्वंद्व रहित सम्यग दर्शन, ज्ञान, व्रत, चरणक्रियाकलापथी युक्त परमार्थ श्रेष्ठ कार्य जे सर्वोत्तम मोक्षस्थान छे, तेनी इच्छावाळा बनीने ते आचारांग सूत्रनो आधार लेवो, तेज ब्रह्मचर्य नामना श्रुतस्कंधनी निर्वृत्ति कुलवाळा श्री शील आचार्ये "तत्त्वादीत्या" नामनी वाहरि साधुना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहायथी आ टीका समाप्त करी छे, (श्लोक ग्रंथमान ९७६) छे.

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् । संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥१॥

७७२ वर्ष गुप्त वंशवाळा राजाओना संवत्सरनां गये थके भादरवा महिनानी शुक्ल पंचमीए.

शीलाचार्येण कृता गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा । सम्यगुपयुज्य शोध्यं, मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥२॥

शीलाचार्ये गंभूता (गांभु) मां रहीने आ टीका बनावी छे, तेने मात्सर्य [अदेखाइ] कर्या विना उत्तम साधुओए शोधवी.

कृत्वाऽऽचारस्य मया टीकां यत्किमपि संचितं पुण्यम् । तेनाप्नुयाज्जगदिदं निर्वृतिमतुलां सदाचारम् ॥३॥

अने में आ आचारांगनी टीका बनावीने तेथी जे कंइ पुण्य उपार्जन कर्युं होय, तेनाथी आ जगत्‌ना जीवो अतुल मोक्ष तथा सदाचार प्राप्त करो.

वर्णः पदमथ वाक्यं पद्यादि च यन्मया परित्यक्तम् । तच्छोधनीयमत्र च व्यामोहः कस्य नो भवति ? ॥४॥

वर्ण (अक्षर) पद वाक्य पद्य विगेरे जे माराथी पूर्वनी टीका के सूत्रमांथी छुटी गयुं होय; तो ते विद्वाने सुधारी लेवुं. कारण के व्यामोह (भूल) कोनी नथी थती ?

तत्त्वादित्या जेनुं बीजुं नाम छे एवी आ आचारांगसूत्रनी वृत्ति ब्रह्मचर्यश्रुतस्कंधनी छे ते समाप्त थइ.

आ प्रमाणे श्रीभद्रबाहुस्वामीए रचेल निर्युक्ति सहित आचारांगसूत्र प्रथम स्कंधनी श्रीवाहरिगणिए करेल सहायथी श्रीशीलांक आचार्ये तत्त्वादित्या एवा बीजा नामवाळी रचेली आवृत्ति संपूर्ण थइ.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसंदृब्धनिर्युक्तिसंकलिताचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्य वृत्तिः श्रीवाहरिगणिविहितसाहाय्यकेन श्रीशीलाङ्काचार्येण तत्त्वादित्यापराभिधानेन विहिताऽऽयाता संपूर्त्तिम्।

For Private and Personal Use Only

स्कंध २ जो (अध्ययन पांचमुं)

जयत्यनादिपर्यन्तमनेकगुणरत्नभृत । न्यत्कृताशेपतीर्थेशं तीर्थं तीर्थाधिपैर्नुतम् ॥ १ ॥

अनादि; अनंत काळ रहेनारुं, अनेक गुण रत्नोथी भरेलुं, बधा मतवाळाने सीधे रस्ते लावनार अने तीर्थंकरोए नमस्कार करेलुं एवुं तीर्थ (जैन शासन) जयवंतु वर्त्ते छे,

नमः श्रीवर्द्धमानाय, सदाचारविधायिने । प्रणताशेषगीर्वाणचूडारत्नार्चितांह्रये ॥ २ ॥

सदाचार बतावनारा अने नमेला बधा देवताओना मुकुटना रत्नोथी जेना पग पूजीत छे. एवा श्रीवर्द्धमानस्वामीने नमस्कार थाओ.

आचारमेरोर्गदितस्य लेशतः, । प्रवच्मि तच्छेषिकचूलिकागतम् ॥

आरिप्सितेऽर्थे गुणवान कृती सदा । जायेत निःशेषमशेषितक्रियः ।।३।।

आचारांग सूत्ररूप मेरुपर्वतनी चूलिका समान आ चूलिकामां जे थोडो विषय आवेल छे, तेने थोडामां कहुं छुं कारणके कारण के हंमेशा कृत्य करनारो गुणवान पुरुष आरंभेला इच्छित अर्थमां बाकी रहेली क्रिया करवाथीज संपूर्णपणा(नी अर्थसिद्धि)ने पामे छे.

नव ब्रह्मचर्यअध्ययनरूप आचार प्रथम श्रुतस्कंध कह्यो, हवे अग्रश्रुतस्कंध आरंभे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे.

पूर्वे आचारना परिमाणने बतावतां कह्युं के—

नवबंभचेरमइओ अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ । हवइ य सपंचचूलो बहुबहुअयरो पयग्गेणं ॥ १ ॥

नव ब्रह्मचर्यवाळो, अढार हजार पदवाळो पंच चूला सहित पदोना अग्रवडे घणो घणो आ वेद (जैनागम)आचारांग थाय छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेमां प्रथम स्कंधमां नव ब्रह्मचर्य अध्ययनोने कह्यां, अने तेमां पण समस्त विवक्षित अर्थ कह्यो नथी अने कहेलो विषय पण संक्षेपथी कह्यो छे, जेथी न कहेवायेला विषयनो कहेवा माटे तथा संक्षेपमा कहेला विषयने विस्तारथी कहेवा तेना अग्रभूत (मुख्य) चार चुडाओ पूर्वे कहेला विषयनो संग्राहिकज अर्थ बतावे छे, तेथी ते अर्थवाळो आ बीजो अग्रश्रुत स्कंध छे. एथी आवा संबंधे आवेला आ स्कंधनी व्याख्या कहेवाय छे. नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्य अग्रना निक्षेपा बताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

दव्वो(१) गाहण(२) आएस(३) काल(४) कम(५) गणण(६) संचए(७) भावे(८) ॥
अग्गं भावे उ पहाण(१) बहुय(२) उवगारओ(३) तिविहं ॥ निर्युक्ति गाथा, ॥ २८५ ॥

द्रव्य अग्र बे प्रकारे छे, आगम अने नोआगम विगेरे छे. ते सिवाय व्यतिरिक्तमां द्रव्याग्र सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यना वृक्ष (झाड) कुंत [भाला] विगेरेनो जे अग्रभाग छे ते लेवो. अवगाहना अग्र जे जे द्रव्यनो नीचलो भाग अवगाहना करे ते अवगाहना अग्र छे. जेमके मनुष्य क्षेत्रमां मेरु छोडीने बीजा पर्वतोनी उंचाइनो चोथो भाग जमीनमां दटायेलो छे अने मेरु पर्वतनो एकहजार जोजन भाग दटायेलो छे.

आदेश अग्र—आदेश कराय ते आदेश छे अने ते व्यापारनी नियोजना छे. अहीं अग्र शब्द परिमाण वाची तेथी ज्यां परिमित पदार्थोनो आदेश देवाय ते आदेश अग्र छे. ते आ प्रमाणे–त्रण पुरुषोवडे जे कृत्य कराय छे अथवा तेमने जमाडे छे.

कालाग्र—अधिकमास छे. अथवा अग्र शब्द परिमाणवाचक छे, तेमां अतीतकाल अनादि छे. अनागत [आवनारो] भविष्य काल अनंत छे अथवा सर्वद्धा–संपूर्ण काळ छे.

क्रमाग्र—परिपाटीवडे अग्र ते क्रमाग्र छे. आ द्रव्यादि चार प्रकारनुं छे, तेमां द्रव्याग्र ते एक अणुथी बे अणु अने बे अणुथी त्रण अणु विगेरे छे. क्षेत्राग्र-एक प्रदेशना अवगाढथी बे प्रदेशना अवगाढ सुधी, बे प्रदेशना अवगाढथी त्रण प्रदेश अवगाढ विगेरे छे.

कालाग्र—एक समयनी स्थितिथी बे समयनी स्थिति सुधी, बे समयनी स्थितिथी त्रण समयनी स्थिति सुधी.

भावाग्र—एक गुण काळाशथी बे गुण काळाश, बे गुण काळाशथी त्रण गुण काळाश विगेरे छे.

गणना अग्र—संख्या धर्म स्थान ते, एक स्थानथी बीजा दश स्थान सुधी ते दश गुणो जेम एक-दश-सो-हजार.

संचय अग्र—संचित द्रव्यना उपर जे छे, ते ताम्र उपस्कर सचित्तना उपर शंख छे.

भावाग्रना त्रण प्रकार—१ प्रधान अग्र, २ प्रभूत अग्र, ३ उपकार अग्र, तेमां प्रधान अग्र सचित्त, अचित्त, मिश्र-एम त्रण प्रकारे छे. सचित्त पण बे पगवाळां चार पगवाळां अपद विगेरे त्रण भेदे छे, तेमां द्विपदमां तीर्थङ्कर, चोपदमां सिंह, अपदमां कल्पवृक्ष छे. अचित्तमां वैडुर्य विगेरे, मिश्रमां तीर्थङ्करज दागीनाथीज अलंकृत होय ते, प्रभूत अग्र ते अपेक्षा राखनार छे. जेमके—

"जीवा पोग्गल समया दव्व पएसा य पज्जवा चेव । थोवाऽणंताणंता विसेसमहिया दुवे णंता ॥ १ ॥"

१ जीव, २ पुद्गलो, ३ त्रणे कालना समयो, ४ द्रव्यो, ५ प्रदेशो, ६ पर्यवो. १ स्तोक [थोडा], २ अनंत गुणा, ३ अनंत गुणा, ४ विशेषअधिका बे अनंता [अनंत अनंत गुणा.]

आ बधामां एक पछी एक अग्र छे, अने पर्याय अग्र तो सौथी अग्र छे, उपकार अग्र तो पूर्वे कहेला विस्तारथी अने न कहेला बतावनारथी उपकारमां वर्त्ते छे, जेमके—

दशवैकालिक सूत्रमां जे विषय कहेवानो बाकी रह्यो होय ते चुडामां कहेवाय—एवी बे चुडा दशवैकालिकमां छे. अथवा उपकार अग्र ते आ आचार श्रुतस्कंधनी चुडानो विषय छे अने तेथी उपकार अग्रनुंज अहीं प्रयोजन छे, अने ते निर्युक्तिकार कहे छे.

उवयारेण उ पगयं आयारस्सेव उवरिमाइं तु । रुक्खस्स य पव्वयस्स य जह अग्गाइं तहेयाइं ॥ २८६ ॥

आपणे अहींया उपकार अग्रथी अधिकार [प्रयोजन] छे. कारण के आ चूडाओ आचाराङ्गसूत्रना उपर वर्त्ते छे, एटले आचाराङ्गना विषयनेज विशेष खुलासाथी कहेवा आ चूडाओ गोठवायेली छे,जेमके वृक्षने अग्र[टोच]होय छे,तथा पहाडने टोच (शीखर)होय छे अने बाकीना अग्रना निक्षेपानुं वर्णन तो शिष्यनी मति खीलववा माटे छे तथा तेने लीधे उपकार अग्र सुखेथी समजी शकाय.कह्युंछेके

उच्चारिअस्स सरिसं, जं केणइ तं परूवए विहिणा । जेणऽहिगारो तंमि उ, परूविए होइ सुहगेज्झं ॥ १ ॥

जे कहेवानुं होय तेना जेवा पदार्थो विधिए कहेवाथी जेनावडे अधिकार छे तेमां पण बीजा सरखा पदार्थो सांभळवाथी कहेवानो मुख्य पदार्थ पण सुखेथी ग्रहण कराय छे. तेमां हमणां आ कहेवुं जोइए के आ चूलाओ [अग्रभागो] कोणे रची छे ? शा माटे ? अथवा क्यांथी उद्धरी ते त्रणनो खुलासो करे छेः—

थेरेहिऽणुग्गहट्ठा सीसहिअं होउ पागडत्थं च । आयाराओ अत्थो आयारंगेसु पविभत्तो ॥ २८७ ॥

श्रुतज्ञानना पारंगामी वृद्ध पुरुषो जे चौद पूर्वी छे तेमणे आ रची छे, तथा शिष्यना उपर अनुग्रह लावीने के एओ सहेलथी समजे. तथा अप्रकट (गुह्य) अर्थ खुल्लो थाय माटे आचारांग सूत्रमांथी आ बधा विषयोने विस्तारथी कह्यो छे. हवे जे अध्ययनमांथी जे अधिकार लीधो छे. ते विभाग पाडीने कहे छे,—

बिइअस्स य पंचमए अट्ठमगस्स बिइयंमि उद्देसे । भणिओ पिंडो सिज्जा वत्थं पाउग्गहो चेव ॥ २८८ ॥
पंचमगस्स चउत्थे इरिया वण्णिज्जई समासेणं । छट्ठस्स य पंचमए भासज्जायं वियाणाहि ॥ २८९ ॥

ब्रह्मचर्यनां नवे अध्ययनोमांथी बीजुं लोकविजय अध्ययन छे. तेना पांचमां उद्देशामां आ सूत्र छे; " सव्वामगंधं परिन्नाय निरामगंधो परिव्वए. " तेमां आम शब्दथी हणवुं. हणाववुं, हणताने अनुमोदवुं ए त्रण कोटी लीधी छे. गंध शब्द लेवाथी बीजी त्रण लीधी छे. आ छए अविशुद्ध कोटी छे ते नीचे प्रमाणे छे.

हणे हणावे हणताने, हणताने अनुमोदे, रांधे रंधावे रांधताने अनुमोदे ते छ छे. तथा ते अध्ययनमांज आ सूत्र छे.

" अदिस्समाणो कयविक्कएहिं " आ सूत्रथी त्रण विशोधि कोटी लीधी छे. खरीद करे, खरीद करेरावे अने खरीद करनारने अनुमोदे ते त्रण छे, तथा आठमा विमोह (विमोक्ष) अध्ययनना बीजा उद्देशामां आ सूत्र छे—

भिक्खू परक्कमेज्जा चिट्ठेज्जवा निसीएज्ज वा तुयट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा " इत्यादि थी लइने "बडिया विहरिज्जा तं भिक्खु गाहावती उवसंकमितु वएज्जा अहमाउसंतो समणा ! तुब्भट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामीचं" इत्यादि,

आ बधांने आश्रयीने ११ पिंडैषणाओ रची छे, तथा तेज बीजा अध्ययनमां पांचमा उद्देशामां आ सूत्र छे,

से वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं " इति, तेमां वस्त्र कांबळ पादपुंछन लेवाथी वस्त्र एषणा लीधी. पात्रां लेवाथी पात्रैषणा लीधी छे, अवग्रह शब्दथी अवग्रह (इंद्र विगेरेनो पांच प्रकारनो) छे ते लीधी कटाशन लेवाथी शय्या लीधी,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेज प्रमाणे पांचमुं अध्ययन 'आवंति' नामनुं छे. तेना चोथा उद्देशामां आ सूत्र छे, "गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दूज्जातं दुप्परिकंतं इत्यादि" आ सूत्रथी 'इर्या' समिति संक्षेपथी वर्णवी. तेथी इर्या अध्ययन रच्युं छे. तथा छठ्ठा अध्ययनना पांचमा उद्देशामां आ सूत्र छे, "आ इक्खइ विहयइ किट्टइ धम्मकामी" आथी भाषा जात अध्ययन रच्युं छे तेम तुं जाण. ॥२८९॥

सत्तिक्कगाणि सत्तवि निज्जुढाइं महापरिन्नाओ। सत्थपरिन्ना भावण निज्जूढा उ धुय विमुत्ति ॥ २९० ॥

आयारपकप्पो पुण पच्चक्खाणस्स तइयवत्थूओ। आयारनामधिज्जा वीसइमा पाहुडच्छेया ॥ २९१ ॥

तथा महापरिज्ञा नामना सातमा अध्ययनमां सात उद्देशा हता, तेमांथी एकेक लेवाथी सात लीधा छे. तथा शस्त्र परिज्ञामांथी भावना अधिकार लीधो छे, तथा धुतअध्ययनना बीजा चोथा उद्देशामांथी विमुक्ति अध्ययन लीधुं छे. ॥९॥

तथा आचार प्रकल्प ते निशीथसूत्र छे अने ते प्रत्याख्यान पूर्वनी त्रीजी वस्तु छे तेमां २० मुं पाहुड आचार नामनुं छे तेमांथी लीधेल छे. (आ पांचमी चूडा जुदी पाडी छे.)

ब्रह्मचर्यनां नव अध्ययनोथी आचार अग्र (चूलिकाओ) रचेल छे. एथी निर्युहन [रचवा] ना अधिकारथीज ते शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनथीज ते आचार अग्र (चूला) रची छे, ते बतावे छे.

अव्वोगडो उ भणिओ सत्थपरिन्नाय दंडनिक्खेवो। सो पुण विभज्जमाणो तहा तहा होइ नायव्वो ॥ २९२ ॥

अव्यक्त दंड निक्षेपो हतो ते बताव्यो छे, एटले प्राणीओने पीडारूप जे दंड छे, तेनो निक्षेप (परित्याग) छे, अर्थात् संयम छे, ते शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां गुप्त रीते कह्यो हतो, तेथी ते संयमनेज जुदा जुदा भाग पाडीने आठे अध्यनमां अनेक

For Private and Personal Use Only

प्रकारे वर्णव्यो छे, एम जाणवुं.

प्र०—आ संयम संक्षेपथी कहेलो छे, ते केवी रीते विस्तारथी कहेवाय छे? ते कहे छे.

एगविहो पुण सो संजमुत्ति अज्झत्थ बाहिरो य दुहा। मणवयणकाय तिविहो चउव्विहो चाउजामो उ ॥२९३॥

अविरतिनो त्यागरूप एक प्रकारनो संयम छे अने तेज आध्यात्मिक [अभ्यंतर] अने बाह्य एम बे भेद थाय छे, अने मन वचन कायाना योगना भेदथी त्रण प्रकारनो छे, तथा चार महाव्रतना भेदथी चार प्रकारनो छे,

पंच य महव्वयाइं तु पंचहा राइभोअणे छट्ठा। सीलंगसहस्साणि य आयारस्सप्पवीभागा ॥ २९४ ॥

पांच महाव्रतना भेदथी पांच प्रकारनो अने रात्रिभोजन विरमण मेळवतां छ प्रकारे छे, ए प्रमाणे अनेक प्रक्रियाथी भेद पाडेला १८ हजार शीलांगना भेद सुधी परिमाणवाळो संयम थाय छे.

प्र०—पण आ संयम केवो छे? उ०—ते प्रवचनमां पांच महाव्रतना भेद तरीके वर्णवाय छे ते कहे छे.

आइक्खिउं विभइउं विन्नाउं चेव सुहतरं होइ। एएण कारणेणं महव्वया पंच पन्नत्ता ॥ २९५ ॥

पंच महाव्रतरूपे व्यवस्थापेलो होय, तो सुखेथी कहेवाय अने शिष्यने सुखेथीज समजाय, ए कारणथीज पांच महाव्रतो बतावेछे, अने ए पांच महाव्रतो अस्खलित (संपूर्ण) होय तोज फलवाळा (सिद्धि आपनार) थाय छे, तेथी तेनी रक्षामां यत्न करवो, ते कहे छे.

तेसिं च रक्खणट्ठा य भावणा पंच पंच इक्किक्के। ता सत्थपरिन्नए, एसो अब्भिंतरो होई ॥ २९३ ॥

ते महाव्रतोनी दरेकनी पांच पांच वृत्ति समान भावनाओ छे, ते बधी आ बीजा अग्रश्रुत स्कंधमां कहेवाय छे, एथी आ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां अभ्यंतर थाय छे.

हवे चूडाओनुं यथास्व (पोतानुं) परिमाण कहे छे.

जावोग्गहपडिमाओ पढमा सत्तिक्कगा बिइअचूला । भावण विमुत्ति आयारपकप्पा तिन्नि इअ पंच ॥ २९७ ॥

पिंडैषणा अध्ययनथी आरंभीने अवग्रह प्रतिमा अध्ययन सुधीमां सात अध्ययनोनी पहेली चूडा छे, सात सातनी एकेक ए बीजी चूडा छे, भावना नामनी त्रीजी छे, अने विमुक्ति नामनी चोथी चुडा छे. आचार प्रकल्प निशीथ छे, ते पांचमी चुडा छे, ते चुडानो नाम विगेरे निक्षेपो छ प्रकारनो छे. नाम स्थापना सुगम छे, द्रव्य चुडा व्यतिरिक्तमां–सचित्तमां कुकडानी, अचित्तमां मुकुटना चुडानी मणि छे. मिश्रमां मयूरनी छे, क्षेत्र चुडामां लोक निष्कुट रुप छे, काल चुडामा अधिक मासना स्वभाववाळी, अने भाव चुडामां आज चुडा छे. कारण के ते क्षायोपशमिक (श्रुतज्ञान) मां वर्त्ते छे. आ सात अध्ययन रुप छे, तेमां प्रथम अध्ययन पिंडैषणा छे, तेना चार अनुयोगद्वार छे. नामनिष्पन्न निक्षेपामां पिंडैषणा अध्ययन छे, तेना निक्षेपद्वारे सर्वे पिंड निर्युक्तिओ अहीं कहेवी, हवे सूत्रानुगममां अस्खलित विगेरे गुण युक्त सूत्र उच्चारवु जोइए, ते कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा–असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पाणेहिं वा पणगेहिं वा बीएहिं वा हरिएहिं वा संसत्तं उम्मिस्सं सीओदएण वा ओसित्तं रयसा वा परिघासियं वा तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभेऽवि संते नो पडिग्गाहिज्जा ॥ से य आहच्च पडिग्गहे सिया से तं आयाय

सूत्रम् ॥८६२॥

For Private and Personal Use Only

एगंतमवक्कमिज्जा एगंतमवक्कमित्ता अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंगपणगदगमट्टियमक्कडासंताणए विगिंचिय २ उम्मीसं विसोहिय २ तओ संजयामेव भुंजिज्ज वा पीइज्ज वा, जं च नो संचाइज्जा भुत्तए वा पायए वा से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा, अहे झामथंडिलंसि वा अट्ठिरासिंसि वा किट्टरासिंसि वा तुसरासिंसि वा गोमयरासिंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठविज्जा ॥ (सू० १)

(से शब्द मगध देशमां पहेली विभक्तिना निर्देशमां वपराय छे. तेथी) जे कोइ भिक्षार्थी निर्वाह करनार भावभिक्षु मूळ उत्तरगुण धारनारो विविध अभिग्रह (तपविशेष) करनारो उत्तम साधु होय अथवा साध्वी होय, ते भावभिक्षु के साध्वी अशाता वेदनीय विगेरेना कारणोथी आहार ग्रहण करे छे, ते बतावे छे.

वेअण १ वेआवच्चे २ इरियट्ठाए य ३ संजमट्ठाए ४ तह पाणवत्तियाए ५ छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ १ ॥ ”

१ अशाता वेदनिय कर्मदुर करवा. २ बीजा साधुओनी वेआवच्च करवा ३ इर्या समिति पाळवा माटे, ४ संयम पाळवा माटे ५ जीवित धारण करवा ६ अने धर्मचिंतवन करवा माटे आहार लेवाय छे, उपर बतावेला कारणोमांथी कोइपण कारणे आहारनो अर्थी बनीने गृहस्थना घरे जाय, प्र. शामाटे? उ० ‘पिंडवाय पडियाए ’ भीक्षा (नो लाभ तेनी प्रतिज्ञा ते) अहीं मने मळशे, तेथी त्यां पेसीने अशन विगेरे जाणे, केवी रीते? ते कहे छे. प्राणि ते ‘ २ सजा ’ (वासी पाणीवाळा रांधेला अनाजमां बेइंद्रिय विगेरे झीणा जीव उत्पन्न थाय छे ते) देखीने ते जीवो होय तो गोचरी न लेवी, तेज प्रमाणे पनक (उल आवे छे ते)

जोवी, तथा घउंना दाणा विगेरे अडकेल होय, हरित ते दरो जुव्हार विगेरे अंकुरावाळुं लीलुं घास होय, तेनी साथे मिश्र थइ गयुं होय, तथा काचा पाणीथी भींजायलुं होय, अथवा सचित्त रजथी परिगुंडित (खरडायेलुं) भोजन पाणी खादिम के स्वादिम होय ते चारे प्रकारनो आहार देनारना हाथमां होय के गृहस्थना वासणमां होय, ते सचित्त अथवा आधाकर्म विगेरे दोषथी अनेषणीय (दोषित) होय एवुं जाणे तो ते भावभिक्षु मळतुं होय, तो पण न ले, आ उत्सर्गनी विधि छे, हवे अपवादनी विधि कहे छे. के द्रव्यादि एटले द्रव्य क्षेत्र काळ भाव विचारीने जरुर पडतां लेवुं पडे तो ले पण खरो ते बतावे छे, द्रव्यथी ते द्रव्य जरुरनुं होय, अने बीजे मळवुं दुर्लभ होय, तथा क्षेत्रथी ते बधा साधुने साधारण गोचरी मळे तेम न होय एटले लोको दृष्टि रागी होय अथवा विशेषथी अन्यदर्शनीना रागी होय ? कालथी दुकाल विगेरे होय. अने भावथी ग्लान [मंदवाड] विगेरे होय, विगेरे कारणो होय तो गीतार्थ साधु लाभ विशेष होय अने दोष ओछो लागतो होय तो ते ले.

वळी कोइ वखत अजाणपणे जीवातवाळुं अथवा जीव उत्पन्न थाय (तेवुं त्रिदळ विगेरे) उन्मिश्र भोजन विगेरे लीधुं होय तो तेनी परठववानी विधि कहे छे. " से अहच्च इत्यादि " एटले कोइवार उपयोग राखवा छतां पण भूलथी ओचिंतु संसक्त विगेरे भोजन लेवायुं होय तो, ते 'अनाभोग' देनार, लेनार ए बेना भेदथी चार प्रकारनो थाय छे, [जेमके (१) साधुनो उपयोग होय गृहस्थनो न होय, [२] ग्रहस्थनो उपयोग होय साधुनो न होय, [३] बन्नेनो उपयोग न होय, (४) बन्नेनो उपयोग होय.] आवो आहार अशुद्ध आवेलो जणाय तो ते आहार लइने एकांतमां जाय, एटले ज्यां गृहस्थ लोक देखे नहि, तेम आवे पण नहि, ते एकांत स्थळ अनेक प्रकारनुं होय छे. ते बतावे छे.

आराम, उपाश्रय (अथ शब्द लोक आवता न होय तेवो विशिष्ट प्रदेशना संग्रह माटे छे.) अथवा शून्यगृह विगेरे स्थळ होय ते स्थळ केवुं होय, ते कहे छे. (अल्पशब्द अभाववाचक छे.) ज्यां इंडा न होय, बीज, हरित, ठार, काचुं पाणी, तथा उर्तिग घासना अग्र भागे पाणीनां बिंदु होय ते, पनक लीलण फूलण होय, वधारे पाणीथी भींजायेली माटी होय, मर्कट ते सूक्ष्म जीव अथवा करोलीयानां जाळां जेमां तेना बच्चां होय छे, ते दरेक जीवथी रहित आराम विगेरे स्थळे जइने पूर्वे लीधेला आहारमां जे जीव मिश्रित होय ते देखीदेखीने अशुद्ध आहारने त्यागवो, अथवा भविष्यमां जीव थाय तेवुं साथवो विगेरे होय तेमां जीवो जोइजोइने तेनुं भोजन दूर करीने खावा जेवु बाकी शुद्ध रह्युं होय ते बरोबर जाणीने पोते रागद्वेष छोडीने खाय अथवा पीए कह्युं छे के—

बायालीसेसणसंकडंमि गहणंमि जीव ! ण हु छलिओ । इण्हिं जह न छलिज्जसि भुंजंतो रागदोसेहिं ॥ १ ॥

बेंताळीस दोष गोचरीना छे. तेना संकटमां हे जीव ! तुं प्रथम ठगायो नथी, तेम हवे पण गोचरी करतां रागद्वेष वडे ठगातो नहीं!

रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं वियाणाहि । रागदोसविमुक्को भुंजेज्जा निज्जरापेही ॥ २ ॥

रागथी अंगार दोष थाय छे, द्वेषवडे धूम्र दोष लागे छे, माटे रागद्वेषथी रहित बनी सकामनिर्जरानी इच्छा राखी गोचरी करजे!

अने जे आहार विगेरे खावामां के पीवामां वधारे होय ते न खवाय, अथवा अशुद्ध पृथक् करवुं अशक्य होय तो परठववुं जोइए, तेथी ते भिक्षु तेवा वधेला के अशुद्ध आहारने लेइने एकांतमां जाय, एकांतमां जइने ते आहारने परठवे, हवे ज्यां परठवे, ते बतावे छे (अथनो अर्थ पछी छे, वा नो अर्थ अथवा छे) [झामेति] बळेलुं स्थान, [इंटना निभाडानी जग्या] अथवा अस्थि अचित्त ठळीयाना ढगलामां कीट, (लोढानो काट)ना ढगलामां, अथवा तुषना ढगलामां सूकां अडायां, के तेवा कोइपण ढगलामां

पूर्वे बतावेल फासु जग्यामां जइने त्यां वारंवार आंखे जोइने रजोहरण विगेरेथी पुंजीपुंजीने परठवे. प्रत्युपेक्षण अने प्रमार्जनने आश्रयी भांगा थाय छे.—

(१) अप्रत्युपेक्षित अप्रमार्जित, (२) अप्रत्युपेक्षित प्रमार्जित (३) प्रत्युपेक्षित अप्रमार्जित. तेमां पण देख्या विना प्रमार्जन करतो एक स्थानथी बीजा स्थाने जतां त्रस जीवोने विराधे छे. अने देखीने पूज्या विना आवता पृथ्वीकाय विगेरेने विराधे छे, बाकीना चार भांगा नीचे मुजब छे.—

(४) खराब रीते देखेलुं अने पुंजेलुं [५] खराब रीते देखेलुं बरोबर पुंजेलुं (६) सारी रीते देखेलुं खराब रीते पुंजेलुं (७) सारी रीते देखेलुं. सारी रीते पुंजेलु. तेथी आ सातमा भांगामां बतावेली रीतिए स्थंडिल जोइने उत्तम साधु उपयोग राखीनेज शुद्ध अशुद्ध पुंजना भागो परिकल्पीने त्यजे [परठवे]

हवे औषधिनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा गाहावइ० जाव पविट्ठे समाणे से जाओ पुण आसहीओ जाणिज्जा—कसिणाओ सासियाओ अविदलकडाओ अतिरिच्छच्छिन्नाओ अवुच्छिण्णाओ तरुणियं वा छिवाडिं अणभिक्कंतभज्जियं पेहाए अफासुयं अणेसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते नो पडिग्गाहिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जाव पविट्ठे समाणे से जाओ पुण ओसहीओ जाणिज्जा—अकसिणाओ असासियाओ विदलकडाओ तिरिच्छच्छिन्नाओ वुच्छिन्नाओ तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए फासुयं एसणिज्जंति मन्नमाणे लाभे संते पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० २)

ते भावभिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो होय, त्यां शालीबीज विगेरे औषधि होय तेने आ प्रमाणे जाणे के आ बधी हणायेली नथी [सचित्त छे] आमां पण चोभंगी छे, तेमां द्रव्यकृत्स्ना ते अशस्त्र उपहत [शस्त्रथी हणायेली नथी,] भावकृत्स्ना ते सचित्त छे. तेमां कृत्स्ना आ पदवडे चार भांगामांना पहेला त्रण लेवा, एटले द्रव्यथी तथा भावथी बन्ने प्रकारे अचित्त थयेली होय ते चोथो भांगो लेवो कल्पे. बाकीना त्रण भांगावाळी न कल्पे.

"सासियाओ" त्ति—जीवनुं स्वपणुं ते उपजवानुं स्थान मत्याश्रय जेमां छे, ते स्वाश्रय छे. अर्थात् अविनष्टयोनिवाळुं अनाज छे, अने आगममां पण केटलीक औषधि (अनाज) नो अविनष्ट योनिकाल बताव्यो छे, ते आ प्रमाणे—"एतेसिणं भंते ! सालीणं के वइअं कालं जोणी संचिट्ठइ" ? एवा सूत्र पाठो छे, [गौतमस्वामी पूछे छे के हे भगवन् आ कमोदनी योनि केटलो काळ सचित्त (उपजवा योग्य) छे. विगेरे ['अविदल कडाओ' त्ति—ज्यांसुधी बे फाडचां उपरथी नीचे सुधी सरखां न कर्या होय अर्थात् दाळ न बनावी होय. [कठोळनी प्राये दाळ सर्वत्र बने छे] 'अतिरिच्छछिन्नाओ' त्ति—कंदली करेली न होय ते. ए द्रव्यथी कृत्स्न (आखी) छे अने भावथी सचित्त होय के न होय.

तेज प्रमाणे "अवोच्छिनाओ" त्ति—जीव रहित न थइ होय, ते अर्थात् भावथी कृत्स्न (आखी सचित्त) होय, तथा 'तरुणियं वा छिवाडिं' त्ति—अपरिपक्व मग विगेरेनी शींग [फळी] तेनुंज विशेष कहे छे. 'अणभिकंत भज्जिय' त्ति—जीवितथी अभिक्रान्त न होय अर्थात् सचित्त होय तथा 'अभज्जिय' अमर्दित 'अविराधित' होय आ प्रमाणे आवो आहार खावायोग्य होय, पण ते अप्रासुक अथवा अनेषणीय पोते देखीने सचित्त जाणतो होय तो, गृहस्थ आपे तो पण पोते सचित्तने ग्रहण करे नहि, हवे तेथी उलटुं

सूत्र कहे छे. ते भावभिक्षु तेवी औषधिने असंपूर्ण टुकडा थएली अने अचित्त थयेली विनष्टयोनिवाळी दाळ बनावेली कंदली करेली तथा फळी अचित्त थयेली अने भांगेली होय अने ते प्रासुक अने एषणीय (लेवायोग्य) होय अने गृहस्थ आपे तो कारण होय तो साधु तेने ले, लेवायोग्य अने न लेवा योग्यना अधिकारवाळा आहार विशेषनुं ज कहे छेः—

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—पिहुयं वा बहुरयं वा भुंजियं वा मंथुं वा चाउलं वा चाउलप-लंबं वा सइं संभज्जियं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा असइं भज्जियं दुक्खुतो वा तिक्खुत्तो वा भज्जियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिगाहिज्जा ॥[सू० ३]

ते भावभिक्षु गृहस्थने घेर गयेलो पृथुक शाली तथा वरीने शेकीने धाणी बनावे, तेमां तुष विगेरेनी बहु रज होय, तथा घउं विगेरेने भुंजेला (अडधा शेकेला) होय एटले एक बाजुथी के छेडा तरफथी शेक्या होय, अथवा तल, घउं विगेरे शेक्या होय तथा घउं विगेरे चूर्ण बनावी शेकेल होय अथवा शालीव्रीहीना तांदळा, अथवा तेनीज कणकी (चाउल पलंब) होय आवुं कोइपण जातनुं अनाज विगेरे एकवार थोडुं शेक्युं होय, थोडुं बीजा शस्त्रवडे मरडेलुं कुटेलुं होय पण ते जो अप्रासुक अने अनेषणीय पोते मानतो होय तो तेवुं अन्न ले नहि एथी विपरीत होय तो ते लेवुं एटले अग्नि विगेरेथी वारंवार शेक्युं होय, अथवा पूरेपुरुं कुटयुं होय, अने अधकाचुं विगेरे दोषवाळुं नहोय; अने प्रासुक होय तेवी खात्री थाय तो लाभ थतां जरुर होय तो साधु ग्रहण करे.

हवे गृहस्थना घरमां पेसवानी विधि कहेछे.—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं जाव पविसिउकामे नो अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिआ

वा अप्परिहारिएणं सद्धिं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा० बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा नो अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा० गामाणुगामं दूइज्जमाणे नो अन्नउत्थिएण वा जाव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा (सू० ४)

ते साधुए गृहस्थना घरमां प्रवेश करवो होय तो आटला माणसो साथे न जवुं, अथवा पूर्वे ते पेठो होय तो, तेनी साथे न नीकळवुं. तेमनां नाम बतावे छे. (१) अन्य तीर्थिक ते लाल कपडां राखनारा बावा विगेरे. गृहस्थो–भीखना पिंड उपर जीवनारा ब्राह्मण विगेरे. तेमनी साथे पेसतां नीचला दोषो थाय छे, जो पाछळ चाले तो तेओनी करेली इर्या प्रत्ययनो कर्मबंध लागे–जीवरक्षा न थाय, तथा जैनशासननी निंदा थाय, तथा तेओनी जातिमां अहंकार थाय के आवा साधुओ पण अमारी पाछळ चाले छे! ते प्रमाणे कदाच साधु आगळ चाले तो तेओने द्वेष उत्पन्न थाय, अथवा देनार असरल स्वभावी होय तो तेने द्वेष थाय, अने वस्तु वहेंचीने आपेतो खराब वखतमां पूरो आहार न मळतां जीवननिर्वाह न थइ शके, तेज प्रमाणे परिहरण ने परिहार छे, ते परिहार सहित चाले, ते 'पारिहारिक' एटले पिंडदोष त्यागवाथी उद्युक्तविहारी (उत्तम) साधु छे, तेवा उत्तम गुणवाळा साधुए पासत्था, अवसन्न कुशील, संसक्त, यथाछंद एवा पांच प्रकारना कुसाधु साथे गोचरी न जवुं, तेमनी साथे जतां अनेषणीय गोचरी आवे, अग्रहण दोष लागे एटले जो पासत्थो 'अनेषणीय' ले, तेवुं साधु पण ले, तो तेनी प्रवृत्तिनी प्रशंसानो दोष लागे, अने जो न ले तो असंखड विगेरे दोषो थाय, तेवुं जाणीने गोचरी लेवा माटे गृहस्थना घरमां तेवा साथे पेसे नहीं, तेम नीकळे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण नहीं, तेवीज रीते तेमनी साथे बीजे पण जवानो निषेध करे छे. एटले साधुने स्थंडिल (विचार) भूमिए जवुं होय, अथवा विहार (भणवा) ना स्थळे जवुं होय, तो अन्य तीर्थि विगेरे साथे दोषोनो संभव होवाथी न जवुं, ते कहे छे स्थंडिल साथे जतां प्रासुक जल स्वच्छ होय, अस्वच्छ होय, घणुं के थोडुं होय, तो तेनाथी जग्या स्वच्छ करतां उपघातनो संभव थाय, अथवा जोडे भणवा जतां सिद्धांतना आलावा गणतां ते पतित साधुने तेवुं न रुचवाथी विकथा करी विघ्न करे, ते भय छे अथवा सेह (नवा शिष्य) आदिने असहिष्णुपणाथी क्लेशनो संभव थाय छे, माटे तेवा साथे साधुए तेवा स्थळमां जवुं-आववुं नहिं, तेज प्रमाणे ते भिक्षुए एक गामथी बीजे गाम जतां के नगरथी बीजे नगर विगेरे स्थळे जतां उपर बतावेल अन्य तीर्थिओ विगेरे साथे दोषोनो संभव होवाथी जवुं नहि-कारण के मात्रुंस्थंडिल विगेरे रोकवाथी रोग थतां आत्मविराधन थाय, अने मात्रुस्थंडिल करवा जतां प्रासुक, अप्रासुक ग्रहण विगेरेमां उपघात अने संयमविराधनानो संभव छे, एज प्रमाणे भोजन [गोचरी] करतां पण दोषोनो संभव समजवो, सेहादि विप्रतारण (शिष्यने कुमार्गे दोरववा) विगेरेनो दोष पण थाय. हवे तेमना दाननो निषेध करे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा० जाव पविट्ठे समाणे नो अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा परिहारिओ वा अपरिहारियस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दिज्जा वा अणुपइज्जा वा ॥ [सू० ५]

ते साधु गृहस्थीना घरमां पेठेल होय, अथवा ते साधु उपाश्रयमां रहेल होय, तो ते साधुए अन्य तीर्थिओ विगेरेने दोषनो संभव होवाथी आहार पाणी विगेरे पोते आपवुं नहि, तेम गृहस्थ पासे पोते अपाववुं नहि, जो आपतां देखे तो लोको एवुं माने के आ साधु आवा अन्यदर्शनीओनी पण दाक्षिण्यतां (शरम) राखनारा छे. वळी तेमने टेको आपवाथी असंयममां प्रवर्त्तन विगेरेना दोषो थाय छे.

For Private and Personal Use Only

पिंडना अधिकारथीज 'अनेषणीय' दोष संबंधी निषेध करवा कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे असणं वा ४ अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया नीहडं वा अनीहडं वा अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥ (सू० ६)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी गयेलो होय ते नीचे बतावेला दोषोवाळुं अशन विगेरे न ले, 'असंपडियाए' त्ति—जेनी पासे स्व (द्रव्य) नथी ते अस्व (निर्ग्रंथ) छे, एवा निर्ग्रंथने कोइ भद्रक गृहस्थ जोइने विचारे के आ निर्ग्रंथ छे, माटे तेने माटे सचित्त अनाज विगेरे आरंभ समारंभ करीने वहोरावीश, संरंभ, समारंभ ने आरंभनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.

संकप्पो संरंभो परियावकरो भवे समारंभो; । आरंभो उद्दवओ सुद्धनयाणं तु सव्वेसिं ॥१॥

संकल्प करवो ते संरंभ छे, परिताप करनारो समारंभ छे. अने उपद्रव करीने कराय ते बधा शुद्ध नयोमां आरंभ मुख्य छे, आ प्रमाणे समारंभ विगेरेने आचरीने आधाकर्म [साधु माटे रसोइ] बनावे, एनाथी बधी अशुद्ध कोटी लीधी तथा क्रीत—ते मूल्य आपीने लेवुं; पामिच्च—ते उछीतुं लेवुं, आछेद्य—ते बलजबरीथी छीनवी लेवुं, अनिसृष्ट—ते तेना बधा मालीके मळीने न आपेलुं चोल्लक विगेरे छे, अभ्याहृत गृहस्थे दूरथी लावी आपेलुं, आवुं वेचातुं विगेरे लावीने आपे, आ वाक्यथी बधी विशुध्धकोटी

लीधेली छे, ते आहार चारे प्रकारनो होय, ते आधाकर्म विगेरे दोषथी दोषित होय ते जो गृहस्थ आपे, ते बीजाए करेलुं पोते आपे, अथवा पोते जाते करीने आपे, तथा घरथी नीकळेलुं, अथवा न नीकळ्युं होय अथवा ते दाताएज स्वीकार्युं होय, अथवा न स्वीकार्युं होय. अथवा ते दाताए घणुं खाधुं होय अथवा न खाधुं होय अथवा थोडुं चाख्युं होय अथवा न चाख्युं होय, आवुं बधुं होय छतां जो ते अप्रासुक अनेषणीय पोताने मालुम पडे तो मळतुं होय छतां पण लेवुं नहीं आ पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुओने (अकल्पनीय) छे, पण २२ तीर्थंकरोना साधुओने तो जेने उद्देशीने कर्युं होय तो तेने न कल्पे, बाकी बीजाने कल्पे, आ प्रमाणे घणा साधुओने आश्री उद्देशीने बनावेलुं होय तो ते लेवुं कल्पे नहीं, तेज प्रमाणे साध्वीओने आश्रयीपण बे सूत्रनी एकत्व बहुत्व योजना करवी.

हवे बीजा प्रकारे अविशुद्ध कोटीने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ बहवे समणा माहणा अतिहि किवणवणीमए पगणिय २ समुद्दिस्स पाणाइं वा ४ समारब्भ जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० ७)

ते भावसाधु गृहस्थने घेर गोचरी गयेल होय त्यां एवुं जाणे के आ घणुं भोजन विगेरे घणा श्रमणोने माटे बनाव्युं छे, ते श्रमणो निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गैरिक, आजीविक ए पांच छे, तेमने माटे बनावेल होय, ब्राह्मण माटे अथवा भोजनना समय पहेलां जे मुसाफर आवे ते अतिथि माटे अथवा कृपण (दरिद्री) माटे वणीमक [भाट विगेरे] माटे उद्देशीने बनावेलुं होय, एटले बेत्रण श्रमण पांच छ ब्राह्मण, एम संख्या गणोने सचित्त वस्तुना आरंभवडे अचित्त रसोइ बनावी होय तो ते भोजन संस्कारवाळुं

खाधेलुं के खाधा पछी बचेलुं अथवा अप्रासुक अनेषणीय आधाकर्मी भोजन मळतुं होय तोपण जाणीने ले नहीं.

हवे विशोधि कोटी आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा० जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा—असणं वा ४ बहवे समणा माहणा अतिहिं किवणवणीमए समुद्दिस्स जाव चेएइ तं तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं वा अबहियानीहडं अणत्तट्टियं अपरिभुत्तं अणासेवियं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव नो पडिग्गाहिज्जा अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं बहियानीहडं अत्तट्टियं परिभुत्तं आसेवियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० ८)

ते साधु भोजन विगेरे आवा प्रकारनुं जाणे के–घणा श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमकने माटे उद्देशीने बनावेलुं छे, अने कोइ गृहस्थ रसोइ तैयार थया पछी आपे छे, तेवुं भोजन तेज पुरुष त्यांज उभो रहीने पोताना कबजामा राखेलुं, खाधाविनानुं, वापर्याविनानुं, अप्रासुक, अनेषणीय आपतो होय तो त्यां गयेला जैन साधुए तेवुं जाण्या पछी ते न लेवुं, ते "जावंतिया भिक्ख" सूत्रथी उलटुं हवे कहे छे, (अथ शब्द पूर्वनी अपेक्षाए 'पण' ना अर्थमां छे, पुनःशब्द विशेषणना अर्थमां छे,) पण ते भिक्षु एम जाणे के ते भोजन बीजा माटे करेलुं छे, बहार आवेलुं छे, तेणे पोतानुं करेलुं छे, तेणे खाधुं छे, वापर्युं छे, प्रासुक छे, एषणीय छे. आवुं जाणीने मळे तो ते भोजन साधुए लेवुं, तेनो भावार्थ आ छे, के अविशोधि कोटीवाळुं भोजन जेम तेम कर्युं होय तो ते न कल्पे, पण विशोधि कोटीवाळुं पुरुषान्तर करेलुं होय, अने तेणे पोतानुं करेलुं होय तो ते साधुने लेवुं कल्पे छे, विशोधिकोटीनो अधिकार कहे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिउकामे से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा—इमेसु खलु कुलेसु निइए पिंडे दिज्जइ अग्गपिंडे दिज्जइ नियए भाए दिज्जइ नियए अवड्ढभाए दिज्जइ, तहप्पगाराइं कुलाइं निइयाइं निइउमाणाइं नो भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा ॥ एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सया जए [सू० ९] त्तिबेमि ॥ पिण्डैषणाध्ययन आद्योद्देशकः ॥ १–१–१ ॥

ते भिक्षुक गृहस्थीना घरमां जवानी इच्छावाळो आवां कुळो जाणे के, आ कुळोमां नित्य पिंड (पोष) अपाय छे, तथा अग्रपिंड कमोदनो भात विगेरे प्रथमथी भिक्षामाटे स्थापीने अपाय छे, ते अग्रपिंड नित्य भाग अर्धपोष अपाय छे, तथा पोषनो चोथो भाग अपाय छे, तेवा नित्य दानयुक्त कुल, नित्य दान देवाथी स्वपक्ष तथा परपक्षना साधुओ जाय छे. तेनो भावार्थ आ छे के, स्वपक्ष ते संयत, परपक्ष बाकीना भिक्षुको ते बधा भिक्षामाटे जता होय, अने ते दानदेनारा एम समजे के घणा भिक्षुकोवे आपीए एथी घणो आरंभ करी तेओ छए कायनो आरंभ करे, अने थोडुं रांधे तो बधाने अंतराय थाय माटे वधारे रांधे एवा स्थानमां उत्तम साधु गोचरी माटे के पाणी माटे त्यां न जाय, हवे बधानो उपसंहार करे छे.

प्रथमथी छेवटसुधी ते भिक्षुने समग्र जे उद्गम, उत्पादन ग्रहण एषणा संयोजना [प्रमाणथी वधारे] अंगार धुमकारणोवडे समजीने सुपरिशुद्ध पिंड साधुओए लेवो, तेज ज्ञानाचार समग्रता दर्शन चारित्र तप अने वीर्याचार संपन्नता छे. अथवा आ सूत्रवडे समग्रता देखाडे छे, के जे सरस विरस विगेरे आहार मळे छे, तेनाथी अथवा रूप रस गंध स्पर्शवडे साधु समित छे. अर्थात् समभाव राखनार संयत छे, अथवा पांच समितिथी समित छे, शुभ अशुभमां रागद्वेष रहित छे, आवो साधु हित साधवाथी सहित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे, अथवा ज्ञान दर्शन चारित्र सहित छे, आवो संयम युक्त साधु यतना करे (संयम पाळे) आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के में भगवान पासे सांभळ्युं ते तमने कह्युं, पोतानी मतिकल्पनाथी कह्युं नथी. बाकी बधुं पूर्वमाफक जाणवुं.

पिंडैषणा अध्ययनो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो कहीने हवे बीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. के प्रथम उद्देशामां पिंडनुं स्वरुप बताव्युं, अने अहीं पण ते संबंधी विशुद्धकोटिने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा—असणं वा ४ अट्ठमिपोसहिएसु वा अद्धमासिएसु वा मासिएसु वा दोमासिएसु वा तेमासिएसु वा चाउम्मासिएसु वा पचमासिएसु वा छम्मसिएसु वा उऊसु वा उउसंधीसु वा उउपरियट्टेसु वा बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा सनिहिसंनिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवियं अफासुयं जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं फासुयं पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० १०)

For Private and Personal Use Only

ते भावभिक्षु आवा प्रकारनुं भोजन विगेरे जाणे के, आठमनो पौषध उपवास विगेरे ते अष्टमीपौषध ते जेमां होय ते अष्टमीपौषध उत्सव छे, तेज प्रमाणे पंदर दिवसे आवनारो ठेठ ऋतुना छेडे आवनारो, विगेरे महिने बे महिने त्रण महिने चार महिने छ महिने रुतुमां रुतुसंधिमां अथवा रुतु बदलातां कोइपण निमित्तने उद्देशीने घणा श्रमण माहण अतिथि कृपणवनीमगोने एक पिठरक (तपेलामां) थी भात विगेरे "परिएसिज्जमाण" आपेलाने खातां देखीने अथवा बे त्रण पिठरकथी अपातुं होय विगेरे जाणवुं. आ 'पिठरक' ते सांकडा मोढानी होय तो कुंभी (चरु) छे, अने 'कलोवाइअ' पिच्छी पिटक (देघडो) छे, तेमांथी कोइपणमांथी अपाय, अथवा संनिधि ते गोरस विगेरेनो संचय होय, तेमांथी अपातुं होय, ["तओ एवंविहं जावंतियं पिंडं समणादीणं परिएसिज्जमाणं पेहाए"] त्ति आवो पिंड अपातो जाणीने तेज पुरुष साधु विगेरेने उद्देशीने बनावीने आपतो होय तो अप्रासुक अनेषणीय मानतो, मळतुं होय तो पण ते ले नहि, हवे अमुक विशेषणवाळुं लेवा योग्य बतावे छे,

एटले ते भिक्षु एवुं जाणे के पुरुषांतर थयुं छे. एटले बीजा गृहस्थने तेनी महेनत बदल अथवा बीजा कारणे मळ्युं होय अने ते पोते तेमांथी पोतानुं थया पछी वहोरावे, तो एषणीय प्रासुक जाणीने पोते ले.

हवे जे कुळोमां गोचरी माटे जवुं कल्पे तेनो अधिकार कहे छे—

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा, तं जहा—उग्गकुलाणि वा भोगकुलाणि वा राइन्नकुलाणि वा खत्तियकुलाणि वा इक्खागकुलाणि वा हरिवंसकुलाणि वा एसियकुलाणि वा वेसियकुलाणि वा गंडागकुलाणि वा कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बुक्कासकुलाणि वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु

अदुगुंछिएसु अगरहिएसु असणं वा ४ फासुय जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० ११)

ते भिक्षु गोचरी जवा चाहे तो आवां कुळो जाणीने तेमां प्रवेश करे, उग्रकुळ ते आरक्षिक [कोटवाळनुं काम ते वखते करनारा] भोगकुळ ते राजाने पूजवायोग्य होय, राजन्यकुळ ते राजाना मित्रतरीके हता, क्षत्रियकुळ राष्ट्रकुट विगेरेमां रहेनार, इक्ष्वाक ते ऋषभदेवना वंशमां जन्मेला, हरिवंश ते नेमिनाथना वंशना, 'एसिअ' गोष्ठ वैश्य (वणिज) गंडक ते नापित छे, जे गाममां उद्घोषणानुं काम करे छे, कोट्टाग (सुतार) बोक्कशालिय तंतुवाय (कपडां वणनारा) हवे क्यांसुधी कहेशे. ते खुलासो करे छे. के तेवां कुलोमां गोचरी जवुं के ज्यां जवाथी लोकोमां निंदा न थाय, जुदा जुदा देशना दीक्षा लीधेला शिष्योने सहेलथी समजाय तेटला माटे तेवा कुळोनां विशेषणो कहे छे, के न निंदवायोग्य कुळमां गोचरी जाय, एटले चामडानुं काम करनार मोची, चामडीया दासदासी विगेरेना कुळमां गोचरी न जवुं, पण तेनाथी उलटां सारां धर्मी कुळोमां ज्यां गोचरी निर्दोष प्रासुक मळे ते ले.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा—असणं वा ४ समवाएसु वा पिंडनियरेसु वा इंदमहेसु वा खंदमहेसु वा एवं रुदमहेसु वा मुगुंदमहेसु वा भूयमहेसु वा जक्खमहेसु वा नागमहेसु वा थूभमहेसु वा चेइयमहेसु वा रुक्खमहेसु गिरिमहेसु वा दरिमहेसु वा अगडमहेसु वा तलागमहेसु वा दहमहेसु वा नइमहेसु वा सरमहेसु वा सागरमहेसु वा आगरमहेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए दोहिं जाव संनिहिसनिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं जाव नो पडिग्गाहिज्जा ॥ अह पुण एवं जाणिज्जा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन्नं जं तेसिं दायव्वं, अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए गाहावइभारियं वा गाहावइभगिणिं वा गाहावइपुत्तं वा धुयं वा सुण्हं वा धाइं वा दासं वा दासिं वा कम्मकरं वा कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा-आउसित्ति वा भगिणित्ति वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयण जायं, से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा पुण जा इज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं जाव पडिग्गाहिज्जा ॥ (सू० १२)

ते भिक्षु आ प्रमाणे वळी आहार विगेरे ४ प्रकारनो जाणे के आ बीजा पुरुषने अपायो नथी तो अनेषणीय अप्रासुक जाणीने पोते न ले, ते केवो आहार ते कहे छे.

समवाय (मेळो) शंखच्छेदश्रेणी विगेरेनो पिंड निकर मरेलानी पाछळ पिंड अपाय छे. (गुजरातमां श्राद्ध कहेवाय छे) ते तथा इंद्रउत्सव [प्रथम कार्तिकी पूर्णीमाए थतो] स्कंद ते कार्तिकस्वामीनो महोत्सव पूर्वे करातो रुद्र (महादेव) विगेरे जाणीता छे. मुकुंद (बळदेव) एटले इन्द्र, स्कंद, रुद्र, मुकुंद, भूत, जक्ष, नाग, स्तुप, चैत्य, वृक्ष, गिरि, दरि, अगड, तलाग, द्रह, नदी, सरोवर, सागर, आगर अथवा तेवा कोइ देव विगेरेने उद्देशीने कोइ महोत्सव करे त्यां जे कोइ श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृपण वणीमग विगेरे आवे तेने आपवा माटे भोजन बनावे, तेवुं जो कोइ जैनसाधु जाणे के ते रसोइ बनाववनारना कबजामां छे, तो ते अशुध्ध जाणीने न ले, जोके त्यां बधाने दान देवातुं न होय, तो पण त्यां घणा माणसो एकठा थयां होय, तेथी त्यां संखडी (रसोइखाना) आगळ आहार लेवा न जवुं, तेज विशेषण सहित कहे छे—

वळी आवो आहार जाणे के जे श्रमण विगेरेने आपवनुं होय तेने अपायुं छे, अने गृहस्थलोकोने त्यां खातां जुए, तो त्यां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जरुर होय तो आहार माटे जाय, ते गृहस्थोनां नाम कहे छे, जेमके गृहस्थोनी भार्या विगेरेने पूर्वे खातां जुए, अथवा मालिकने जुए, तो मालिकने उद्देशीने साधु बोले के हे आयुष्यमति ! हे बेन ! मने जे कंइ भोजन तैयार होय ते आप, आवुं साधु बोले छते कोइ गृहस्थ भोजन विगेरे लावीने आपे, अने त्यां घणो जनसमूह एकठो थवाथी अथवा तेवां बीजां कारण होय तो साधु पोतानी मेळे याचे, अथवा याच्याविना पण गृहस्थ आपे, अने ते प्रासुक एषणीय अन्न विगेरे जाणे तो साधु ले.

हवे अन्य गामनी चिंता (विचार) ने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा २ परं अद्धजोयणमेराए संखडिं नच्चा संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा २ पाईणं संखडिं नच्चा पडीणं गच्छे अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं नच्चा पाईणं गच्छे अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं नच्चा उदीणं गच्छे अणाढायमाणे, उईणं संखडिं नच्चा दाहिणं गच्छे अणाढायमाणे, जत्थेव सा संखडि सिया, तंजहा—गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा आगरंसि वा दोणमुहंसि वा नेगमंसि वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए, केवली बूया–आयाणमेयं संखडिं संखडिपडियाए अभिधारेमाणे आहाकम्मियं वा उद्देसियं वा मीसजायं वा कीयगडं वा पामिच्चं वा अच्छिज्जं वा अणिसिट्ठं वा अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाणं भुंजिज्जा (सू० १३)

ते भिक्षु वधारेमां वधारे अर्ध योजनसुधी क्षेत्रमां जमणनुं ज्यां रसोडुं होय, त्यां जवानो विचार करे नहि, पण पोताना गाममां अनुक्रमे गोचरी जतां तेवुं जमण होय ते जाणीने शुं करवुं ते कहे छे–एटले पूर्वदिशामां जमण जाणे, तो तेथी उलटी

पश्चिमदिशामां गोचरी जाय, अने पश्चिमदिशामां जमण होय तो पूर्वदिशामां गोचरी जाय, एम बीजी पण दिशामां जाणवुं, एटले जमणनी जग्याए जवानो अनादर करे. ज्यां जमण होय त्यां न जवुं, हवे जमण क्यां क्यां होय ते कहे छे, गाम ज्यां इंद्रियोनी पुष्टि थाय अथवा ज्यां करो लागु पडे ते छे, तेज प्रमाणे नगर, खेट कर्बट मडंब पतन (पाटण) आकर द्रोणमुख नैगम आश्रम राज्यधानी संनिवेश [आ बधा शब्दोनो अर्थ आचारांगना अगाउना भागमां पा० अपायेल छे] आवा स्थानमां संखडि (जमण) जाणीने जवुं नहि, केवळीप्रभु कहे छे के, ते जमण कर्मोना उपादाननुं स्थान छे, अथवा बीजी प्रतिमां आदानने बदले आयतन शब्द छे. तेनो अर्थ आ छे के संखडिमां जवुं ते दोषोनुं स्थान छे.

प्र०—संखडीमां जवुं ते दोषोनुं आयतन केवीरीते छे? ते कहे छे "संखडिं संखडि पडियाएत्ति"—जे जे संखडिने उद्देशीने पोते जाय, तो ते जग्याए आमांना कोइपण दोष अवश्ये लागु पडे ते बतावे छे. आधाकर्म, औद्देशिक, मिश्र, क्रीत, उद्यतक, आच्छेद्य, अनिसृष्ट, अभ्याहृत आमांथी कोइपण दोषथी दोषित पोते भोजन वापरे, कारण के जमणनो करनारो एवुंज मनमां धारे के, आ आवनारो साधु मारा जमणने उद्देशीने आव्यो छे, माटे मारे कोइपण बहाने एने आपवुं एम विचारी आधाकर्म दोषवाळुं भोजन विगेरे बनावी आपे, अथवा जे साधु लोलुपी थइने जमणनी बुध्धिए त्यां जाय, ते मूढ बनीने आधाकर्म विगेरेनुं भोजन वापरे. वळी संखडि निमिते आवेला साधुने उद्देशीने ग्रहस्थ वसति (उतरवानुं स्थान) आ प्रमाणे करे ते कहे छे.

अस्संजए भिक्खुपडियाए खुड्डियदुवारियाओ महल्लिय दुवारियाओ कुज्जा, महल्लियदुवारियाओ खुड्डियदुवारियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जओ

निवायाओ कुज्जा, निवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय छिंदिय दालिय दालिय संथारगं संथारिज्जा, एस विलुंगयाओ सिज्जाए, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडि वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स जाव सया जए (सू० १३) त्तिबेमि। पिण्डैषणाध्ययने द्वितीयः १-१-२

असंयत ते गृहस्थ छे, अने ते श्रावक अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य दर्शनीय होय, ते साधुओने आवता जाणीने तेमने माटे सांकडा दरवाजा जे घरने होय ते साधुनिमित्ते मोटा करावे, अथवा घणा मोटा होय ते जरुर जेटला सांकडा करावे, अथवा सरखी जग्या होय ते स्त्रीओने आववाना भयथी विषम करावे, अथवा विषम होय ते साधुओना समाधान माटे सरखी बनावे छे, तथा घणी हवावाळी जग्याने शीयाळो होय तो पवन न आवे तेवी बनाववा आरंभ करे. अने उनाळो होय अने पवन विनानी जग्या होय तो हवावाळी बनाववा प्रयत्न करे, तथा उपाश्रयना चोकमां लीलुं घास होय तो छेदी छेदी-उखेडी उखेडीने उपाश्रय रहेवायोग्य संस्कारवाळो बनावे, अथवा सुवानी जग्या संस्तारकने सुधारे. अने ते मनमां एवो उद्देश राखे के साधुनी शय्याना संस्कारमां आपणुं कर्त्तव्य छे. माटे आपणे करवु जोइए, कारण के तेओ निर्ग्रंथ-अकिंचन छे, वळी गृहस्थ तेम न करे तो कारण आवे साधु पोते (निर्घृण थइने) करीले. तेटला माटे अनेक दोषथी दुष्ट एवुं संखडि (जमण) जाणीने लग्न विगेरेनी प्रथम अने मरण पाछळनी पछीनी संखडीमां जमणने उद्देशीने साधु न जाय, अथवा आगळ संखडि थवानी छे, माटे प्रथम साधु जाय, अथवा गृहस्थ जग्याने सुधारी राखे, अथवा संखडि पूरी थइ, माटे हवे वधेलुं भोजन (मिष्टान्न) खाइशुं एवी बुद्धिथी पछीथी साधुओ जाय,

माटे साधुए तेवी संखडिना जमणने उद्देशीने तेवा स्थानमां विहार नकरवो, आज साधुनी संपूर्ण संयमशुध्धि छे, के संखडिमां सर्वथा जवानुं मांडीवाळवुं.

त्रीजो उद्देशो.

बीजो उद्देशो कहीने त्रीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां बताव्युं छे के संखडिमां दोषो जाणीने त्यां जवानो निषेध कर्यो, हवे बीजे प्रकारे तेमां रहेला दोषोने बतावे छे.

से एगइओ अन्नयरं संखडिं आसित्ता पबित्ता छड्डिज्ज वा वमिज्ज वा भुत्ते वा से नो सम्मं परिणमिज्जा अन्नयरे वा से दुक्खे रोगायंके समुप्पज्जिज्जा केवली बूया आयाणमेयं ॥ (सू० १४) इह खलु भिक्खू गाहावईहिं वा गाहावईणीहिं वा परिवायएहिं वा परिवाईयाहिं वा एगज्जं सध्धिं सुंडं पाउं भो वइमिस्सं हुरत्था वा उवस्सयं पडिलेहेमाणो नो लभिज्जा तमेव उवस्सयं संमिस्सीभावमावज्जिज्जा, अन्नमाणे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा किलीबे वा तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो समण! अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा राओ वा वियाले वा गामधम्मनियंतियं कट्टु रहस्सियं मेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टामो, तं चेवेगईओ सातिज्जिज्जा—अकरणिज्जं चेयं संखाए एए आयाणा [आयतणाणि] संति संविज्जमाणा पच्चवाया भवंति, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए (सू० १५)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते भिक्षु कोइ वखत एक चर (एकलो फरनारो) होय, अने ते आगळ–पाछळ संखडिनुं भोजन खाइने तथा शीखंड के दूध विगेरे अति लोलुपीपणाथी रसनो स्वादीयो बनीने घणुं खाय, तो विशेष झाडा थाय, अथवा वमन थाय. अथवा अजीरणथी कोढ विगेरे कोइ रोग थाय, अथवा तुर्त जीव लेनारो आतंक शूळ विगेरे रोग थाय, माटे केवळी सर्वज्ञप्रभु कहे छे के ते संखडिनुं जमण कर्मोनुं उपादान छे, ते आदान केवी रीते थाय छे, ते बतावे छे. आ संखडिना स्थानमां आ अपायो (पीडाओ) थाय छे, अथवा जीभनो स्वाद करी इंद्रियो उन्मत्त थतां दुर्गति गमन विगेरे परलोकना अपायो छे, [खलु शब्द वाक्यनी शोभा माटे छे] ते भिक्षु गृहस्थ अथवा तेना घरनी स्त्रीओ साथे अथवा परिव्राजक (बावा) साथे अथवा बावीओ साथे कोइ दिवस एक वाक्य (एक चित्त थवा) थी प्रेमी बनीने तेओनी साथे ते साधु लोलुपपणे कोइ पण जातनुं नसो चडावनारुं पीणुं पण पीए, अने नसो चडतां रहेवानुं स्थान याचे, पण जो तेवो शीलरक्षणनो उपाश्रय न मळे तो ते संखड्डि नजीकनाज मकान (धर्मशाळा विगेरे) मां गृहस्थ अथवा बावी विगेरे ज्यां उतर्या होय तेमनी साथे उतरीने एकमेकपणे वर्त्ते, त्यां नसो चडेलो होवाथी कांतो गृहस्थ पोताने भूली जाय अथवा साधु पोताने साधुपणाथी भूले, अने तेथी आवुं चिंतवे, के हुं गृहस्थज छुं! अथवा (इंद्रियो पुष्ट थयेल होवाथी) स्त्रीना शरीरमां मोहित थयेलो अथवा नपुंसक साथे कुचालथी साधुपणुं गुमावे, अथवा तेने उन्मत्त जोइ कोइ रखडती स्त्री अथवा नपुंसक तेनी पासे आवीने बोले के हे आयुष्मन्! हे श्रमण! हुं तारीसाथे एकांतमां मळवा इच्छुं छुं, आराममां अथवा उपाश्रयमां रात्रे अथवा संध्याकाळे ते साधुने इन्द्रियोथी परवश बनेलाने कहे के तमारे त्यां आववुं, अने तमारे अमारी इच्छाथी विपरीत न करवुं, पण मारी साथे तमारे हमेशां अमुक स्थळमां आववुं, आ प्रमाणे परवश बनावीने गामनी सीमम़ां अथवा

For Private and Personal Use Only

कोइ एकांत स्थळमां जइने स्त्रीसंग अथवा कुचेष्टानी विज्ञप्ति करे, अने दुराचारथी भ्रष्ट थवा वखत आवे, माटे संखडिमां जवुं अयोग्य छे, एम मानीने संखडि (जमण) मां जवुं नहि, कारण के आ जमणो कर्मोपादननां कारणो छे, तेमां कर्म दरेक क्षणे एकठां थाय छे, एटले त्यां जवाथी बीजां पण अशुभ कर्मबंधनां कारणो मळी आवे छे, उपर बतावेला त्यां आलोक संबंधी रोगना दुराचारना अपायो छे. तेमज परलोक संबंधी दुर्गतिगमनना प्रत्यवायो छे, माटे संखडीने उद्देशीने त्यां पहेलां के पछी साधुए जवुं नहीं.

से भिक्खू वा २ अन्नयरिं संखडिं सुच्चा निसम्म संपहावइ उस्सुयभूएण अप्पाणेणं, धुवा संखडी, नो संचाएइतत्थ इयरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिग्गाहित्ता आहारं आहारित्तए, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा ॥ से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा ॥ [सू० १६]

ते भिक्षु आगळ-पाछळनी कोइपण 'संखडी' बीजा पासे के जाते सांभळीने निश्चय करे के त्यां अवश्ये जमण छे, तो त्यां उत्सुकपणाथी अवश्य दोडे के मने अद्भुत भोजन मळशे. तो त्यां गया पछी जुदा जुदा घरोथी समुदायनी एषणीय गोचरी आधाकर्मादि दोष रहित फक्त रजोहरण विगेरेना वेषथी मळे ते उत्पादन दोष रहित लेवी, ते तेनाथी बनी शके नहि, अने कपट पण करे, प्र०—केवी रीते? पोते गुरु पासेथी 'प्रतिज्ञा' करीने जाय, के जुदा जुदा घरेथी गोचरी लइश, पण उपर बतावेली रीते तेम लेवा शक्तिवान न थाय. अने संखडिमांज जाय. माटे आलोक परलोकना अपायोना भयने जाणीने संखडि तरफ न जाय. केवी रीते करे. ते कहे छे. ते भिक्षु कारण विशेषे त्यां जाय तो पण योग्य समये जुदा जुदा घरोमां जइने सामुदायिक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आहार-पाणी प्रासुक वेषमात्रथी मळे ते धात्रीपिंड विगेरे दोषथी रहित लइने आहार करे.

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडी सिया तंपि य गामं वा जाव रायहाणिं वा संखडिं संखडि पडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ केवली बूया आयाणमेयं अइन्नाऽवमा णं संखडिं अणुपविस्समाणस्स—पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवेइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वेण वा भवइ, सीओदएण वा उस्सित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परिघासियपुव्वे भवइ, अणेसणिज्जे वा परिभुत्तपुव्वे भवइ, अन्नेसिं वा दिज्जमाणे पडिग्गाहियपुव्वे भवइ, तम्हा से संजए नियंठे तहप्पगारं आइन्नावमाणं संखडिं संखडिपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ (सू० १७)

वळी ते भिक्षु जो आ प्रमाणे जाणे के गाममां, नगरमां अथवा राजधानीमां कोइपण स्थळे संखडि (जमण) थवानी छे त्यां चरक विगेरे अनेक भिक्षाचरो हशे. त्यां जमणनी बुद्धिए साधु विहार न करे. त्यां जवाथी थता दोषोने सूत्रवडे कहे छे, के केवळी (सर्वज्ञ) प्रभु तेने कर्म उपादान छे. एज बतावे छे. ते संखडि चरक विगेरेथी व्याप्त हशे. एटले १०० नी रसोइ होय त्यां पांचसो भेगा थशे. त्यां थोडी रसोइने लीधे आवा दोषो थाय छे. धक्काधक्कीमां एकना पग बीजाने लागशे. हाथथी हाथ अथडाशे. पात्रां साथे पात्रां अथडाशे. अथवा माथासाथे माथुं भटकाशे. साधुनी काय साथे चरक विगेरेनी काया अथडाशे. ते वखते धक्को लागतां

For Private and Personal Use Only

ते बावो कोपायमान थतां झगडो करशे. पछी ते रीसमां आवीने दंड (लाकडी) थी केरीना गोटला विगेरेथी मुकाथी माटीना ढेफाथी कपाल [घडाना ठीकरा] थी साधुने घायल करशे, अथवा ठंडा पाणीथी सिंचशे, धूळथी कपडां बगाडशे, आ दोषो तो जगाना संकोचने लीधे थाय छे, पण ओछी रसोइने लीधे आवा दोषो थाय छे. अशुद्ध आहार खावानो वखत आवशे, कारण के थोडुं रांधेलुं अने भिक्षु वधारे होय छे, त्यारे घरधणी एम समजे के मारुं नाम सांभळीने आ लोको आव्या छे, माटे मारे कोइपण रीते पण तेमने आपवुं जोइए, एवुं विचारीने साधुने रांधीने पण आपशे, तेथी दोषित आहार खावानो प्रसंग आवे, अथवा कोइ वखत दानदेनारने बीजा बावा विगेरेने आपवानी इच्छा होय अने वचमां साधु आवीने ले, तेथी घरधणीने तथा बावा विगेरेने खोटुं लागे, माटे आवा दोषोने जाणीने उत्तम साधुए आवी संखडिमां घणा लोको भरायेला होय, त्यां भोजननी तंगीने लीधे अथवा धक्कामुक्कीना कारणे संखडिनी बुद्धिए त्यां जवुं नहि, हवे सामान्यथी पिंडनी शंकाने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं पुण जाणिज्जा असणं वा ४ एसणिज्जे सिया अणेसणिज्जे सिया वितिगिंछ-समावन्नेण अप्पाणेण असमाहडाए लेसाए तहप्पगारं असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० १८]

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एषणीय आहरने पण शंकावाळुं जाणे, के आ उद्गमादि दोषोथी दुष्ट छे. तो साधुए तेवी शंका थया पछी तेवुं लेवुं नहि, कारणके "जं संके तं समावज्जे," ज्यां शंका थाय त्यां ते भोजन लेवुं नहि, (आ सूत्रमां एषणीय अथवा अनेषणीय चार प्रकारनो आहार होय, पण पोताने केटलांक कारणोथी मालुम पडे के ते उद्गम दोष विगेरेथी युक्त छे. आवी ज्यां पोतानी लेश्या थइ तो उत्तम साधुए ते लेवुं नहि.) हवे गच्छमांथी नीळेकला साधुओने आश्रयी सूत्र कहे छे.

से भिक्खु० गाहावइकुलं पविसिउकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा २ बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खममाणे वा पविसमाणे वा सव्वं भंडगमायाए बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से भिक्खू वा २ गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (मू० १९)

ते भिक्षु गच्छमांथी जिनकल्पी विगेरे मुनि नीकळ्यो होय, ते गृहस्थने घेर गोचरी लेवा जाय, तो पोतानां बधां धर्मोपकरण साथे लइने गृहस्थना घरमां पेसे, अथवा नीकळे, तेवा मुनीनां उपकरण अनेक प्रकारे छे.

"दुगतीग चउक्क पंचग नव दस एक्कारसेव बारसह" इत्यादि-ते जिनकल्पी बे प्रकारना छे, हाथमांथी पाणी टपके तेवा, तथा जे लब्धिवाळा होय तेने पाणीनुं बिंदु टपके नहि, तेवा मुनिने शक्ति अनुसार विशेष अभिग्रह होवाथी फक्त बेज उपकरण रजोहरण अने मुखवस्त्रिका छे, अने कोइने शरीरना रक्षण माटे एक सूत्रनुं कपडुं होवाथी त्रण उपकरण थया, पण तेवा साधुने वधारे ठंडीना कारणे उननुं वस्त्र वधारे राखवाथी चार उपकरण थयां, तेथी पण ठंडी न सहन थाय तो बे सूत्रनां वस्त्र राखवाथी पांच थयां.

पण लब्धिविनाना जिनकल्पीने सात प्रकारनां पात्रानो निर्योग थवाथी १२ उपकरण थाय छे. "१ पत्तं २ पत्ताबंधो ३ पायट्ठवणं च ४ पायकेसरिया ॥ ५ पडलाइ ६ रयत्ताणं ७ च गोच्छओ पायनिज्जोगो ॥ १ ॥"

१ पात्र २ पात्रानो बंध ३ पात्रस्थापन ४ पात्र केसरिका (पुंजणी) ५ पडला ६ रजस्त्राण ७ गोच्छो. उपरनां पांच तेमां मळतां बार उपकरण वधारेमां वधारे जिनकल्पीने होय, ते गोचरीमां जाय, त्यारे साथे लेइ जाय तेम बीजे स्थळे पण जतां साथे लेइ जाय,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते कहे छे, एटले गाम विगेरेनी बहार स्वाध्याय करवा अथवा स्थंडील जवा जाय तो पण बधां उपकरण लेइ जाय, आ बीजुं सूत्र छे, तेज प्रमाणे बीजे गाम जाय तो पण लेइने जांय, ए त्रीजुं सूत्र छे. हवे गमनना अभावनां निमित्त कहे छे.

से भिक्खू० अह पुण एवं जाणिज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासेमाणं पेहाए तिव्वदेसियं महियं संनिचलमाणं पेहाए महवाएण वा रयं समुध्धुयं पेहाए तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा संथडा संनिचयमाणा पेहाए से एवं नच्चा नो सव्वं भंडगमायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (सू० २०)

ते भिक्षु कदी आवुं जाणे के अहीं लंबाण क्षेत्रमां झाकळ पडे छे, अथवा धुमस पडे छे, अथवा वंटोळीयो वाइने धुळ घणी उडे छे, अथवा तीरछां-पतंगीयां विगेरे झीणां जंतुओ उडीने शरीर साथे आथडे छे, तो ते साधु पूर्वे त्रण सूत्रमां बतावेल उपधि लइने जाय आवे नहि, तेनो परमार्थ आ छे, के जिनकल्पीनो आ कल्प छे के ज्यारे बहार नीकळे त्यारे प्रथम उपयोग दे के वर्षाद झाकळ के धुमस वरसे छे के वरसवानो छे? जो प्रथम जाणे तो न नीकळे. कारण के तेनी शक्ति एवी छे के छमास सुधी पण ठल्लोमात्रुं (झाडो पेशाब) रोकी शके, अने स्थविरकल्पी पण उपयोग दे, अने जाण्या पछी कारण होय तो नीकळे खरो. पण पोतानी बधी उपधि लेइने न नीकळे, प्रथम बतावी गया के अधम कुलोमां गोचरी विगेरे माटे जवुं आववुं नहि. पण हवे अनिंदनीक कुलोमां पण दोषोना देखवाथी त्यां जवानो निषेध छे, ते बतावे छे.

से भिक्खू वा २ से जाइं पुण कुलाइं जाणिज्जा तंजहाखत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायपेसियाण वा राय-

For Private and Personal Use Only

वंसट्ठियाण वा अंतो वा बाहिं वा गच्छंताण वा संनिविट्ठाण वा निमंतेमाणाण वा अनिमंतेमाणाण वा असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा (सू० २१) ॥ १-१-३ ॥ पिण्डैषणायां तृतीय उद्देशकः ॥

ते भिक्षु एवां कुलो जाणे के, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बळदेव विगेरे क्षत्रियोनां आ छे, अथवा क्षत्रियोथी अन्य राजाओनां कुळो छे, कुराज ते नानां रजवाडा (नाना ठाकरडा विगेरे) ना कुळो छे, राजना मेष्य ते दंडपाशिक [हवालदार फोजदार] नां कुळो तथा राजवंशमां रहेला ते राजाना मामा तथा भाणेजो विगेरेनां कुळोमां संतापना भयथी पेसवुं नहि, त्यां जतां आवतां अंदर रहेला माणसोथी अथवा बहार रहेला माणसोथी अथवा जता आवता माणसोथी साधुओने नुकशान थाय, माटे कोइ गोचरीनुं निमंत्रण करे, अथवा भोजन मळतुं होय तोपण त्यां गोचरी लेवा जवुं नहि.

त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

चोथो उद्देशो.

त्रीजो कहीने चोथो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां संखडी संबंधी विधि कही, अहीं पण तेनी बाकीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणे से जं पुण जाणेज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा आहेणं वा पहेणं वा हिंगोलं वा समेलं वा हीरमाणं पेहाए अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउध्या बहुउत्तिंगपणगदगमट्टीयमक्कडासंतयाणा बहवे तत्थ समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा उवागया उवागमिस्संति (उवाग-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्छंति) तत्थाइन्ना वित्ती नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए नो पन्नस्स वायणपुच्छणपरियट्टणाणुप्पेहधम्माणुओगचिंताए, से एवं नच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिं संखडिपडिआए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा मंसाइयं वा मच्छाइयं वा जाव हीरमाणं वा पेहाए अंतरा से मग्गा अप्पा पाणा जाव संताणगा नो जत्थ बहवे समण० जाव उवागमिस्संति अप्पाइन्ना वित्ती पन्नस्स निक्खमणपवेसाए; पन्नस्स वायणपुच्छणपरियट्टणाणुप्पेहधम्माणुओगचिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा० अभिसंरिज्ज गमणाए ॥ (सू० २२)

ते साधु कोइ गाम विगेरेमां भिक्षा माटे गयो होय, त्यां संखडि आवा प्रकारनी जाणेतो त्यां गोचरी जवुं नहि, जेमां मांस विगेरे प्रधान छे. मांसना स्वादुओ माटे मुख्य तेज वस्तु होय, एटले प्रथम तेने वधारे रांधे. अथवा बीजी रसोइ पूरो थया पछी ते तेना स्वादुओ माटे रांधे, त्यां कोइ सगो विगेरे तेवुं अभक्ष्य भोजन घेर लइ जाय, तेवुं देखीने त्यां साधु जाय नहिं, तेना दोषो हवे पछी कहेशे, तेज प्रमाणे माछलांथी वधारे प्रधान होय, तेज प्रमाणे मांसखल आश्रयी पण जाणवुं. ज्यां संखडि माटे मांस छेदीने तेने सुकावे, अथवा सुकवेलुं, ढगलो करेलुं होय, तेज प्रमाणे माछलासंबंधी पण जाणवुं. अथवा विवाह पछी वहु घेर आवतां वरना घरे भोजन थाय छे, अथवा वहुने लइ जतां सासरे भोजन थाय छे, हिंगोल, ते मरेलानुं भोजन छे, अथवा यक्षनी यात्रा विगेरे माटे भोजन छे, 'संमेल' ते परिवारना सन्माननुं भोजन, अथवा गोठीयाओनुं भोजन, आवुं कोइपण प्रकारनुं जमण जाणीने त्यां कोइ सगां-वहालांथी ते निमित्ते कंइपण लइ जवातुं देखीने त्यां भिक्षामाटे जवुं नहि, त्यां जवाथी थता दोषोने बतावे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे, त्यां रस्तामां जतां बहु पतंग विगेरे प्राणीओ होय छे, तथा बहु बीज, बहु हरित, बहु अवश्याय घणुं पाणी बहु उत्तिंग पनक भींजवेली माटी करोळीयानां जाळां होय छे, तथा त्यां जमण जाणीने घणा श्रमण ब्राह्मण अतिथि कृमण वणीमग आव्या, आवशे अने आवे छे, ते चरक विगेरेथी व्याप्त होय छे, तेथी बुद्धिमान साधुने त्यां जवुं आववुं कल्पे नहि, तेम त्यां जनारने गीतवाजींत्रना संभवथी भणवुं भणाववुं अर्थचिंतयन विगेरे थइ शके नहि, तेथी ते साधुने आवतां जतां घणो काळ लागे, तेथी बहु दोषवाळी संखडिमां ज्यां मांस विगेरे मुख्य छे, तेवा प्रथमना जमणमां के पाछळना जमणमां तेने उद्देशीने साधुए जवुं नहि, हवे अपवाद मार्ग कहे छे.

ते भिक्षु मार्गमां विहार करतां दुर्बळ थाय, मंदवाडमांथी उठ्यो होय, तपचरणथी दुर्बळ थयो होय, अथवा बीजे कंइ आहार मळे तेवुं स्थान न होय, अथवा त्यांज दवानी चीज मळे तेम होय, तो तेवा जमणमां कारण प्रसंगे जवुं पडे तो जे रस्ते सूक्ष्म जीवो घास बीज के वचमां कांइ न पड्युं होय, तो ते रस्ते मांस विगेरेना दोषो दूर करवा समर्थ होय तो कारणे जाय, अने पोताने खपनी भक्ष्य वस्तु लइ आवे. (जैनोमां दश विकृति विगइ छे. घी, दूध, दहीं, तेल, गोळ, कडाइ एटले एकलुं घी, के दूध, दहीं, तेल, गोळ अने कडाइमां घी, तेल पुष्कळ नांखीने तळेल होय ते कडाइ विगय कहेवाय, आ पदार्थो जरुर पडे तो लेवाय छे, पण मांस मदिरा मांखण अने माखी वीगेरेनुं मध ए अभक्ष्य छे. कारणके तेमां जीवोनी उत्पत्ति छे. अने ते खानारने इंद्रियो दमन करवी तथा सुबुद्धि राखवी दुर्लभ छे, माटे जैन साधु के श्रावकने वर्जवा योग्य छे, माटे बने त्यांसुधी तेवा रस्ते पण जवानो निषेध छे, वखते खराब वस्तुनी दुर्गंधी आवे तो पण बुद्धि भ्रष्ट थाय छे.

For Private and Personal Use Only

चालता पिंडना अधिकारमां भिक्षा संबंधि खुलासावार कहे छे,

से भिक्खूवा २ जाव पविसिउकामे से जं पुण जाणिज्जा खीरिणियाओ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं पेहाए पुरा अप्पजूहिए सेवं नच्चानो गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा ॥ से तमादाय एगंतमवक्कमिज्जा अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा– खीरिणियाओ गावीओ खीरियाओपेहाए असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए पुराए जूहिए सेवं नच्चा तओ संजयामेव गाहा० निक्खमिज्ज वा ॥ (सू० २३)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेसतां आ प्रमाणे जाणे के अहीं तुर्तनी प्रसुतिवाळी गायो दोहवाय छे, तो त्यां गायो दोहवाती देखीने चारे प्रकारनो आहार 'रंधातो' जोइने अथवा भात विगेरे रांधेलो तैयार देखीने पण प्रथम बीजाने न आपेलो होय तो पण प्रवर्त्तमान अधिकरणनी अपेक्षावाळो प्रकृतिभद्रक विगेरे कोइ गृहस्थ साधुने देखीने श्रद्धावाळो बनीने घणुं दूध तेमने आपुं, आवी बुद्धिथी वाछडाने पीडा करे, दोहवाती गायोने त्रास पमाडे, ते कारणथी साधुने परपीडाना कारणे संयम तथा आत्मानी विराधना थाय, अने अडघा रंधायेल भात विगेरेने जलदी रांधवा माटे प्रयत्न करे तेथी पण संयम विराधना छे, माटे तेवुं जाणीने साधु गोचरी माटे त्यां न जाय, न नीकळे तेवा स्थळे शुं करवुं ते कहे छे,

ते भिक्षु ते गायनु दोहवुं, विगेरे जाणीने एक बाजुए ज्यां गृहस्थ न आवे, न देखे त्यां उभो रहे, त्यां उभा रहेतां आ प्रमाणे पछी जाणे के 'गायो दोहवाइ गइ छे, त्यारपछी गोचरीनी जरुर होय तो शुद्ध आहार लेवा योग्य होय ते लेवा जाय अने नीकळे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिंडना अधिकारथीज आ कहे छे.

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु—समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे खुड्डाए खलु अयं गामे संनिरुद्धा ए नो महालए से हंता भयंतारो बाहिरगाजि गामाणि भिक्खायरियाए वयह. संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा—गाहावइ वा गाहावइणीओ वा गाहावइपुत्ता वा गाहावइधुयाओ वा गाहावइसुण्हाओ वा धाइओ वा दासा वा दासीओ वा कम्मकरा वा कम्मकरीओ वा, तहप्पगाराइं कुलाइं पुरेसंथुयाणिवा पच्छासंथुयाणि वा पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि, अविय इत्थ लभिस्सामि पिंडं वा लोयं वा खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा धयं वा गुलं वा तिल्लं वा महुं वा मज्जं वा मंसं वा सक्कुलिं वा वा फाणियं वा पूयं वा सिहिरिणं वा, तं पुव्वामेवं भुच्चा पिच्चि पडिग्गहं च संलिहिय संमज्जिय तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहा० पविसिस्सामि वा निक्खमिस्सामि वा, माइट्ठाणं संफासे. तं नो एवं करिज्जा ॥ से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहित्ता आहारं आहारिज्जा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खूस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं० (सू०२४) ॥ १-१-४ ॥ पिण्डैषणायां चतुर्थ उद्देशकः ॥

केटलाक साधुओ जे एक स्थळे जंघाबळ क्षीण थवाथी एक जग्याए रह्या होय, तथा मासकल्पनो विहारकरनारा कोइ जग्याए मासकल्प रह्या होय ते समये बीजा विहार करनारा परोणा साधु त्यां आवीने उतर्या होय, तेमने पूर्वे स्थिर रहेला

For Private and Personal Use Only

अथवा मासकल्पी उतर्या होय, तेओ कहे के, आ गाम क्षुल्लक (नानुं) छे, अथवा गोचरी आपवामां तुच्छ छे, तथा सूतक विगेरेथी घर अटक्यां छे, माटे घणुंज तुच्छ छे, तेथी हे पूज्य! आप बने त्यांसुधी नजीकना गाममां गोचरी माटे जजो, तो ते प्रमाणे करवुं. हवे रहेला साधुनो दोष बतावे छे,

अथवा त्यां रहेनार साधुना पूर्वना सगां भत्रीजा विगेरे होय, अथवा पछवाडेना सगां. सासरीयांनां सगां विगेरे होय, ते बतावेछे. जेमके गृहस्थ, तेनी स्त्री तेना पुत्रो, दीकरीओ, दीकरांनी वहुओ, धावमाता दासदासी नोकर. नोकरडी तेवां संसारी संबंधवाळां पूर्वनां के पछीना सगां-संबंधी होय. तो त्यां पूर्वगोचरी जाउं, तो त्यां सारुं भोजनशालिना चोखा विगेरे तथा दूध, दहीं, मांखण, घी, गोळ तेल मध, दारु, मांस सक्कुली (तलसांकळी), गोळनीपेत, पूडा, शीखंड विगेरे गोचरीना वखत पहेलां लावीने खाउं, आ सूत्रमां भक्ष्य अभक्ष्य वस्तुओनो विवेक सू. २२ मां बताव्यो छे, ते आधारे अपवाद समजवो, अथवा कोइ साधु दुष्ट बुद्धिथी, रसगृधीथी पोताना हिंसक सगां जे पूर्वनां संबंधी होय तो त्यांथी लावीने वारोवार खाय. (ते माटे आ सूत्रमां तेनो निषेध कर्यो के तेणे त्यां जवुं नहि,) तेम अविवेकथी वस्तुओ लावीने खाय, पीणुं पीए. पछी पातरां त्रणवार साफ करीने पछी गोचरीना समये डाह्या (शांत) मनवाळो बनीने हुं नवा आवेला परोणा साथे गोचरी जइ आवीश, आवुं कपट कोइ करे तो, ते साधुनुं रसना लोलुपपणाथी साधुपणुं नष्ट थाय छे. माटे बिजा साधुए तेम न करवुं. त्यारे साधुए शुं करवुं ते कहे छे.

आवेला परोणा साथे त्यां रहेला साधुए गोचरीना वखते जुदाजुदा कुलोमांथी थोडी थोडी सामुदायिक एषणीय (उदगम) दोष रहित) तथा वैषिक ते फक्त साधुना वेषथी मेळवेल (धात्री पिंड विगेरे उत्पादन दोष रहित) गोचरी मेळवीने लेवी आज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधुनी संपूर्णता छे, (आ सूत्रमां मांस-मदिरावाळां कुटुंबमांथी कोइए दीक्षा लीधी होय, तो तेवाए सगांने घेर गोचरी जुदा न जवुं, तेज श्रेयस्कर छे, कारणके कुबुद्धि केवी खराब छे, अने तेनुं जैन धर्ममां केवुं प्रायश्चित छे ते नीचेनुं बनेलुं दृष्टांत वांचवा जेवुं छे.

(कुमारपाळ राजाए जैनधर्म स्वीकार्या पहेलां मांसाभक्षण करेलुं अने पाछळथी त्याग कर्युं हतुं, तेने एक समये घेबर खातां मांसनो स्वाद आव्यो, तेथी श्रीमान हेमचंद्रआचार्य पासे आवीने पूछयुं, के मने घेबरखावुं कल्पे के नहि? गुरुए कह्युं के नहि. प्र-शामाटे ? उ-पूर्वनो दुष्ट स्वभाव मांसाभक्षणनो याद आवे. कुमारपाळे कह्युं के त्यारे जो तेवुं स्मरण थयुं होय तो तेनुं मने प्रायश्चित शुं आवे ? उ-बत्रीश दांत पाडी नांखवानुं. तेज समये लुहारने बोलावी दांत खेंची काढवा कह्युं, त्यारे हेमचंद्राचार्ये ते राजानी दृढता जोइ बीजुं प्रायश्चित आप्युं आथी समजवानुं ए छे के 'तेवा' मांसभक्षणवाळां कुटुंबोमां जतां कुमारपाळ माफक खराब चीज याद आवी जायतो साधुपणुं भ्रष्ट थाय, पण बीजा साधु साथे होय तो तेनी शरमथी त्यां रहेनारो साधु पण बचे, अने सगांने पण मांस भक्षण न करवा बोध मळवाथी पापथी बचे.

चोथो उद्देशो समाप्त.

पांचमो उद्देशो.

चोथो कह्यो. हवे पांचमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां निर्दोष पिंड लेवानी विधि कही अने अहीं पण तेज कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणिज्जा—अग्गपिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं निक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं हीरमाणं पेहाए अग्गपिंड परिभाइज्जमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिभुंज्जमाण पेहाए अग्गपिंडं पेहाए अग्गपिंडं परिट्ठविज्जमाजं पेहाए पुरा असिणाइ वा अवहाराइ वा पुरा जत्थऽण्णे समण० वणीमगा खद्धं २ उवसंकमंति से हंता अमहवि खद्धं २ उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करेज्जा ॥ (सू० २५)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एम जाणे के देवता माटे तैयार करेलो भात विगेरेनो आहार छे, तेमांथी थोडो थोडो काढे छे. अने बीजा वासणमां नाखे छे, तेवुं देखीने अथवा कोइ देवना मंदिरमां लइ जवातुं जोइने अथवा थोडुं थोडुं बीजाने अपातुं जोइने तथा बीजाथी खवातुं अथवा देवळनी चारे दिशामां बलि तरीके उछाळातुं अथवा पूर्वे बीजा ब्राह्मण विगेरेए त्यांथी एकवार जमी आवीने घेर लइ जता होय, अथवा एकवार जमीआवीने श्रमण विगेरे एम माने के बीजीवार पण आपणने त्यां मळशे, एम धारीने पाछा त्वराथी जता होय, आवुं देखीने कोइ भोळो साधु के लालचु साधु ते भोजनना स्वादथी ललचाइने तेम विचारे के हुं पण त्यां जइने गोचरी लावुं, आम करवुं साधुने कल्पे नहि कारणके आवुं करतां तेने पण बीजा माफक कपट करवुं पडे.

हवे भिक्षामां फरवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० जाव समाणेअंत रा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि बा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा सति परकमे जयामेव परिक्कमिज्जा; नो उज्जुयं गच्छिज्जा, केवली बूया आयाणमेयं से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा पक्खलेज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पक्खलेज्जमाणे वा पवडमाणे वा, तत्थ सेकाए उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूण्य वा सुक्केण वा सोणिएण वा उवलित्ते सिया, तहप्पगारं कायं नो अणंतरहियाए पुढवीए नो ससिणिद्धाए पुढवीए नो चित्तमंताए सिलाएनो चित्तमंताए लेलूए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे जाव ससंताणए नो आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा संलिहिज्ज वा निलिहिज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टिज्ज वा आयाविज्ज वा पायाविज्ज वा, से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा साइज्जा, जाइत्ता से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अहे झामथंडिलंसिवा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जिज्ज वा जाव पयाविज्ज वा ॥ (सू० २६)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी जवा माटे जतां पाडो (महेल्लो), शेरी, के गाम विगेरेमां पेसतां मार्ग जुए, त्यां रस्तामां जतां वचमां समान भूभागमां अथवा बे गामना वचमां कयारा बनावेल जुए, अथवा घरने के नगरने खाइ के कोट होय, अथवा तोरणो अर्गला (अडगलो) अथवा अर्गलपाशक (जेमां अर्गलानो अंकोडो नांखे छे, ते जुए, तो ते कारणके लइने ते सीधे

मार्गे न जाय; कारणके त्यां जतां केवळीप्रभु कहे छे के कर्मबंधननुं ते कारण छे, वखते संयम विराधना अथवा आत्म विराधना थायछे ते बतावे छे. तेवे मार्गे जतां मार्गमां वप्रना कारणे विषमपणाथी कोइ वखत धूजे, कोइ वखत ठोकर खाय, कोइ वखत पडीजाय तो छकायमांथी कोइपण कायने विराधे, तेमज त्यां शरीरना मळथी, पिशाबथी बळखा, लींट, वमन, पित्त, परु, वीर्य, लोहीथी खरडाय माटे तेवे मार्गे न जवुं पडे तो ठोकरखातां गारामां पडीने खरडाव विगेरे कारणथी आवुं न करे, ते कहे छे.

ते साधु तेवा अशुचि गारा विगेरेमां पडतां वचमां वस्त्र राख्या विना खुल्ला शरीरे पृथ्वी साथे स्पर्श न करे, अथवा भीनी जमीन साथे के धुळवाळी पृथ्वी साथे तथा सचित्त पत्थर साथे तथा सचित्त माटीना ढेफासाथे अथवा धुणना कीडाथी सडेलुं लाकडुं जेमां अनेक नानां इंडां होय तेनी साथे अथवा करोळीयाना जाळांवाळी जग्या साथे एकवार न स्पर्श करे, न वारंवार स्पर्श करे, तेनाथी गारो दूर न करे, तेम त्यां बेसीने कादव दूर करवा खोतरे नहि, तेम त्यां बेसीने उद्वर्त्तन (चोळवुं) न करे, तेम सुकायलाने पण त्यां न खोतरे, तेम त्यां उभो रहीने सूर्यने तडके एकवार न तापे, अथवा वारंवार न तापे, शुं करे, ते कहे छे ते भिक्षु त्यांथी नीकळी अल्प रजवाळुं तृण विगेरे याचे, अने अचित्त जग्याए निभाडा विगेरे एकांतमां जोइने त्यां बेसीने शरीरनो कादव दूर करे, अथवा तडके तपावे. अने पछी दूर करे. अने स्वच्छ करे, वळी शुं करे ? ते कहेछे.

से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा गोणं वियालं पडिपहे पेहाए महिसं वियालं पडिपहे पेहाए एवं मणुस्सं आसं हत्थि सीहं वग्धं विगं दीवियं अच्छं तरच्छं परिसरं सियालं बिरालं सुणयं कोलसुणयं कोकंतियं चिताचिल्ल

डयं वियालं पडिपहे पेहाए सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छिज्जा । से भिक्खू वा० समाणे अंतरा से उवाओ वा खाणुए वा कंटए वा घसी वा भिलुगा वा विसमे वा विज्जले वा परियाविज्जिज्जा, सइ परक्कमे संजयामेव, नो उज्जुयं गच्छिज्जा ॥ (सू० २७)

ते भिक्षु रस्तामां जतां ध्यान राखे, अने जो त्यां एवुं जाणे के रस्तामां गाय, गोधो विगेरे छे, अने ते मारकणो होवाथी रस्तो बंध छे, अथवा झेरी साप छे, जंगली भेंस के पाडो छे, दुष्ट मनुष्य छे, घोडो हाथी, सिंह, वाघ, वृक (वरगडुं), चित्रो, बळद सरभ, जंगली डुक्कर, कोकंतिक, शीयाळना आकारनुं लोमडी जेवुं जनावर छे, जे रातमां कोको एम आरडे छे, चित्ता, चिल्लडय के जंगली जानवर छे. तेवुं कोइपण दुःखदायी प्राणी रस्तामां मालूम पडे तो प्रथम उपयोग दइने खात्री करे, अने बीजो रस्तो होय तो ते सीधे रस्ते न जतां भय विनाना रस्ते जाय, तेज प्रमाणे मार्गमां खाडो होय ठुंठुं होय कांटा होय, ढोळाव होय, काळी फाटेली माटी होय, उंचानीचा टेकरा होय, कादव होय, तेवी जग्याए बीजो मार्ग होय तो चक्रावो खाइने पण ते रस्ते जवुं. पण टुंका सोधा रस्ते न जवुं. कारणके त्यां जवाथी संयमनी तथा पोतानी विराधनानो संभव छे.

से भिक्खू वा० गाहावइकुल्लस दुवारबाहं कंटगबुंदियाए परिपिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय अप्पमज्जिय नो अवंगुणिज्ज वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्जवा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा पविसेज्ज वा निक्खमेज्ज वा॥ (सू०२८)

ते साधु गृहस्थने घेर गोचरी जतां ते घरनुं बारणुं दीधेलुं जोइने ते धणीनी रजा लीधा विना, आंखथी जोइने रजो-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरण विगेरेथी पूंज्या विना उघाडवुं नहि, उघाडीने पेसे नहिं, अने नीकळे पण नहि, तेना दोषो बतावे छे. गृहस्थने द्वेष थाय ते घरमांथी वस्तु खोवाय तो साधुना उपर शंका आवे अने उघाडेला द्वारथी पशु विगेरे घरमां पेसी जाय, तेथी संयम अने आत्मविराधना थाय, हवे जो कारण होय, तो अपवादमार्ग कहे छे.

ते घरमां जवानी जरुर होय तो तेना धणीनी रजा लइने आंखे देखीने ओघाथी पुंजीने बारणुं विगेरे उघाडे तेनो भावार्थ आ छे. पोते दरवाजो उघाडीने पेसवुं नहि, जो मांदा आचार्य विगेरे माटे त्यां औषध विगेरे मळतुं होय, अथवा वैद्य त्यां रहेतो होय, अथवा दुर्लभ द्रव्य त्यां मळशे, अथवा ओछी गोचरी मळेली होय, एवां खास कारणो आवेथी दीघेला बारणा आगळ उभो रहीने शब्द करे (बोलावे) अथवा पोते संभाळथी पुजीप्रमार्जीने उघाडीने जवुं.

त्यां प्रवेश थया पछीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोलगं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो तेसिं संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से से परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा ४ आहट्टु दलइज्जा, से य एवं वइज्जा—आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसट्ठे तं भुंजह वा णं परिभाएह वा णं, तं चेगइओ पडिगाहित्ता तुसिणीओ उवेहिज्जा, अवियाइं एयं ममामेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ से पुव्वामेव आलोइआ—आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसिट्ठे तं भुंजह वा णं जाव

For Private and Personal Use Only

परिभाएह वा णं,सेणमेवं वयंतं परा वइज्जा–आउसंतो समणा ! तुम चेव णं परिभाएहि, से तत्थ परिभाएमाणे नो अप्पणो खध्धं २ डायं २ ऊसढं २ रसियं २ मणुन्नं २ निध्धं २ लुक्खं २, से तत्थ अमुच्छिए अगिध्धे अग(ना) ढिए अणज्झोववन्ने बहुसममेव परिभाइज्जा, से णं परिभाएमाणं परो वइज्जा–आउसंतो समणा ! माणं तु परिभाएहि सव्वे वेगइआ ठिया उ भुक्खामो वा पाहामो वा, से तत्थ भुंजमाणे नो अप्पणा खद्धं खद्धं जाव लुक्खं, से तत्थ अमुच्छिए ४ बहुसममेव भुंजिज्जा वा पाइज्जा वा ॥ (सू० २९)

ते साधु गाम विगेरेमां भिक्षा माटे पेठेलो एम जाणे, के आ घरमां प्रथम श्रमण विगेरे पेठेल छे. तो तेने पहेलां पेठेलो जोइने दान देनार तथा लेनारने अप्रीति न थाय, तथा अतरायकर्म न बंधाय, माटे ते बंने देखे, त्यां उभा न रहेवुं, तेमज नीकळवाना दरवाजा आगळ पण बंनेनी अप्रीति टाळवा विगेरे माटे उभा न रहेवुं, पण ते साधु एकांतमां जइ कोइ न आवे न देखे, त्यां उभो रहे, त्यां उभा रहेता पण जैन साधुने गृहस्थ जाते आहार आपीने आ प्रमाणे कहे के " तमे भिक्षा माटे बहु आवेला छो, अने हुं एकलो याकुलपणाथी आहार वहेंची आपवाने शक्तिवान नथी, हे श्रमणो ! में तमने बधा साधुओने चारे प्रकारनो आहार आप्यो छे. तेथी हवे तमे पोतानी इच्छा प्रमाणे ते आहारने एकठा बेसीने खाओ, वापरो, अथवा व्हेंचीने लो, आ प्रमाणे गृहस्थ आपे, तो उत्सर्गथी जैन साधुए ते आहार भागमां न लेवो, पण दुकाळ होय, अथवा लांबा पंथमां गोचरीनी तंगी होय तो अपवादथी कारणपडे ले पण खरो, पण ते आहार लेइने एवुं न करे, के ते आहारने छानोमानो लेइ एकांतमां पोताने मळेलो माटे थोडो होवाथी हुं कोइने न आपुं, एकलो खाउं तेवुं कपट न करे, त्यारे शु करवुं ते कहे छे.

ते भिक्षु आहारने लइने त्यां बीजा श्रमण विगेरे पासे जइने ते आहार तेमने देखाडे, अने बोले के हे आयुष्यमानो ! हे श्रमणो आ आहार विगेरे आपण बधाने गृहस्थे वहेंच्या विना सामटो आपेल छे, तेथी तमे बधा एकत्र बेसीने खाओ, वापरो आ आ प्रमाणे साधुने बोलतो सांभळीने कोइ श्रमण विगेरे आ प्रमाणे कहे, हे साधो ! तमेज अमने बधाने वहेंची आपो, तेवुं साधुए न करवु पण कारणे करवु पडे तो आ प्रमाणे करवुं, के पोते वहेंचतां घणुं उंचु शाक विगेरे पोते न ले, तेम लुखुं पण न ले, पण ते भिक्षु आहारमां मूर्छित थया विना अगृद्धपणे ममता रहित थइने बधाने सारखुं वहेंची आपे, कंइपण दाणो विगेरे सहेज वधारे रहे. (कारणके तोळीने आप्युं नथी) तो पण बने त्यांसुधी बधाने सारखुं वहेंची आपे, पण ते वहेंचतां कोइ श्रमण (अन्य-दर्शनी) एम बोले, के वहेंचो नहि, पण आपणे बधा साथे बेसीने जमीए, पीए, तो साथे न जमवु, पण पोताना साधुओ होय, पासत्था विगेरे होय के संभोगिक (साथे गोचरी करे तेवा) होय, ते बधाने साथे आलोचना आपीने साथे जमवानी आ विधि छे. एटले पोते बधाने सारखु वहेंची आपे, अने बधा त्यां साथे बेसीने खाय पीए, गया सूत्रमां बहारनुं आलोकस्थान निषेध्युं, हवे त्यां प्रवेशना प्रतिषेधनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा से जं पुण जाणिज्जा समणं वा माहणं वा गामपिंडोलगं वा अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए नो ते उवाइक्कम्म पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, अह पुणेवं जाणिज्जा पडिसेहिए वा दिन्ने वा, तओ तंमि नियत्तिए संजयामेव पविसिज्ज वा ओभासिज्ज वा एयं० सामग्गियं० (सू० ३०) ॥२-१-१-५॥ पिण्डैषणायां पञ्चम उद्देशकः ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते भिक्षु गोचरी माटे गाम विगेरेमां पेठेलो एवुं जाणे के आ घरमां प्रथम श्रमण विगेरे पेठेलो छे, तो ते पूर्वे पेठेला श्रमण विगेरेने देखीने तेने ओळंगीने पोते अंदर न जाय, तेम त्यां उभो रहीने गृहस्थ पासे भिक्षा पण न मागे, पण तेने पेठेलो जाणीने पोते एकांतमां धणी न देखे तेम उभो रहे, पछी ते अंदरना भिक्षुने आपे अथवा ना पाडे, त्यारे ते त्यांथी पाछो नीकळे त्यारपछी जैन साधु अंदर जाय अने आहारनी याचना करे, आज साधुनुं साधुपणुं संपूर्ण रीते छे.

पांचमो उद्देशो समाप्त थयो.

छट्ठो उद्देशो

पांचमां पछी छट्ठो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां श्रमण विगेरेने अंतरायना भयथी गृहप्रवेश निषेध्यो, तेज प्रमाणे अहीं अपर प्राणीओना अंतरायना निषेध माटे कहे छे.

से भिक्खू वा से जं पुण जाणिज्जा—रसेसिणो बहवे पाणा घासेसणाए संथडे संनिवइए पेहाए, तंजहा—कुक्कड जाइयं वा सूयर जाइयं वा अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा संनिवइया पेहाए सइ परक्कमे संजया नो उज्जुयं गच्छिज्जा (सू० ३१)

ते भिक्षु गोचरी माटे गाम विगेरेमां जतां एम जाणे के आ मार्गमां घणां प्राणीओ रसनां इच्छुओ होयने पाछळथी

For Private and Personal Use Only

दाणा चुंगवा शेरी विगेरेमां घणा एकठां थइने जमीन उपर पडेलां छे, तेमने ते साधुए जोइने ते तरफ तेणे न जवुं, ते प्राणीओनां नाम बतावे छे, कुकडां विगेरे लीधाथी उडतां पक्षीओ जाणवा. तेज प्रमाणे सूवरजाति लीधाथी चोपगां ढोर विगेरे चरता होय अथवा अग्रपिंडी (बली) बहार फेंकेल होय तेमां कागडा खाता होय तेमने देखीने शरीरमां शक्ति होय त्यांसुधि सम्यक् उपयोग राखीने साधु ते रस्ते न जाय कारणके त्यां जतां अनेक प्राणीने अंतराय थाय छे. अने तेने उडतां के बीजे खसतां तेमनो वध पण वखते थाय. हवे गृहस्थना घरमां पेठेल साधुने गोचरीनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ जाव नो गाहावइकुलस्स वा दुवारसाहं अवलंबिय २ चिट्ठिज्जा, नो गा० दगच्छड्डणमत्ताए चिट्ठिज्जा, नो गा० चंदणिउयए चिट्ठिज्जा, नो गा० सिणाणस्स वा वच्चस्स वा संलोए सपडिदुवारे चिट्ठिज्जा, नो० आलोयं वा थिग्गलं वा संधि वा दगभवणं वा बाहाओ पगिज्झिय २ अंगुलिआए वा उद्दिसिय २ उण्णमिय २ अवनमिय २ निज्झाइज्जा, नो गाहावइअंगुलियाए उद्दिसिय २ जाइज्जा, नो गा० अं० चालिय २ जाइज्जा, नो गा० अं० तज्जिय २ जाइज्जा, नो गा० अं० उक्खुलंपिय (उक्खुलुंदिय) २ जाइज्जा, नो गाहावइं वंदिय २ जाइज्जा नो वयणं फरुसं वइज्जा ॥ (सू० ३२)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी पेठेलो नीचली बाबतो न करे, तेना बारणानी शाखाने वारंवार अवलंबीने उभो न रहे, जो ते पकडे, तो वखते जीर्ण होय तो पडी जाय अथवा बरोबर न जामेल होय तो खसी जाय. तेथी संयमनी विराधना थाय तथा धोवानी (चोकडी) तथा उदक (पाणी) मुकवानी जग्या (पाणीयारा) तरफ तथा आचमन करे त्यां अथवा टांका

करे, टट्टी जइने पग धुवे, ए जग्या तरफ पोते उभो न रहे, के तेवा घरवाळा तरफ पोतानी दृष्टि पडे, तेमां आ दोष छे के, त्यां देखवाथी स्त्री विगेरेना संबंधीओने शंका थाय अने त्यां लज्जाइने बरोबर शरीर स्वच्छ न थवाथी तेने द्वेष थाय, तेज प्रमाणे गृहस्थना गोख झरुखा तरफ दृष्टि न करे, तथा फाट पडेली ते दुरस्त करी होय त्यां न जुए, अथवा चोरे खातर पाडेलुं होय, अथवा भींतने सांधो कर्यो होय, अथवा उदकगृह (पाणीनुं स्थान) होय, आ बधां स्थानो वारंवार हाथ लांबो करीने अथवा आंगुळी उंची करीने तथा माथुं उंचुं करीने नमावीने अथवा काया नीची नमावीने देखे नहि, बीजाने बतावे पण नहि, (सूत्रमां बेवार ते पाठ बताववानुं कारण भार देवानुं छे) जो वारंवार त्यां देखे के बीजाने देखाडे, तो घरमां कंइ चोराय के नाश पामे तो शंका उत्पन्न थाय, वली ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो गृहस्थने आंगळी वडे उद्देशीने तथा अंगुली चलावीने अथवा आंगळीथी भय बतावीने तथा खरज खणीने तेमज वचनथी (भाट माफक) स्तुति करीने याचवुं नहि, तथा कोइ वखत गृहस्थ न आपे तो तेने कडवां वचन न कहे, के तुं जक्ष माफक पारकानुं घर रक्षे छे ! तारा नशीबमां दान क्यांथी होय ? तारी वातज सारी छे, पण कृत्य सारां नथी ! वळी

अक्षरद्वयमेतद्धि, नास्ति नास्ति यदुच्यते तदिदं देहिदेहीति, विपरीतं भविष्यति ॥ १ ॥

तु ' नथी नथी ' एवा बे अक्षर बोले छे, तेने बदले तुं ' आप आप ' ए बे अक्षर घरवाळाने कहे, के तेथी विपरीत थशे ! अर्थात् तारुं कल्याण थशे ! (आवुं पण कटाक्ष बचन साधु न बोले)

अह तत्थ कंचि भुंजमाणं पेहाए गाहावइं वा० जाव कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा भइणित्ति

वा दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयणजायं ? से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा मत्तं वा दव्विं वा भायणं वा सीओदगविय- डेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पहोइज्ज वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा-आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! मा एयं तु मं हत्थंवा ४ सी ओदगवियडेण वा २ उच्छोलेहि वा २, अभिकंखसी मे दाउं एवमेव दलयाहिसे सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा० सीओ० उसी० उच्छोलित्ता पहोइत्ता आहट्टु दलइज्जा, तहप्पमारेणं पुरेकम्मकएणं हत्थेण वा असणं वा ४ अफासुयं जाव वो पडिगाहिज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा नो पुरेकम्मकएणं उदउल्लेणं तहप्पगारेणं वा उदउल्लेण वा हत्थेण वा ४ असणं वा ४ अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा। अह पुणेवं जाणिज्जा—नो उदउल्लेण ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं—ससरक्खे उदउल्ले, ससिणिद्धे मट्टिया ऊसे। हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला अंजणे लोणे॥१॥ गेरुय वन्निक सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुकुस उक्कुट्ठसंसट्ठेण । अह पुणेवं जाणिज्जा नो असंसट्ठे संसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव पडिगाहिज्जा [सू० ३३]

गृहस्थना घरमां पेठेलो ते भिक्षु कोइ गृहस्थ विगेरेने खातां जुए, तेने खातां देखीने साधु प्रथम आवुं विचारे के आ गृहस्थ, पोते अथवा तेनी स्त्री अथवा तेनी नोकरडी विगेरे कोइ पण खाय छे, एवुं विचारीने तेनुं नाम लेइ याचना करे, के आयुष्मन् ! के अमुक गृहस्थ अमुक बाइ ! अथवा योग्य बीजुं वचन बोलीने कहे के तमारा घरमां जे रंधायुं होय तेमांथी अमने आपो ! एम याचना करे, ते तेम आपवाने हाजर न होय, अथवा कारण आवे आ प्रमाणे बोले, पछी तेना घरमांथी याचता भिक्षुने बीजो गृहस्थ कोइ वखत हाथ डोइ के बीजुं वासण काचा पाणीथी के बरोबर न उना थयेला पाणीथी अथवा उनुं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करेलुं पाछुं काल पहोंचतां सचित्त थयेल होय तेना वडे धुए, अथवा वारंवार धुए, आ प्रमाणे धोवानी चेष्टा करतां पहेलां साधु जोइने विचारे [अर्थात् ध्यान राखे,] अने पछी नेम देखीने तेनुं नाम लेइने निवारे, के तमे काचा पाणी विगेरेथी न धुओ पण पहेलो गृहस्थ सचित्त विगेरे धोइनेज आपे तो अप्रासुक जाणीने साधु ले नहि.

वळी ते साधु गृहस्थनां घरमां पेठेलो जो एम जाणे के साधु माटे नहिं, पण तेणे कोइ पण कारणे प्रथम काचा पाणीए हाथ के वासण धोयुं छे, अने तेनां टपकां पडे छे, एवुं देखे तो चारे प्रकारनो आहार अप्रासुक जाणीने लेवो नहि, कदाच पाणीनां टपकां न पडतां होय, पण काचा पाणीथी खरडेला हाथ के वासण होय तोपण ते आपतां साधुए न लेवुं, एज पूर्वे कह्या प्रमाणे न्याय छे, जेम काचा पाणीथी खरडेला हाथे न लेवुं, तेम सचित्त रज होय, माटीथी खरडेल होय, तेमां उष ते खारवाळी माटी, हडताळ, हिंगळोक, मणशिल, अंजन, लवण, गेरु, आ बधी पृथ्वीकायनी खाणमांथी नीकळेली सचित्त वस्तुओ साधुने न कल्पे, [वर्णिका ते पीळी माटी मेट छे, सेटिका खडी छे, सौराष्ट्रि ते तुवरिका छे, पिष्ट ते छड्याविनाना तंदूल चूरण [भूको] छे, कुकसा उपरनां कूटेलां छोतरां [उक्कुठ] पीलु पर्णिका विगेरेनी खांडणीमां खांडेल चुरो अथवा लीलां पांदडानो चुरो, विगेरे खरडेला हाथ विगेरेथी आपे तो ले नहि. ए प्रमाणे जो खरडेल न होय तो साधु गोचरी ले.

पण एम जाणे के खरडायेल छे, पण ते जातिना आहारथी हाथ विगेरे खरडेल छे, तेमां आठ भांगा छे.

"असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते निरवसेसे दव्वे"

आमां एकेक पद बदलवाथी आथी आठ भांगा थाय-तेमां संसृष्ट हाथ, संसृष्ट वासण अने शेष द्रव्य बाकी रहेल होय ते

For Private and Personal Use Only

आठमो भांगो सर्वोत्तम छे, पण एवुं जाणे के, काचा पाणी विगेरेथी असंसृष्ट हाथ विगेरे छे, तो ते लेवुं, अथवा ते जातिना द्रव्यवडे (भक्ष्य वस्तुथी) हाथ विगेरे खरडेल होय ते आहारने प्रासुक जाणीने साधुए लेवो, वळी

से भिक्खू वा २ से जं पुण जाणिज्जा पिहुयं वा बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं वा असंजए भिक्खुपडियाए चितमंताए सिलाए जाव संताणाए कुट्टिंसु वा कुट्टिंति वा कुट्टिस्संति वा उप्फणिंसु वा ३ तहप्पगारं पिहुयं वा० अफ्फासुयं नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३४)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो जो एवुं जाणे, के चोखा विगेरेना कुरमुरा (ममरा) घणी रेतीथी भरेला छे, अथवा अडधा शेकेल चोखा विगेरेना कण विगेरे होय, तेने साधुने उद्देशीनेज सचित्त शिला उपर अथवा बीजवाळी, हरितवाळी अथवा नाना जंतुना इंडावाळी अथवा करोळीयाना जाळावळी शिला उपर ते ममरा के कणोने फुटेल होय फुटे अथवा फुटशे, (सूत्रमां एकवचन क्रियापदनु छे ते आर्षवचन होवाथी बहुवचनमां लेवु अथवा जातिमां एकवचन पण लेवाय) आम करीने पछी ते धाणी, पव्वा विगेरे सचित मिश्र होय. तेने सचित शिलामां कुटीने साधु माटे झाटके अने पछी आपे, के आपशे, तेवुं जाणीने तेवो पृथक् विगेरे आहार आपे तोपण ले नहि.

से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं० बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं अस्संजए जाव संताणाए भिंदिसु ३ रुचिंसु वा ३ बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं अफासुयं० नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३५)

जो ते भिक्षु एवुं जाणे, के आ खाणनुं मीठुं (बिल बीड) छे, अथवा सिंधव, संजल विगेरे बधी मीठानी जाति होय, तथा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्‌भिज (समुद्रना किनारे मूकावेलुं मीठुं,) ते प्रमाणे रुमक विगेरे बीजुं मीठुं पण लेवुं, आवुं मीठुं जे काचुं छे, तेने उपर बतावेल शिला उपर कूटीने आपे. अेटले साधु माटे भेदे, भेदशे, अथवा वधारे झीणुं करवा चूरीने आपे तो लेवुं नहि. वळी

से भिक्खू वा० से जं० असणं वा ४ अगणिनिक्खित्तं तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं नो०, केवली बूया आयाणमेयं, अस्संजए भिक्खुपडियाए उस्सिंचमाणे वा निस्सिंचमाणे वा आमज्जमाणे वा पमज्जमाणे वा ओयारेमाणे वा उव्वत्तमाणे वा अगणिजीवे हिंसिज्जा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा एस पइन्ना एस हेऊ एस कारणे एसुवएसे जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिगिक्खित्तं अफासयं नो० पडि० एयं० सामग्गियं ॥ (सू०३६) ॥ पिण्डैषणायां षष्ठ उद्देशकः २-१-१-६ ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी गयेल होय, त्यां चारे प्रकारनो अहार अग्नि उपर बळता साथे लागेल होय तो आहार आपे तो पण लेवो नहि, त्यां केवली प्रभु कहे छे के, आ कर्मा दान छे, तेज प्रमाणे गृहस्थ भिक्षुने उदेशीने त्यां अग्नि उपर रहेल आहारने बीजा वासणमां नांखतो तेमांथी प्रथम आपेल होय ते वधेलामां बीजुं नाखे अथवा हाथथी मसळीने शोधे, तथा प्रकर्षथी शोधे, तथा निचे उतारीने अथवा अग्निने तीरछी करीने जीवोने पीडे.

आ बधी वात समजावीने कहे छे के उपर बतावेली साधुनी आ प्रतिज्ञा छे के अग्नि साथे लागेलुं भोजन विगेरे अप्रासुक छे, अने ते अनेषणीय छे, एम जाणीने आहार मळतो होय, तो पण ले नहि, आज साधुनुं सर्वथा साधुपणुं छे, पहेला अध्ययननो छठ्ठो उद्दशो समाप्त थयो.

For Private and Personal Use Only

सातमो उद्देशो

छठो उद्देशो कहीने सातमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां संयम विराधना बतावी, अने अहीं संयमनी आत्मानी दानदेनारनी विराधना बतावशे अने ते विराधनाथी जैनशासननी हीलना थाय, ते आ उदेशामां बतावशे.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ खंधंसि वा थंभंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मियतलंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवनिक्खित्ते सिया तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ अफासुयं नो० केवली बूया आयाणमेयं, अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलगं वा निस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरूहिज्जा, सेताथ दुरुहमाणे पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा २ हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा उदरं वा सीसं अन्नयरं वा कायंसि इंदिजालं लूसिज्ज वा पाणाणि वा ४ अभिहणिज्ज वा वित्तासिज्ज वा लेसिज्ज वा संघसिज्ज वा संघट्टिज्ज वा परियाविज्ज वा किलमिज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामिज्ज वा, तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा, से भिक्खू वा २ जाव समाणे से जं० असणं वा ४ कुट्टियाओ वा कोलेज्जाउ वा अस्संजए भिक्खुपडियाए उक्कुज्जिय अवउज्जिय ओहरिय आहुट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं असणं वा ४ लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ३७) ॥

ते भिक्षु गोचरीमां गयेलो जो आ प्रमाणे चारे प्रकारनो आहार जाणे, स्कंध (ते अर्धप्राकार–उंची भींत जेवो होय) लाकडो के पत्थरनो थंभो होय, तथा मांचडो बांधेलो होय अथवा शीका उपर होय, महेलमां, के हवेलीमां के कोइपण अंतरीक्ष (अधर)

स्थानमां आहार राखेल होय तो तेवा उपरथी आहार लइने वहोरावे तो पण मालापत हृदोष लागतो जाणीने न लेवो, केवली प्रभु तेमां आ प्रमाणे दोष बतावे छे, एटले त्यां उंचे वस्तु राखी होय ते लेवा गृहस्थ जाय तो हाथ पहोंचवा माटे साधु माटेज मांची, पाटीयुं, नीसरणी, उंधी उखणी अथवा बीजुं कंइ पण अधर टेकवीने तेना उपर चडीने लेवा जाय तो चडतां पडी जाय, अने खसीने पडतां हाथ, पग भांगतां अथवा इंद्रिय के शरीरमां लागी जाय, तेज प्रमाणे पडतां बीजा जीवोने, प्राणीओने हणे, त्रास पमाडे, अथवा धुळवडे ढांके, घसारो आपे, संघट्टन करे आ प्रमाणे थतां ते जीवोने परिताप करे, थकवे, एकस्थानथी बीजा स्थानमां खसेडे, आवा दोषो जाणीने शीका के मेडा उपरथी लावीने आपे तो मळती वस्तु पण साधुए न लेवी

अथवा ते साधु आहार लेतां आ प्रमाणे जाणे, के माटीनी कोठीमांथी अथवा जमीनमां खोदेल अर्ध गोळाकार खाणमांथी साधुने उद्देशीने कायाने उंचीनीची करीने कुबडी थइने काढे, तथा खाणमां नीची नमीने अथवा तीरछी पडीने आहार लावीने आपे, तो साधुए अधोमालाहुत (नीचे पडीने लीधेल) आहार गृहस्थ पासेथी मळतो होय तो पण लेवो नहि, हवे पृथ्वीकायने आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं० असणं वा ४ मट्टियाउलित्तं तहप्पगारं असणं वा ४ लाभे सं०, केवली०, अस्संज्जए भि० मट्टिओ-लित्तं असणं वा० उब्भिदमाणं पुढविकायं समारंभिज्जा तह तेउवाउवणस्सइतसकायं समारंभिज्जा पुणरवि उल्लिंपमाणे पच्छाकम्मं करिज्जा, अह भिक्खूणं पुव्वो० जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा लाभे० । से भिक्खू० से जं० असणं वा ४ पुढाविकायपइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा० अफासुयं० । से भिक्खू० जं असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं चेव, एवं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगणिकायपइट्ठियं लाभे० केवली०, अस्संज० भि० अगणिं उस्सक्किय निस्सक्किय ओहरिय आहट्टु दलइज्जा अह भिक्खूणं० जाव नो पडि० ॥ (सू० ३८)

ते भिक्षु गोचरीमां गयेलो आ प्रमाणे जाणे, के पिठरक (माटीना गोळा) विगेरेमां माटीथी प्रथम लींपीने चोडेल होय, तेमांथी काढीने चार प्रकारना आहारमांथी कांइपण आपे तो पश्चात्कर्मना दोषथी मळतो आहार पण न ले, प्र०—शामाटे? उ० केवळी प्रभु तेने कर्म उपादान कहे छे, के ते गृहस्थ भिक्षुकनी निश्राए माटीथी लींपेलुं वासण होय, तेमांथी काढीने कांइपण आहार आपे, तो ते वासण खोलतां पृथ्वीकायनो आरंभ करे, तेज केवळी प्रभु कहे छे, तथा अग्नि वायुनो तेमज वनस्पति तथा त्रसकायनो पण आरंभ करे, अने साधुने आप्या पछी बाकी रहेल मालना रक्षण माटे ते वासणने पाछुं लींपे माटे साधुने पूर्वे कहेली आ प्रतिज्ञा होवाथी अने तेज हेतु तेज कारण होवाथी आ उपदेश छे के, तेवुं माटीथी लींपेलुं वासण उघडावीने मळतुं भोजन के वस्तु कंइपण लेवुं नहि.

वळी ते भिक्षुक गृहस्थना घरमां पेसतां वळी आवुं भोजन विगेरे जाणे, तो नले, एटले पृथ्वीकाय उपर स्थापेल आहारने जाणीने पृथ्वीकायना संघट्टन विगेरेना भयथी अप्रासुक जाणाने मळतुं होय तो पण नले, एज प्रमाणे पाणी उपर अग्निकायमां स्थापेल होय तो पोते ले नहि, कारण के केवळी तेमां आदान कहे छे, तेज बतावे छे, 'असंयत' गृहस्थ भिक्षु माटे अग्नि उपर स्थापेल वासणने आमतेम फेरवी आहार आपे तेथी ते जीवोने पीडा थाय माटे साधुओनी आ प्रतिज्ञा छे के तेवो आहार लेवो नहि.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ अच्चुसिणं अस्संए भि० सुप्पेण वा विहुणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा साहाए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमिज्ज वा वीइज्ज वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा– आउसोत्ति वा भइणित्ति वा! मा एतं तुमं असणं वा अच्चुसिणं सुप्पेण वा जाव फुमाहि वा वीयाहि वा अभिकंखसि मे दाउं, एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो सुप्पेण वा जाव वीइत्ता आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं वा नो पडी० ॥ (सू० ३९) ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो जो आ प्रमाणे जाणे के आ घणो उनो भात विगेरे साधुने उद्देशीनेज गृहस्थ ठंडो करवा माटे सूपडाथी, वींजणाथी, मोरना पींछाना पंखाथी अथवा शाखाथी के शाखाना भंगवडे अथवा पींछाथी अथवा पींछाना समूहवडे, वस्त्रथी के वस्त्रना छेडाथी, हाथथी, मोढेथी अथवा तेवा कंइपण ओजारथी फुंकीने ठंडो करे, अथवा वस्त्रथी वींजे, आ प्रमाणे करवा पहेलां साधु लक्ष्य राखीने तेवुं गृहस्थ करे, ते पहेलां तेने नाम दइने बोले के हे भाइ! हे बहेन! आवुं तमे करीने मने आपवानी इच्छा धरावो छो, तो तेम फुंकया विनाज अमने आपो, आवुं साधु कहे तो पण गृहस्थ हठथी सूपडेथी के मुखना वायुवडे फुंकीने आपे तो तेने अनेषणीय (दोषित) आहार जाणीने लेवो नहि.

पिंडना अधिकारथीज एषणा दोषोने उद्देशीने कहे छे.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ वणस्सइकायपइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा ४ वण० लाभे संते नो पडि० । एवं तसकाएवि ॥ (सू० ४०) ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गयेलो एवुं जाणे, के वनस्पतिकायमां चारे प्रकारनो आहार छे, तो ते जाणीने ले नहि, ए प्रमाणे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रसकायनुं सूत्र पण जाणवुं, अहीं (वनस्पतिकायमां रहेलुं) आ सूत्र वडे निक्षिप्त नामनो एषणादोष लेनार आपनार बंनेनो भेगो बताव्यो, तेज प्रमाणे बीजा पण एषणादोष यथासंभव सूत्रोमां योजवा ते आ प्रमाणे छे.

संकीय मक्खिय निक्खित पिहिय साहरियदा यगुम्मीसे; अपरिणय लित्त छड्डिय, एसण दोसा दस हवंति ॥ १ ॥

(१) अधाकर्म विगेरेथी शंकित आहार विगेरे न लेवुं, (२) पाणी विगेरेथी मृक्षित [लींपायेल] होय, (३) पृथ्वीकाय विगेरेमां स्थापन करेलुं होय, (४) बीजोरा विगेरे फळथी ढांकेलुं होय (५) वासणमांथी तुष विगेरे न आपवा योग वस्तु बीजी सचित्त पृथ्वी विगेरे उपर नांखीने ते वासण विगेरेथी जे आपे, ते संहृत दोष छे. (६) बाल वृद्ध विगेरे दान देनार शुद्धि तथा शक्ति विनानो होय, (७) सचित्त विगेरे पदार्थथी मिश्रित वस्तु होय, (८) देवनी वास्तु बरोबर अचित्त न थइ होय, अथवा देनार लेनारना भावविनानी होय ते अपरिणत कहेवाय, (९) चरबी विगेरे निंदानीक पदार्थथी लिप्त होय (१०) छांटा पाडती वहोरावे. आ दस दोष एसणाना कह्या, ते टाळवा जोइए. हवे पीवाना आश्रयी कहे छे–

से भिक्खू वा २ से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा–उस्सेइमं वा १ संसेइमं वा २ चाउलोदगं वा ३ अन्नयरं वा तहप्पगारं पाणगजायं अहुणाधोयं अणंबिलंअव्वुक्कंतं अपरिणयं अविद्धत्थं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा । अह पुण एवं जणिज्जा चिराधोयं अंबिलं वुक्कंतं परिणयं विद्धत्थं फासुयं पडिगाहिज्ज । से भिक्खू वा० से जंपुण पाणगजायं जाणिज्जा, तं जहा–तिलोदगं वा ४ तुसोदगं वा ५ जवोदगं वा ६ आयामं वा ७ सोवीर वा ८ सुद्धवियडं वा ९ अन्नयरं वा तहप्पगारं वा पाणगजायं पुव्वामेव आलोइज्जा–आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पाणग-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जायं ? से सेवं वयतस्स परो वइज्जा–आउस्सं तो समाणा ! तुमं चेवेयं पाणगजायं पडिग्गहेण वा उस्सिंचिया णं उयत्तियो णं गिण्हाहि, तहप्पगारं पाणगजायं सयं वा गिण्हिज्जा परो वा से दिज्जा, फासुयं लाभे संते पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४१)

ते साधु गृहस्थना घरमां पाणी माटे गयेल होय, त्यां एवु जाणे के आटोगुंदळवानुं आ पाणी छे, ते उस्सोइम छे, तथा तलने धोवानुं पाणी छे, ते संसेइम छे, अथवा अरणिका विगेरे धोवानुं पाणी छे, तेमां प्रथमनां बे तो प्रासुक छेज; पण त्रीजा चोथा नंबरना पाणी मिश्र छे, ते अमुक काळे परणित [फासु] थाय छे, ते चावल [चोखा] नुं धोवण छे, तेमां त्रण अनादेश छे, परपोटा थता होय, पाणीनां बिंदुओ वासणने लागेलां शोषाइ गयां होय, अथवा तंदुलरंधाइ गयां होय, पण तेनो खरो आदेश आ छे, के पाणी स्वच्छ थइ गयुं होय, [परपोटा बेसीने स्वच्छ थयुं होय तेज लेवाय]–अनाम्ल ते पोताना स्वादथी अचलित अव्युत्क्रांत अपरिणत अविध्वस्त अप्रासुक मालुम पडे ते साधुए लेवुं नहि, अने तेथी विपरित होय तो गृहण करवुं, फरी पाणीना अधिकारथीज विशेषे कहे छे.

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां पेठेलो आवुं पाणी जाणे, के [४] तलनुं धोवण कोइपण प्रकारे प्रासुक करेलुं पाणी, गृहस्थना घरमां छे, ए प्रमाणे [५–६] तुषथी, जवथी, अचित्त थयुं होय, [७] आचाम्ल [ओसामण] [८] आरनाल सोवीर [९] बरोबर उंनुं पाणी शुद्ध विकट अथवा तेवुं द्राक्षनुं धोवण विगेरे अचित्त पाणी जुए, तो गृहस्थने कहे, के हे भाइ ! हे बाइ ! जे कंइ आवुं अचित्त पाणी होय, ते मने आपो ! ते वखते गृहस्थ बोले, के हे साधु ! तमेज आ पाणी पोताना पातरा वडे के काचलीवडे के

For Private and Personal Use Only

कडायुं उंचकीने के वांकुवाळीने वासणमांथी लो, ते प्रमाणे कहे तो साधु पोते ग्रहण करे, अथवा गृहस्थ तेने आपे, तो प्रासुक पाणी साधुए लेवुं. वळी—

से भिक्खू वा० से जं पुण पाणगं जाणिज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए उद्धट्टु २ निक्खिवत्ते सिया, असंजए भिक्खूपडियाए उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा सकसाएण वा मत्तेण वा सीओदेगेण वा संभोइत्ता आहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पाणगजायं अफासुयं० एयं खलु समाग्गियं० ॥ (सू० ४२) ॥ पिण्डैषणायां सप्तमः २–१–१–७ ।

ते भिक्षु जो आवुं जाणे के ते अचित्त पाणी, सचित्त पृथ्वीकाय विगेरेमां आंतरा विना मुकेलुं छे, अथवा करोळीयाना जाळा विगेरेमां बीजा वासणमांथी लइ लइने तेमां वासण मुकेलुं छे, अथवा ते गृहस्थ भिक्षुने उद्देशीनेज काचा पाणीना गळतां टपकांवडे अथवा सचित्त पृथ्वी विगेरेना अवयवथी खरडायेलुं भाजन होय, अथवा ठंडा पाणीथी मिश्र करीने-भेगुं करीने आपे, तेवुं पाणी 'अनेषणीय' जाणीने लेवुं नहि, आ भिक्षुनी संपूर्ण साधुता छे.

सातमो उद्देशो समाप्त.

आठमो उद्देशो.

सातमो कहीने आठमो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां पाणीनो विचार बताव्यो, अहिं, पण तेज पाणी संबंधी विशेष कहे छे—

से भिक्खू वा २ से जं पुण पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा–अंबपाणग वा १० अंबाडगपाणगं वा ११ कविट्ठपाण० १२ माउलिंगपा० १३ मुद्दियापा० १४ दालिमपा० १५ खजूरपा० १६ नालियेरपा० १७ करीरपा० १८ कोलपा० १९ आमलपा० २० चिंचापा० २२ अन्नयरं वा तहप्पगारं पाणगजातं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए भिक्खूपडियाए छब्बेण वा दूसेण वा वालगेण वा आविलियाण परिवीलियाण परिसावियाण आहट्टु दलइज्जा तहप्पगारं पाणगजायं अफा० लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४३) ॥

ते साधु गृहस्थना घरमां गयेल आवा प्रकारनुं पाणी जाणे, के केरीनुं तथा अंबाडानुं धोवण (१०–११) छे, तथा कोठ (१२) नुं धोवण छे, बीजोरुं (१३) मुद्रिका (द्राक्ष) नुं धोवण (१४) छे, दाडम (१५) नुं, खजुर (१६) नुं, नाळियेर (१७) केर (१८) कोल (बोर) नुं (१९) आमणां (२०) चिंचा आंबली (२१) तथा तेवां बीजां बधां पाणी–एटले द्राक्ष, बोर, आंबली विगेरे कोइ-पण पाणीने ते क्षणेज चूरीने कराय छे, तथा अंबाडा विगेरेनुं पाणी बे त्रण दिवस साथे राखीने पलाळे आवुं पाणी होय अथवा तेवी जातनुं बीजुं होय, ते ठळियासाथे वर्ते, अथवा कणुक (छाल विगेरे अवयव) साथे होय, तथा बीज सहित वर्त्ते, ठळीयो तथा बीज आमणां विगेरेमां जुदापणुं प्रतीत छे, आवुं पाणी गृहस्थ साधुने उद्देशीने द्राक्ष विगेरे चुरीने अथवा वांसनी छालथी बनावेल छाबडी विगेरे पलाळीने अथवा गाय विगेरेनां छडाना पूंवाळना बनावेल चालणावडे अथवा सुगृहीपक्षीना माळा वडे. ठळि-यो विगेरे दूर करवा एकवार मसळीने के वारंवार चोळीने तथा परिस्रवण करीने–गाळीने साधु पासे लावीने आपे, आवुं पाणी उद्गमदोषथी दुष्ट जाणीने मळतुं होय, तो पण ले नहि, उद्गमदोषथी नीचे प्रमाणे छे,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आहाकम्मुद्देशोस्सिय पूतीकम्मे अ मीसजाए अ ॥ ठवाणा पाहुडियाए पाओअर कीय पामिच्चे ॥ १ ॥
परिट्टिए अभिहडे, उब्भिन्ने मालोहडे इअ अच्छेज्जे अणिसट्ठे, अज्झोअरए अ सोलसमे ॥ २ ॥

(१) साधुना माटे जे सचित्तनुं अचित्त करे, अथवा अचित्त रांधे ते आधाकर्म दोष छे (२) जे पोताना माटे तैयार रसोइ थइ होय ते लाडुना चूर्ण विगेरे गोळ विगेरेथी साधुने उद्देशीने वधारे संस्कारवाळुं बनावे, आ समान्यथी छे, (पण विशेषथी जाणवा इच्छनारे विशेष सूत्रथी जाणवुं (३) आधाकर्मना भागथी मिश्र करे ते पूतीकर्म छे, (४) साधु तथा गृहस्थने आश्रयी प्रथमथी आहार भेगो रंधाय ते मिश्र छे. (५) साधुने माटे खीर विगेरे जुदी काढी राखे ते स्थापना दोष छे, (६) घरमां लग्न विगेरेना अवसर आववानो होय ते साधुने आवेला जाणीने के आववाना जाणी तेमने ते मिष्टान्न विगेरे आपवा माटे आगळ पाछळ करे, ते प्राभृतिकादोष छे, (७) साधुने उद्देशीने झरुखा बारी विगेरे उघाडवी, अथवा अंधारामांथी लावीने अजवाळामां मुकवुं ते प्रादुष्करण छे, (८) द्रव्य विगेरे आपीने खरीद करे ते क्रीतदोष छे साधु माटे कोइनुं उछीकुं–उछीनुं ले ते 'पामिच्च' दोष छे (१०) कोद्रा विगेरे आपीने पाडाशीना घरमांथी शालि विगेरेनाचोखा बदले लावे. ते परिवर्त्तितदोष छे, (११) घर विगेरेथी साधुना उपाश्रयमां लावीने आपे ते अभ्याहृतदोष छे, (१२) छाण विगेरेथी लींपेलुं वासण खोलीने आपे, ते उद्भिन्न दोष छे, (१३) माळा उपर विगेरेथी–निसरणी वडे लावीने आपे ते मालहृत दोष छे, (१४) नोकर विगेरेथी छीनवी लइने आपे ते आ छेद्य दोष छे, (१५) समुदाय आश्रयी रंधायेलुं, बधानी रजा लीधा सिवाय एकलो आपे ते अनिसृष्ट दोष छे, (१६) पोताना माटे रंधाता अन्नमां पाछळथी तांदुल विगेरे साधुने आवता सांभळीने रांधतां उमेरे ते 'अध्यवपूरक' दोष छे, आवा कोइपण दोषथी दोषित आहार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होय तो साधुए ते आहार लेवो नहि. पाछुं पण भोजन पाणी विगेरे आश्रयी कहे छे.

से भिक्खू वा० २ आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावईगिहेसु वा परियावसहेसु वा अन्नगंधाणि वा पाणगंधाणि वा सुरभिगंधाणि वा आघाय २ से तत्थ आसायपडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झो ववन्ने अहो गंधो २ नो गंधमाघाइज्जा (सू० ४४)

ते साधु आगंतार ते शहेरनी बहार मुसाफरो आवीने उतरे तेवी धर्मशाळा के मुशाफरखानामां अथवा आराम घरो [बगीचा-नी अंदरना मकान] मां अथवा गृहस्थना घरोमां पूजाना घरोमां अथवा भिक्षुकना मठमां ज्यां अन्न-पाणीनी सुगंधीना गंधोने सुंघी सुंघीने तेना स्वादनी प्रतिज्ञाथी मूर्छित गृद्ध थेलो बनेलो अहाहा ! शुं सुगंध छे ! एवो प्रेमी बनीने ते गंधने सुंघे नहि. फरी पण आहारने आश्रयी कहे छे—

से भिक्खू वा २ से जं० सालुयं वा बिरालियं वा सासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं अफासु० । से भिक्खू वा० से जं पुण० पिप्पलिं वा पिप्पलचुण्णं वा मिरियं वा मिरियचुण्णं वा सिंगबेरं वा सिंगबेरचुण्णं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं वा आमगं वा असत्थ प० । से भिक्खू वा० से जं पुण पलंबजायं जाणिज्जा, तंजहा—अंबपलंबं वा अंबाडगपलंबं वा तालप० झिज्झिरिप० सुरहि० सल्लरप० अन्नयरं तहप्पगारं पलंबजायं आमंग असत्थप० । से भिक्खू ५ से जं पुण पवालजायं जाणिज्जा, तंजहा—आसोट्ठपवालं वा निग्गोहप० पिलुंखुप० निपूरप० सल्लइप० अन्नयरं वा तहप्पगारं पवालजायं आमगं असत्थपरिणयं० । से भि० से जं पुण० सरडुयजायं जाणिज्जा, तंजहा—सरडुयं वा

For Private and Personal Use Only

कविट्ठसर० दाडिमसर० बिल्लस० अन्नयरं वा तहप्पगारं सरडुयजायं आमं असत्थ परिणयं० । से भिक्खू वा० से जं पु० तंजहा–उंबरमंथुं वा नग्गोहमं० पिलुंखुम० आसात्थमं० अन्नमरं वा तहप्पगारं वा मंथुजायं आमयं दुरुक्कं साणुबीयं अफासुयं० ॥ (सू० ४५)

ते भिक्षु सालुक (पाणीमां थनारुं कंद) विरालिय (स्थळमां थनारुं कंद) सरसवनी कंदलीओ तेवुं कंइपण काचुं कंद कांदळ विगेरे शस्त्रोथी परिणत थयेलुं नहोय, तेमज ते भिक्षु पीपर, पीपरनुं चुरण, मरचां मरचांनुं चुरण सींगोडा सींगोडानुं चुरण अथवा तेवुं कंइपण काचुं शस्त्र फरस्सीया विनानुं अप्रासुक होय ते, आंबाना फळ (केरीओ) अंबाडानां फळ, ताडनां फळ झिज्झि ते वल्लीपलास सुरभि ते शतद्रु छे सल्लर छे. आ प्रमाणे जे कंइ काचुं फळ होय, अने ते शस्त्रथी परिणत न होय तो सचित्त जाणीने लेवुं नहि.

वळी ते भिक्षु कोइपण जातिनुं प्रवाळ ते पीपळानुं; वडनुं पिलुंखु (पीपरी) निपुर (नंदीवृक्ष) शल्लकी अथवा तेवुं बीजुं कांइपण प्रवाळ होय तो, काचुं सचित्त होय तो लेवुं नहि, तेज प्रमाणे ते साधु कोइपण जातिनु 'सरडुअ' ते ठळीयो बंधाया विनानुं फळ होय, ते कोठ, दाडम, बिल्लुं अथवा तेवुं कोइपण जातिनुं फळ होय ते. शस्त्रथी परिणत नहोय ते साधुए लेवुं नहि, तेज प्रमाणे साधु उंबरनुं मंथुं (चुरण) होय, वडनुं, पिलंखु, पीपळो अथवा तेवुं बीजानुं चुरण होय तो, शस्त्रथी परिणत थया विनानुं होय तो लेवुं नहि, आमंथुं थोडुं पीसेलुं होय ते दुरुक्क कहेवाय छे, साणुबीय ते तेनां बीज बधां कायम रह्यां होय, तो ते काचुं जाणवुं. ते न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं पुण० आमडागं वा पूइपिन्नागं वा महुं वा मज्जं वा सप्पिं वा खालं वा पुराणगं वा इत्थ पाण अणुप्पसूयाइं जायाइं संवुड्ढाइं अव्वुक्कंताइं अपरिणया इत्थ पाणा अविद्धत्था नो पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ४६) ॥

वळी ते साधु एम जाणे के काचां पान ते अरणीक तंदुलीय (तांदळजा) विगेरेनां पांदळां अर्ध काचां अथवा तदन काचां छे, अथवा तेनो खल कर्यो छे, मद्य मांस जाणीतां छे, तथा घी तथा खोल दारुना नीचेनो कचरो आ बधा घणा वरसनां जुनां होय तो लेवां नहि, कारणके तेमां जीवो उत्पन्न थइ जाय छे, अने तेथी ते अचित्त होतां नथी, सूतमां संवुद्धा विगेरे एक अर्थवाळा छतां जुदा जुदा देशना शिष्योने समजाववा सूत्रकारे लीधा छे अथवा तेमां किंचित् भेद छे. (आमां मद्य अने दारु अभक्ष्य छतां शास्त्रकारे चोपडवा माटे कारण विशेष छूट एटला माटे आपी छे के हाथ पग उतरी गयो होय तो तेनो उपयोग करवो पडे, ते संबंधे साधुने महान् प्रायश्चित छे, माटे वर्त्तमानकाळमां पण बने त्यां सुधी चोळवा चोपडवामां तेवी चीज न वापरवी, पण बीजो उपायज न होय तो कदाच वापरवी पडे तो पण तेनुं छेदसूत्र प्रमाणे महान प्रायश्चित लेवुं के दुर्गति न थाय.)

से भिक्खू वा से जं० उच्छुमेरगं वा अंकरेलुगं वा कसेरुगं वा सिंघाडगं वा पूइआलुगं वा अन्नयरं वा० । से भिक्खू वा० से जं० उपलं वा उप्पलनालं वा भिसं वा भिस- मुणालं वा पुक्खलं वा पुक्खलविभंगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं० ॥ (सू० ४७) ॥

उच्छुमेरंग ते छोलेली शेरडीना टुकडा, अंके करेलुं कसेरुग सींगाडां पूइआलुग अथवा तेवुं बीजुं कंइ काचुं शस्त्रथी हणाया विनानुं होय, तो साधुए लेवुं नहि. तेज प्रमाणे लीलुं कमळ, तेनी नाल, अथवा पदमनुं कद तेनी नाळ, पोकखल, पदमना

केसरा अथवा तेनुं कंद अथवा तेवुं कोइपण कंद शस्त्रथी हणायाविनानुं काचुं होय तो कल्पे नहि.

से भिक्खू वा २ से जं पु० अग्गबीयाणि वा मूलबीयाणि वा खंधबीयाणि वा पोरबी० अग्गजायाणि वा मूलजा० खंधजा० पोरजा० नन्नत्थ तक्कलिमत्थए ण वा तक्कलिसीसे ण वा नालियेरमत्थएण वा खज्जूरिमत्थएण वा तालम० अन्नयरं वा तह० । से भिक्खू वा २ से जं० उच्छुं वा काणगं वा अंगारियं वा संमिस्सं विगदूमियं वित (त्त) ग्गगं वा कंदलीऊसुगं अन्नयरं वा तहप्पगा० । से भिक्खू वा० से जं० लसुणं लसुणपत्तं वा ल० नालं वा लसुणकंदं वा ल० चोयगं अन्नयरं वा० । से भिक्खू वा० से जं० अच्छियं वा कुंभिपक्कं तिंदुगं वा वेलुगं वा कासवनालियं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थप० । से भिक्खू वा० से जं० कणं वा कणकुंडगं वा कणपूयलिंय वा चाउलं वा चाउलपिट्ठं वा तिलं वा तिलपिट्ठं वा तिलपप्पगडगं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थप० लाभे संते नो प०, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ॥ (सू० ४८) २-१-१-८ ॥ पिण्डैषणायामष्टम उद्देशकः ॥

ते भिक्षु आवुं जाणे, के जवा कुसुम विगेरे अग्रबीज छे, जाइ विगेरेनां मूळबीज छे, सल्लकी विगेरे स्कंधबीज छे, अथवा इक्षु (शेरडी) विगेरेनां पर्वबीज छे, तेज प्रमाणे अग्रजात, मूळजात, स्कंधजात, पर्वजात ते तेमांथीज जन्मे छे, पण बीजेथी नहि., तक्की (कंदली) नुं मस्तक (वचलो गर्भ) अने कंदलोशीर्ष ते तेनो स्तबक ए प्रमाणे नाळियेर विगेरेमां पण समजवुं, अथवा कंदली विगेरेना मस्तक समान जे कंइ छेदवाथी तुर्तज ध्वंस पामे छे, तेवुं बीजुं पण काचुं अशस्त्र परिणत होय ते लेवुं नहि, तथा ते भिक्षु एवुं जाणे के शेरडी, रोग विगेरेथी छिद्रवाळी थाय अंगारहित (रंगे बगडी गयेल) होय, तथा छाल छेदाइ गयेली होय,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विगदूमिय, ते वरगडे अथवा शियाळिए थोडी खाधेल होय, आवा छिद्र विगेरेथी ते शेरडी विगेरे अचित्त थती नथी तथा वेत्राग्र तथा 'कंदली ऊस्सुयं' ते कंदलिनो मध्य भाग एवुं बीजुं पण काचुं अपरिणत होय तो लेवुं नहि, आ प्रमाणे लसण संबंधी पण जाणवुं के अपरणित होय ते न लेवुं, आमां 'चोयग' नो अर्थ कोशिकाना आकारे लसणने बहार छाल होय, छे. ते ज्यांसुधी लीली होय त्यांसुधी सचित्त जाणवी, अच्छियं ते कोइ वृक्षनुं फळ छे, तथा टींबरु, बीलुं कासवनालियं ते श्रीपर्णीनुं फळ छे, आ काचां फळोने एकदम पकववा खाडामां नाखीने पकवे ते पाकेलां पण सचित्त जाणवां, ते साधुने न कल्पे. (आम जे पकवे ते कुंभीपाक कहेवाय छे.)

तथा शालि विगेरेना कण ते कणिका छे, तेमां कोइ नाभि (सचित्तयोनि) होय, कणिककुंड ते कणकीमिश्रित कुक्सा तथा कणपूयलिय ते कणकीथी मिश्रित पूपलिक कहेवाय छे. आमां पण थोडुंक पकवेल होय तो नाभि (सचित्त योनि) संभवे छे. (बाकी तेमां तल, तलनो पीठ, तलनो पापड विगेरेमां वखते सचित्त योनि होय माटे काचुं लेवुं नहि, आवी चीज मळे तोपण लेवी नहि,) आज साधुनी संपूर्णता साधुता छे.

आठमो उद्देशो समाप्त थयो.

For Private and Personal Use Only

नवमो उद्देशो.

आठमो कहीने नवमो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां अनेषणीय पिंडनो त्याग बताव्यो, अहीं पण बीजे प्रकारे तेज बतावे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया सड्ढा भवंति, गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइजे इमे भवंति समणा भगवंता सीलवंतो वयवंतो गुणवंतो संजया संवुडा बंभयारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा ४ भुत्तए वा पायए वा, से जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए निट्ठियं तं असणं ४ सव्वमेयं समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो अट्ठाए असणं वा ४ चेइस्सामो, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तहप्पगारं असणं वा अफासुयं० ॥ (सू० ४९)

'इह' शब्द वाक्यना उपन्यास माटे छे, अथवा प्रज्ञापकना क्षेत्र आश्रयी छे. खलु शब्द वाक्यनो शोभा माटे छे.) प्रज्ञापकनी अपेक्षाए पूर्व विगेरे दिशाओ छे, अर्थात गुरु-शिष्यने कहे छे, के-पुरुषोमां केटलाक एवा श्रद्धालुओ श्रावक अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य पुरुषो होय छे, ते गृहस्थ अथवा कर्म करी (काम करनारा) होय छे, तेमने मालीक कहे के, आ गाममां आ आवेला साधु भगवंतो १८००० भेदे शीलव्रत पाळनारा छे, तथा पांच महाव्रत तथा छठुं रात्रिभोजन विरमणव्रत धारनारा, तथा पिंडविशुद्धि विगेरे उतरगुणयुक्त इंद्रिय मनने दमन करवाथी संयत छे, तथा आस्रवद्वार (पापस्थान) रोकवाथी संवृत छे, नवविध ब्रह्मचर्य गुप्ति पाळवाथी ब्रह्मचारी छे, मैथुन (कुसंग) थी दूर छे, १८ प्रकारनुं ब्रह्मचर्य पाळनारा छे, आवा साधुओने आधाकर्मी विगेरे

दोषित भोजन विगेरे कल्पतुं नथी, माटे आपणे आपणुं रांधेलुं बधुं तेमने वोहरावी दइए, आपणा माटे पछवाडे रांधी लइशुं. तेथी तेओ आवुं करे, तेम साधु पोते साक्षात् सांभळे अथवा बीजा पासे सांभळीने जाणीने तेवुं भोजन विगेरे अनेषणीय जाणीने मळवा छतां पोते ले नहि.

से भिक्खू वा० वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे से जं० गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा रायहाणिंसि वा संतेगइस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा–गाहावई वा जाव कम्म० तहप्पगाराइं कुलाइं नो पुव्वामेव भत्ताए वा निक्खमिज्ज वा पविसेज्ज वा २, केवली बूया–आयाणमेयं, पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए असणं वा ४ उकरिज्ज वा उवक्खडिज्ज वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा ४ जं नो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पविसिज्ज वा निक्खमिज्ज २, से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा वा २ अणावायमसंलोए चिट्ठिज्जा, से तत्थ कालेणं अणुपविसिज्जा २ तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारिज्जा सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा उवकरीज्ज वा उवक्खडिज्जा वा तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, से पुव्वामेव आलोइज्जा आउसोत्ति वा भइणित्ति वा ! नो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा ४ भुत्तए वा पायए वा, मा उवकरेहि मा उवक्खडेहि, से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खडावित्ता आहुट्टु दलइज्जा तहप्पगारं असणं वा अफासुयं० ॥ (सू० ५०)

ते भिक्षु आवुं जाणे के गाममथी लइने राजधानी सुधीनी आ स्थानोमां अमुक साधुना पूर्वनां सगां ते काका विगेरे छे अने पछवाडेथी थएला सगां सासरीयां विगेरे छे, ते त्यां घरवास करीने रहेलां छे, तेमां गृहस्थथी लइने काम करनार नोकर बाइ सुधां छे, तेवां कुळो जे सगां-संबंधीना छे तेमां न जवुं, न आववुं, सुधर्मास्वामी कहे छे के. तेवुं केवली प्रभु कहे छे, के तेमां अशुभकर्म बंधाय छे,

प्र०-शामाटे दोष छे? उ०-ते घरमां साधुने माटे प्रथमथी विचार करी राखे, एटले प्रथमथी गृहस्थ ते साधु माटे उपकरण तैयार करावी राखे, तथा रसोइ विगेरे रंधावी तैयार करावे, तेथी साधुओ माटे आ प्रतिज्ञा विगेरे प्रथमथी कहेल छे, केतेवां सगां संबंधीनां कुलोमां भिक्षाकाळथी पहेलां जवुं आववुं नहि, त्यारे शुं करवुं? ते कहे छे, ते आत्मार्थी साधुए ते गाममां पोतानुं कुळ जाणीने सगां न जाणे तेवी रीते पोते जाय अने त्यां घळवाळां न आवे, न देखे त्यां एकांतमां रहे, अने गोचरीनां वखते जुदां जुदां कुळमांथी एषणीय आहार बधेथी एटले सगां के बीजांनो भेद राख्या विना वेषमात्रथी मेळवे, एटले उत्पादन दोष विगेरे लागवा न दे. ते उत्पादन दोषो नीचे मुजब छे.

धाई दूइ निमित्ते, आजीव वणीमगे तिगिच्छा य। कोहे माणे माया, लोभे य हवन्ति दस एए ॥ १ ॥

पुव्विंपच्छासंथव-विज्जा मंते अचुण्णु जोगे य। उप्पायणाय दोसा सोलसमे मूलकम्मे य ॥ २ ॥

गोचरी माटे गृहस्थनां छोकरां रमाडवा विगेरेनुं कृत्य करे, ते (१) धात्रीपिंड छे, (२) दूतीपिंड गोचरी माटे गृहस्थनो संदेशो दूतनी माफक लइ जाय (३) अंगुठो तथा प्रश्न रेखा विगेरेनुं फळ बतावी आहार ले ते निमित्तपिंड छे. (४) आजीवपिंड ते पोतानी

पूर्वेनी उत्तमजाति विगेरे बतावी पिंड ले ते, (५) वणीमगपिंड ते गृहस्थ जेनो धर्म पाळतो होय तेनी प्रशंसा करी गोचरी ले, (६) चिकित्सापिंड ते, गृहस्थने नानी मोटी दवा बतावी गोचरी ले ते, (७) क्रोधथी, (८) अहंकारथी, (९) कपट करीने, (१०) लोभथी वेष विगेरे बदलीने गोचरी ले, (११) पूर्व पश्चात् संस्तवपिंड, ते गृहस्थ दान आपे ते पहेलां तेना संबंधीनी प्रशंसा करे के तमे अवा कुळमां जन्म्याछो, आवा कुळमां परण्याछो-इत्यादि बोलीने गोचरी ले, (१२) विद्यापिंड, ते विद्या बतावी छोकरां भणावीने पिंड ले, (१३) मंत्रपिंड, मंत्रनो जाप बतावीने गोचरी ले (१४) चुर्णपिंड, वशीकरण विगेरे माटे द्रव्य (सुगंधी) चुर्ण मंत्रीने आपीने गोचरी ले, (१५) योगपिंड-ते अंजन विगेरे आपीने गोचरी ले, (१६) जे अनुष्ठानथी गर्भपात विगेरे थाय तेवुं करीने गोचरी ले, आ सोळे दोषो साधुथी उत्पन्न थाय छे माटे उत्पादन कहेवाय छे, (ते न लगाडवा जोइए) ग्रास एषणाना दोषो नीचे मुजब छे. १ संजोअणा २ पमाणे ३ इंगाले ४ धूम कारणे चेव

(१) आहारना लोलुपपणाथी दहिं, गोळ, (साकर) मेळवीने शीखंड बनावीने खाय, ते संयोजना दोष छे, बत्रीश कोळीयाथी वधारे प्रमाणमां आहार खाय तो प्रमाण अतिरिक्त (वधारे) दोष कहेवाय, (३) सारी गोचरी राग करीने खाय तो चारित्रने अंगारा माफक बळवाथी अंगार दोष तथा (४) अंत प्रांत आहार मळतां आहार तथा आहार आपनारनी निंदा करतो खाय तो चारित्रने काळुं करवाथी धुम्र दोष छे, (५) वेदना विगेरे कारण विना आहार करे तो कारण अभाव दोष छे.

आ प्रमाणे साधुना वेषमात्रथी प्राप्त करेलु ग्रास एषणा विगेरे दोष रहित आहार लेइने वापरवो, कदाच एम थाय, के गृहस्थ गोचरीना समये साधु जाय तो पण आधाकर्मी अशन विगेरे बनावे, ते वखते साधु उपेक्षा करे, शामाटे ? के ते लेतांज हुं

पच्चखाण करीश, अने हुं ते नहीं लउं एवुं धारे अने स्वादथी पछी कपट करे, अने छे, पण आवुं प्रथमज न करवुं, केवी रीते करवुं ? ते कहे छे, प्रथम गोचरी लेतां उपयोग राखे, अने तेवुं जाणे तो कहे, के हे शेठ ! हे बाइ ! अमने अमारा माटे बनावेलो आहार विगेरे खावापीवाने (आधाकर्मी) कल्पतो नथी ! माटे तेने माटे तमारे यत्न न करवो ! आवुं कहेवा छतां पण गृहस्थ आधाकर्मी आहार करे तो मळे छतां पण लेवो नहि.

से भिक्खू वा से जं० मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं पेहाए तिल्लपुयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए नो खद्धं २ उवसंकमित्तु ओभासिज्जा, नन्नत्थ गिलाणणीसाए ॥ (सू० ५१)

ते साधु जो आवुं जाणे के मांस अथवा माछलां अथवा तेलना पूडाओ ते गृहस्थना घरमां मेमान आववाना छे, तेथी तेवो आहार बनतो त्यां जुए, तो जीभनी लालचथी दोडतो दोडतो शीघ्र न जाय अथवा त्यां जइने याचना करे नहि, पण पूर्वे बताव्या प्रमाणे त्यां दवा विगेरे कारणसर मांदा माटे जवुं पडे तोपण संभाळथी जाय.

से भिक्खू वा० अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहित्ता सुब्भि सुब्भि भुच्चा दुब्भि २ परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा । सुब्भिं वा दुब्भि वा सव्वं भुंजिज्जा नो किंचिवि परिट्ठविज्जा, ॥ (सू० ५२)

ते भिक्षु कोइपण जातनुं भोजन लइने सारुं सारुं खाइ जाय, खराब खराब त्यजी दे, ते कपट छे, माटे तेवुं कृत्य साधुए न करवुं पण सारुं माठुं जेवुं आवे तेवुं संतोषथी समभावे खाइ लेवुं पण परठववुं नहि.

से भिक्खू वा २ अन्नयरं पाणगजायं पडिगाहित्ता पुप्फं आविइत्ता कसायं २ परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे, नोएवं करिज्जा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

। पुप्फं पुप्फेइ वा कसायं कसाइ वा सव्वमेयं भुंजिज्जा, नो किंचिवि परि० ॥ (सू० ५३)

आ प्रमाणे पाणीनुं पण समजवुं, सारा रंगनुं सारी गंधनुं होय तो पुष्प कहेवाय अने तेथी विपरीत ते कषाय; एटले सुगंधी पीणुं पीए, अने बीजुं फेंकी दे, तेवुं कपट न करवुं, कारण के आहारना गृद्धपणाथी सूत्रार्थनी हानि थाय अने कर्मबंध थाय—

से भिक्खू वा० बहुपरियावन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता बहवे साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया, तेसिं अणालोइया अणामंते परिट्ठवेइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा, २ से पुव्वोमेव आलोइज्जा—आउसंतो समाणा ! इमे मे असणे वा पाणे वा ४ बहुपरियावन्ने तं भुंजह णं, से सेवं वयंतं परो वइज्जा—आउसंतो समाणा ! आहारमेयं असणं वा ४ जावइयं २ सरइ तावइयं २ भुक्खामो वा पाहामो वा सव्वमेयं परिसडइ सव्वमेयं भुक्खामो वा पाहामो वा ॥ (सू० ५४)

ते साधु कोइ वखत घणुं भोजन विगेरे आचार्य तथा मांदा तथा परोणा विगेरे माटे आणेलु बधाने आपतां घणुं वधी जवाथी न खवाय, तो पोताना साधर्मिक गोचरीना वहेवारवाळा संविज्ञ साधुओ जोडे होय, अथवा घणे दूर न होय, तेवा साधुने पूछ्या विना फक्त जवाना प्रमादथी परठवीदे, तो साधुपणाने दोष लागे, माटे शुं करवु ? ते कहे छे, ते वधेलो आहार लइने ते साधु बीजा साधुओ पासे जइने बतावे अने कहे, के हे श्रमण ! आ मारे वधी गयुं छे, ते हुं खाइ शकतो नथी, जेथी तमे किंचित् खाओ, त्यारे तेओ कहे, के अमाराथी बने तेटलुं खाइशुं, देखीशुं, अथवा बधुं खाइशुं, देखीशुं.

से भिक्खू वा २ से जं० असणं वा ४ परं समुद्दिस्स बहिया नीहडं जं परेहिं असमणुन्नायं अणिसिट्ठं अफा० जाव नो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडिगाहिज्जा जं परेहिं समणुण्णायं सम्मं णिसिट्ठं फासुयं जाव पडिगाहिज्जा, एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं (सू० ५५) ॥ २-१-१-९ ॥ पिण्डैषणायां नवम उद्देशकः ।

ते साधु आवो आहार जाणे के, चार भट विगेरेने उद्देशीने घरमांथी काढेल छे, पण ते आहारने चार भट विगेरेए स्वीकार्यो नथी तो ते बहु दोषवाळो जाणीने लेवो नहि, पण जो ते आहार ते धणीए स्वीकारी पोतानो कर्यो होय, अने ते आपे तो लेवो, आ साधुनी सर्व साधुता छे.

नवमो उद्देशो समाप्त.

दशमो उद्देशो.

नवमो कह्यो, हवे दशमो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, नवममां पिंड ग्रहणविधि कह्यो, अहींया साधारण विगेरे पिंड मेळवीने वसतिमां गयेल साधुए शुं करवुं, ते कहे छे.

से एगइओ साहरणं वा पिंडवायं पडिगाहित्ता ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं खद्धं दलइ, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा । से तमायाय तत्थ गच्छिज्जा २ एवं वइज्जा-आउसंतो समाणा ! संति मम पुरेसंथुया वा पच्छा० तंजहा-आयरिए वा १ उवज्झाए वा २ पवित्तीवा ३ थेरे वा ४ गणी वा ५ गणहरे वा ६ गणा-वच्छेइए वा ७ अवियाइं एएसिं खद्धं खद्धं दाहामि, सेणेवं वयंतं परो वइज्जा-कामं खलु आउसो । अहापज्जत्तं निसि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राहि, जावइयं २ परो वदइ तावइयं २ निसिरिज्जा सव्वमेवं परो वयइ सव्वमेयं निसिरिज्जा ॥ (सू० ५६)

ते भिक्षुने बधा साधुओ माटे सामान्य आहार आपेल होय, ते लइने ते बधा साधुओने पूछया विना जेने जे रुचे, तेवुं पोतानी बुद्धिथी शीघ्र शीघ्र आपे तो दोष लागे, माटे तेवुं न करवुं, असाधारण पिंड मळतां पण जे करवुं ते कहे छे.

ते साधु वेषमात्रथी मेळवेलो पिंड मेळवीने आचार्य विगेरे पासे जाय, अने आ प्रमाणे कहे, हे आयुष्मन्! हे श्रमण में अहीं जेनी पासे दीक्षा लीधी छे, तेना सगां छे, तथा जेनी पासे सिद्धांत भण्यो, तेनां संबंधीओ अन्यत्र रह्या छे, तेमनां नाम बतावे छे, आचार्य अनुयोग धर (१) उपाध्यायअध्यापक (२) वेयावच्च विगेरेमां यथायोग साधुओने प्रवर्तावे ते प्रवर्त्तक (३) छे. संयम विगेरेमां सीदाता साधुओने स्थिर करवाथी स्थविर (४) छे, गच्छन अधिप ते गणी (५) छे, आचार्य जेवो साधु गुरुनी आज्ञाथी साधुना समुदायने लइने जुदो विचरे ते गणधर (६) छे, गणनो अवच्छेदक ते गच्छना निर्वाहनी चिंता करनार (७) छे, आ प्रमाणे आवा साधुओने उद्देशीने बोले, के हुं तेमने तमारी आज्ञाथी शीघ्र शीघ्र आपुं, आ प्रमाणे साधुनी विज्ञप्तिथी मोटा साधु तेने आज्ञा आपेथी जेने जोइए तेटलुं दरेकने आपे, अथवा बधानी आज्ञा आपे तो बधुं आपे, (आ सूत्रमां पोताना सगां आश्रयी छे, अने टीकामां आचार्यदिना सगांने आश्रयी छे, तेथी रहस्यमां भेद पडतो नथी.)

से एगइओ मणुन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता पंतेण भोयणेण पलिच्छाएइ मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमाइए आयरिए वा जाव गणावच्छेए वा, नो खलु मे कस्सइ किंचि दायव्वं सिया, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा। से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु इमं खलुत्ति आलोइज्जा, नो किंचिवि णिगूहिज्जा। से एगइओ अन्न-

यरं भोयणजायं पडिगाहित्ता भद्दयंर भुच्चा विवन्नं विरसमाहरइ, माइ० नो एवं० (सू० ५७)

ते साधु कोइ जग्याए गोचरी गयो होय, त्यां सारुं मिष्टान्न विगेरे भोजन मळ्युं होय, ते लेइने तेना उपर तुच्छ लुखुं भोजन विगेरे ढांकी दे, के मारुं आ सारुं भोजन आचार्य विगेरे देखशे तो लेइ लेशे, अने मारे तो आ थोडुं सारुं भोजन कोइने आपवुं नथी, एम धारी छुपावे तो कपट कहेवाय, माटे तेवुं न करवुं, त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

ते बधो आहार लइने छुपाव्या विना सारो माठो बतावी देवो, हवे गोचरी जतां कपट स्थान न करवानुं बतावे छे, के रस्तामां बीजे गाम गोचरी जतां सारुं सारुं भोजन मळे, तो त्यां खाइ जइने नबळुं नबळुं त्यां लइ जवुं ए कपट स्थान छे, ते न करवुं, वळी—

से भिक्खू वा० से जं० अंतरुच्छियं वा उच्छु गंडियं वा उच्छु चोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छु सालगं वा उच्छुडालगं वा सिंबलिं वा सिंबलथालगं वा अस्सिं खलु पडिग्गाहियंसि अप्पे भोयणजाए बहुउज्झियधम्मिए तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा० अफा० ॥ से भिक्खू वा २ से जं० बहुअट्ठियं वा मंसं वा मच्छं वा बहुकंटयं अस्सिं खलु० तहप्पगारं बहुअट्ठियं वा मंसं० लाभे संतो० । से भिक्खू वा० सिया णं परो बहुट्ठिएणं मंसेण वा मच्छेण वा उवनिमंतिज्जा—आउसंतो समाणा ! अभिकंखसि बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए ? एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसीत्ति वा २ नो खलु मे कप्पइ बहु० पडिगा०, अभिकंखसि मे दाउं जावइयं तावइयं पुग्गलं दलयाहि, मा य अट्ठियाइं, से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो पडिगाहिगंसि बहु० परिभाइत्ता निहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफा० नो० । से आहच्च पडिगाहिए सिया तं नोहित्ति वइज्जा नो अणिहित्ति वइज्जा, से तमायाय एगं-

तमवक्कमिज्जा २ अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे जाव संताणए मंसगं मच्छगं भुच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय से तमायाय एगंतमवक्कमिज्जा, २ अहे झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय पमज्जिय परट्ठविज्जा ॥ (सू० ५८)

ते गोचरी गयेलो साधु आवा प्रकारनो आहार जाणे के शेरडीना गांठोना वचला टुकडा, अथवा गांठोवाळा टुकडा अथवा पीलेला शेरडीना छोदिकां (छोतरा) मेरुक (त्यग्र) शेरडीना सालग ते दीर्घ शाखा (सांठो) डालग ते एक टुकडो सिंबली मग चोळा विगेरेनी अचित्त थएली सींग (फळी) 'सिंबली थालग' वालपापडीनी थाळी अथवा फलीओ रांधेली होय, आवी वस्तु जो साधुए खावा माटे लीधी होय तो शेरडी विगेरेना कुचा घणा नीकळे, खावानुं थोडुं, अने कुचामां कीडीओ विगेरे संख्याबंध जीवो बुरा हाले मरे, माटे अप्रासुक होय तो पण न लेवी, अने प्रासुक होय तो पण न लेवा,

तेज प्रमाणे कोइ जग्याए ठळीया वाळां फळ ते फणस विगेरे अने कांटावाळां ते अननास विगेरे फळ पाकेलां टुकडा कर्या होय, अने कोइ गृहस्थ ते साधुने आपे तो पण साधुए लेवा नहि. हवे कोइ गृहस्थ घणो भक्तिमान होय अने बहु आग्रह करे अने पूछे के आप लेशो के ? आ प्रमाणे तेनी प्रार्थना सांभळीने साधु कहे के हे आयुष्यमन ! मने ते लेवुं कल्पतुं नथी, पण जो तारो खास आग्रह होय तो ठळीया रहित कांटा रहित एवो जे वचलो फळनो गर्भ छे, ते आप, पण ध्यान राखजे के ठळीया के कांटा न आवे. आ प्रमाणे सांभळीने पेलो गृहस्थ ठळीया विनानुं कांटा विनानुं शोधी शोधीने साधुने आपे, पण ते वखते सचित्त भाग तेना हाथमांथी के तेना वासणमांथी आवे तो पोते न ले, ते प्रमाणे अचित्त फळनो गर्भ आपे तो पोते नोहि बोले, तेम अणिहि पण न बोले,

पछी ते लेइने ते बगीचामां कोइ झाड नीचे अथवा मकानना छापरा नीचे बेसीने ज्यां जीव जंतु एकेंद्रियथी पंचेंद्रिय सुधी न होय त्यां पोते शांतिथी बेसीने फळनो गर्भ लीधेलो होय तेने फरीथी जोइले, अने पोताना के गृहस्थना प्रमादथी ठळीयो के कांटो रही गयो होय, तो तेने खातां बाजुए राखीने खाइ रह्या पछी एकांतमां जइने अचित्त जग्या कुंभारनो निभाडो विगेरे होय, त्यां जग्या पुंजी पुंजीने परठवे.

आ जग्याए केटलाक आचार्यनो एवो अभिप्राय छे के आगळ गळत कोढ विगेरेमां ते साधुने अधिक पीडा थती होय, अने तेने संसारी न करी शकवाथी तेनी उमर जुवान होय, अने वैद एम सलाह आपे के आ रोगनी शांति माटे मरेला जनावर के माछलानो वचलो गर्भ तेना उपर बांधवो, आवा अपवादना कारणे छेदसूत्रना अभिप्राय प्रमाणे कदाच पेला साधुना रक्षण माटे लीधुं होय तो पण तेमां रहेल हाडकुं अथवा कांटो संभाळथी एकांतमां लइ जइ परठवो अहीं 'भुज' धातुनो अर्थ भोगववानो छे, पण खावा माटे नहि, जेम पदाति (पायदळ सेना) नो राजा भोग करे छे, अथवा साधु पाट पाटलाने भोगवे छे.

से भिक्खू० सिया से परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहे बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं परिभाइत्ता नीहट्टु दलइज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा २ अफासुयं नो पडि०, से आहच्च पडिगाहिए सिया तं च नाइदूरगए जाणिज्जा, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा २ इमं किं ते जाणया दिन्नं, उयाहु अजाणया ? से य भणिज्जा–नो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया दिन्नं, कामं खलु आउसो ! इयाणिं निसिरामि, तं भुजह वा णं परिभाएह वा णं तं परेहिं समणुन्नायं समणुसट्ठं तओ संजयामेव भुंजिज्ज वा पीइज्ज वा, जं च नो संचाएइ भोत्तए वा पायए

वा साहम्मिया तत्थ वसंत्ति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया, तेसिं अणुप्पयायव्वं सिया, नो जत्थ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्नं कीरइ तहेव कायव्वं सिया, एवं खलु० ॥ (मू० ५९) ॥ २-१=१-१-१० ॥ पिण्डैषणायां दशम उद्दशकः ॥

ते भिक्षु घर विगेरेमां गोचरी जतां कदाच गृहस्थ पासे मांदा विगेरे माटे खांड विगेरे मांगतां बिड लवण खाणमां उत्पन्न थएल मीठुं तथा उद्भिज्ज ते समुद्रनुं मीठुं भूलथी आपे, ते वखते साधुए तेना हाथमां के वासणमांथी तपासीने लेवुं के भूलथी खांडने बदले मीठुं न आवे, पण कदाच बंनेने उतावळ होवाथी साधुना पात्रमां आवी गयुं होय अने थोडे दूर गया पछी साधुने खबर पडे तो पाछो आवीने ते गृहस्थने कहे के, आ तमे खांडने बदले मीठुं आपेल छे ते जाणमां के अजाणमां? जो अजाणमां आप्यानुं कहे अने पछी एम कहे के तमने जो खप होय तो वापरजो, आ प्रमाणे गृहस्थ जो रजा आपे तो प्रासुक होय तो साधुए वहेंचीने खावुं, कदाच अप्रासुक आवे अने गृहस्थ पाछुं न ले तो परठववानो महान दोष जाणीने पोते खाय पीये, वधारे होय तो नजीक रहेला उत्तम साधुओने वहेंची आपे, तेवा साधर्मिक न होय तो पोतानी शक्ति प्रमाणे वापरे, (बाकीनुं परठवी दे.) आ साधुनुं सर्वथा साधुपणुं छे. (एटला माटे बने त्यां लगी गोचरी जनारे गोचरीमांज पुरतुं लक्ष्य राखीने वस्तु लेवी के पछवाडे आवी तकलीफ न पडे.)

दसमो उद्देशो समाप्त.

अग्यारमो उद्देशो.

दशमो उद्देशो कह्यो, हवे अग्यारमो कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां मळेला पिंडनो (लेवा न लेवा तथा वापरवा परठववा संबंधी) विधि कह्यो, तेनेज अहीं विशेषथी कहे छे.

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे मणुन्नं भोयणजायं लभित्ता से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह, से य भिक्खू नो भुंजिज्जा तुमं चेव णं भुंजिज्जासि, से एगइओ भोक्खामित्तिकट्टु पलिउंचिय २ आलोइज्जा, तंजहा—इमे पिंडे इमे लोए इमे तित्ते इमे कडुयए इमे कसाए इमे अंबिले इमे महुरे, नो खलु इत्तो किंचि गिलाणस्स सयइत्ति माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, तहाठियं आलोइज्जा तहाठियं गिलाणस्स सयइत्ति, तं तित्तयं तित्तएत्ति वा कडुयं कसायं कसायं अंबिलं अंबिलं महुरं महुरं० (सू० ६०)

(भिक्षा माटे विहार करे शुद्ध गोचरी ले माटे भिक्षण शीला) ते साधुओ समान आचार विचार व्यवहारवाळा एकज जग्याए रह्या होय, अथवा बहार गामथी विहार करता आव्या होय, (वा शब्दथी असमान आचारवळा पण भेळा समजवा) तेमां कोइ साधु मांदो पडे, तो भिक्षामां फरनारा साधुओ गोचरीमां मनोज्ञ भोजननो लाभ थतां बीजा सोबती साधुने कहे के आ सारुं भोजन तमे लेइने मांदा साधुने आपो, अने जो ते न खाय, तो तमेज खाइ ले जो, आ प्रमाणे मांदानी वेयावच्च करनार ने कहेतां ते साधु मांदा माटे आहार लेइने विचार करे के, आ सारुं मिष्टान विगेरे स्वादिष्ट वस्तु हुं खाइश, पछी ते मांदा पासे जइने सारो

आहार छुपावीने मांदाने कहे के आ आहार तमने आपतां वायु विगेरे वधी जशे माटे तमारे खावा योग्य नथी, कारण के आ अपथ्य छे. एटले तेना आगळ आहारनुं पात्र मुकी कहे के तमारे माटे साधुए आहार आप्यो छे, पण आ तो लूखो छे, तीखो छे, कडवो छे, कषायेलो खाटो मधुर छे. ते अमुक रोग उत्पन्न करे तेवो छे. माटे तमने तेनाथी उपकार थाय तेम नथी, आ प्रमाणे कही मांदाने डरावीने—ठगीने पोते खाइ जाय ते माटे कपट कर्युं कहेवाय, तेवुं पाप साधुए न करवुं, त्यारे तेणे शुं करवुं ? ते कहे छे—

जेवुं होय तेवुं मांदाने देखाडवुं, अर्थात् कपट कर्याविना तेने अनुकुळ होय ते बधो आहार समजावीने आपी देवो.

भिक्खागा नामेगे एवमाहंसु–समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा मणुन्नं भोयणजायं लभित्ता से य भिक्खू गिलाइ से हंदह णं तस्स आहरह, से य भिक्खू नो भुंजिज्जा आहारिज्जा, से णं नो खलु मे अंतराए आहरिस्सामि, इच्चेयाइं आइतणाइं उवाकम्म ॥ (सू० ६१)

ते साधुओ सुंदर आहार लावीने पोताने त्यां रहेला अथवा नवा परोणा आवेला साधुओने मांदाने उद्देशीने कहे के, आमांथी मांदाने योग्य सारुं सारुं भोजन लो अने ते न खाय तो पाछुं लावजो, पछी लेवा वाळो कहे के हुं तेने अंतराय पाडया विना तेने योग्य आपीने बाकीनुं वधेलुं पाछुं लावीश. पछी आहार लइने मांदाने आहार गया सूत्रमां बताव्या प्रमाणे खोटुं समजावी तेने ठगी ते पोते बधुं खाइ ले, अने आहार आपनार साधुओने मोडेथी जइने कहे के, ते साधुए कंइ लीधुं नहि. तो ते पाछुं लावता मने वेयावच्च करतां गोचरी योग्य समये न वापरवाथी शूळ उठी, तेथी तमारी पासे पाछो आहार न लाव्यो, (पण में

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेम तेम दुःखेथी खाइ लीधो!) आवुं कपट न करवुं. माटे शुं करवुं? ते कहे छे—

तेवुं कपट कर्या विना मांदाने बधो आहार बतावी सत्य समजावीने ते जेटलो आहार ले, ते आपवो, अने न ले ते बीजा साधुओने पाछो आपी आववो.

पिंडना अधिकारथीज सातपिंडैषणाने आश्रयी सूत्र कहे छे.

अह भिक्खू जाणिज्जा सत्त पिंडेसणाओ सत्त पाणेसणाओ, तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेषणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा मत्तेण वा असणं वा ४ सयं वा णं जाइज्जा परो वा से दिज्जा फासुयं पडिगाहिज्जा, पढमा पिंडेसणा १ ॥ अहावरा दुच्चा पिंडेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, तहेव दुच्चा पिंडेषणा २ ॥ अहावरा तच्चा पिंडेसणा—इह खलु पाईणं वा ४ संतेगयाइ सड्ढा भवंति—गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं अन्नयरेसु विरुवरुवेसु भायणजाएसु उवनिक्खित्तपुव्वे सिया, तंजहा थालंसि वा पढरंसि वा सरगंसि वा परगंसि वा वरगंसि वा, अह पुणेवं जाणिज्जा—असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे मत्ते, से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहिए वा, से पुव्वामेव०—आउसोत्ति वा! २ एएण तुमं असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेणं संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण अस्सिं पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा निहट्टु उचित्तु दलयाहि तहप्पगारं भोयणजायं सयं वा णं जाइज्जा २ फासुयं० पडिगाहिज्जा, तइया पिंडेसणा ३ ॥ अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा० से जं० पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा सयं वा णं० जाव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडि०, चउत्था पिंडेसणा ४ ॥ अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा २ उग्गहियमेव भोयणजायं जाणिज्जा, तंजहा सारावंसि वा डिंडिमंसि वा कोसगंसि वा, अह पुणेवं जाणिज्जा बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे, तहप्पगारं असणं वा ४ सयं० जाव पडिगाहि०, पंचमा पिंडेसणा ५ ॥ अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा २ पग्गहिमेव भोयणजायं जाणिज्जा, जं च सयट्ठाए पग्गहियं, तं पायपरियावन्नं तं पाणिपरियावन्नं फासुयं जं च परट्ठाए पग्गहियं पडि०, छट्ठा पिंडेसणा ६ ॥ अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा० बहुउज्झियधम्मियं भोयणजायं जाणिज्जा, जं चऽन्ने बहवे दुपयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा नावकंखंति, तहप्पगारं उज्झियधम्मियं भोयणजायं सयं वाणं जाइज्जा परो वा से दिज्जा जाव पडि०, सत्तमा पिंडेसणा ७ ॥ इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ, अहावराओ सत्त पाणेसणाओ, तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते, तं चेव भाणियव्वं, नवरं चउत्थाए नाणत्तं। से भिक्खू वा० से जं पुण० पाणगजायं जाणिज्जा, तंजहा—तिलोदगं वा ६, अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहिज्जा ॥ (सू० ६२)

अथ शब्द अधिकारना अंतरमां आवे छे. प्र०—शुं अधिकार बतावे छे? उ०—सातपिंडेषणा. अने पान (पाणी) नी एसणा अर्थात् भिक्षु एम जाणे के नीचे बतावेली पिंड एसणा तथा पान एसणा छे,

१ असंसट्ठा २ संसट्ठा ३ उद्धडा ४ अप्पेलवा ५ उग्गहिया ६ पग्गहिया ७ उज्झधम्मा.

साधुओना बे भेदो छे, गच्छमां रहेल स्थविर कल्पी अने गच्छथी नीकळेला जिनकल्पी, उपरनी साते पिंडएषणा: स्थविर

For Private and Personal Use Only

कल्पीने लेवाय. पण जिनकल्पीने प्रथमनी बे छोडीने पाछळनी पांचलेवाय छे.

प्रथमनी पिंड एषणानुं स्वरूप—

असंसृष्ट हाथ, असंसृष्ट वासण, अने वहोराव्या पछी वासणमां द्रव्य रहे अथवा न रहे, तेमां जो बीलकुल द्रव्य न रहे तो तुर्त वासण धोवानो पश्चात् कर्मनो दोष लागे, छतां पण गच्छमां बालक, बूढो, तपस्वी विगेरेना आकुळपणाना कारणे निषेध नथी, तेथीज सूत्रमां तेनी चिंता करी नथी, न खरडेलो हाथ, न खरडेलुं वासण, तेथी असन विगेरे चार प्रकारनो आहार याचे, अथवा गृहस्थ पोते याच्या विना पण आपे, तो खप होय ते प्रमाणे फासु आहार ग्रहण करे.

बीजी पिंडएषणा.

खरडेलो हाथ, खरडेलुं वासण, गृहस्थ पोताना माटे ते वस्तु लेवा हाथ अने वासण खरडे—

त्रीजी पिंडएसणा.

प्रज्ञापकनी अपेक्षाए पूर्व विगेरे दिशामां केटलाक श्रद्धाळु श्रावको के भद्र गृहस्था रहेता होय, ते शेठथी लइने नोकरडी सुधी होय छे, तेमना घरमां अनेक जातिना वासणोमां अन्न विगेरे प्रथम नांखेलुं होय छे, ते थालमां पिठर सरग ते शारिका (सरकीया) ना घासनुं बनावेलुं सूपडुं विगेरे परग ते वांसनी बनावेली छाबडी विगेरे छे, 'वरग' ते मणि विगेरे रत्नो जडीने बनावेलुं किंमती वासण होय, तेमां कोइ चीज काढीने मुकी होय, तो हाथ न खरडेलो होय अने वासण खरडेलुं होय, तो पात्रां धारण करनार स्थविर कल्पी अथवां पात्रां छोडीने हाथमां खानार जिनकल्पी होय, तो गृहस्थने प्रथमज कहे हे आयुष्मन्! अथवा हे बाइ!

तमे न खरडेला हाथे, खरडेला वासणे अथवा खरडेला हाथे, खरडेला वासणे आ पातरामां के आ हाथमां संभाळथी लइने आपो अथवा पोते जे वस्तु जोइती होय, तेनुं नाम कहीने याचे अने ते गृहस्थ आपे तो फासु आहार ले.

अहीं खरडेलो हाथ, खरडेलुं वासण अने थोडुं द्रव्य पछवाडे रहे एवो आठमो भांगो जिनकल्पीने कल्पे, स्थविर कल्पीने तो सूत्र अर्थनी 'हानि' विगेरेना कारणोने लइने बधा भांगा कल्पे छे—

अल्पलेपा नामनी चोथी पिंडेषणा.

कुरमुरा ममरा पृथुक विगेरे चोखा शेकीने बनावेला होय, तो ते लेतां वासण हाथने लेप लागतो नथी तथा अल्प ते चोखानी कणकी विगेरेना बनावेल होय तो अल्पपर्यय कहेवायो ते बंनेने लेवाय छे. तेम वाल, चणा विगेरे पण कल्पे.

अवगृहिता (५)—एटले गृहस्थे पोताने खावा माटे वासण धोयुं होय के हाथ धोया होय, तेवा वासणमां जो पाणीनो लेप देखातो होय तो लेवुं न कल्पे. पण बहु सुकाइ गयुं होय तेवा शरावला, डिंडिम (कांसानुं वासण) तथा कोशक मां खावानुं काढेलुं हाय तो साधुने लेवुं कल्पे

प्रगृहीता—गृहस्थे स्वार्थ माटे के बीजा माटे चरु, हांडी विगेरे रांधवाना वासणमांथी चाटवा विगेरेथी लइने बीजाने वस्तु आपी होय ते बीजाए न लीधी होय, अथवा साधुने अपावी होय तो प्रगृहीता कहेवाय, ते गृहस्थना वासणमां के हाथमां वस्तु होय तो फासु होय ते ले.

उज्झीत धर्मा—ते घरनी अंदर घणा नोकर चोपगां के अन्य साधु ब्राह्मण अतिथि मागण इच्छे नहि तेवी लूखी सादी रसोइ

होय ते परठववा योग्य होय तेवुं भोजन पोते याचे अथवा गृहस्थ आपे तो ले.

हवे सात पाणीनी एषणाओ कहे छे.—तेमां प्रथमनी त्रण तो भोजन माफक छे अने चोथीमां भेद छे, कारण के ते पाणी स्वच्छ होवाथी तेमां अल्प लेपपणुं छे, तेथी संसृष्ट वीगेरेनो अभाव छे, आ पछीनी त्रण पाणीनी एषणाओ वधारे वधारे विशुद्ध होवाथी एवोज क्रम छे. (अन्न माफक पाणीनुं पण जाणवुं)

हवे आ बतावेला अथवा पूर्वे बतावेला सूत्र वडे शुं करवुं ते कहे छे.

इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं सत्तण्हं पाणेसणाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे नो एवं वइज्जा—मिच्छापडिवन्ना खलु एए भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने, जे एए भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ता णं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि सव्वेऽवि ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नुन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति, एयं खलु तस्स तस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं ॥ (सू० ६३) २-१-१-११ पिण्डैषणायामेकादश उद्देशकः ॥

आ सात पिंडेषणा अथवा पान एषणामांनी कोइपण प्रतिमाने साधु स्वीकारीने आवुं पछीथी न बोले, के—"बीजा साधु भगवंतो सारी रीते पिंडेषणा विगेरे अभिग्रहो पाळता नथी, हुंज एकलो बरोबर पाळुं छुं." तेथी मेंज विशुद्ध अभिग्रह लीधो छे, पण बीजाओए नथी लीधो, आ उपरथी गच्छमांथी नीकळेलाए के गच्छमां रहेलाए परस्पर समदृष्टिथी देखवा, पण उत्तम रीते पिंडेषणा पाळनारा चडती अवस्थाए पहोंचेला गच्छमां रहेला साधुए पण पोतानाथी नीचा साधु जेओ प्रथमनी पिंडएषणामां रह्या होय तेमने पण दोष देवो नहि. प्र०—त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आजे साधु भगवंतो पिंडेषणा विगेरे विशेष अभिग्रहोने धारण करीने गाम गाम विचरे छे, अने हुं जे प्रतिमाने धारण करीने विचरुं छुं. तेथी अमे बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां छीए, अथवा जिनाज्ञाए विचरे छे, तेथा अभ्युद्यत विहार करनार संवरवाळा छे, तेओ बधा एक बीजाने समाधिवडे जे गच्छमां जेने जे समाधि बतावी होय तेने 'ते' कारणके गच्छवासिओने उपर बतावी ते सात यथाशक्ति पाळवानी छे. गच्छथी नीकळेलाओने पाछळनी पांचनो अभिग्रह छे, ते वडे तेओ प्रयत्न करे, ते प्रमाणे ते पाळीने विचरता होय ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञा उलंघता नथी, ते संबंधमां पूर्वे बतावेली गाथा कहे छे.

जोऽवि दुवत्थ तिवत्थो, बहुवत्थ अचेलओवि संथरइ, न हु ते हीलंति परं, सव्वेवित्र ते जिणाणाए ॥ १ ॥

कोइ बे कोइ त्रण कोइ वधारे कोइ बीलकुल वस्त्र न पहेरे, तो पण ते परस्पर निंदा न करे, कारण के ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां छे. आज ते साधुनुं समग्र साधुपणुं छे, (आ छेवटना सूत्रनो परमार्थ ए छे के स्व परने दुःख न थाय, तेम विचारपूर्वक गोचरी विगेरे लेवुं वापरवुं, पण ते प्रमाणे निर्वाह न थाय, तो बने तेटलुं निर्मळ भावथी पाळवा प्रयत्न करवो. पण वधारे उत्कृष्ट मार्ग पाळनारे पण पोते अहंकार करीने बीजानी निंदा न करवी, तेम पोतानी शक्ति वधतां समान्य पाळनारे पण उत्कृष्ट पाळवा प्रयत्न करवो.)

शय्याएषणा नामनुं बीजुं अध्ययन—बीजा श्रुत स्कंधनुं प्रथम अध्ययन कहीने हवे बीजुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया अध्ययनमां धर्मना आधार रुप शरीरनी प्रतिपालना माटे प्रथमज पिंड ग्रहणनो विधि बताव्यो अने ते पिंड (आहार पाणी) लइने ज्यां गृहस्थो न होय तेवा स्थानमां वापरवुं. तेथी ते स्थानना गुण दोष बताववा आ बीजुं अध्ययन कहे छे. आ संबंधे

For Private and Personal Use Only

आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वारो कहेवा, तेथी नाम निष्पन्न निक्षेपामां "शय्य एषणा" नाम छे, तेना निक्षेपा करवामां "पिंडैषणा निर्युक्ति" ज्यां संभवे त्यां टुंकाणमां प्रथम गाथा वडे अने बीजी एषणाओनी निर्युक्तिओने यथायोग संभवता बीजी गाथा वडे प्रकट करीने त्रीजी गाथा वडे "शय्या" शब्दना 'छ निक्षेपा' ना विचारमां नाम स्थापना छोडीने निर्युक्तिकार कहे छे.

दव्वे खित्ते काले भावे, सिज्जाय जा तहिं पगयं केरिसियासिज्जा खलु संजय जोगत्ति नायव्वा ? ॥ २९८ ॥

द्रव्य शय्या क्षेत्र शय्या काळ शय्या अने भाव शय्या ए चार प्रकारे शय्या छे, तेमां द्रव्य शय्यानी जरुर छे, तेथी संयतोने केवो शय्या योग्य छे. तेज हवे बतावशे. द्रव्य शय्यानी हवे व्याख्या करे छे.

तिविहा य दव्वसिज्जा सचित्ताऽचित्त मीसगा चेव । खित्तंमि जंमि खित्ते काले जा जंमि कालंमि ॥ २९९ ॥

त्रण प्रकारनी द्रव्य शय्या छे, सचित्त अचित्त अने मिश्र. तेमां सचित्त ते पृथ्वीकाय विगेरे उपर, अने अचित्त ते प्रासुक पृथ्वी विगेरे उपर, अने मिश्र ते जे अर्धपरिणत पृथ्वी विगेरे उपर जे शय्या होय ते अथवा सचित्त शय्यानुं वर्णन निर्युक्तिकार हवे पछीनी गाथामां पोतेज कहे छे, क्षेत्र शय्या ते जे गाम विगेरे क्षेत्र (स्थान)मां शय्या कराय ते. कालशय्या ते जे ऋतुबद्ध-काळ विगेरेमां जे शय्या कराय, ते काळ शय्या छे, तेमां सचित्त द्रव्य शय्यानुं दृष्टांत बतावे छे.

उक्कल कलिंग गोअम वग्गुमई चेव होइ नायव्वा । एयं तु उदाहरणं नायव्वं दव्वसिज्जाए ॥ ३०० ॥

आ गाथानो भावार्थ कथाथी जाणवो.

एक अटवीमां बे भाइओ उत्कल अने कलिंग नामना विषम (विकट) प्रदेशमां पल्लि बनावीने चोरी करे छे. तेमनी बेन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्गुमती नामनी छे, त्यां गौतम नामनो निमित्तिओ आव्यो, बे भाइओए तेनो सत्कार कर्यो, पण वल्गुमतीए खानगीमां कह्युं के आ आपणुं भलुं करनार भद्रक नथी, आ अहीं रहीने आपणी पल्लीनो विनास करशे, माटे तेने काढवो जोइए, तेथी ते बे भाइओए तेना वचनथी तेने काढ्यो, पेला निमितिआए पण तेना उपर द्वेषी बनीने आ प्रतिज्ञा करी के "जो हुं वल्गुमतीना उदरने चीरीने तेमां न सुउ तो मारुं नाम गौतम नहि." बीजा आचार्यो कहे के छे के ते समये तेने बाळको नाना होवाथी वल्गुमती पोतेज पल्लीनी मालीक हती, अने त्यां उत्कल अने कलिंग नामना बे नवा निमित्तिया आवेल हता, तेथी पूर्वे आवेल गौतम निमित्तियाने पोते काढयो, तेथी गौतमे द्वेषथी प्रतिज्ञा करीने मार्गमां सरसव वावतो गयो, चोमासामां सरसवो उग्या. ते उगेला सरसवोने आधारे बीजा राजानो प्रवेश करावी ते बधी पल्लीने लुंटावीने बाळी नांखी, गौतमे पण वल्गुमतीने केद पकडी तेनुं पेट चीरावीने थोडी जीवती तरफडती हती, ते समये तेना पेट उपर सूतो, आ सचित्त द्रव्यशय्या जाणवी.

भावशय्यानुं वर्णन.

दुविहा य भावसिज्जा कायगए छव्विहे य भावंमि । भावे जो जत्थ जया सहदुहगब्भाइसिज्जासु ॥ ३०१ ॥

बे प्रकारनी भावशय्या छे. (१) काय विषय संबंधी अने छ भाव संबंधी तेमां जे जीव औदयिक विगेरे भावमां जे काळे वर्त्ते, ते तेनी छ भावरुप भावशय्या छे, कारण के शयन ते शय्या स्थिति छे, तेज प्रमाणे जे जीव स्त्री विगेरेनी काय (उदर)मां गर्भपणे रहेलो होय, ते जीवने स्त्री विगेरेनी काया भावशय्या छे. कारण के स्त्री विगेरेनी कायमां सुखमां दुःखमां सुता उठतां दरेक वखते ते जीव तेनी अंदर रहेली बधी अवस्थावाळो थाय छे, माटे ते काय संबंधी भावशय्या छे.

For Private and Personal Use Only

आ अध्ययननो बधो अर्थाधिकार शय्या विषय संबंधी छे, अने हवे उद्देशानो अर्थाधिकार बताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

सव्वे वि य सिज्जविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे वुच्छामि समासओ किंचि ॥ ३०२ ॥

आ बधा एटले त्रणे उद्देशा जो के शय्या विशुद्धि करनारा छे, तोपण तेमां दरेकमां कांइक विशेष छे, तेने हुं टुंकाणमां कहीश, ते कहे छे—

उग्गमदोसा पढमिल्लुयंमि संसत्त पच्चवाया य १ । बिइयंमि सोअवाई बहुविहसिज्जाविवेगो २ य ॥ ३०३ ॥

तेमां प्रथम उद्देशामां वसतिना उद्‌गम दोषा आधा कर्म विगेरे छे, तथा गृहस्थ विगेरेना संसर्गथी अपायो चिंतवेला छे, तथा बीजा उद्देशामां शौचवादि (गृहस्थो) ना बहु प्रकारना दोषो तथा शय्यानो विवेक (त्याग) बतावे छे. आ अर्थाधिकार छे.—

तइए जयंतछलणा सज्झायस्सऽणुवरोहि जइयव्वं । समविसमाईएसु य समणेणं निज्जरट्ठाए ३ ॥ ३०४ ॥

त्रीजा उद्देशामां जयणा पाळनार उद्‌गम विगेरे दोषो त्यजनार साधुने जे छलना थाय, ते दूर करवा प्रयत्न करवो, तथा स्वाध्यायने अनुकूळ ए समविषम विगेरे उपाश्रयमां निर्जराना अर्थी साधुए रहेवुं, ए विषय छे, निर्युक्ति अनुगम कह्यो हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे—

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा उवस्सयं एसित्तए अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अप्पंडं जाव अप्पसंताणयं तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ चेज्जा ॥ से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा अस्सिं पडिआए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं ४ समरंभ इसमुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविए वा नो ठाणं वा ३ चेइज्जा । एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण उ० बहवे समणवणीमए पगणिय २ समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं ॥ से भिक्खू वा० से जं० बहवे समण० समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव चेएति, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ३, अह पुणेवं जाणिज्जा । पुरिसंतरकडे जाव सेविए पडिलेहित्ता २ तओ संजयामेव चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण अस्संजए भिक्खुपडियाए कडिए वा उक्कंबिए वा छन्ने वा लित्ते वा घट्ठे वा मट्ठे वा समट्ठे वा सेपधूमिए वा तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहिं वा चेइज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पुरिसंतरकडे जाव आसेविए पडिलेहित्ता २ तओ चेइज्ज्जा ॥ (सू० ६४)

ते भिक्षु उपाश्रयमां रहेवाने जो इच्छतो होय तो गाम विगेरेमां जाय, त्यां जइने साधुने योग्य वसति शोधे, त्यां जो इंडां विगेरे, जंतु युक्त मकान होय, त्यां वास विगेरे न करवो, ते बतावे छे स्थान ते काउस्सग्ग शय्या ते संथारो करवो. निषीधिका ते स्वाध्याय (भणवानुं) आ त्रण न करवां, (अर्थात् जीव जंतुवाळा मकानमां उतरवुं नहि.) पण जेमां जंतु न होय त्यां उतरी ते काउसग्ग विगेरे करवो. हवे उपाश्रय संबंधी उद्गम विगेरे दोषो बतावे छे.

ते भिक्षु एवुं जाणे के कोइ श्रावके आ उपाश्रय कराव्यो छे, पण ते एक साधु जे जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे अनुष्ठान करे छे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेने उद्देशीने जीवोनो आरंभ करीने बनावेलो छे, अथवा ते साधुने उद्देशीने वेंचातो लीधो छे, अथवा अन्य पासेथी उछीको लीधो छे, अथवा नोकर विगेरे पासेथी बळ—जबरीथी लीधो छे, बधानो सामटो होय, तेमां बधानी रजा लीधा विना लीधो होय अथवा तैयार थयेलुं मकान के तंबु विगेरे बीजी जग्याथी लावेल होय, आवा स्थानने श्रावक साधुनी पासे आवीने आपे, तो तेवा उपाश्रयमां ज्यां सुधी बीजो पुरुष तेवा मकानने न वापरे, त्यां सुधी पोते तेमां काउसग्ग विगेरे के रहेवास न करे, आ एक साधु आश्रयी कह्युं. ते प्रमाणे घणा साधु एक साध्वी के घणी साध्वीने उद्देशीने ते आश्रयी पण समजवुं; वळी त्यारपछी श्रमण वणीमगआश्रयी सूत्रमां पण पिंडैषणा सूत्र प्रमाणे जाणवुं, एटले ते सूत्रमां समजवुं के प्रथम पोते न उतरवुं पण साधु सिवाय बीजो कोइ गृहस्थ उतरे, त्यारपछी पोते उतरे तथा साधु जाणे के आ उपाश्रय साधुने माटे गृहस्थे वांसनी कांबी (खापटो) विगेरेथी बांधेल छे, दर्भ विगेरेथी छायेल छे, छाण विगेरेथी लींप्यो छे, खडो विगेरे खडबचडा पदार्थथी घस्यो छे, अने तेने कळि विगेरेना लेपथी कोमळ बनाव्यो छे, तथा जमीन साफ करी संस्कार्यो छे, दुर्गंधी दूर करवा धुप विगेरेथी धुपाव्यो छे, आवुं जो साधु माटे करेलुं होय तो ज्यां सुधी कोइ गृहस्थ न वापरे, त्यां सुधी ते मकानमां पोते काउसग्ग विगेरे न करे, पण ज्यारे बीजो वापरे, तेवुं जाणे त्यार पछी ते मकान पडिलेही प्रमार्जीने काउसग विगेरे करे.

से भिक्खू वा० से जं० पुण उवस्सयं जा० अस्संजए भिक्खुपडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं संथारिज्जा बहिया वा निन्नक्खु तहप्पगारे उवस्सए अपु० नो ठाणं ३ अह पुणेवं० पुरिसंतरकडे आसेविए पडिलेहित्ता २ तओ संजयामेव आव चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा० से जं० अस्संजए भिक्खुपडियाए उदग्गप्प-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरइ बहिया वा णिण्णक्खू त० अपु० नो ठाणं वा चेइज्जा, अह पुण० पुरिसंतरकडं चेइज्जा ॥ से भिक्खू वा से जं० अस्संज० भि० पीढं वा फलगं वा निस्सेणिं वा उदूखलुं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ बहिया वा णिण्णक्खू तहप्पगारे उ० अपु० नो ठाणं वा चेइज्जा, अह पुण० पुरिसं० चेइज्जा, ॥ (सू० ६५)

ते भिक्षु आवा मकारनो उपाश्रय जाणे के ते गृहस्थे साधुने उद्देशीने नानी बारीनुं मोटुं बारणुं कर्युं छे, तेवा मकानमां ज्यां सुधी गृहस्थ विगेरे बीजो पुरुष ते मकान न वापरे त्यां सुधी साधु तेने न वापरे. आ बंने सूत्रमां पण उत्तर गुणो वर्णव्या छे, ते पूर्वे बतावेला दोषथी दुष्ट शय्या होय तो पण बीजा पुरुषे स्वीकार्या पछी कल्पे छे, पण मूळ गुणथी दुष्ट होय तो बीजा पुरुषे स्वीकार्या पछी पण कल्पती नथी, मूळ गुणना दोषो नीचे मुजब छे, "पट्ठी वंसोदो धारणा उचत्तारि मूलवेलीओ" एटले प्रष्ठ वांस विगेरेथी साधु विगेरे माटे जे वसति तैयार करावाय, ते मूळ गुणथी दुष्ट छे.

पीठनो वांसडो, बे धारण करनारा, तथा चार मूळ वेलीओ होय-(साधु माटे वांसडा उभा करीने मकान बनावे ते साधुने कल्पे नहिं) वळी ते साधु आवो उपाश्रय जाणे के गृहस्थ साधुने उद्देशीने पाणीथी तैयार थयेलां कंद विगेरे बीजा मकानमां (ते खाली करवा माटे) लइ जाय छे, अथवा तेनो बहार ढगलो करे छे, तेवा मकानमां ज्यां सुधी बीजो माणस आवीने न रहे त्यां सुधी साधु तेमां न उतरे, पण बीजाए वापर्या पछी साधु तेमां रहे, तेज प्रमाणे अचित्त वस्तु पण घरमांथी बहार काढे तोपण पुरुषांतर थया पछी साधुए ते मकान वापरवुं; कारण के तेमां पण फेरफार करतां त्रस जीवनो वध थवानो संभव छे. वळी—

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भिक्खू वा० से जं० तंजहा–खंधंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा पासा० हम्मि० अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, नन्नत्थ आगाढाणागाढेहिं कारणेहिं ठाणं वा नो चेइज्जा ॥ से आहच्च चेइए सिया नो तत्थ सीओदगवियडेण वा २ हत्थाणि वा पायाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा मुहं वा उच्छोलिज्ज वा, पहोइज्ज वा, नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा पा० खे० सिं० वंतं वा पित्तं वा पूयं वा सोणियं वा अन्नयरं वा सरीरावयवं वा, केवली बूया आयाणमेयं, से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाले वा पवडमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नयरं वा कायंसि इंदियजालं लूसिज्ज वा पाणिं ४ अभिहणिज्ज वा जाव ववरोविज्ज वा, अथ भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठा ४ जं तहप्पगारं उवस्सए अंतलिक्खजाए नो ठाणंसि वा ३ चेइज्जा ॥ (सू०६६)

ते भिक्षु आवो उपाश्रय जाणे, के ते एक थांभाना उपर बनावेलुं मकान छे, अथवा मांचडा उपर छे, अथवा माळा उपर छे, प्रासाद ते बीजे मजले मकान आव्युं छे, (प्रासाद ते सारुं पाकुं मकान बांध्युं होय ते छे)–हर्म्यतल ते भोंयरावाळुं मकान छे, आवा मकानमां बने त्यांसुधी साधुए निवास न करवो, पण बीजा मकानना अभावे तेवुं मकान वापरवुं पडे तो शुं करवुं ते कहे छे. त्यां ठंडा पाणी विगेरेथी हाथ धुवे नहि, तथा त्यां रहीने टट्टी जवा विगेरेनी क्रिया न करे, कारण के केवळी प्रभु तेमां कर्म बंध अने संयमनी विराधना बतावे छे, त्यां त्याग करतो पडी जाय, अने पडतां हाथ पग विगेरे शरीरना अवयवने नुकशान थाय तथा पोते पडतां बीजा जीवोने पीडे, अथवा जीवथी हणे, आ प्रमाणे नुकशान जाणीने साधुए कांतो तेवा अधरना के भोंयराना स्थानमां उतरवुं नहि, (अथवा उतरवुं पडे तो संभाळीने चडवुं-उतरवुं के जग्या वापरवी.) वळी—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भिक्खू वा० से जं० सइत्थियं सखुड्डं सपसुभत्तपाणं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा । आयाणमेयं भिक्खूस्स गाहावइकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसगे वा विसूइया वा छड्डी वा उव्वाहिज्जा अन्नयरे वा से दुक्खे रोगायंके समुपज्जिज्जा, अस्संजए कलुणपडियाए तं भिक्खुस्स गायं तिल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा अब्भंगिज्जा वा मक्खिज्ज वा सिणाणेण वा कक्केण वा लुद्धेण वा वण्णेण वा चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसिज्ज वा पघंसिज्ज वा उव्वलिज्ज वा उव्वट्टिज्ज वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिज्ज वा पक्खालिज्ज वा सिणाविज्ज वा सिंचिज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालिज्ज वा पज्जालिज्ज वा उज्जालित्ता कायं आयाविज्जा वा प० अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्टा० जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६७)

ते भिक्षु वळी आवो उपाश्रय जाणे के तेमां स्त्रीओ रहेली छे, अथवा ते बाळकोवाळुं छे, अथवा ते मकान शिंह कुतरो बिलाडी विगेरे क्षुद्र प्राणीथी रोकायेलुं छे, पशुओ रखाय छे, तथा भोजन पाणी छे, अथवा पशुओने चारो पाणी आपवामां आवे छे, आवा गृहस्थथी आकुळ उपाश्रयमां साधुए स्थान विगेरे न करवुं, कारणके तेमां नीचे मुजब दोषो छे, तथा आ 'कर्म' बंधननां कारणो छे. (१)गृहस्थना कुटुंब साथे वसतां त्यां शंका रहित भोजन विगेरेनी क्रिया न थाय, अथवा कोइ पण जातनो व्याधि थाय, ते बतावे छे, 'अलसग' ते हाथपग विगेरेनो अटकाव, अथवा श्वयथु ते लकवानो रोग थाय, विशूचिका (शूळ) छर्दी नो रोग थाय आवी व्याधिओ साधुने उत्पन्न थाय अथवा तेवा बीजो ताव विगेरे कोइ रोग थाय, अथवा तुर्त प्राण लेनारो शूळ विगेरे रोग थाय, तेवा रोगथी पीडायेला साधुने देखीने कारुण्यथी अथवा भक्तिथी गृहस्थ ते भिक्षुना शरीरने तेल विगेरेथी चोळे, अथवा

For Private and Personal Use Only

थोडुं मसळे, पछी सुगंधी द्रव्यथी उवटण करे, कल्क ते कषाय द्रव्यनो क्वाथ (नाशक जील्लामां शीखाखाइ विगेरे पाणीमां उकाळी नाहावामां उपयोग करे छे,) लोध्र ते सुगंधी द्रव्य छे, वर्णक ते कपीलो विगेरे छे, जव विगेरेनुं चूर्ण—पद्मक जाणीतुं छे, विगेरे द्रव्य वडे थोडुं थोडुं घसे अने चोळीने तेनुं उद्वर्त्तन करे, पछी ठंडा के उंना पाणीथी थोडुं स्नान करावे, अथवा वारंवार स्नान करावे, अथवा माथा विगेरेमां के नाभिना उपरना अंगमां पाणी सींचे, अथवा लाकडाथी अथवा लाकडां मांहोमांहे घसीने अग्नि बाळे, भडको करे, तेम करीने पछी साधुना शरीरने एकवार तपावे, के वारंवार तपावे, आवा दोषो जाणीने साधुने आ प्रतिज्ञा विगेरे छे. के तेवा गृहस्थना रहेवासवाळा मकानमां काउसग्ग विगेरे न करवुं. (तेम निवास पण न करवा.)

आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरी वा अन्नमन्नं अक्कोसंतो वा पचंति वा रुंभंति वा उद्दविंति वा, अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं नियंछिज्जा, एए खलु अन्नमन्नं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु जाव मा वा उद्दविंतु, अह भिक्खूणं पुव्व० जं तहप्पगारे सा० नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ।' (सू० ६८)

गृहस्थना रहेवासवाळा घरमां उतरतां साधुने कर्मनुं उपादान छे, तेथी त्यां बहु दोषो छे, तेज बतावे छे, के आवा घरमां गृहस्थ मांहोमांहे आक्रोश विगेरे करे, ते कलेश करतां देखीने साधु कदाच उंचुं नीचुं मन करे, (उंचुं मन ते आवुं न करे तो ठीक, अने अवच ते भले करे,) तेवीज रीते मांहोमांहे गृहस्थना घरमां घरवाळां परस्पर कलेश उपद्रव विगेरे करे तो पण साधुने असमाधि थाय, माटे त्यां न उतरवुं.

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावई अप्पणो सयट्ठाए अगणिकायं उज्जालिज्जा वा

पज्जालिज्ज वा विज्झविज्ज वा, अह भिक्खू उच्चावयं मणं नियच्छिज्जा, एए खलु अगणिकायं उ० वा २ मा वा उ० पज्जा लिंतु वा मा वा प०, विज्झविंतु वा गा वा वि०, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगारे उ० नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ६९)

गृहस्थ साथे एक मकानमां रहेतां गृहस्थ निश्चयथी पोताना माटे अग्निकाय बाळशे, भडको करशे, अथवा बुझावशे, ते समये साधुना मनमां गया सूत्रमां कह्या प्रमाणे उंचा निचा भाव प्रगट थशे अने व्यर्थ कर्म बंध थशे, माटे तेवा स्थानमां साधुए उतरवुं नहि,

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा गुणे वा मणी वा मुत्तिए वा हिरण्णेसु वा सुवण्णेसु वा कडगाणि वा तुडियाणि वा तिसराणि पालंबाणि वा हारे वा अद्धहारे वा एगावली वा कण-गावली वा मुत्तावली वा रायणावली वा तरुणीयं वा कुमारि अलंकिविभूसियं पेहाए, अह भिक्खू उच्चाव० एरिसिया वा सा नो वा एरिसिया इय वा णं बूया इय वा णं मणं साइज्जा, अह भिक्खूणं पु० ४ जं तहप्पगारे उवस्सए नो० ठा० ॥ (सू० ७०)

वळी गृहस्थ साथे वसतां नीचला दोषो छे, घरमां गृहस्थने माटे बनावेला दागीना कुंडल, सोनानो दोरो, मणी, मोती चांदी सोनानां कडां बांजुबंध त्रणसेर वाळो हार झुमखां हार अर्धहार एकावलि कनकावलि मुक्तावलि रत्नावलि विगेरे जुए, अथवा तेवा दागीना पहेरेली सुंदर कुमारिकाने जुए, तेने देखीने ते साधु उंचा नीचां वचन बोले के आ सारो दागीनो के सुंदर कन्या छे, अथवा आ खामीवाळो दागीनो के कन्या छे, तेज प्रमाणे मनमां रागद्वेष करे,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स; इह खलु गाहावइणीओ वा गाहावइधूयाओ वा गा० सुण्हाओ वा गा० धाईओ वा गा० दासीओ वा गा० कम्मकरीओ वा तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंतिसमणा भगवंतो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं कप्पइ मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टित्तए, जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टाविज्जा पुत्तं खलु सा लभिज्जा उयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं जसस्सिं संपराइयं आलोयणदरिसणिज्जं, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तासिं च णं अन्नयरी सड्ढी तं तवस्सिं भिक्खुं मेहुणधम्म पडियारणाए आउट्टाविज्जा, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगारे सा० उ० नो ठा ३ चेइज्जा एयं खलु तस्स० ॥ (सू० ७१) पढमा सिज्जा सम्मत्ता २-१-२-१ ॥

वळी गृहस्थ साथे वसतां आ दोषो छे, गृहस्थनी स्त्री, दीकरी, दीकरानी वहु, धावमाता, दासी, नोकरडी बोले अथवा तेमना आगळ पूर्वे कोइ बोल्युं होय, के जे आ जैनना साधु भगवंतो महाव्रत पाळनारा मैथुन (संसार संग) थी विरत थएला छे, तेमने निश्चयथी मैथुन सेवन करवुं कल्पतुं नथी, अने तेथी जे कोइ स्त्री तेमनी साथे संबंध करे, अने पुत्र संपादन करे तो ते पुत्र बळवान् दीप्तिमान रुपवान कीर्तिवाळो थाय, आवुं सांभळीने तेओ विचारीने कोइ पुत्र वांछक (वांझणी) स्त्री साधुने कुसंग करवा प्रार्थना करे, आवा दोषो जाणीने साधुओने तेवा मकानमां उतरवानी मना करेली छे, आज भिक्षुनुं सर्वथा साधुपणुं छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीजो उद्देशो. (प्रकरण)

पहेलो उद्देशा कहीने बीजा कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, के गया उद्देशामां गृहस्थना घरमां वास करतां थता दोषो बताव्या, अहींया पण तेवा विशेष दोषो बसति संबंधी बतावे छे.

गाहावई नामेगे सुइसमायारा भवंति, से भिक्खू य असिणाणए मोयसमायारे से तग्गंधे दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ, जं पुव्वं कम्मं तं पच्छा कम्मं जं पच्छा कम्मं; तं पुरे कम्मं, तं भिक्खुपडियाए वट्टमाणा करिज्जा वा नो करिज्जा वा, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगारे उ० नो ठाणं ॥ (सू० ७२)

केटलाक गृहस्थो शुचि समाचारवाळा भागवत विगेरेना भक्त अथवा भोगीओ (वारंवार स्नान करनारा अथवा सुगंधी चांदन अगर केसर कर्पूर विगेरे वस्तुनो लेप करनार शोखीनो) होय छे, अने साधुओ तेवी रीते वारंवार के एकवार खास कारण विना फासु पाणीथी पण ब्रह्मचर्यना भंगना दोषने लीधे स्नान करनारा नथी, तथा कारण प्रसंगे मोया (पेशाब) नो पण उपयोग करनारा छे. (ज्यारे जंगलमां उतर्या होय अथवा उजड जग्यामां उतर्या होय; त्यां ओचींतो साप करडे तो तेना झेरथी बचवा रातना वैदनी खटपट न बनी शके, माटे पेशाबनो उपयोग पूर्वे थतो, सांभळवा प्रमाणे ओचींतो खीलो के ठोकर लागी लोही पुष्कळ नीकळ्तुं होय, तो पेशाबनी धारा करवाथी बंध पडे छे, तेवा कोइ पण कारणे वखते कोइ साधुए उपयोग कर्यो होय तो वारंवार स्नान करनारा गृहस्थने दुगंच्छा थाय) माटे भिक्षु तेनी गंधवाळा छे, तथा कोइनो पेशाब गंधातो होय, परसेवो वास मारतो होय,

For Private and Personal Use Only

तो ते गृहस्थने खोटुं लागे, अने गृहस्थने ते गमे नहि. (बंनेना रस्ता उलटा छे.) माटे फावे नहि. (सूत्रमां पडिकूल पडिलोमा एक अर्थवाळां छतां बने मुंकवानुं कारण फकत अतिशय विरुद्धता बतावी छे.) तथा ते गृहस्थ साधुना कारणेज भोजन तथा जमवाना स्थानमां तेमने स्नान पूर्वे करवुं होय, ते पछीथी करे छे, अने पाछळ करवानुं होय ते पहेलुं करे एम आगळ पाछळ घरमां कार्य थतां साधुओने अधिकरण दोष थाय छे, अथवा ते गृहस्थोने जमवानो काल थयो होय तो पण साधुने लीधे न खाय, तेथी अंतराय कर्म बंधाय, मननी पीडा विगेरेनो संभव थाय, अथवा ते साधुओ गृहस्थनी शरमथी पूर्वे पडीलेहणा करवानी ते पछी करे, अथवा काळ वीती गया पछी करे, अथवा न पण करे, माटे साधुओनी आ प्रतिज्ञा छे, के तेवा गृहस्थना वापरता घरमां निवास न करवो.

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं सं०, इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवे भोयणजाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खुपडियाए असणं वा४ उवक्खडिज्ज वा उवकरिज्ज वा उवकरिज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखिज्जा भुत्तए वा पायए वा वियट्टित्तए वा, अह भि० जं नो तह० ॥ (सू० ७३) आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संव० इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिन्नपुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खुपडियाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिंदिज्ज वा किणिज्ज वा पामिच्चेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उ० प०, तत्थ भिक्खू अभिकंखिज्जा आयावित्तए वा पयावित्तए वा वियट्टित्तए वा, अह भिक्खू० जं नो तहप्पगारे० ॥ (सू० ७४)

वळी जो गृहस्थ साथे साधु उतरे ता तेने आवां पण कर्म बंधन छे, के गृहस्थ प्रथम पोताना माटे जुदी जुदी जातनुं रांधे, अने पाछळथी साधु माटे अशन विगेरे चारे प्रकारनो आहार रांधे, अथवा भोजननुं वासण आगळ मूके ते देखीने भिक्षुक तेने

खावा पीवानी इच्छा करे, अथवा त्यां बेसवानी साधु इच्छा करे, तेटला माटे रहेवाना घरमां न उतरवुं (७३)

एज प्रमाणे गृहस्थे पोताना माटे जुदी जुदी जातिनां लाकडां चीरीने मुक्यां होय छे, अने पाछळथी साधु माटे जुदां जुदां लाकडां चीरावे, खरीद करे, बदलो करे, अथवा ठंडीना दिवस होय तो तापणा माटे अग्निकाय सळगावे, भडको करे, त्यांसुधी तापवानी एकवार इच्छा करे, वारंवार तापवानी इच्छा करे, अथवा त्यां जइने बेसे, माटे तेवा स्थानमां कर्मबंधननुं कारण जाणीने साधुए उतरवुं नहि. (मू-७४) वळी

सेभिक्खू वा० उच्चारपासवणेण उव्वाहिज्जमाणे राओ वा वियाले वा गाहावईकुलस्स दुवारबाहं अवंगुणिज्जा, तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसिज्जा, तस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ एवं वइत्तए-अयं तेणो पविसइ वा नो वा पविसइ उवल्लियइ वा नो वा० आवयइ वा नो वा० वयइ वा नो वा० तेण हडं अन्नेण हडं तस्स हडं अन्नस्य हडं अयं तेणे अयं उवचरए अयं हंता अयं इत्थमकासी तं तवस्सिं भिक्खुं अतेणं तेणंति संकइ, अह भिक्खूणं पु० जाव नो ठा० ॥ (मू० ७५)

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां साथे रहेलो स्थंडील विगेरेना कारणे रात्रे के परोडीये उपाश्रयनुं द्वार उघाडे, त्यां छिद्र शोधनारो चोर पेसी जाय, ते देखीने साधुने आवुं बोलवुं न कल्पे, के आ चोर घरमां पेसे छे, तथा चोर पेसतो नथी, ते प्रमाणे छुपी जाय छे के छुपातो नथी, अथवा कुदी आवे छे, अथवा नथी आवतो, ते बोले छे, अथवा नथी बोलतो, ते अमुक माणसे चोर्युं, अथवा बीजे चोर्युं, तेनुं चोर्युं, के बीजानुं चोर्युं, आ चोर छे अथवा तेने सहायता करवा पाछळ चालनारो छे, आ शस्त्र धारक छे, आ मारनारो घातक छे, एणे आ अहीं कर्युं छे, विगेरे न बोलवुं कारण के तेथी चोरने पीडा थाय, अथवा ते चोर साधु उपर द्वेष

करीने तेनेज मारशे, विगेरे दोषो छे, अने जो साधु तेप्रमाणे चोरी करनारा चोरने न बतावे तो ते घरवाळांने आ साधु नथी पण चोर छे एवी शंका थाय माटे आवा दोषो जाणीने साधुए गृहस्थने रहेवाना घरमां न उतरवुं. फरीथी वसतिना दोषो बतावे छे.

से भिक्खू वा से जं० तणपुंजेसु वा पलालपुंजेसु वा सअंडे जाव ससंताणए तहप्पगारे उ० नो ठाणं वा० ॥ ३ ॥ से भिक्खू वा० से जं० तणपुं पलाल० अप्पंडे जाव चेइज्जा ॥ (सू० ७६)

ते साधु घासनो ढगलो होय, पराळनो पुंज होय, पण त्यां इंडां पडेलां होय, तेवा मकानमां साधु न रहे, पण उपर बतावेला घास के पराळमां इंडां न होय तेवा मकानमां उतरवुं, (अल्प शब्दनो अर्थ अभाववाची छे.)

हवे वसतिना परित्यागना उद्देशानो अर्थाधिकार कहे छे—

से आगंतारेसु आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अभिक्खणं साहम्मिएहिं उवयमाणेहिं नो उवइज्जा ॥ (सू० ७७)

लोकोने उतरवानां मुसाफरखानां के बगीचानी अंदरनां घरो के मठो अथवा ज्यां पोताना सरखी समाचारीवाळा साधुओ वारंवार आवीने उतरता होय, तेवा स्थानमां मासकल्प विगेरे न करवो. (के बीजाने उतरतां संकोच न थाय)

हवे कालातिक्रांत वसतिना दोषो कहे छे—

से आगंतारेसु वा ४ जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवाइणित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति, अयमाउसो ! कालाइकंतकिरियावि भवति १ ॥ (सू० ७८)

जे साधु भगवंतो ते मुसफ्फरखाना विगेरेमां शीतोष्ण रुतुमां मासकल्प करीने पाछा चोमासुं ते मकानमां करीने फरीथी कारण विना रहे, तो (गुरु शिष्यने कहे छे) हे आयुष्मन् ! काल अतिक्रम दोष संभवे छे, तेज प्रमाणे स्त्री विगेरेनो प्रतिबंध अथवा स्नेहथी उद्गम विगेरे दोषोनो संभव थाय छे, माटे तेवुं स्थान साधुने न कल्पे. हवे उपस्थान दोषने बतावे छे—

से आगंतारेसु वा ४ जे भयंतारी उडु० वासा० कप्पं उवाइणावित्ता तं दुगुणा दु (ति) गुणेण वा अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो० अयमाउसो ! उवट्ठाणकि० २ ॥ (सू० ७९)

जे साधुओ मुसाफरखाना विगेरेमां शीयाळा उनाळामां मासकल्प करीने अथवा चोमासुं करीने अथवा बीजे एक मास रहीने बमणो त्रणगणो कल्पवडे न छोडीने अर्थात् बे त्रण मास सुधी ते मकानमां न वसवुं तेवो कल्प उलंघीने पाछा त्यांज वसे छे, माटे आवो उपाश्रय उपस्थान क्रिया दोषथी दुष्ट थाय छे, माटे तेवाउपाश्रयमां साधुने उतरवुं कल्पतुं नथी.

हवे अभिक्रांत वसति बताववा कहे छे—

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया सड्ढा भवंति, तंजहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं आयारगोयरे नो सुनिसंते भवइ, तं सद्दहमाणेहिं पत्तियमाणेहिं रोयमाणेहिं बहवे समण माहण अतिहिकिवणवणीमए समुद्दिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा—आएसणाणि वा आयतणाणि वा देवकुलाणि वा सहाओ वा पवाणि वा पणियगिहाणि वा पणियसालाओ वा जाणगिहाणि वा जाणसालाओ वा सुहाकम्मंताणि वा दब्भकम्मंताणि वा वद्धकंवा० वक्कयकं० इंगालकम्मं० कट्ठक० सुसाणक० सुण्णागारगिरिकंदरसंतिसेलोवट्ठाणकम्मंताणि वा भवणगिहाणि वा,

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा तेहिं उवयमाणेहिं उवयंति अयमाउसो ! अभिक्कंतकिरिया यावि भवइ ३ ॥ (सू० ८०)

(अहीं प्रज्ञापक विगेरेनी अपेक्षाए) पूर्व विगेरे दिशामां श्रावको अथवा प्रकृतिभद्रक अन्य गृहस्थो नोकरडी सुधी होय, तेओने साधुनो "आवो उपाश्रय कल्पे" एवी खबर न होय पण उपाश्रय आपवाथी स्वर्ग विगेरेनुं फळ प्राप्त थाय, तेवुं क्यांयथी जाणीने श्रद्धा करीने हृदयमां ते रुचवाथी घणा साधु विगेरेने उद्देशीने त्यां आराम विगेरेमां यानशाला विगेरे पोताना माटे करतां साधु विगेरेने जग्या आपवा माटे ते मकानो मोटां कराव्यां होय, ते मकानोनां नाम कहे छे, आदेशन (लुवारनी शाळा) आयतन (देवकुलनी जोडे बनावेल ओरडाओ) देवकुल (देवळ) सभा (चारवेदने भणवानी पाठशाळा) परब पुण्य (दुकानो) पुण्यशाळा (घंघशाळा) यान ग्रह (रथ विगेरे राखवानुं स्थान) यानशाळा (रथ विगेरे बनाववानुं स्थान) सुधाकर्म ते (ज्यां खडीनुं परिकर्म थाय) आ प्रमाणे दर्भ वर्ध्र वल्कज अंगार काष्ठ कर्म विगेरे छे, एटले जेमां घास चामडां झाडनी छाल के कोयला के लाकडांना कामनुं कारखानुं होय, मसाण होय, शून्य घर होय, शांतिकर्मनुं घर होय, पर्वत उपरनुं घर होय, सुधारेली पहाडनी गुफा होय, शैल उपस्थान (पाषाणनो मंडप) होय, आवां घरो चरक ब्राह्मणो विगेरेथी पूर्वे वपरायां होय, पछी खाली पडेलां होय, तो पछवाडे साधु तेमां उतरे, तो तेमां अल्प दोष (निर्दोष) होय, छे, आवुं गुरु शिष्यने कहे छे, (अर्थात् तेवा मकानमां उतराय छे.)

इह खलु पाईणं वा जाव रोयमाणेहिं बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणिमए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं

चेइयाइं भवंति, तं०–आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, जे भयंताणो तहप्प० आएसणाणि जाव गिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं उवयंति अयमाउसो ! अणभिक्कंतकिरिया यावि भवइ ॥ (सू० ८१)

उपरना सूत्र प्रमाणे पूर्व विगेरे दिशामां गृहस्थथी ते कर्म करी सुखीनां माणसोए साधुने मकान उतरवा आपवानुं विशेष पुण्य फळ जाणीने श्रमण ब्राह्मण अतिथि विगेरेने आश्रयी आदेशन घर विगेरे बनाव्यां होय, तेमां पूर्वे श्रमण ब्राह्मणो विगेरे न उतर्या होय, तेमां साधु उतरे, तो ते दोषवाळी जग्या छे, माटे ते उतरवा योग्य नथी.

हवे न उतरवा योग्य वसति कहे छे—

इह खलु पाईणं वा ४ जाव कम्मकरीओ वा, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ–जे इमे भवंति समणा भगवंतो जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, नो खलु एएसिं भयंताणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए, से जाणिमाणि अम्हं अप्पणो सट्ठाए चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जावगिहाणि वा, सव्वाणि ताणि समणाणं निसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सयट्ठाए चेइस्सामो, तं०—आएसणाणि वा जाव०, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म जे भयंतारो तहप्प० आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो ! वज्जकिरियावि भवति ५ ॥ (सू० ८२)

आ पूर्व विगेरे दिशामां गृहस्थ अथवा नोकरडी होय, अने तेओने पूर्वे एवुं कहेवामां आव्युं होय, के आ साधु भगवंतो पोते ब्रह्मचर्य पाळनार छे, तेओने साधु माटे बनावेलुं मकान उतरवाने कल्पतुं नथी, एटला माटे आपणे आपणा माटे बनावेलुं घर छे,

ते रहेवा आपी दइए, अने आपणे माटे नवुं बनावी लइशुं, आवी रीते गृहस्थे बनावेलुं मकान सूत्र ८० मां बतावेल विगतवाळुं होय, ते सुंदर के मध्यम होय, तो पण साधुओने रहेवा आपे, तो ते वर्ज्य क्रियावाळुं (त्याज्य मकान) होवाथी तेमां उतरवुं नहि.

हवे महावर्ज्या नामथी वसतिनुं वर्णन करे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइआ सड्ढा भवंति, तेसिं च णं आयारगोयरे जाव तं रोयमाणेहिं बहवे समणमाहण जाव वणीमगे पगणिय २ समुद्दिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तं०—आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव गिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं०, अयमाउसो! महावज्जकिरियावि भवइ ६ ॥ (सू० ८३)

आ बधुं सुगम छे, के श्रावके श्रमणमाहण वणीमग माटे मकान बंधाव्युं होय, तेमां जो साधुओ स्थान करे, तो महावर्ज्य नामनी वसति थाय छे, माटे आ विशुद्ध कोटी अकल्प्य छे, तेमां उतरवुं नहि, ६ ॥

हवे सावद्य अभिधान (नामनी) वसति कहे छे.

इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया जाव तं सद्दहमाणेहिं तं पत्तियमाणेहिं तं रोयमाणेहिं बहवे समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगे पगणिय २ समुद्दिस्स तत्थ २ आगाराइं चेइयाइं भवंति तं—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा जे भयंतारो तहप्पगाराणि आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं, अयमाउसो! सावज्जकिरियावि भवइ ७ ॥ (सू० ८४)

आ प्राये सुगम छे, फक्त विशेष आ छे के, पांच प्रकारना निर्ग्रंथो शाक्य तापस गेरीक अने आजीविकएवा श्रमणो माटे कल्पीने बनावेल वसति होय, तो ते सावद्य अभिधान वसति थाय, छे, आ अकल्पनीय छे, पण विशुद्ध कोटी छे, आमां स्थान करतां सावद्य क्रिया थाय छे. हवे महासावद्य वसतिनुं वर्णन करे छे.

इह खलु पाइंणं वा ४ जाव तं रोयमाणेहिं एगं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तं० आएसणाणि जाव गिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं जाव महया तसकायसमारंभेणं महया विरूवरूवेहिं पावकम्मकिच्चेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ सीसोदए वा परट्ठवियपुव्वे भवइ अगणिकाये वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तह० आएसणाणि वा० उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं दुपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! महासावज्जकिरिया यावि भवइ ८ ॥ (सू० ८५)

अहीं एक साधर्मिक (साधु) ने उद्देशीने कोइ गृहपति विगेरेए पृथ्वीकाय विगेरेनो संरंभ समारंभ आरंभ विगेरे कंइ पण महान आरंभ करीने जुदा जुदा पाप कृत्योवडे एटले छापरुं ढांकवुं, लींपाववुं, संथारा माटे बारणुं ढांकवा माटे, विगेरे प्रयोजनने उद्देशीने प्रथम काचुं पाणी नांखे, अथवा अग्नि प्रथम बाळे, विगेरेथी आरंभ करेला मकानमां स्थान विगेरे करतां बे पक्षनुं कर्म सेवन करे छे. ते आ प्रमाणे -आधाकर्मी वसतिना सेवनथी गृहस्थपणुं अने तेमां ममत्वना कारणे राग द्वेषपणुं छे, तेथी तथा इर्यापथ अने सांपरायिक इत्यादि दोषो छे. तेथी ते महासावद्य क्रिया अभिधान वसति छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हवे अल्प क्रियावाळी वसति कहे छे.

इह खलु पाईणं वा० रोयमाणेहिं अप्पणो सयट्ठाए तत्थ २ अगारीहिं जाव उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहप्प० आएसणाणि वा० उवागच्छंति इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! अप्पसावज्जकिरिया यावि भवइ ९ ॥ एवं खलु तस्स० (सू० ८६) ॥ २-१-१-२-२ ॥ शय्यैषणायां द्वितीयोद्देशकः ॥

प्रथम बताव्या प्रमाणे ते घरमां गृहस्थोए पोताना माटे ते घरमां कंइ पण सावद्य क्रिया करी होय, तेवा मकानमां पाछळथी साधुओ आवी उतरे तो ते एक पक्षनुं कर्म सेवन करे छे, आवा मकानमां उतरतां साधुओने अल्प (दोष विनानी) क्रिया छे, अर्थात् ते मकानमां उतरतां दोष नथी. आज साधुनुं सर्वस्व छे.

" कालइकंतु १ वठाण २ अभिकंता ३ चेव अणभिकंता ४ य । वज्जा य ५ महावज्जा ६ सावज्ज ७ मह ८ ऽप्प-किरिआ ९ य ॥ १ ॥ "

१ काल अतिक्रांत २ उपास्थान ३ अभिक्रांत ४ अनभिक्रांत ५ वर्ज्य ६ महावर्ज्य सावद्य ८ महासावद्य ९ अल्पक्रिया. एम नव प्रकारे नव सूत्रोमां वसति बतावी. तेमां अभिक्रांत अने अल्पक्रिया ए बे वसति योग्य छे, बाकीनी अयोग्य छे.

आ प्रमाणे बीजा अध्ययनो बीजो उद्देशो पूरो थयो.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रीजो उद्देशो,

बीजो कह्या पछी त्रीजो उद्देशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां अल्पक्रियावाळी शुद्ध वसति बतावी. अहीं पण प्रथम सूत्रथी तेथी विपरीत शय्या बतावे छे.—

से य नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे नो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथारदुवारपिहणओ पिंडवाएसणाओ, से य भिक्खू चरियारए ठाणरहे निसीहियारए सिज्जासंथारपिंडवाएसणारए, संति भिक्खूणो एवमक्खाइणो उज्जुया नियागपडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया, संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं निक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ परिट्ठवियपुव्वा भवइ. एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरेइ ?, हंता भवइ ॥ (सू० ८७)

अहिं कोइ वखत कोइ साधु वसति शोधवा माटे अथवा भिक्षा लेवा माटे गृहस्थने घरे जतां कोइ श्रद्धाळु श्रावक आ प्रमाणे कहे, के आ गाममां घणुं अन्न पाणी मळे छे, माटे अहियां आपे वसति याचीने रहेवुं योग्य छे,—

आ प्रमाणे कहेवाथी साधु कहे, के हे श्रावक !पिंड (अन्न पाणी) प्रासुक (निर्दोष) दुर्लभ नथी पण ते मळवा छतां ज्यां बेसीने गोचरी करीए ते आधाकर्मादि दोष रहित उपाश्रय मळवो दुर्लभ छे, तेम 'उं छ' एटले छादन विगेरे उत्तर गुणना दोषथी पण रहित होय (ते मळवो दुर्लभ छे) तेज बतावे छे—

'अहेसणिज्ज' एटले मूळ उत्तर गुणोमां दोष न लगाडे ते एषणीय उपाश्रय होय छे, तेवो मळवो दुर्लभ छे. ते मूळ उत्तर गुणो आ प्रमाणे छे.

पट्टी वंसो दो धारणाओ चत्तारि मूलवेलीओ। मूलगुणेणिं विसुद्धा एसा आहागडा वसही ॥ १ ॥

पीठनो वांस बे धारण चार मूळवेलीओ आवुं कांइ पण स्थान गृहस्थे पोताना माटे बनावेलुं होय, तो मूळ गुण विशुद्ध वसति जाणवी.

वंसगकडणोकंपण छायण लेवण दुवारभूमीओ परिकम्मविप्पमुक्का एसा मूलुत्तरगुणेसु ॥ २ ॥

वांसने कपाववा, ठोकठाक करवी, बारणानी भूमिने आच्छादन करवुं, लेपन करवुं, आ परिकर्मथी विप्रमुक्तमूळ उत्तर गुणो वडे विशुद्ध छे.

दूमिअधूमिअवासिअउज्जोवियबलिकडा अ वत्ता य। सित्ता सम्मट्ठावि अ विसोहिकोडीगया वसही ॥ ३ ॥

धोळेली, धुप करेली, सुगंधीवाळी बनावेली, उद्योत करेली, बलिपूजन करेली खुल्ली मुकेली, पाणीथी सिंचेली, संमृष्ट करेली, आ विशोधी कोटीमां गयेली वसति छे.

आ जग्याए प्राये उत्तर गुणोनो संभव होवाथी तेनेज बतावे छे, अने आ वसति आ कर्मना उपादान कर्तावडे शुद्ध थती नथी ते बतावे छे.—

दर्भ विगेरेथी छायेल होय, छाण विगेरेथी लींपेल होय, अपवर्त्तक ने आश्रयी संस्तारक कर्यो होय, तथा बारणुं नानुं मोटुं

कर्युं होय, तथा कमाडने आश्रयी ढांकवुं, उघाडवुं विगेरे छे. वळी— पिंडपात एषणाने आश्रयी दोषो कहे छे.

कोइ स्थानमां साधु रहेला होय तो तेमने ते घरनो मालिक शय्यातर पोताना घरमां आहार लेवा प्रार्थना करे, तेना घरमां आहार लेवो न कल्पे. तेथी ना पाडवाथी तेने द्वेष थाय, विगेरे कारणें उत्तर गुणो युक्त उपाश्रय मळवो दुर्लभ छे, माटे बने त्यां सुधी साधुए शुद्ध उपाश्रय जोइने उतरवुं तेथी कह्युं छे के,—

मूलुत्तरगुणसुद्धं थीपसुपंडगविवज्जियं वसहिं । सेवेज्ज सव्वकालं विवज्जए हुंति दोसा उ ॥ १ ॥

मूळ उत्तर गुणथी शुद्ध तथा स्त्री पशु नपुंसकथी वर्जित मकान सर्व काळ सेवे, अने दोषोने दूर करे.

मूळ उत्तर गुण शुद्ध मळवा छतां भणवा विगेरेनी सगवडता युक्त तथा खाली मळवो मुश्केल छे, ते कहे छे—तेमां भिक्षाचर्यामां रक्त, निरोधना असहिष्णुंपणाथी संक्रमणना स्वभाववाळा (योग्य विहार करनारा) तथा स्थानरत ते कायोत्सर्ग करनारा, निषीधिकारत ते स्वाध्याय करनारा, शय्याने सर्वांग वडे सुखथी सुवाय, ते संस्तारक २॥ हाथ प्रमाणवाळो, अथवा शयन ते शय्या छे, तेने माटे संस्थारक (संथारो) ते शय्या संस्तारक रत ते मंदवाड विगेरेना कारणे सूता होय, तथा गोचरी मळेथी ग्रास एषणारत छे, आ प्रमाणे केटलाक साधुओ यथास्थित वसतिना गुण दोषो बतावनारा थाय छे, तेओ ऋजु छे, तथा नियागते संयम के मोक्ष छे, तेने पामेला छे, तथा तेओ माया (कपट) रहित होवाथी उत्तम गुणवाळा साधुओ छे. आ प्रमाणे गृहस्थोने वसतिना गुण तथा दोषो बतावीने साधुओ जाय, त्यारपछी निर्दोष वसति साधुओने आपवा योग्य न होय, तो श्रावको साधु माटे वसति बनावे, अथवा पूर्वे करेली अपूर्ण होय तो छादन विगेरेथी रहेवा योग्य बनावे, पछी उपदेश आपनारा अथवा बीजा साधुओ

आवेथी केटलाक श्रावको छळ करे छे, अने कहे के (प्राभृतिकानी पेठे प्राभृतिक वसति होय तेनो अर्थ आ छे के, दानने माटे कल्पेली राखेल छे.) वसति तेवी वसति पूर्वे साधुओने बतावेली होय; के तमे ज्यारे आवो त्यारे अहिं उतरजो, ते उत्क्षिप्त पूर्वा वसति छे, तथा एम कहे के अमे पूर्वे आ मारे रहेवा माटे बनावी छे, ते निक्षिप्त प्रपूर्वा छे; तथा "परिभाइ यपुव्व" ते अमे आ वसति पहेलांथी अमारा भत्रिजा विगेरे माटे कल्पेली छे, तथा बीजा गृहस्थोए पण आ रहेवानुं मकान वापर्युं छे, तथा ते गृहस्थ कहे छे के अमे एने प्रथमथी पाडी नांखवा राखेल छे, जो तमारे आ उपयोगमां न आवे तो अमे एने पाडी नाखीशुं, आ प्रमाणे भक्तिथी कोइ गृहस्थ छलना करे तो साधुए ठगवानुं नहि; पण दोषोने दूर करवा प्रयत्न करवो.

प्र०—आ प्रमाणे छलनाना संभवमां पण यथावस्थित वसतिना गुण दोषो गृहस्थे पूछतां साधु कहे तो शुं सम्यकज प्रकट करशे? अथवा एवुं प्रकट करतो साधु शुं सम्यक् प्रकट कहेनारो थशे? आचार्य कहे हा! (हंत! अव्यय शिष्यना आमंत्रणमां छे) ते सम्यकज कहेनारो थाय छे. हवे तेवा कार्यना वशथी चरक कार्पटिक विगेरे साथे उतरवुं पडे तो तेनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा खुड्डियाओ खुड्डुदुवारियाओ निययाओ संनिरुद्धाओ भवन्ति, तहप्पगा० उवस्सए राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा प० पुरा हत्थेण वा पच्छा पाएण वा तओ संजयामेव निक्खमिज्ज वा २, केवली बूया आयाणमेयं, जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा मत्तए दंडए वा लट्ठिया वा भिसिया वा नालिया वा चेलं वा चिलिमिली वा चम्मए वा चम्मकोसए वा चम्मछेयणए वा दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले भिक्खू य राओ वा वियाले वा निक्खममाणे वा २ पयलिज्ज वा २; से तत्थ पयलमाणे वा० हत्थं वा० लूसिज्ज वा ४ जाव

ववरोविज्ज वा, अह भिक्खूणं पुव्वोवइट्ठं जं तह० उवस्सए पुरा हत्थेण निक्ख० वा पच्छा पाएणं तओ संजयामेव नि० पविसिज्ज वा

ते भिक्षु आवो उपाश्रय जाणे, के नानी वसति छे, अथवा दरवाजा नाना छे, अथवा ते नीची छे, अथवा गृहस्थथी भराइ गइ छे, अने ते वसतिमां–साधुने उतरवानी जग्यामां शय्यातरे बीजा केटलाक दिवस रहेनार चरक विगेरेना साधुने उतरवा आपेल छे, अथवा साधुना आव्या पहेलां ते जग्यामां चरक विगेरे उतरेला छे, अने पाछळथी साधुने तेमां जग्या आपेल छे, तो रात्रे के परोडीए कारण वशे बहार जतां आवतां जेम चरक विगेरेना साधुना उपकरणने उपघात न थाय, अथवा तेना शरीरना अवयवनो उपघात न थाय, तेम प्रथम हाथ फेरववताजवुं अने यतनाथी जवा आववानी क्रिया करवी, जो तेम न करतां अयतनाथी चाले तो केवळी तेमां कर्म आदन बतावे छे. एटले त्यां श्रमण ब्राह्मणोना छत्रने मात्राने दंडने लाकडीने भिसिका नालिका वस्त्रने चिलिमिली (यमनिका—पडदो) ने चामडाने चर्मकोश पगमां तलीये पहेरवानी चामडानी खल्लक विगेरे चर्मछेदनक दुर्बद्ध दुर्निक्षिप्त वस्तु पडी होय, त्यां अनिष्कंप होय ते चलाचल थतां दोष लागे तेथी पोते न अथडाय तेम साधुए चालवुं, नहि तो तेना उपकरणने नुकशान थाय अथवा तेना हाथ पगने नुकशान थाय, माटे संभाळीने जवुं आववुं,

से आगंतारेसु वा अणुवीय उवस्सयं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समहिट्ठाए ते उवस्सयं अणुन्नविज्जा—कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिन्नायं वसिस्सामो जाव आउसंतो! जाव आउसंतस्स उवस्सए जाव साहम्मियाइं ततो उवस्सयं गिण्हिस्सामो तेण परं विहरिस्सामो ॥ (सू० ८९) हवे वसतिनी याचनानी विधि कहे छे.

ते भिक्षु पूर्वे बतावेला आगंतार विगेरे स्वरुपवाळा रहेवा योग्य मकानमां प्रवेश करीने अने विचार करीने आ उपाश्रय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवो छे? एनो मालिक कोण छे? विगेरे पूछीने उपाश्रयने याचे.

हवे जे घरनो स्वामी छे, अथवा घरना मालिके तेनी रक्षा माटे जेने सोंप्युं होय, तेनी पासे उपाश्रयनी याचना करे, ते आ प्रमाणे हे आयुष्मन्! तारी इच्छाथी तुं आज्ञा आपे तो अमुक दिवस आटला भागमां अमे रहीशुं. त्यारे ते वखते गृहस्थ कहे, के तमने केटला दिवस जरुर पडशे? त्यारे साधुए कहेवुं, के शीयाळे, उनाळे खास कारण विना एक मास अने चोमासुं होय तो चार मासनी जरुर छे, एम याचना करवी, त्यारे कदाच गृहस्थ कहे, के मारे तेटलो काळ अहीं रहेवुं नथी, अथवा तेटलो काळ वसति अपाय तेम नथी, त्यारे साधुए ते मकान लेवानुं कांइ खास कारण होय तो कहेवुं के ज्यां सुधी आप रहो त्यां सुधी अथवा आपना कबजामां होय त्यां सुधी अमे एमां रहीशुं, त्यार पछी अमे विहार करी जइशुं, पण गृहस्थ पूछे, के साधुनी संख्या केटली छे? तो कहेवुं, के अमारा आचार्य समुद्र जेवा छे, तेथी परिमाण नक्की नथी, कारण के कार्यना अर्थीओ केटलाक आवे, अने भणवा विगेरेनुं कृत्य थइ रहेतां केटलाक जाय छे, तेथी जेटला हाजर हशे, तेटला माटे याचना छे, अर्थात् साधुए घरधणी साथे साधुनुं परिमाण नक्की न करवुं, वळी—

से भिक्खू वा० जस्सुवस्सए संवसिज्जा तस्स पुव्वामेव नामगुत्तं जाणिज्जा, तओ पच्छा तस्स गिहे निमंतेमाणस्स वा अनिमंतेमाणस्स वा असणं वा ४ अफासुयं जाव नो पडिगाहेज्जा ॥ (सू० ९०)

ते साधु जेना घरमां निवास करे तेनुं प्रथम नाम गोत्र जाणी ले, त्यार पछी तेना घरमां निमंत्रणा करे, अथवा न करे तो पण चारे प्रकारनो अप्रासुक आहार ग्रहण न करे (नाम—गोत्र पूछवानुं कारण ए छे के आवेला साधु परोणाओ सुखेथी घर पूछता आवी शके.)

For Private and Personal Use Only

से भिक्खू वा० से जं० ससागारियं सागगियं सउदयं नो पन्नस्स निक्खमणपवेसाए जावऽणुचिंताए तहप्पगारे उवस्सए नो ठा०

ते भिक्षु एवुं जाणे के आ उपाश्रयमां गृहस्थ रहे छे. अथवा अग्नि बळे छे, अथवा पाणी (सचित) रहे छे, त्यां आगळ प्रज्ञसाधुए काउसग्ग करवा के ध्यान करवा के भणवा रहेवुं नहि. (त्यां निवास न करवो)

से भिक्खू वा० से जं० गाहावइकुलस्स मज्झमज्झेणं गंतुं पंथए पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव चिन्ताए तह उ० नो ठा० ॥ (सू० ९२

जे उपाश्रयमां उतर्या होय त्यां गृहस्थना घर मध्येनो मुख्य रस्तो होय त्यां बहु अपायनो संभव होवाथी तेवी जग्याए न रहेवुं

से भिक्खू वा० से जं०, इह खलु गाहावई वा० कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति वा नो पन्नस्स०, सेवं नच्चा तहप्पगारे उ० नो ठा० ॥ (सू० ९३)

ते बुद्धिमान् साधु एम जाणे, के आ जग्यामां गृहस्थ अथव नेना घरमां काइपण नोकर विगेरे परस्पर लडे छे. एक बीजाने उपद्रव करे छे, तेवुं जाणीने ते घरमां साधुए निवास न करवो, कारण के त्यां रहेतां गणवामां के समाधिमां विघ्न थाय छे.

से भिक्खू वा० से जं० पुण० इह खलु गाहावई वा कम्मकरीओ वा अन्नमन्नस्स गायं तिल्लेण वा नव० घ० वसाए वा अब्भंगेति वा मक्खेंति वा नो पण्णस्स जाव तहप्प० उव० नो ठा० (सू० ९४)

ते साधु एम जाणे के आ घरमां गृहस्थ अथवा नोकरडी विगेरे कोइपण परस्पर एक बीजाना शरीरने तेस, माखण, घी के चरबीथी चोळे छे, अथवा कल्क विगेरेथी उद्वर्त्तन करे छे, त्यां प्रज्ञसाधुने निवास करवो न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं पुण०—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ अन्नमन्नस्स गायं सिणाणेण वा क० लु० चु०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प० आघंसंति वा पघंसंति वा उव्वलंति वा उव्वट्टिंति वा नो पन्नस्स० ॥ (सू० ९५)

ते भिक्षु एम जाणे के आ घरमां गृहस्थो के घरनां माणसो परस्पर स्नान करे छे, अथवा शरीरे सुगंधी पदार्थो तेल चूर्ण विगेरे एकवार घसे छे, अथवा वारंवार घसे छे, तेवा मकानमां बुद्धिमान् साधुए न उतरवुं.

से भिक्खू० से जं पुण उवस्सयं जाणिज्जा, इह खलु गाहावती वा जाव कम्मकरी वा अण्णमण्णस्स गायं सिओदग० उसिणो० उच्छो० पहोयंति सिंचंति सिणावंति वा नो पन्नस्स जाव नो ठाणं० ॥ (सू० ९६)

ते भिक्षुने एम मालूम पडे के आ उपाश्रयमां गृहस्थना घरनां माणसो ठंडा पाणीथी के उना पाणीथी परस्पर छांटे छे, धुए छे, सिंचे छे, स्नान करावे छे, तेवा स्थानमां बुद्धिमान् साधुने उतरवुं न कल्पे.

से भिक्खू वा० से जं० इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा निगिणा ठिया निगिणा उल्लीणा मेहुणधम्मं विन्नविंति रहस्सियं वा मंतं मंतंति नो पन्नस्स जाव नो ठाणं वा ३ चेइज्जा ॥ (सू० ९७

जे घरमां स्त्रीओ कपडां काढीने बेमर्याद पणे बेसे, अथवा संसारसंग संबंधी कंइ पण छानी वात एक बीजाने रात्रि संबंधी कहे अथवा कांइपण खानगी वात अकार्य संबंधी चिंतवे, तेवा स्थानमां साधुए निवास न करवो, कारण के त्यां रहेवाथी स्वाध्यायमां विघ्न थाय, अने चित्तमां कुवासना विगेरेना दोषो थाय छे. वळी—

से भिक्खू वा से जं पुण उ० आइन्नसंलिक्खं नो पन्नस्स० ॥ (सू० ९८)

ते भिक्षु एम जाणे के आ घरमां उत्तम शृंगाररसनां चित्रो छे, त्यां प्रज्ञसाधुए न उतरवुं, कारण के त्यां उतरवाथी भींतोनां

For Private and Personal Use Only

चित्रो जोवाथी भणवामां विघ्न थाय, तथा तेवां स्त्री संबंधी चित्रो जोवाथी पूर्वे भोगवेला संसार भोगो याद आवे, तथा न भोगवेला नवा साधुने कौतुक विगेरेनो संभव थाय छे. हवे फलहक विगेरे संस्तारक संबंधी कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा संथारगं एसित्तए, से जं० संथारगं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं, तहप्पगारं संथारं लाभे संते नो पडि० १ ॥ से भिक्खू वा से जं० अप्पंडं जाव संताणगरुय तहप्पगारं नो प० २ ॥ से भिक्खू वा० अप्पंडं लहुयं अपाडिहारियं तह० नोप० ३ ॥ से भिक्खू वा० अप्पंडं जाव अप्पसंताणगं लहुअं पाडिहारियं नो अहाबद्धं तहप्पगारं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ४ ॥ से भिक्खू वा २ से जं पुण संथारगं जाणिज्जा अप्पंडं जाव संताणगं लहुअं पाडिहारिअं अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारगं लाभे संते पडिगाहिज्जा ५ ॥ (सू० ९९)

ते साधुने सुवा माटे पाटीउं जोइए ते संबंधी आ सूत्रमां पांचभांगा बताव्या छे.

(१) जो ते पाटीयामां घुण विगेरेना किडानां इंडा जाणवामां आवे, अर्थात् ते सडेलुं होय, काणां पडेलां होय, काणा पडेलां होय तेमां 'जीवात' ना कारणे संयम विराधनाथी ते न कल्पे, (२) जो ते पाटीयुं घणुं भारे होय तो वजनना लीधे उंचुं नीचुं करतां पोतानी आत्मविराधना थाय तेथी ते पण न कल्पे (३) ते पाटीयाने प्रतिहार (गृहस्थ पाछुं राखवा तैयार) न होय तो लेवुं-मुकवुं नकल्पे कारणके परठवतां दोष लागे, (४) सांधा बरोबर न जोड्या होय तो तेना सांधा नीकळी जवाथी पडी जवाय के अंगने नुकशान थाय. आ चारे भांगावाळुं पाटीउं दोषित होवाथी बुद्धिमान् साधुए लेवुं नहिं, पण पांचमां भांगामां बतावेल तथा काणा विनानुं घणुं भारे नहि, पाछुं राखवा हा पाडे, तथा पाटीयांना के लाकडाना टुकडा जडेला होय, सांधा मजबुत कर्या होय तेवुं दोष

विनानुं पाटीयुं मळे तो साधुए लेवुं. हवे संथाराने उद्देशीने अभिग्रहोनुं विशेष कहे छे

इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम—अह भिक्खू जाणिज्जा इमाइं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पढिमा—से भिक्खू वा २ उद्दिसिय २ संथारगं जाइज्जा, तंजहा—इक्कडं वा कढिणं वा जंतुयं वा परगं वा मोरगं वा तणगं वा सोरगं वा कुसं वा कुच्चगं वा पिप्पलगं वा पलालगं वा, से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोति वा भ० दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं संथारगं? तह० संथारगं सयं वा णं जाइज्जा परो वा देज्जा फासुयं एसणिज्जं जाव पडि० पढमा पडिमा सू० १००

पूर्वे बतावेला घरोना दोषो तथा संथाराना दोषो दूर करीने तथा हवे पछीना पण संथाराना दोषो टाळीने संथारो लेवो. ते कहे छे ते भिक्षु एम जाणे, के आचार अभिग्रहनी प्रतिमाओ वडे संथारो शोधवानो छे, बतावे.

(१) उद्दिष्ट २ प्रेक्ष्य ३ तेना घरनोज ४ यथासंस्तृत छे. तेमां उद्दिष्टमां फलहक विगेरेमांथी कोइ पण एक लइश, पण बीजो नहि. आ प्रथम प्रतिमा छे,

(२) जेवी मनमां पूर्वे धारी छे, तेवी आंखे देखीश तोज लइश पण बीजी नहि.

(३) ते पण ते शय्यातरना घरमां तैयार हशे तोज लइश; पण बीजेथी लावीने सुइश नहि,

(४) ते पण संस्तारक फलहक विगेरे जेवो हशे तेवोज वापरीश. आ चार प्रतिमाओमां गच्छमांथी निकळेला जिन कल्पी विगेरेने प्रथमनी बे कल्पती नथी, पाछली बेमांथी कोइपण कल्पे छे, पण स्थविर कल्पीने चारे कल्पे छे, ते सूत्र वडे बतावे छे, तेमांनी पहेलीने उद्देशी उद्देशीने इक्कड विगेरे कोइपण लइश, तेने ते मल्या पछीथी बीजुं मळतुं होय तो पण ले नहि, इक्कड तथा

नीचलां पाथरणां घणी शरदी (भीनाश) वाळां देशमां साधु साध्वीओने पाथरवानी आज्ञा छे. ते इक्कड, कढिण (सादडी) जंतुक ने एक जातना घासनुं पाथरणुं छे, परक जेनावडे फुलो गुंथाय तेनुं बनावेलुं अथवा मोरनां पीछां गुंथीने बनावेल, तथा घासनुं, तथा शरना सांठानुं, दर्भना घासनुं, कूचडाना रेसानुं, पीपळाना पाननुं, तथा पराळना घासनुं होय, तेवुं कोइ पण पाथरणुं याचे, तेमांनुं कोइ पण पाथरणुं आपे. तो ते लेइने वापरे.

अहावरा दुच्चा पडिमा—से भिक्खू वा० पेहाए संथारगं जाइज्जा, तंजहा—गाहावइं वा कम्मकरिं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउ०! भइ०! दाहिसि मे? जाव पडिगाहिज्जा, दुच्चा पडिमा २ ॥ अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा० जस्सुवस्सए संवसिज्जा जे तत्थ अहासमन्नागए, तंजहा—इक्कडे इ वा जाव पलाले इ वा तस्स लाभे संवसिज्जा तस्सालाभे उक्कुडुए वा नेसज्जिए वा विहरिज्जा तच्चा पडिमा ॥ ३ (सू० १०१)

प्रथमनी प्रतिमा करतां आ बीजीमां आटलुं विशेष छे, के आ संस्तारक नजरे देखे, तोज मागे, ते गृहस्थ स्वयं आपे, अथवा साधु याचना करे, अने आपे तो लइने वापरे.

त्रीजी प्रतिमा—जेने त्यां उतर्यो होय, तेना घरमांज तेवुं कंइ आसन मळे तो लेइने वापरे, पण जो न मळे तो ते गच्छमां रहेल अथवा जिनकल्पी विगेरे होय ते उत्कटुक आसने बेसीने अथवा पद्मासन (पलांठी वारीने) विगेरेथी रात्री पूरी करे

अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा अहासंथडमेव संथारगं जाइज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव, तस्स लाभे संते संवसिज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा २ विहरिज्जा, चउत्था पडिमा ४ ॥ (सू० १०२)

आ प्रतिमा धारी साधु ज्यां उतर्यो होय, त्यां पत्थरनी शिला अथवा लाकडानुं सुवा योग्य पाटीउं विगेरे मळे अने गृहस्थ पासे याचतां मळे तो वापरवुं, नहि तो उत्कटुक अथवा पलांठी वारीने रात पूरी करवी.

इच्चेया णं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अन्नोऽन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥ (सू० १०३)

आ चारे प्रतिमाओमांनी कोइ पण प्रतिमाने स्वीकारनारो साधु होय ते बीजी प्रतिमा स्वीकारनारने निंदे नहि, कारण के ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञाने अवलंबीने समाधिथी रहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए, से जं पुण संथारगं जाणिज्जा सअंडं जाव ससंताणयं तहप्प० संथारगं नो पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १०४) हवे संथारो पाछो आपवानी विधि कहे छे.

भिक्षु पाछो आपवानो संथारो ज्यारे पाछो आपवा चाहे त्यारे तेमां देखे के गरोळी विगेरेनां इंडांथी व्याप्त होय अने पडिलेहण करवा योग्य न होय तो ते पाछुं आपे नहिं.

से भिक्खू० अभिकंखिज्जा सं० से जं० अप्पंडं० तहप्पगारं० संथारगं पडिलेहिय २ प० २ आयाविय २ विहुणिय २ तओ संजयामेव पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १०५)

पछी ते अमुक वखत पछी जाणे के ते संस्थारमांनुं इंडुं जीव रहित थयुं छे तेवा संथारानी प्रतिलेखना करीने पुंजीने तडके तपावीने सेज साज जयणाथी झाटकीने गृहस्थने पाछो आपे. हवे वसतिमां वसवानी विधि कहे छे,

से भिक्खू वा० समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव पन्नस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहिज्जा,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए, उच्चारपासवणभूमीए, से भिक्खू वा० राओ वा वियाले वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाणे वा २ हत्थं वा पायं वा जाव लूसेज्ज व पाणाणि वा ४ ववरोविज्जा, अह भिक्खू णं पु० जं पुव्वामेव पन्नस्स उ० भूमिं पडिलेहिज्जा ॥ (सू० १०६)

ते साधु—साध्वीए एक जग्याए रहेतां के विहार करतां प्रथमथी स्थंडिल मात्रानी जग्या जोइ लेवी, जो दिवस छतां जोइ न राखे तो केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के ते भिक्षु के साध्वी रात्रे के विकाले तेवा स्थानमां स्थंडिल मात्र परठवतां पग खसी जतां तेना हाथ पग भांगे, अथवा इंद्रियोने नुकशान थाय अथवा अन्य प्राणीना प्राण पण ले, एटला माटे साधु—साध्वीए प्रथमथी ठल्ला मात्रानी जग्या दिवस छतां जोइ लेवी.

से भिक्खू वा २ अभिकंखिज्जा सिज्जासंथारगभूमिं पडिलेहित्तए नन्नत्थ आयरिएण वा उ० जाव गणावच्छेएण वा बालेण वा बुड्ढेण वा सेहेण वा गिलाणेण वा आएसेण वा अंतेण वा मज्झेण वा समेण वा विसमेण वा पवाएण वा निवाणए वा, तओ संजयामेव पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तओ संजयामेव बहुफासुयं सिज्जासंथारगं संथरिज्जा॥(सू० १०७)

ते साधुए प्रथमथी आचार्य उपाध्याय विगेरेथी गणावच्छेदक सुधीना अथवा बाळ वृद्ध नवा शिष्य, मांदा अथवा परोणानी जग्या छोडी दइने छेडेनी जग्या अथवा मध्यमां अथवा सम के विषम (खडबचडी) जग्या होय, पवन आवे न आवे, तो पण तेमां संतोष राखी पडिलेहणा प्रमार्जन करीने संथारो पाथरवो. हवे शयननी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० बहु संथरित्ता अभिकंखिज्जा बहुफासुए सिज्जासंथारए दुरुहित्तए॥ से भिक्खू० बहु० दुरूहमाणे पुव्वामेव

For Private and Personal Use Only

ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय २ तओ संजयामेव बहु० दुरूहित्ता तओ संजयामेव बहु० सइज्जा ॥ (सू० १०८)

ते साधु–साध्वीए बहु पासुक (निर्दोष) जग्यामां संथारो पाथरीने तेमांज पोते यतनाथी शयन करवुं पण ते साधु—साध्वी प्रथमथी ते शय्यामां सुवा पहेलां पगथी माथा सुधीनी जग्या पूंजीवी तथा पोतानुं आखुं शरीर तथा पग प्रमार्जीने बहु संभाळीने यतनाथी सुवुं. हवे सुतेलानी विधि कहे छे,

से भिक्खू वा० बहु० सयमाणे नो अन्नमन्नस्स हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा, से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहु० सइज्जा ॥ से भिक्खू वा उस्सासमाणे वा नीसासमाणे वा कासमाणे वा छीयमाणे वा जंभायमाणे वा उड्डोए वा वायनिसग्गं वा करेमाणे पुव्वामेव आसयं वा पोसियं वा पाणिणा परिपेहित्ता तओ संजियामेव ऊससिज्ज वा जाव वायनिसग्गं वा करेज्जा ॥ (सू० १०९)

ते साधु विगेरेए पोते संथारामां सुता एक बीजा साधुने हाथ पगथी के कायाथी अडकवुं नहिं. ते प्रमाने अडक्या विना सुवुं (आमां सूचव्युं के साधुए बंनेना हाथ न पहोंचे तेटले दूर संथारो करवो) तथा साधुए श्वासोश्वासलेतां, खांसी आवतां, छींक खातां, बगासुं आवतां, ओडकार आवतां अथवा वायु संचार थतां प्रथम पोताना हाथ वडे यतनाथी मोढुं के ते जग्याने सहेज ढांकीने करवुं (आ सूत्रमां मोढुं उघाडुं राखी बगासुं खातां उडतां जंतु घुसी जवाथी उलटी थाय, अथवा पोतानो खराब वास जोरथी नीकळतां बीजाने कलेश थाय, नी वली जग्या ढांकवानुं कारण जोरथी वा संचार थतां रोगादि कारणे कपडां खराब थतां अटके,)

हवे समान्यथी शय्याने आश्रयी कहे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भिक्खू वा० समा वेगया सिज्जा भविज्जा विसमा वेगया सि० पवाया वे० निवाया वे० ससरक्खा वे० अप्पससक्खा वे० सदंसमसगा वेगया अप्पदंसमसगा० सपरिसाडा वे० अपरिसाडा० सउवसग्गा वे० निरुवसग्गा वे० तहप्पगाराहिं सिज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहियतरागं विहारं विहरिज्जा नो किंचिवि गिलाइज्जा, एवं खलु० जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जएत्तिबेमि (सू० ११०) २-१-२-२ ॥

ते साधुने संथारा माटे कोइ वखते सरखी कोइ वखते खरबचडी कोइ वखते पवनवाळी कोइ वखते हवा विनानी कोइ वखते धूळवाळी कोइ वखते विना धूळनी डांस मच्छरवाळी के डांस मच्छर विनानी अथवा रहेवाने उचित अथवा अनुचित उपसर्गवाळी के विना भयनी एवी विचित्र जातिनी जग्या मळे तो पण तेमां समभाव धारण करीने रहेवुं, पण ग्लानि के दीनताभाव के अहंकार लाववो नहि. आज साधुनुं सर्वस्व छे, माटे तेमां जयणाथी सदाए वर्त्ते.

शय्या नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

ईर्या नामनुं त्रीजुं अध्ययन.

बीजुं अध्ययन कहीने त्रीजुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, प्रथम अध्ययनमां धर्म शरीरनुं पालन करवा पिंड बताव्यो, ते पिंड आ लोक परलोकना अपायना रक्षण माटे अवश्ये वसति (मकान)मां वापरवो, तेथी बीजा अध्ययनमां वसतिनुं स्वरूप

For Private and Personal Use Only

बताव्युं, हवे ते पिंड तथा वसतिने शोधवा माटे गमन करवुं, ते आ प्रमाणे करवुं, आ प्रमाणे न करवुं, ते अहीं बताववानुं छे, आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुगममां नाम निक्षेपण माटे निर्युक्तिकार कहे छे.

नामं १ ठवणाइरिया २ दव्वे ३ खित्ते ४ य काल ५ भावे ६ य। एसो खलु इरियाए निक्खेवो छव्विहो होइ ॥३०५॥

नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ अने भाव एम छ प्रकारे इर्यानो निक्षेपो छे, तेमां नाम स्थापना सुगम छोडीने द्रव्य इर्या बताववा माटे कहे छे.

दव्वइरियाओ तिविहा सचित्ताचित्तमीसगा चेव। खित्तंमि जंमि खित्ते काले कालो जहिं होइ ॥ ३०६ ॥

तेमां द्रव्य इर्या सचित्त अचित्त मिश्र एम त्रण भेदे छे, अर्थात् इर्या, इरण, गमन त्रणे एक अर्थमां छे, तेमां सचित्त एवो वायु अथवा पुरुष होय तेनुं गमन ते सचित्त इर्या जाणवी, एज प्रमाणे परमाणु आदि द्रव्यनुं गमन ते अचित्त गमन छे. तथा मिश्र द्रव्य इर्या ते रथादि (जेमां अचित्त रथ सचित्त बळध के माणस) नुं गमन जाणवुं, क्षेत्रइर्या ते जे क्षेत्रमां गमन कराय, अथवा इर्यानुं वर्णन कराय ते क्षेत्रइर्या, तेज प्रमाणे जे काळमां गमन थाय. अथवा इर्यानुं वर्णन थाय ते काळइर्या जाणवी.

हवे भाव इर्या बताववा कहे छे.

भावइरियाओ दुविहा चरणरिया चेव संजमरिया य। समणस्स कहं गमणं निद्दोसं होइ परिसुद्धं ॥ ३०७ ॥

भाव विषयनी इर्या बे प्रकारनी छे, चरण इर्या, अने संयम इर्या तेमां संयम इर्या १७ प्रकारनुं संयम अनुष्ठान छे, अथवा असंख्य संयम स्थानमां एक संयम स्थानथी बीजा संयम स्थानमां जतां संयम इर्या थाय छे, पण चरण इर्या तो "अभ्र वभ्र मभ्र

विगेरे दोषरहित गोचरी लेवानी छे, ते न मळे, तथा ते नगर विगेरेमां घणा श्रमण, ब्राह्मणो, कृपण, वणीमग विगेरे आवीने भरायेला छे, अने बीजा आववाना छे, तेथी घणा मागण भरावाथी आकीर्ण वृत्ति छे, एटले भिक्षा माटे अटन तथा स्वाध्याय ध्यान करवा बहा जतां आवतां ते घणा भिक्षुक माणसोना भरावाथी ते गाम विगेरे संकोचायेल छे, त्यां जैनसाधुने जवुं आववुं तथा धर्म चिंतवन विगेरे क्रिया उपद्रव रहित न थाय. जो आवी अगवडो होय, तो तेवा क्षेत्रमां चोमासुं न करे, पण जो उपर बतावेली अगवडो न होय एटले भणवानी अने स्थंडिलनी जग्या होय, उचित उपकरण मळतां होय, पिंड शुद्ध मळतो होय, अन्य भिक्षुको सामान्य प्रमाणमा होय, जतां आवतां घणो समय न लागतो होय, तो त्यां चोमासुं करवुं. हवे वर्षाकाळ पुरो थये क्यारे विहार न करवो ते कहे छे.

अह पुणेवं जाणिज्जा–चत्तारि मासा वासावासाणं वीइकंता हेमंताण य पंचदसरायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गे बहुपाणा जाव ससंताणगा नो जत्थ बहवे जाव उवागमिस्संति, सेवं नच्चा नो गामणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ अह पुणेवं जाणिज्जा चत्तारि मासा० कप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गे अप्पंडा जाव ससंताणगा बहवे जत्थ समण० उवागमिस्संति सेवं नच्चा तओ संजयामेव० दूइज्जिज्ज ॥ (सू० ११३)

हवे आ प्रमाणे साधुओ जाणे, के चोमासा संबंधी चारमास पूरा थाय छे, अर्थात् कार्तिकी चोमासुं पूरुं थयुं छे, त्यां जो उत्सर्गथी वृष्टि न होय, तो एक मेज बीजे स्थळे जइने पारणुं करवुं पण जो वृष्टि चालु होय तो हेमंत ऋतुना पांच-दस दीवस गये थके विहार करवो, तेमां पण जो बीजे गाम जतां मार्गमां नानां जंतुनां इंडां पड्यां होय, गारो होय, करोळीयाना जाळां बाझी

पढमे उवागमण निग्गमो य अद्धाण नावजयणा य। बिइए आरूढ छलणं जंघासंतार पुच्छा य ॥ ३११ ॥

पहेला उद्देशामां वर्षाकाळ विगेरेमां उपागमन ते स्थान लेवुं, तथा निर्गम ते शरत्काळ विगेरेमां विहार जेओ होय, तेवो अत्रे कहेवाय छे, अने यतनाथी मार्गमां चालवुं आ त्रणे वातो पहेला उद्देशामां छे, बीजा उद्देशामां नाव विगेरेमां चडनारनुं छलन (प्रक्षेपण) वर्णवशे, अने जघासंतार पाणीमां यतना राखवी, तथा जुदा जुदा प्रश्नमां साधुए शुं करवुं ते अहीं कहे छे,

तइयंमि अदायणया अप्पडिबंधो य होइ उवहिंमि । वज्जेयव्वं च सया संसारियरायगिहगमणं ॥ ३१२ ॥

त्रीजा उद्देशमां जो कोइ पाणी वगेरे संबंधी पूछे, ते जाणतो होय छतां न जाणवापणुं बताववुं ते अधिकार छे, तथा उपाधिमां अप्रतिबंधपणुं राखवुं, ते कदाच चोराइ जाय तो पण स्वजन पासे अथवा राजग्रहमां फरीयाद करवा न जवुं, हवे सूत्रानुगममां अस्खलित विगेरे गुणोवाळुं सूत्र उच्चारवुं ते आ प्रमाणे छे.

अब्भुवगए खलु वासवासे अभिपवुट्ठे बहवे पणा अभिसंभूया बहवे बीया अहुणाभिन्ना अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया जाव ससंताणगा अणभिक्कंता पंथा नो विन्नाया मग्गा सेवं नच्चा नो गामणुंगामं दूइज्जिज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवलिइज्जा ॥ (सू० १११)

मुख्यत्वे वर्षारुतु आवे छते अने वरसाद वरसे छते साधुए शुं करवुं, ते कहे छे. अहीं वर्षाकाळ अने वृष्टि आश्रयी चार भांगा थाय छे, तेमां साधुओने आज समाचारी छे. एटले निर्व्याघात ते अषाढ चोमासुं आव्या पहेलांज घास, फलक, डगल, भस्म मात्रकादिनो परिग्रह करवो, अर्थात् चोमासुं बेसतां पहेलां पण वधारे वरसाद पडतां घणां नाना प्राणीओ इंद्रगोपक बीयावक गर्द-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भक विगेरे (संभूर्छिम जंतुओ) उत्पन्न थाय छे, तथा घणा नवा घासना अंकुरा प्रकट थाय छे, तेथी तेवे मार्गे जतां ते प्राणीओ तथा घासना अंकुराथी ते करोळीयाना समूह सुधी मार्गमां पथरायेला होय, तेथी रस्तो शोधवो मुश्केल पडे. तेथी ते जीवोना रक्षण माटे एक गामथी बीजे गाम न जाय, तेथी संयत (साधु) पोतेज समय जोइने अवसर आवतां चोमासुं करी ले. (आने माटे कल्पसूत्रमां खुलासो करे छे के अषाड चोमासा पहेलां वरसाद आवी जाय तो एक मास प्रथमथी पण चोमासुं करे, पण असाडमां तो अवश्ये स्थिरता करवी) हवे अपवाद मार्ग कहे छे.

से भिक्खू वा० सेज्जं गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा जाव राय० नो महई विहारभूमी नो महई वियारभूमी नो सुलभे पीढफलगसिज्जासंथारगे नो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे जत्थ बहवे समण० वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य अच्चाइन्ना वित्ती नो पन्नस्स निक्खमणे जाव चिंताए, सेवं नच्चा तहप्पगारं गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा नो वासावासं उवल्लिइज्जा ॥ भि० से जं गामं वा जाव राय० इमंसि खलु गामंसि वा जाव महई विहार-भूमी महई वियार० सुलभे जत्थ पीढ ४ सुलभे फा० नो जत्थ बहवे समण० उवागमिस्संति वा अप्पाइन्ना वित्ती जाव रायहाणिं वा तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिज्जा ॥ (सू० ११२)

ते भिक्षु तेवी राज धानी विगेरे कोइपण स्थानमां आव्या पछी एम जाणे के विहार (स्वाध्याय) भूमी तथा विचार (स्थंडिल) भूमि उचित मळे तेवी नथी, तथा साधुने योग्य पीठ फलक शया संथारो विगेरे चोमासामां खास वापरवा योग्य उपकरणो के वस्तुओ मळवी दुर्लभ छे, तथा प्रासुक गोचरी मळवी दुर्लभ छे, तथा एषणीय आहार न मळे, तेज कहे छे–एटले साधुने उद्गम

For Private and Personal Use Only

चर" धातुनो गति अर्थ छे, चरतिनो भाव ल्युट रुप चरण तेज रुपे इर्या ते चरण इर्या छे. अर्थात् चरणनो अर्थ गति अथवा गमन छे. अने ते श्रमणनुं चरण कया प्रकारे भावरुप (निर्दोष) गमन थाय ? ते कहे छे.

आलंबणे य काले मग्गे जयणाइ चेव परिसुद्धं । भंगेहिं सोलसविहं जं परिसुद्धं पसत्थं तु ॥ ३०८ ॥

प्रवचन संघ गच्छ आचार्य विगेरेना माटे प्रयोजन आवतां साधु गमन करे, ते आलंबन छे, तथा साधुने विहरण योग्य अवसर छे, ते काळ छे, तथा जनो (माणसो) ए पगवडे खुंदेला मार्गे यतना ते युगमात्र दृष्टि राखवी तेज आलंबन काळमार्ग यतनानां पदोवडे एकेक पद व्यभिचारथी जे भंगो थाय ते प्रमाणे गणतां १६ भांगा थाय, तेमां जे परिशुद्ध होय तेज प्रशस्त छे, अने हवे ते बतावे छे.

चउकारणपरिसुद्धं अहवावि (हु) होज्ज कारणज्जाए । आलंबणजयणाए काले मग्गे य जइयव्वं ॥ ३०९ ॥

चार कारणोए साधुनुं गमन शुद्ध थाय छे, आलंबन वडे दिवसे मार्गवडे यतनाथी जाय छे, अथवा अकालमां पण ग्लान विगेरेना आलंबने यतनाथी जतां शुद्ध गमन होय छे, अने आवे मार्गे साधुए यत्न करवो, नामनिष्पन्न निक्षेपो कह्यो, हवे उद्देश अर्थाधिकारने आश्रयी कहे छे.

सव्वेवि ईरियविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे वुच्छामि जहक्कमं किंचि ॥ ३१० ॥

सर्वे एटले आ त्रणे पण जो के इर्या विशुद्धकारक छे, तो पण त्रणे उद्देशामां कांइक विशेष छे, ते दरेकने यथाक्रमे किंचित् कहीशुं हवे प्रतिज्ञा प्रमाणे कहे छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गयेलां होय, अने ब्राह्मण श्रमण विगेरे मागण न आवेला होय, अथवा थोडा वखतमां आववाना न होय तो मागसर शुद १५ सुधी त्यां रहेवुं. त्यारपछी गमे तेम होय तोपण त्यां रहेवुं नहि, पण जो वृष्टि न होय, कादव न होय, मार्ग इंडां विनानो होय, श्रमण ब्राह्मण आव्या होय, आववाना होय, तो कार्तिकी पुर्णिमा पछी तुर्त विहार करवो. हवे मार्गनी यतना कहे छे—

से भिक्खू वा० गामणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा साहट्टु पायं रीइज्जावितिरिच्छं वा कट्टु पायं रीइज्जा, सइ परक्कमे संजयामेव परिक्कमिज्जा नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजियामेव गामणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा बी० हरि० उदए वा मट्टिआ वा अविद्धत्थे सइ परक्कमे जाव नो उज्जुयं गच्छिज्जा, तओ संजया० गामा० दूइज्जिज्जा ॥ (सू० ११४)

ते भिक्षु बीजे गाम जतां मोढा आगळ युगमात्र (चार हाथ प्रमाण) गाडाना उद्धि (घसारा) ना आकारे भूभाग (जमीन) देखतो चाले, त्यां मार्गमां त्रस जीवो जे पतंग विगेरे छे, ते पगने अडकीने नीकळे, अथवा पगना तळीयां नीचे अडकीने नीकळे तो ते जीवोनी रक्षा खातर शरीरमां शक्ति होय त्यां सुधी बीजे मार्गे जवुं, पण बीजो रस्तो के जवानी शक्ति न होय, तो ते रस्ते जतां ज्यारे तेवां जंतुओ पग पासे आवे त्यारे ते त्यां पग संभाळीने मुकवो के ते चगदाइ न जाय, एटले ज्यारे सामे आवे त्यारे तेने पग पग साथे अथडावा देवां नहीं, पण जो पग नीचे दबाइ जाय तेम होयतो नीचे देखीने ते जग्याए पग न मुकवो, अथवा पगनी एडी मुकीने चालवुं, अथवा पग वांको करीने चालवुं, आ प्रमाणे एक गामथी बीजे गाम जीव जंतुनी रक्षा करतां जवुं.

वळी साधुने एक गामथी बीजे गाम जतां मार्गमां नाना जीव जंतु बीज हरियाणी (लीलुं घास) पाणी, माटी अथवा रस्तो

For Private and Personal Use Only

न पड्यो होय, तो तेवा सीधा मार्गे न जवुं, पण जीव-जंतु विनाना तथा कादव माटी पाणी विनाना मार्गे चक्रावो खाइने ज्यांथी लोको जतां होय तेवा रस्ते साधुए जवुं, पण बीजो रस्तो न होय, अथवा जवानी शक्ति न होय, तो ते मार्गे यतनाथी चालवुं. वळी

से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से विरूवरूवाणि पच्चंतिगाणि दसुगाययाणि मिलक्खूणि अणायरियाणि दुसन्नप्पाणि दुप्पन्नवणिज्जाणि अकालालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि सइ लाढे विहाराए संथरमाणेहिं जाणवएहिं नो विहारवडियाए पवज्जिज्जा गमणाए, केवली बूया आयाणमेयं, तेणं बाला अयं तेणे अयं उवचरए अयं ततो आगएत्तिकट्टु तं भिक्खुं अक्कोसिज्ज वा जाव उद्दविज्ज वा वत्थं प० कं० पाय० अच्छिंदिज्ज वा भिंदिज्ज अवहरिज्ज वा परिट्ठविज्ज वा, अह भिक्खूणं पु० जं तहप्पगाराइं विरू० पच्चंतियाणि दसुगा० जाव विहारवत्तियाए नो पवज्जिज्ज वा गमणाए तओ संजया गा० दू० ॥ (सू० ११५)

ते भिक्षुने बीजे गाम जतां एम मालुम पडे, के आ मार्गे जतां वचमां विरुप रुपवाळा महादुष्ट एवा चोरोनां स्थान छे, तथा बर्बर शबर पुलिंद विगेरे म्लेच्छथी प्रधान एवा अनार्य लोको जे गंगा सिंधुनी वचमांना २५॥ आर्य देश छोडीने बीजा देशोमां रहेला छे, तेओ दुःखेथी आर्योनी संज्ञा समजे छे, तथा महा कष्टे आर्य धर्मने समजे अने अनार्य संकल्पने छोडे, तथा अकाळमां पण भटकनारा छे. कारणके अडधी रात्रे पण शिकार विगेरे माटे जाय छे, तथा अकाले (वखत विना) भोजन करनारा छे, माटे ज्यां सुधी बीजा देशोना सारां गामो विचरवानां होय त्यां सुधी तेवा अनार्य देशोना क्षेत्रमां हुं जइश, एवी प्रतिज्ञा साधुए न करवी, (अर्थात् त्यां जवुं नहि) त्यां जवाथी केवलीप्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के त्यां जवाथी संयमनी विराधना थाय,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे, तथा त्यां आत्मानी विराधनामां संयमनी विराधना पण थाय छे, ते बतावे छे, ते म्लेच्छ विगेरे अनार्यो आ प्रमाणे बोले छे, " आ चोर छे ! आ शत्रुनो चर तेना गामथी आवेलो दूत छे ! एम कहीने वचनथी तिरस्कार करे, दंडनी ताडना करे, अने छेवटे जीव पण ले. तथा वस्त्रो विगेरे पण खुंचवी ले, पछी साधुने काढी मुके, माटे साधुओने आ शीखामण छे, के तेमणे तेवा मार्गे जवुं नहि, पण तेवा मार्गने छोडीने संयत सारे मार्गे विहार करी ने बीजे गाम जाय.

से भिक्खू० दूइज्जमाणे अंतरा से अरायाणि वा गणरायाणि वा जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा विरुद्धरज्जाणि वा सइ लाढे विहाराए संथ० जण० नो विहारवडियाए० केवली बूया आयाणमेयं, तेणं बाला तं चेव जाव गमणाए तओ सं० गा० दू० ॥ (सू० ११६)

ते भिक्षुने विहार करतां एम मालुम पडे के ते मार्गे राजा मरीगयो छे, सामंतोए राज्य ते वहेंची लीधुं छे, अथवा युवराजने गादी मळी नथी, बे राज्य थयां होय, वैर वध्यां होय, विरुद्ध (शत्रु) राजानुं जोर होय, तो तेवा लडाइ तोफानना उपद्रववाळा मार्गे बीजो सारो देश अथवा गामो विचरवानां होय तो तेवा मार्गे विहार न करवो, केवळीप्रभु तेमां कर्मादान बतावे छे, त्यां जतां ते विरुद्ध पक्षना माणसो ते साधुने चोर के जासुस मानीने पूर्वना सूत्रमां कह्या मुजब पीडा पमाडशे, उपद्रव करशे अथवा जीवथी पण हणशे, कपडां खुंचवी बुरा हाले काढी मुकशे, माटे तेवा मार्गे न जवुं,

से भिक्खू वा गा० दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा एगाहेण वा दुआहेण वा तिआहेण वा चउआहेण वा पंचाहेण वा पाउणिज्ज वा नो पाउणिज्ज वा तहप्पगारं विहं अणेगाहगमणिज्जं सइ लाढे जाव गमणाए,

केवली बूया आयाणमेयं, अंतरा से वासे सिया पाणेसु पणएसु वा बीएसु वा हरि० उद० मट्टियाए वा अविद्धत्थाए, अह भिक्खू जं तह० अणेगाह० जाव नो पव० तओ सं० गा० दू० ॥ (सू० ११७)

ते भिक्षु ग्रामांतर जतां एम जाणे के ते मार्गमां जतां मेदान उलंघवामां केटलाक दिवसो लागशे, एटले एक आखो दिवस अथवा बे त्रण चार पांच दिवसे ते मार्ग उलंघासे, तेवा मार्गे बीजो टुंको मार्ग मळतो होय तो तेवा उजड रस्ते जवुं नहि. कारणके तेवा मार्गे जतां केवळी ज्ञानीए अनेक दोषो बताव्या छे, जेमके वखते वरसाद आवे, तो पाणी भराइ जाय, लीलग फूलण इथ जाय, लीलाघासनां बीज अंकुरा फुटी नीकळे, रस्तो कादवथी (गाराथी) भराइ जाय, मार्ग सूझे नहि, माटे तेवा अनेक दिवसना मेदानवाळा मार्ग जवुं नहि. हवे नावने आश्रयी कहे छे—

से भि० वा गामा० दूइज्जिज्जा० अंतरा से नावासंतारिमे उदए सिया, से जं पुण नावं जाणिज्जा असंजए अ भिक्खुपडियाए किणिज्ज वा पामिच्चेज्ज वा नावाए वा नावं परिणामं कट्टु थलाओ वा नावं जलंसि ओगाहिज्जा जलाओ वा नावं थलंसि उक्कसिज्जा पुण्णं वा नावं उस्सिंचिज्जा सन्नं वा नावं उप्पीलाविज्जा तहप्पगारं नावं उड्ढगामिणिं वा अहेगा० तिरियगामि० परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए अप्पतरे वा भुज्जतरे वा नो दूरुहिज्जा गमणाए ॥ से भिक्खू वा० पुव्वामेव तिरिच्छसंपाइमं नावं जाणिज्जा, जाणित्ता से तमयाए एगंतमवक्कमिज्जा २ भण्डगं पडिलेहिज्जा २ एगओ भोयणभंडगं करिज्जा २ ससीसोवरीयं कायं पाए पमज्जिज्जा सागारं भत्तं पच्चक्खाइज्जा, एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ सं० नावं दूरुहिज्जा ॥ (सू० ११८)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते भिक्षु ग्रामान्तर जतां मार्गमां एम जाणे के आ वचमां आवेली नदी नाव विना उतराय तेम नथी तो नाव संबंधी तपास तपास करे के गृहस्थ खास भिक्षुक माटे नाव खरीद करे अथवा उछीती ले, अथवा अदलो बदलो करे, अथवा स्थळथी जळमां के जळथी स्थळमां लावे, भरेला वहाणने खाली करे, अथवा खुंची गयुं होय तो साधु माटेज बहार कढावे, तेवी नावने उंचे लइ जवा नीचे लइ जवा अथवा तीरछी दिशामां अथवा कोइपण दिशामां लइ जवी पडे तो एक जोजन मर्यादा माटे अडधा जोजन (बे गाउ) माटे अथवा थोडे घणे दूर जवा माटे साधुए तेवी नावमां बेसवुं नहि, पण साधु एम जाणे के नाव तेना मालिके पोतान प्रयोजनने तीरछी दिशामां हंकारी छे, तो ते वहाणमां जतां पहेलां पोताना उपकरणोने एकांतमां जइने पडिलेहवां गोचरीनां पात्रां तपासी लेवां तथा पोताना शरीरने पगथी माथा सुधी पुंजवुं, तथा सागारी अणसण करवुं (एटले आ जळथी बहार नीकळुं तो मने आहार पाणी वापरवुं कल्पे, नहितो नहिं.) पछी एक पग जळमां एक पग थळमां (पाणीनी उपर) मुकी साधुए नाव उपर चडवुं (आ सूत्रमां साधु माटे जो नाव पेलेपार लइ जाय तो बने त्यांसुधी तेवी नावमां न बेसवुं. पण गृहस्थोने माटे जवा आववा माटे नाव चालु थइ होय तेमां बेसवुं) हवे कारण पडे नावमां बेसवुं पडे तो नावमां चडवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० नावं दुरुहमाणे नो नावाओ पुरओ दुरुहिज्जा नो नावाओ मग्गओ दुरुहिज्जा नो नावाआ मज्झओ दुरुहिज्जा नो बाहओ पगिज्झिय २ अंगुलियाए उद्दिसिय २ ओणमिय २ उन्नमिय २ निज्झाइज्जा । से णं परो नावागओ नावागयं वइज्जा—आउसंतो ! समणा एयं ता तुमं नावं उक्कसाहिज्जा वा वुक्कसाहि वा खिवाहि वा रज्जूयाए वा गहाय आकासाहि, नो से तं परिन्नं परिजाणिज्जा, तुसिणीओ उवेहिज्जा । से णं परो नावागओ नावाग० वइ०—आउसं० नो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संचाएसि तुमं नावं उक्कसित्तए वा ३ रज्जूयाए वा गहाय आकसितए वा आहार एयं नावाए रज्जूयं सयं चेव णं वयं नावं उक्कसिस्सामो वा जाव रज्जूए वा गहाय आकसिस्सामो, नो से तं प० तुसि० । से णं प० आउसं० एअं ता तुमं नावं आलित्तेण वा पीढएण वा वंसेण वा बलएण वा अवलुएण वा वाएहि, नो से तं प० तुसि० । से णं परो० एयं ता तुमं नावाए उदयं हत्थेण वा पाएण वा मत्तेण वा पडिग्गहेण वा नावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचाहि, नो से तं० से णं परो० समणा ! एयं तुमं नावाए उत्तिंगं हत्थेण वा पाएण वा बाहुणा वा ऊरुणा वा उदरेण वा सीसेण वा काएण वा उस्सिंचणेण वा चेलेण वा मट्टियाए वा कुसपत्तएण वा कुविंदएण वा पिहेहि, नो से तं० ॥ से भिक्खू वा २ नावाए उत्तिगेण उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवरिं नावं कज्जलावेमाणिं पेहाए नो परं उवसंकमित्तु एयं बूया—आउसंतो ! गहावइ एयं ते नावाए उदयं उत्तिगेण आसवइ उवरुवरिं नावा वा कज्जलावेइ, एयप्पगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्टु विहरिज्जा अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे एगंतगएण अप्पाणं विउसेज्जा समाहीए, तओ सं० नावासंतारिमे व्यउदए आहारियं रीइज्जा, एयं खलु सया जइज्जासि त्तिबेमि ॥ इरियाए पढमो उद्देशो (सू० ११९) २–१–३–१ ॥

ते साधुए नावमां बेसतां नावना अग्र भागे बेसवुं नहि, कारण के तेथी निर्यामक (खलासी) ने पोताना कार्यमां हरकत थाय; तथा बीजा लोकोने चडवा पहेलां पोते चढी न बेसे; कारण के वहाणने चालववाना अधिकरणनो दोष लागे, तेम नावना बरोबर मध्य भागमां चडी न बेसे, तेम वहाणनां (पडखां) पकडीने आंगळीओवडे ताकी ताकीने उंचा नीचा थइने जोवुं नहि.

नावमां चढेला साधुने नाववाळा कहे, के हे साधुओ ! आ नावने तमे खेंचो, आ दिशा तरफ वळो, अमुक वस्तु दरियामां

For Private and Personal Use Only

फेंको, अथवा दोरडेथी पकडीने खेंचो, ते प्रमाणे कहे तोपण साधुए तेम न करवुं, पण चूप बेसी रहेवुं.

वळी ते नाविक साधुने कहे, के हे साधुओ ! जो तमे नाव न खेंची शको, के समान न फेंकी शको, तो दोरडुं लावीने अमने आपो, एटले दोरडुं हाथमां आवतां अमे नावने खेंचीशुं, ते वचन पण मुनिए स्वीकारवुं नहि,—पण चूप रहेवुं.

ते नावमां चडेला साधुने नाविक कहे के हे साधु ! तमे नावने आलित्त वडे पीठ हलेसांवडे वांसवडे वळावडे अवल्लकवडे आगळ चलावो, ते वात पण साधुए स्वीकारवी नहि, पण चूप बेसी रहेवुं.

ते नावमां चडेला साधुने नाविक एम कहे, के—आ नावमां भराएला पाणीने हाथवडे पगवडे वासणथी के पातरांथी अथवा नावना हथीआरथी काढी नांखो, पण ते साधुए करवुं नहि, पण मौन धारण करीने बेसवुं.

ते नावमां बेठेला साधुने नाविक कहे, के हे साधुओ ! तमे नावमां पडेला नांणाने हाथ, पग, बाहु, जांघ, उरु, पेट, माथा के कायावडे अथवा वहाणमां रहेला उस्सिचणवडे अथवा वस्त्र, माटी, कमळपत्र के कुरुविंद नामना घासवडे ढांकी, पण ते स्वीकारवुं नहि, मौन बेसी रहेवुं

ते भिक्षुए अथवा साध्वीए नावमां छिद्र पडतां पाणी भरातुं देखीने–उपर उपर नावमां पाणी चडतुं देखीने बीजा माणसोने एम कहेवुं नहि के हे गृहस्थ ! आ वहाणमां पाणी भराय छे, अने नाव डुबी जशे, आ प्रमाणे मनथी अने वचनथी संकल्प–विकल्प न करतां बरडा न पाडतां शांत रहेवुं, शरीर उपकरणनी उत्सुक्ता तथा बहारनुं ध्यान छोडीने एकांतमां आत्माने समाधिमां राखवो, अने जे प्रमाणे नाव पाणीमां चाले तेम चालवा दइ किनारे पहोंचवुं, आ प्रमाणे सदा यत्न

करवो अर्थात् नावना उपर ध्यान न राखतां आत्मसमाधिए वर्त्तवुं आज भिक्षुनी सर्व सामग्री छे.

त्रीजा अध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो उद्देशो कहीने हवे बीजो उदेशो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, गया उद्देशामां नावमां बेठेला साधुनी विधि कही. अहीं पण तेज कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

से णं परो णावा० आउसंतो ! संमणा एयं ता तुमं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा गिण्हाहि, एयाणि तुमं विरूवरूवाणि सत्थजायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा पज्जेहि, नो से तं० ॥ (सू० १२०)

ते नावमां बेठेला साधुने नाविक विगेरे गृहस्थ कहे, के तमे मारा छत्रने पकडो, अथवा चामडुं छेदवानुं हथीआर अथवा बीजा हथीआर पकडो, अथव आ मारा बाळकने पाणी पीवडावो, आवी प्रार्थना नाविक विगेरे करे तो ते स्वीकारवी नहि, पण मौन रहेवुं, उपर प्रमाणे नाविकनुं कहेवुं न करवाथी ते क्रोधी थइने साधुने नावमांथी फेंकी दे तो शुं करवुं ते कहे छेः—

से णं परो नावागए नावगयं वएज्जा–आउसंतो ! एस णं समणे नावाए भंडभारिए भवइ, से णं बाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिविज्जा, एयप्पारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म से य चीवरधारी सिया खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढिज्जा वा निवे, ढज्ज वा उप्फेसं वा करीज्जा, अह० अभिकंतकूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय, ना० पक्खिविज्जा से पुव्वामेव वइज्जा

आउसंतो ! गाहावई मा मत्तो बाहाए गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं नावाओ उदगंसि ओगाहिस्सामि, से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं ग० पक्खिविज्जा तं नो सुमणे सिया नो दुम्मणे सिया नो उच्चावयं मणं नियंछिज्जा नो तेसिं बालाणं घायाए वहाए समुट्ठिज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ सं० उदगंसि पविज्जा ॥ (सू० १२१)

ते साधुने उद्देशीने नाविक बीजा माणसोने कहे, के आ साधु काम कर्या विना वहाणमां मात्र भांड अथवा उपकरणवडे बीजा रुप बेठो छे, माटे तेने बाहुथी पकडीने नदीमां फेंकी दो. आ प्रमाणे तेमनी पासे सांभळे, अथवा बीजा पासेथी ते वात जाणीने जिनकल्पी के स्थवीरकल्पी मुनि होय, तेमां स्थविरकल्पी मुनिए तुर्त पोतानी पासे बोजावाळां नकामां कपडां उतारीने जरुर जोगां हलकां वस्त्र उपधि विगेरेने शरीरे वींटी लेवां, अथवा माथे बांधी लेवां, आ प्रमाणे उपकरण वींटी लीधेलो साधु निर्व्याकुलताथी सुखेथी पाणीमां तरे छे, पछी तैयार थइ तेमने धर्मोपदेश आपे, साधुनो आचार समजावे, छतां एम नक्की जाणे के आ दुष्टो मने बाहुथी पकडीने पाणीमां नांखवानांज छे, तो नांखे ते पहेलां मुनिए कहेवुं के तमारे मने बाहुथी पकडीने पाणीमां नांखवानी जरुर नथी. हुं जातेज पाणीमां झंपलावुं छुं आवुं बोलवा छतां पण ते दुष्टो बाहुथी पकडीने साधुने पाणीमां नाखी दे, तो मुनिए मनमां रागद्वेष न करवो, तथा दीनता के संकल्प—विकल्प पण न करवा, तेम तेमने मारवा के दुःख देवा तैयार न थवुं, पण उत्सुकता रहित पाणीमां पडवुं. हवे उदकमां पडेलानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाइज्जा, से अणासायणाए आणासाय-

माणे तओ सं० उदगंसि पविज्जा ॥ से भिक्खु वा० उदगंसि पवमाणें नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करिज्जा, मामेयं उदगं कन्नेसु वा अच्छीसु वा नक्कंसि वा मुहंसि वा परियावज्जिज्जा, तओ० संजयामेव उदगंसि पविज्जा ॥ से भिक्खू वा उदगंसि पवमाणे दुब्बलियं पाउणिज्जा खिप्पामेव उवहिं विगिंचिज्ज वा विसोहिज्ज वा, ना चेव णं साइज्जिज्जा, अह पु० पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठिज्जा ॥ से भिक्खु वा० उदउल्लं वा २ कायं नो आमज्जिज्जा वा णो पमज्जिज्जा वा संलिहिज्जा वा निलिहिज्जा वा उवलिज्जा वा उवट्टिज्जा वा आयाविज्ज वा पया०. अह पु० विगओदओ मे काए छिन्नसिणेहे काए तहप्पगारं कायं आमज्जिज्ज वा पयाविज्ज वा तओ सं० गामा० दूइज्जिाज्जा ॥ (सू० १२२)

ते मुनिए पाणीमां पड्या पछी हाथ साथे हाथ, पग साथे पग के शरीरवडे कोइ पण भागमां अपकाय विगेरेनी रक्षा माटे स्पर्श करवो नहि, तथा पाणीमां तणातां डुबकीओ मारवी नहि, कारण के डुबकी न मारवाथी कान आंख नाक मोढा विगेरेमां पाणी न भराय तेम पोते डुबी जाय नहि, पण ज्यारे पोताने डुबवा वखत आवे अने थाकी गयो होय, तो उपाधिनो मोह छाडी देवो, अथवा भारवाळी उपाधि छोडी देवी, पछी पोते जाणे के हुं किनारे जवा समर्थ छुं, त्यारे किनारे नीकळी आवे, अने पाणी टपकता शरीरे कीनारा उपर उभो रहे, अने इर्यावही पडिकमे.

पण ते मुनिए भिना शरीरने पाणी रहित करवा आमळवुं घसवुं दाबवुं छांटवुं के तपाववुं नहि, पण पाणीने पोतानी मेळे नीतरवा देवुं पण ज्यारे जाणे के पाणी नीतरी गयुं छे, भीनाश ओछी थइ गइ छे, त्यारपछी कायाने शरदी रहित करवा तडके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तपाववी, अने त्यां सुधी किनारेज उभा रहेवुं, अने शरीर सूकाया पछीज बीजा गाम तरफ विहार करवो, पण त्यां उभा रहेवाथी चोरनो भय लागतो होय तो तुर्त कायाने स्पर्श कर्या विनाज हाथ लांबा राखी गाम तरफ चाल्या जवुं.

से भिक्खू वा गामणुंगामं दूइज्जमाणे नो परेहिं सद्धिं परिजविय २ गामा० दूइ०, तओ० सं० गामा० दूइ० ॥ (सू० १२३)

मुनिए विहार करतां मळेला गृहस्थो साथे बहु बकवकाट करता जवुं नहि, पण शांतिथी चालवुं, हवे जंघा सुधीना पाणीमां उतरवानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा गामा० दू० अंतरा से जंघासंतारिमे उदगे सिया, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिज्जा २ एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ सं० उदगंसि आहारियं रीएज्जा ॥ से भि० आहारियं रीयमाणे नो हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए आहरियं रीइज्जा ॥ से भिक्खू वा जंघासंतारिमे उदए आहारियं रीयमाणे नो सायावडियाए नो परिदाहपडियाए महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा, तओ संजियामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा, अह पुण एवं जाणिज्जा पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा २ काएण दगतीरए चिट्ठिज्जा ॥ से भि० उदउल्लं वा कायं ससि० कायं नो आमज्जिज्ज वा नो० अह पु० विगओदए मे काए छिन्नसिणेहे तहप्पगारं कायं आमज्जिज्ज वा० पायविज्ज वा तओ सं० गामा० दूइ०

ते साधु विहार करी बीजे गाम जतां मार्गमां जांघ डुबे तेटलुं पाणी होय. तो उपरनुं शरीर मुहुपत्तिथी तथा नाभी निचेनुं अडधुं शरीर ओघाथी पुंजीने पाणीमां प्रवेश करे, अने पाणीमां पेठा पछी एक जलमां मुकावो, बीजो पग उंचो करीने जवुं, पण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बे पग वडे पाणी डोळता जवुं नहि, पण जयणाथी पाणी उतरवुं, जेम सरलताथी जवाय तेम जाय, पण विकार करतो आम तेम जोतो न चाले.

ते भिक्षु जंघासुधीना पाणीमां उतरी जतां हाथ साथे हाथ पग साथे पग विगेरे, अपकायनी रक्षा माटे लगाडवां नहि, तेज प्रमाणे सुख मेळववा दाह मटाडवा. उंडापाणीमां—छाती सुधीना पाणीमां उतरवुं नहि, फकत जंघा सुधीना पाणीमांज उतरवुं, पण पाणीमां उतर्या पछी उपकरण सहित चालवा पोताने असमर्थ जुए अने डुबवानो वखत आवे तो बोजावाळां उपकरण त्यजी देवा. पण शक्तिवान होय तो उपकरण सहित उतरे, पछी किनारे जइने इर्यावहि करी पाणी नीतरी गया पछी कायानी भीनाश ओछी थाय पछी शरीर तपावीने विहार करे. हवे पणीमांथी नीकळ्या पछीनी गमन विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे नो मट्टियागएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय २ विकुज्जिय २ विफालिय २ उम्मग्गेण हरियवहाए गच्छिज्जा, जमेयं पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करिज्जा, से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहिज्जा तओ० सं० गामा० ॥ से भिक्खू वा २ गामणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फ० पा० तो० अ० अग्गलपासगाणि वा गड्डाओ वा दरीओ वा सइ परक्कमे संजयामेव परिक्कमिज्जा नो उज्जु०, केवली०, से तत्थ परक्कममाणे पयलिज्ज वा २, से तत्थ पयलमाणे वा २ रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि वा अवलंबिय २ उत्तरिज्जा, जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छंति ते पाणी जाइज्जा २, तओ सं० अवलंबीय २ उत्तरिज्जा तओ सं० गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा० गा० दूइज्जमाणे अंतरा से

For Private and Personal Use Only

जवसाणि वा सगडाणि वा रहाणि वा सचक्काणि वा परचक्काणि वा से णं वा विरूवरूवं सनिरुद्धं पेहाए सइ परक्कमे सं० नो० उ० से णं परो सणागओ वइज्जा आउसंतो! एस णं समणे सेणाए अभिनिवारियं करेइ, से णं बाहाहे गहाए आगसह, से णं परो बाहाहिं गहाय आगसिज्जा, तं नो सुमणे सिया जाव समाहीए तओ० सं० गामा० दूइ० ॥ (सू० १२८)

ते भिक्षु नदीना पाणीमांथी नीकळेलो होय, ते वखते जो उन्मार्गे जइने गाराथी खरडेला पगे लीला घासने छेदीने के वांकु वाळीने तथा खेंची काढीने पोताना पग साफ करवाना इरादाथी वनस्पतिने दुःख दे तो ए कपटनुं निंदित कार्य छे, माटे तेम न करवुं, पण प्रथमथी तद्दन ओछा घासवाळो मार्ग जोवो, अचित्त जग्यामां जइ प्रथम बताव्या प्रमाणे गारो दूर करवो पछी बीजे गाम विहार करवो.

साधुने विहार करतां मार्गमां वप्र (किल्लो) फलिह (खाइ) प्राकार (कोट) तोरण अर्गल अर्गलपासक खाडा गुफा (कोतर) ओळंगवाना आवे तो छती शक्तिए तेवा सीधा मार्गे न जवुं; पण दूरना खाडा विनाना रस्ते जवुं, कारणके त्यां जतां खाडा विगेरेमां पडतां सचित्त झाड विगेरेने पकडे, तो केवळी प्रभुए तेमां दोषो बताव्या छे, पण बीजो रस्तो न होय अने खास कारणे ते मार्गे जवुं पडे अने पग खसे तेवुं होय, तो झाड गुच्छा गुल्मलता वेला घास छोडवा अथवा जे पकडवा जोग हाथमां आवे, ते लइने उतरवुं, अथवा रस्तामां जता मुसाफरनी मदद मागीने हाथ पकडीने उतरवुं, पछी गाराथी के खाडाथी बहार आवी संभाळथी बीजे गाम विहार करवो.

ते भिक्षुने विहार करतां मार्गमां घणुं जवनां खेतर आवे, गाडां रथ होय, के ते गामना राजानुं के बीजा राजानुं लश्कर

पडेलुं होय, तो बीजो रस्तो मळतां ते रस्ते न जवुं, कारणके त्यां जतां बहु अपायो छे, पण बीजो रस्तो न होय, शक्ति न होय, तो ते मार्गे जतां सेनानो अजाण्यो माणस साधुने न ओळखवाथी बीजा माणसोने कहे के "आ जासुस आवेलो छे, माटे धक्को मारीने बाहुमांथी पकडीने बहार काढो" अने ते प्रमाणे कदाच करे, तो पण तेमना उपर क्रोध न लावतां समाधिथी विहार करे,

से भिक्खू वा० गामां० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा ते णं पडिवहिया एवं वइज्जा-आउ० समणा ! केवइए एस गामे वा जाव रायहाणी वा केवईया इत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परि वसंति ! बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ? एयप्पगाराणि पसिणाणि पुच्छिज्जा, एयप्प० पुट्ठो वा अपुट्ठो वा नो वागरिज्जा, एवं खलु० जं० सव्वट्ठेहिं० (सू० १२६) ॥ २-१-३-२

ते साधु साध्वीने मार्गे चालतां मुसाफरो मळे, तेओ आ प्रमाणे पूछे के हे साधुओ ! तमारा विहारमां आवेलुं गाम के राज्यधानी केवी मोटी छे ! तथा अहीं केटला घोडा हाथी गामना भीखारीओ के माणसो वसे छे, अथवा घणुं रांधेलुं अन्न पाणी के अनाज मळे छे ? के ओछुं भोजन पाणी के अनाज मळे छे ? एवा प्रकारना प्रश्नो पूछे, अथवा न पण पूछे, तो पण पोते बोलवुं नहि, (भाषांतर वाळा आचारांगसूत्रमां पाठ विशेष छे. एतप्पा गाराणि पसिणाणि णो पुच्छेज्जा आवा प्रश्नो मुनिए पण मुसाफरने पूछवा नहि,)

आज साधुनुं सर्व साधुपणु छे.

त्रीजो उद्देशो.

बीजो उद्देशो कहीने हवे त्रीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गयामां गमनविधि बतावी, अहीं पण तेज कहे छे. आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे.

से भिक्खु वा गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा जाव दरीओ वा जाव कूडागाराणि वा पासायाणि वा नुमगिहाणि वा रुक्खगिहाणि वा पव्वयगि० रुक्खं वा चेइयकडं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा नो बाहाओ पगिज्झिय २ अंगुलिआए उद्दिसिय २ ओणमिय २ उन्नमिय २ निज्झाइज्जा, तओ सं० गामा० ॥ से भिक्खू वा० गामा० दू० माणे अंतरा से कच्छाणि वा दवियाणि वा नुमाणि वा वलयाणि वा गहणाणि वा गहणविदुग्गाणि वणाणि वा वणवि० पव्वयाणि वा पव्वयवि० अगडाणि वा तलागाणि वा दहाणि वा नईओ वा वावीओ वा पुक्खरिणीओ वा दीहियाओ वा गुंजालियाओ वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा नो बहाओ पगिज्झिय २ जाव निज्झाइज्जा, केवली०, जे तत्थ मिगा वा पसू वा पंखी वा वा सरीसिवा वा सीहा वा जलचरा वा थलचरा वा खहचरा वा सत्ता से उत्तसिज्ज वा वित्तसिज्ज वा वाडं वा सरणं वा कंखिज्जा, चारित्ति मे अयं समणे, अह भिक्खू णं पु० जं नो बाहाओ पगिज्झिय २ निज्झाइज्जा, तओ संजयामेव आयरिउवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (सू० १२७)

ते भिक्षु बीजे गाम जतां वचमां जुए के खाइ, कोट, मेडावाळां घर, पर्वत उपरनां घर, भोंयरां, वृक्षथी प्रधान घर, अथवा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झाड उपरनां निवासस्थान, गुफाओ, झाडना नीचे व्यंतरनां स्थळ, व्यंतर माटे करेली देरडीयो, मठो, भवनगृह विगेरे जे कंइ रमणीय स्थान होय, ते हाथ उंचा करी करीने अंगुलीथी उद्देशी उद्देशीने उंचा नीचा थइने जोवां नहि, तेम बीजाने बताववां पण नहि, तेमां दोषो आ छे के, ते स्थानमां आग लागे के चोरी थाय तो ते साधु उपर शंका आवे, तथा गृहस्थो एम जाणे के, आ उपरथी त्यागी छतां अंदरथी इंद्रियोथी परवश छे, तथा त्यां बेठेलो पक्षीनो समुदाय त्रास पामे, माटे साधु तेवुं न करतां शांतिथी विहार करे, तथा मार्गे विहारमां नीचली बावतो होय, नदीना नीचाण भागमां वसेला (कच्छ) देशो अथवा मूळा वालोळनी वाडीओ, दवियाणि (वीड) जेमां राजा तरफथी घास माटे जमीन रोकेली होय छे ते, तथा नीचाणना खाडा (खीण) वलयो (नदीए वींटेला भूमीभागो) गहन उजाड प्रदेशे, अथवा पाणी विनानुं रण अथवा उजाड पहाळी किल्ला वन मोटां वन पर्वत पर्वतसमूह होय, तथा कुवा तळाव कुंड नदीओ वावडीओ कमळवाळी तथा लांबी वावडीओ गुंजालिका वांकी वावडीओ सरोवर सरोवरनी श्रेणि होय, जोडे जोडे तळावो होय, आ बधुं देखवा योग्य होय, छतां पण हाथ उंचा करीने के आंगळीथी इशारत करीने बताववुं नहि, तथा देखवुं नहि, केवळी प्रभु तेमां नीचला दोषो बतावे छे, कारण के तेमां रहेला मृगो बीजां पशु पक्षी साप सींह जलचर थलचर खेचर विगेरे जीवो होय, ते त्रास पामे, भडके, अथवा शरण लेवा आम तेम दोडे, तेथी तेनी नजीकमां रहेनार लोकोने साधु उपर शक आवे माटे साधुए मार्गमां चालतां तेम न करवुं, माटे शास्त्र जाणनारा एवा आचार्य उपाध्याय विगेरे गीतार्थ साधुओ साथे पोते विचरे. हवे आचार्य विगेरे साथे चालतां साधुनी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा २ आयरिउवज्झा० गामा० नो आयरियउवज्झायस्स हत्थेण वा हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव

For Private and Personal Use Only

आयरिउ० सद्धिं जाव दूइज्जिज्ज ॥ से भिक्खू वा आय० सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं ता एवं वइज्जा—आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?, जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासिज्ज वा वियागरिज्ज वा, आयरिउवज्झायस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अंतरा भासं करिज्जा, तओ० सं० अहाराईणिए वा० दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा अहाराइणियं गामा० दू० नो राईणियस्स हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे तओ सं० अहाराइणियं गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा २ अहाराइणिअं गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वइज्जा—आउसंतो! समणा! के तुब्भे? जे तत्थ सव्वराइणिए से भासिज्जा वा वागरिज्ज वा, राइणियस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अंतरा भासं भासिज्जा, तओ संजयामेव अहाराइणियाए गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ (सू० १२८)

ते भिक्षु आचार्य विगेरेनी साथे विहार करतां गुरु विगेरेथी एटलो दूर उभो रहे, के हाथ विगेरेनो स्पर्श न थाय, तथा ते भिक्षु आचार्य विगेरेनी साथे जतां मुसाफरो पूछे के हे साधुओ! तमे कोण छो? क्यांथी आवो छो? क्यां जवाना छो? ते समये जे आचार्य उपाध्याय विगेरे जे मोटा होय, ते उत्तर आपे, अथवा खुलासार्थी समजावे, पण आचार्यादि उत्तर आपे, तेमां पोते वचमां कंइ पण न बोले, तेमज जे रत्नाधिक (चारित्रपर्याये के ज्ञाने मोटा होय ते) आगळ चाले, पोते पछवाडे चाले, अने चार हाथनी दृष्टि राखी चाले, ते भिक्षु वळी जे आचार्यने बदले रत्नाधिक साथे चालतो होय, तेमने पण हाथ विगेरेथी स्पर्श न करे, अने रस्तामां मुसाफरो मळतां ते पूछे तो रत्नाधिके उत्तर आपवो, एटले सौथी मोटाए उत्तर आपवो, पण ते मोटा साधु बोलता होय,

त्यारे वचमां अन्य साधुए बोलवुं नहि, तेज प्रमाणे संयतोए मोटा रत्नाधिक साधुने आगळ करीने विहार करवो. वळीः—

से भिक्खू वा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिवहिया उवागच्छिज्जा, ते णं पा० एवं वइज्जा—आउ० स०! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह, तं०—मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा पसुं वा पक्खिं वा सिरीसिवं वा जलयरं वा से आइक्खह दंसेह, तं नो आइक्खिज्जा नो दंसिज्जा, नो तस्स तं० परिन्नं परिजाणिज्जा, तुसिणिए उवेहिज्ज, जाणं वा नो जाणंति वइज्जा, तओ स० गामा० दू० ॥ से भिक्खू वा० गा० दू० अंतरा से पाडि० उवा०, ते णं पा० एवं वइज्जा—आउ० स०! अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह उदगपसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया उदगं वा संनिहियं अगणिं वा संनिखित्तं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा से पाडि० उवा०, ते णं पाडि० एवं आउ० स० अवियाइं इत्तो पडिवहे पासह जवसाणि वा जाव से णं वा विरूवरूवं संनिविट्ठं से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामा० दूइज्जमाणे अंतरा पा० जाव आउ० स० केवइए इत्तो गामे वा जाव रायहाणिं वा से आइक्खह जाव दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, अंतरा से पाडिपहिया आउसंतो समणा! केवइए इत्तो गामस्स नगरस्स वा जाव रायहाणीए वा मग्गे से आइक्खह, तहेव जाव दूइज्जिज्जा॥(सू० १२९)

ते साधुने मार्गमां जतां कोइ मुसाफर पूछे के, हे साधु! तमे रस्तामां आवतां कोइ माणस जोयो? बळध भेंस पशु पंखी सरीसृप जलचर जे कंइ देख्युं होय ते कहो, अथवा बतावो, तो ते समये साधुए कंइ पण बोलवुं नहि, तेम बताववुं नहि, तेनी ते वात साधुए कबुल राखवी नहि, मौन रहेवुं, अथवा जाणतो होय. तो पण नथी जाणतो, एम कहेवुं, तेज प्रमाणे समाधिथी विहार करवो.

तेज प्रमाणे साधुने मार्गमां पूछे, के जळमां थनारां कंद मूळ छाल पांदडां फूल फळ बीज हरित (भाजी) पाणी अथवा स्थापेला अग्नि होय तो बतावो, ते समये पण मौन रहेवुं, जाणवा छतां, 'नथी जाणतो' एम कहेवुं, अथवा पूछे के मार्गमां जव घउंनां खेतर अथवा जुदुं जुदुं जे जोयुं होय ते कहो, तोपण मौन रहेवुं, तेज प्रमाणे पूछे के अहींथी गाम अथवा राजधानी केटली दूर छे? तो पण मौन रहेवुं, अथवा अमुक गाम अथवा नगर के राज्यधानीए क्यो रस्तो जाय छे? विगेरे पूछे तो मौन रहेवुं, पण ते संबंधी उत्तर आपवो नहि.

से भिक्खू० गा० दू० अंतरा से गोणं वियालं पडिवहे पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं वियालं प० पेहाए नो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छिज्जा नो मग्गाओ उम्मग्गं संकमिज्जा नो गहणं वा वणं वा दुग्गं वा अणुपविसिज्जा नो रुक्खंसि दूरुहिज्जा नो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसिज्जा नो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखिज्जा अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू० गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि बहवे अमोसगा। उवगरणपडियाए संपिंडिया गच्छिज्जा, नो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छिज्जा जाव समाहीए तओ संजयामेव गामणुगामं दूइज्जेज्जा ॥ (सू० १३०)

ते भिक्षुने विहार करतां मार्गमां बळध के साप उन्मत्त थएलो जुए, सिंह चीतरो अथवा तेनुं बच्चुं जुए, तो तेना भयथी डरीने उन्मार्गे जवुं नहि, तेम उज्जड अरण्यमां घुसवुं नहि, तेम झाड उपर पण चडवुं नहिं, तेम पाणीमां पण पेसवुं नहि, तेम वाडामां पेसवुं नहि, बीजानुं शरण चाहवुं नहीं, पण उत्सुकता राख्या विना शांतिथी जवुं आ सूत्र जिनकल्पी आश्रयी छे, पण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थविर कल्पीए तो साप विगेरेने बाजुए टाळी नीकळवुं, वळी ते मार्गे चालतां लांबी उजाड अटवी आवे, अने तेमां चोरो रहेता होय, अने ते चोरो उपधि लेवा आवता होय, तो पण तेना डरथी उन्मार्गे जवुं नहि, पण सीधे रस्ते शांतिथी विहार करता जवुं.

से भिक्खू वा० गा० दू० अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छिज्जा ते णं आ० एवं वइज्जा—आउ० सं० ! आहार एयं वत्थं वा० ४ देहि निक्खिवाहि, तं नो दिज्जा निक्खिविज्जा, नो वंदिय २ जाइज्जा, नो अंजलिं कट्टु जाइज्जा, नो कलुणपडियाए जाइज्जा, धम्मियाए जायणाए जाइज्जा, तुसिणीयभावेण वा ते णं आमोसगा सयं करणिज्जंतिकट्टु अक्कोसंति वा जाव उद्दविंति वा वत्थं वा ४ अच्छिंदिज्ज वा जाव परिट्ठविज्ज वा, तं नो गामसंसारणियं कुज्जा, नो रायसंसारियं कुज्जा, नो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो ! गाहावई एए खलु आमोसगा उवगरणपडियाए सयंकरणिज्जंतिकट्टु अक्कोसंति वा जाव परिट्ठवंति वा एयप्पगारं मणं वा वायं वा नो पुरओ कट्टु विहरिज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामा० दूइ० ॥ एयं खलु० सया जइ० (सू० १३१) त्तिबेमि ॥ समाप्तमीर्याख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

भिक्षुने विहार करतां चोरो भेगा थइने उपकरण याचे, तो तेमने हाथमा अर्पण करवा नहि, बलथी ग्रहण करे तो जमीन उपर नांखी देवां, अने चोरे लीधा पछी तेने वंदन करीने याचवां नहि, तेम हाथ जोडीने दीनताथी पण याचवो नहि, पण धर्म समजावीने याचवां अथवा चुप रहीने उपेक्षा करवी, तथा ते चोरो पोताना कर्त्तव्य प्रमाणे आक्रोश करे, दंडथी मारे अथवा जीव ले, तो पण तेना सामे थवुं नहि, पण तेओ माल विनानां समजी पाछां फेंकी दे, फाडी नांखे तो पण तेमनी चेष्टा गाममां के राजकूळमां कहेवी, नहि, अथवा बीजा गृहस्थने पण एम न कहेवुं के आ चोरोए आ प्रमाणे कर्युं छे. तथा मनथी के वचनथी तेना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपर दुर्भाव बतावबो नहि, पण उत्सुकता छोडी समाधिथी विहार करी बीजे गाम जवुं. आज साधुनी साधुता छे.

त्रीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.

चोथुं अध्ययन भाषा जातम्

त्रीजुं अध्ययन कह्युं, हवे चोथुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, त्रीजा अध्ययनमां पिंडविशुद्ध माटे गमनविधि कही त्यां गयेलाए मार्गमां आ प्रमाणे बोलवुं आम न बोलवुं, ते बतावशे, आ संबंधे आवेला आ भाषा जात अध्ययनना चार अनुयोगद्वारा थाय छे, तेमां निक्षेपनिर्युक्ति अनुगममां भाषाजात शब्दोना निक्षेपा माटे निर्युक्तिकार कहे छे.

जह वक्कं तह भासा जाए छक्कं च होइ नायव्वं । उप्पत्तीए १ तह पज्जवं २ तरे ३ जायगहणे ४ य ॥ ३१३

वाक्य शुद्धि नामना अध्ययनमां जेम वाक्यनो पूर्वे निक्षेप कर्यो छे, ते प्रमाणे भाषानो पण करवो.

जात शब्दना निक्षेपानुं वर्णन.

पण जात शब्दनो छ प्रकारे निक्षेपो करवो, नाम स्थापना क्षेत्र काळ अने भाव छे, एमां नाम स्थापना सुगम छे, द्रव्य जात आगमथी अने नो आगमथी छे, तेमां व्यतिरिक्तमां निर्युक्तिकार पाछळनी अडधी गाथाथी कहे छे, ते चार प्रकारे उत्पत्तिजात, पर्यवजात, अंतरजात, अने ग्रहण जात छे. (१) तेमां उत्पत्तिजात ते जे द्रव्यो भाषा वर्गणानी अंदर पडेलां काययोगथी ग्रहण करेलां

For Private and Personal Use Only

ते वाग्योगवडे निसृष्ट थयेलां भाषा पणे उत्पन्न थाय, ते उत्पत्तिजात छे, अर्थात् जे द्रव्य भाषापणे उत्पन्न थाय ते. (२) तेज वाचाथी निसृष्ट भाषा द्रव्योवडे जे विश्रेणीमां रहेला भाषा वर्गणानी अंदर रहेलां निसृष्ट द्रव्यना पराघात वडे भाषा पर्यायपणे जे उत्पन्न थाय छे, ते द्रव्योपर्यवजात कहेवाय छे, (३) जे द्रव्यो अंतराले समश्रेणिमांज निसृष्ट द्रव्यनी साथे मिश्रित भाषा परिणामने भजे, ते अंतरजात छे. (४) वळी जे द्रव्यो समश्रेणिमां रहेला भाषापणे परिणमेलां कर्ण शष्कुली (काननी अंदर)ना काणामां पेठेलां ग्रहण कराय छे, ते अनंत प्रदेशवाळां द्रव्यथी छे, तथा असंख्यप्रदेशवाळा अवकाशमां अवगाढेलां क्षेत्रथी छे, काळथी एक बे त्रणथी मांडीने असंख्यात समय सुधीनी स्थितिवाळां छे, भावथी वर्ण गंध रस स्पर्शवाळां छे, ते आवां द्रव्यो 'ग्रहणजात' छे, द्रव्यजात कह्युं,

क्षेत्रादिजात तो स्पष्ट होवाथी निर्युक्तिकारे कह्यां नथी, ते आ प्रमाणे छे, जे क्षेत्रमां भाषाजातनुं वर्णन चाले, अथवा जेटलुं क्षेत्र स्पर्श करे, ते क्षेत्रजात छे, एज प्रमाणे जे काळमां वर्णन चाले ते काळजात छे,

भावजात तो तेज उत्पत्ति पर्यव अंतर ग्रहण द्रव्य सांभळनारना कानमां जणाय, के "आ शब्द" छे, एवी बुद्धि उत्पन्न करे, पण अहिं अधिकार द्रव्य भाषाजात वडे छे कारण के द्रव्यनी प्रधान विवक्षा छे,

द्रव्यनो विशिष्ट अवस्था भाव छे, ते माटे भाव भाषा जात वडे पण अधिकार छे,

उद्देशाना अर्थाधिकार माटे कहे छेः—

सव्वेवि य वयणविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । वयणविभत्ती पढमे उप्पत्ती वज्जणा बीए ॥ ३१४ ॥

जो के बे उद्देशा पण वचन विशुद्धि करनारा छे, तो पण ते दरेकमां विशेष छे, ते आ छे, प्रथमना उद्देशामां वचननी विभक्ति छे, एटले एकवचनथी लइने सोळ प्रकारना वचननो विभाग छे. तथा आवुं वचन बोलवुं, आवुं नहि, तेनुं वर्णन छे बीजा उद्देशामां क्रोध विगेरेनी उत्पत्ति जेम न थाय, तेम बोलवुं, हवे सूत्र अनुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त सूत्र छे, ते आ प्रमाणे छे:—

से भिक्खू वा २ इमाइं वयायाराइं सुच्चा निसम्म इमाइं अणायाराइं अणारियपुव्वाइं जाणिज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजंति जे माणा वा० जे मायाए वा० जे लोभा वा वायं विउंजंति जाणओ वा फरुसं वयंति अजाणओ वा फ० सव्वं चेयं सावज्जं वज्जिज्जा विवेगमायाए, धुवं चेयं जाणिज्जा अधुवं चेयं जाणिज्जा असणं वा ४ लभिय नो लभिय भुंजिय नो भुंजिय अदुवा आगओ अदुवा नो आगओ अदुवा एइ अदुवा नो एइ अदुवा एहिइ अदुवा नो एहिइ इत्थवि आगए इत्थवि नो आगए इत्थवि एइ इत्थवि नो एति इत्थवि एहिति इत्थवि नो एहिति ॥ अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, तंजहा—एगवयणं १ दुवयणं २ बहुव० ३ इत्थि० ४ पुरि० ५ नपुंसगवयणं ६ अज्झत्थव० ७ उवणीयवयणं ८ अवणीयवयणं ९ उवणीयअवणीयव० १० अवणीयउवणीयव० ११ तीयव० १२ पडुप्पन्नव० १३ अणागयव० १४ पच्चक्खवयणं १५ परुक्खव० १६ से एगवयणं वइस्सामीति एगवयणं वइज्जा जाव परुक्खवयणं वइस्सामीति परुक्खवयणं वइज्जा, इत्थी वेस पुरि सोवेस नपुंसगं वेस एयं वा चेयं अन्नं वा चेयं अणुवीइ निट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा, इच्चेयाइं आययणाइं उवातिकम्म ॥ अह भिक्खू जाणिज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तंजहा—सच्चमेगं पढमं भासज्जायं १ बीयं मोसं २ तईयं सच्चामोसं ३ जं नेव सच्चं नेव मोसं नेव सच्चामोसं असच्चामोसं नाम तं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चउत्थं भासजायं ४ ॥ से बेमि जे अईया जे य पडुप्पन्ना जे अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा भासंति वा भासिस्संति वा पन्नविंसु वा ३, सव्वाइं च णं एयाइं अचित्ताणि वण्णमंताणि गंध-मंताणि रसमंताणि फासमंताणि चओवचइयाइं विप्परिणामधम्माइं भवंतीति अक्खायाइं ॥ सू० १३२)

साधुने आ अंतःकरणमां उत्पन्न थएला (इदम् आ प्रत्यक्ष समीप वाची शब्द वडे बतावेल होवाथी) तथा जोडाजोड वाणी संबंधी आचार ते वागाचार (वाणीना आचार) सूत्रकार बतावे छे, ते सांभळीने तथाहृदयमां जाणीने भाषा समिति वडे ते साधुए वचन बोलवुं. ते हवे विगत वार कहे छे.

तेमां प्रथम आवी भाषा न बोलवी, ते अनाचरित भाषानुं वर्णन करे छे, ते न बोलवा योग्य अनाचार कहे छे, एटले, जे क्रोधथी वाचा बोले छे, जेमके तुं चोर छे दास छे! तथा केटलाक मानथी बोले छे, जेमके हुं उत्तम जातिनो छुं तुं अधम जातिनो छे, तथा मायाथी बोले छे जेमके हुं मांदो छुं. (पण मांदो होय नहि) अथवा बीजानो सावद्य (पापवाळो) संदेशो कोइ उपाय वडे कहीने पछी मिथ्यादुष्कृत करे छे, आ तो माराथी सहसा (उतावळथी) बोलाइ गयुं छे! तथा कोइ लोभथी बोले के आ वचन बोल-वाथी हुं कंइक मेळवीश. तथा कोइनो दोष जाणता होय, तेनो दोष उघाडवा वडे कठोर वचन बोले छे, अथवा अजाण पणे बोले छे, आ बधुं उपर कहेलुं सघळुं क्रोधादिनुं वचन पाप सहित होवाथी (सावद्य छे माटे) ते वर्जवुं, अर्थात् विवेकी बनीने साधुए तेवुं वचन न बोलवुं.

तथा कोइ साथे साधुए बोलतां निश्चयात्मक वाचा न बोलवी के " अमुक वरसाद विगेरे बनशेज " तेवीज रीते अध्रुव पण

जाणवुं, (के आम नहिज बने) अथवा कोइ साधुने भिक्षा माटे कोइ ज्ञाति के कुलमां प्रवेश करतो जोइने तेने उद्देशीने बीजा साधुओ आवुं बोले के आपणे खाइ लो, ते लइनेज आवशे, अथवा तेने माटे राखी मुको ते कंइ पण लीधा विनाज आवशे अथवा त्यांज खाइने अथवा खाधा विनाज आवशे, तेवुं निश्चयात्मक वचन पण न बोलवुं, तथा आवी वाणी न बोलवी, के राजा विगेरे आव्यो छेज, तथा ते नथीज आव्यो, अथवा आवेछेज, आववानो नथीज, तथा ते आवशेज, अथवा आवशेज नहि, ए प्रमाणे पत्तन मठ विगेरे आश्रयी पण भूत विगेरे त्रणे काळ आश्रयी योजवुं, ते बधानो सार आ छे के जे अर्थने पोते बरोबर न जाणे त्यां आगळ आ 'एमज छे' एम न बोलवुं,

सामान्यथी साधुने बधी जग्याए लागु पडतो आ उपदेश छे के विचारीने, सम्यग् रीते निश्चय करीने अथवा श्रुत उपदेश वडे प्रयोजन वडे साधारण 'निश्चय आत्मक' बनीने भाषा समिति वडे अथवा रागद्वेष छोडीने सोळ वचननी विधि जाणीने भाषा बोले, जेवी भाषा बोलवी ते सोळ प्रकारना वचननी विधिवाळी भाषा बतावे छे. **सोळ प्रकारनी भाषा.**

(१) एक वचन जेमके 'वृक्षः' (२) द्वि वचन 'वृक्षौ' (३) बहु वचन 'वृक्षाः' आ त्रण वचन थया.

त्रण प्रकारना लिंग आश्रयी कहे छे.

(४) स्त्री वचन वीणा, कन्या, (५) पुंवचन घटः, पटः (६) नपुंसक वचन पीठं, देवकुलं (देवळ) अध्यात्म वचन.

(७) आत्मामां रहेलुं ते अध्यात्म (हृदयमां रहेलुं) तेना परिहार करवावडे अन्य बोलवा जतां बीजुंज (खरुं) सहसात्कारे बोलाइ जाय. (८) उपनीत वचन ते प्रशंसानुं वचन जेम सुंदर स्त्री (९) तेथी उलटुं अपनीत निंदावाळुं वचन कुरुपवाळी स्त्री. (१०)

ऊपनीत अपनीत वचन कंइक प्रशंसा योग्य गुण बतावी निंदा आत्मकगुण बतावे जेमके आ स्त्री सुंदर छे, पण कुलटा छे. (११) अपनीत उपनीत वचन ते प्रथमथी उलटुं छे, जेमके आ स्त्री कुरुपा छे पण शीलव्रत पाळनारी सती छे. (१२) अतीत वचन कृतवान् कर्युं. (१३) वर्त्तमान वचन करे छे, (१४) अनागत वचन 'करशे' (१५) प्रत्यक्ष वचन आ देवदत्त छे. (१६) परोक्षवचन ते देवदत्त छे, आ प्रमाणे सोळ वचनो छे, आ सोळ वचनोमां साधुने जरूर पडे, त्यारे एक वचननी विविक्षामां एक वचन बोले, ते परोक्ष वचन सुधीमां ज्यां जवुं योग्य होय त्यां तेवुं बोले, तथा स्त्री विगेरे देखे छते आ स्त्रीज छे, अथवा पुरुष अथवा नपुंसक छे, जेवुं होय तेवुं बोले, आ प्रमाणे विचारी निश्चय करीने सत्य बोलनारो समितिवडे अथवा समपणे संयत भाषा बोले, तथा पूर्वे कहेलां अथवा हवे पछी कहेवाता दोषोनां स्थान छोडीने भाषा बोले, ते भिक्षु चार प्रकारनी भाषाओ जाणे, ते आ प्रमाणे—

(१) सत्यभाषाजात—ते यथार्थ वचन अवितथ (खरेखरुं) बोलवुं. गाय होय तो गाय अश्व होय तो अश्व कहेवो.

(२) एथी विपरीत ते मृषा (जूठ) बोलवुं–एटले गायने अश्व कहेवो, अश्वने गाय कहेवी.

(३) सत्यमृषा–जेमां थोडुं सत्य थोडुं असत्य. जेमके–देवदत्त घोडा उपर बेसीने जतो होय तो उंट उपर बेसीने देवदत्त जाय छे एम कहेवुं.

(४) बोलायेली भाषामां सत्य, जुठ के मिश्रपणुं न होय, ते आमंत्रण आज्ञापन विगेरेमां सत्य जुठ नथी ते असत्यामृषा चोथी भाषा छे, आ बधुं सुधर्मास्वामीए पोतानी बुद्धिथी नथी कह्युं तेथी कहे छे, के जे पूर्वे तीर्थंकर थाय, वर्त्तमानमां छे अने भविष्यमां थशे ते बधा तीर्थंकरोए कह्युं छे, हमणां कहे छे अने कहेशे, के आ बधांए भाषाद्रव्य अचित्त छे, वर्ण गंध रस फरस-

वाळां, चय, उपचय विगेरे विविध परिणाम धर्मवाळां छे, एवुं तीर्थंकरे कहेल छे, अहीं वर्ण विगेरे गुणो बतावबाथी शब्दनुं मूर्त्त पणुं बताव्युं, पण अन्यलोक एवुं माने छे, के 'शब्द आकाशनो गुण' छे, ते आकाशने वर्ण विगेरे नथी माटे शब्द रुपी नहि पण अरुपी छे, तेम जैनो मानता नथी, तथा चय—उपचय धर्म बतावबाथी शब्दनुं अनित्यपणुं बताव्युं; कारण के शब्दद्रव्योनुं विचित्रपणुं सिद्ध थाय छे. हवे शब्दोनुं कृतत्त्व प्रकट करवा कहे छे.

से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा भासासमयवीइक्कंता च णं भासिया भासा अभासा ॥ से भिक्खू वा० से जं पुण जाणिज्जा जा य भासा सच्चा १ जा य भासा मोसा २ जा य भासा सच्चामोसा ३ जा य भाषा असच्चऽमोसा ४, तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परियावणकरिं उद्दवणकरिं भूओवघाइयं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण जाणिज्जा, जा य भासा सच्चा सहुमा जा य भासा असच्चामोसा तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूओवघाइयं अभिकंख भासं भासिज्जा ॥ (सू० १३३)

ते भिक्षु आ प्रमाणे शब्दने जाणे, के भाषा द्रव्य वर्गणाओनो वाक्योग निसरवाथी पूर्वे जे आ भाषा हती, ते वाक्योगवडे निसरवाथीज भाषा कहेवाय छे, आ कहेवाथी तालवुं ओठ विगेरेना व्यापारथी पूर्वे जे शब्द नहोता, ते ते उत्पन्न करवाथी खुलेखुलुं (प्रकट) कृतक (बनाववा) पणुं सूचव्युं छे. जेम माटीना पिंडमां प्रथम घडो नहातो, ते कुंभारे प्रयोजन आवतां दंडचक्रवडे घडाने बनाव्यो, तेम ते भाषा बोलाया पछी नाश पामती होवाथी शब्दोनुं बोलाया पछीना काळमां अभाषापणुं छे, जेमके घडो फुटवाथी

ठीकरां थयां, त्यारे ते कपाळ (ठीकरुं—ठीब) नीअवस्थामां घडो ते अघडो थयो छे, आ वाक्योवडे शब्दोनो पूर्व अभाव तथा प्रध्वंस (नाश थवाथी) अभाव बताव्यो छे, हवे चारे भाषामांथी न बोलवा योग्य भाषाने कहे छे, ते भिक्षु आ प्रमाणे जाणे के १ सत्य २ मृषा ३ सत्यामृषा ४ असत्यामृषा एम भाषा चार भेदे छे. तेमां मृषा सत्यामृषा तो बोलवा योग्य नथी, पण सत्य वचन पण कर्कश विगेरे दुर्गुणवाळुं न बोलवुं, ते बतावे छे.

(१) अवद्य (पाप) सहित वर्त्ते, ते 'सावद्य भाषा' सत्य होय तो पण न बोलवी, (२) सक्रिय—ते जेमां अनर्थ दंडनी क्रिया प्रवर्त्ते, ते पण भाषा साधुए न बोलवी (३) कर्कश ते चावेला अक्षरवाळी (४) कटुक–ते चित्तने उद्वेग करनारी (५) निष्ठुर ते हक्क प्रधान (ठपका रुप) (६) परुषा ते पारकाना मर्म उघाडवा रुप (७) कर्मास्रव करनारी, तेज प्रमाणे छेदन भेदन ते ठेठ अपद्रावण करनारी सुधी जे जीवोने उपताप करनारी होय, ते मनथी विचारीने सत्य होय तो पण न बोलवी, हवे बोलवानी भाषा कहे छे. ते भिक्षु आ प्रमाणे जाणे, के जे भाषा सत्य छे, तथा कोमळ विगेरे गुणोवाळी जीवोने उपताप न करनारी भाषा छे, ते बोलवी, तथा कुशाग्रहबुद्धिवडे विचारीने जे सूक्ष्म भाषा बोलाय, ते वखते मृषा पण सत्य जेवी गुणकारी थाय, जेम के मृग देख्युं होय, छतां शिकारी आगळ ते मृगनी रक्षा खातर 'न देख्युं' कहे, तो सत्य जेवुंज गुणकारी छे, कह्युं छे के.

अलिअं न भासिअव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं । सच्चंपि होइ अलिअं जं परपीडाकरं वयणं ॥ १ ॥

जेम जूठ न बोलवुं, तेम सत्य पण जे परने पीडाकारक वचन होय ते जूठा जेवुं जाणीने बोलवुं नहि, तथा जे असत्यामृषा छे ते आमंत्रणी (आवो) आज्ञापकनी (आम करो) विगेरे पण जे असावद्य अक्रिय अकठोर जीवने दुःख न देनारी होय, ते मनथी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचारीने हमेशां साधुए बोलवी—

से भिक्खू वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा–होलित्ति वा गोलित्ति वा वसुलेत्ति वा कुपक्खेत्ति वा घडदासित्ति वा साणेत्ति वा तेणित्ति वा चारिएत्ति वा माईत्ति वा मुसावाइत्ति वा, एयाइं तुमं ते जणगा वा, एअप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं जाव भूआवघाइयं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अप्पडिसुणेमाणे एवं वइज्जा–अमुगे इ वा आउसोत्ति वा आउसंतारोत्ति वा सावगेत्ति वा उवासग्गेत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मपिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खु वा २ इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणे नो एवं वइज्जा-होली इ वा गोलित्ति वा इत्थीगमेणं नेयव्वं ॥ से भिक्खू वा २ इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अप्पडिसुणेमाणी एवं वइज्जा--अउसोत्ति वा भइणित्ति वा भोईति वा भगवईति वा साविगेति वा उवासिएत्ति वा धम्मिएत्ति वा धम्मप्पिएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ (सू० १३४)

ते साधु जरुर पडतां कोइ माणसने बोलावे, अथवा पूर्वे बोलाव्यो होय, पण ते माणसे लक्ष्य न आप्युं होय, तो तेने आवा कठोर शब्दो न कहेवा, के तुं होल, गोल (आ बंने शब्दो बीजा देशमां अपमान रुपे छे,) तथा वृषल अथवा कजात घटदास कुत्तो चोर, अथवा चारिकमायी मृषावादी अथवा तुं ! आवो अथवा तारां मावाप आवां छे ! आ भाषा कठोर होवाथी साधुए न बोलवी, पण तेथी विपरीत ते अकठोर भाषा बोलवी, एटले आमंत्रण कर्या छतां पेला पुरुषनुं लक्ष्य न होय, तो शांतिथी कहेवुं के हे भाइ ! आयुष्मन् ! अथवा बहु आयुष्मन्त श्रावक धर्म प्रिय—अर्थात् तेने प्रिय लागे, तेवुं वचन कहेवुं, तेज प्रमाणे स्त्रीने

For Private and Personal Use Only

आश्रयी पण होली गोली विगेरे कठोर वचन न कहेवां, पण तेनुं लक्ष्य खेंचवा आयुष्मती, बाइ भोगी भगवती श्राविका उपासिका धार्मिका धर्म प्रिया इत्यादि असावद्य वचन विचारीने बोलवुं. एज प्रमाणे अभाषणीय भाषाना बीजा प्रकारो बतावे छे.

से भि० नो एवं वइज्जा—नभोदेवित्ति वा गज्जदेवित्ति वा विज्जुदेवित्ति वा पवुट्ठदे० निवुट्ठदेवित्तिए वा पडउ वा वासं मा वा पडउ निप्फज्जउ वा सस्सं मा वा नि० विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ सो वा राया जयउ वा मा जयउ, नो एयप्पगारं भासं भासिज्जा ॥ पन्नवं से भिक्खू वा २ अंतलिक्खेत्ति वा गुज्झाणुचरिएत्ति वा संमुच्छिए वा निवइए वा पओ वइज्जा वुट्ठबलाहगेत्ति वा, एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जाइज्जासि त्तिबेमि २–१–४–१ ॥ भाषाध्ययनस्य प्रथमः ॥ (सू० १३९)

वळी ते साधु असंतने योग्य आवी जे भाषा छे तेने न बोले, जेमके नभोदेव, गर्जतोदेव, विजळीदेव प्रवृष्टदेव निवृष्टदेव (आमां वर्षाद वीजळी विगेरेने देव न कहेवो ते सूचव्युं छे.) तथा वर्षाद पडो अथवा न पडो, सूर्य उगो, अथवा न उगो, आ राजा जीतो अथवा न जीतो, आवी भाषा पण न बोले, पण कारण पडे वरसादने अंगे बोलवु पडे, तो संयत भाषाए आ प्रमाणे बोलवुं के अंतरीक्षमांथी वरसाद पडे छे. अथवा गुह्यानुं चरित छे, संमूर्छिम छे अथवा वादळां वरसे छे, आ प्रमाणे साधु साध्वीए खुशामत विनानुं सादु वचन बोलवुं, तेज साधुनी साधुता छे, ते सर्व अर्थोवडे समजीने समिति सहितपणे बोलवामां प्रयत्न करवो. चोथो अध्ययननो १ लो उद्देशो पूरो थयो.

बीजो उद्देशो.

पहेलो कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां वाच्य अवाच्यनुं विशेषपणुं बताव्युं, अहीं पण तेज बाकीनुं कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे,

से भिक्खू वा जहा वेगईयाइं रूवाइं पासिज्जा तहावि ताइं नो एवं वइज्जा, तंजहा—गंडी गंडीति वा कुट्ठी कुट्ठीति वा जाव मेहुमेहुणीति हत्थच्छिन्नं वा हत्थच्छिन्नेत्ति वा एवं पायछिन्नेत्ति वा नक्कछिण्णेइ वा कण्णछिन्नेइ वा उट्ठछिन्नेति वा, जेयावन्ने तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं बूइया कुप्पंति माणवा ते यावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा तहावि ताइं एवं वइज्जा—तंजहा—ओयंसी ओयंसित्ति वा तेयंसि तेयंसीति वा जसंसी जसंसीइ वा वच्चंसी वच्चंसीइ वा अभिरूयंसी २ पडिरूवंसी २ पासाइयं २ दरिसणिज्जं दरिसणीयत्ति वा, जे यावन्ने तहप्पगारा तहप्पगाराहिं भासाइं बुइया २ नो कुप्पंति माणवा तेयावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगइयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंजहा—वप्पाणि वा जाव गिहाणि वा, तहावि ताइं नो एवं वइज्जा, तंजहा—सुकडे इ वा सुट्ठुकडे इ वा साहुकडे इ वा कल्लाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० जहा वेगईयाइं रूवाइं पासिज्जा, तंजहा—वप्पाणि वा जाव गिहाणि वा तहावि ताइं एवं वइज्जा, तंजहा—आरंभकडे इ वा सावज्जकडे इ वा पयत्तकडे इ वा पासाइयं पासाइए वा दरीसणीयं दरसणीयंति वा अभिरूवं अभिरूवंति वा पडिरूवं पडिरूवंति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ (सू० १३६)

ते भिक्षु कोइ पण रुपो जुए, तो पण तेवां रुपो बोले नहि, जेमके कोइने गंडमाळनो रोग थयो होय गंडीपद (गुमडांवाळा) तथा कोढीया अथवा पूर्वे बताव्या प्रमाणे १६ रोगवाळाने ते रोगवाळो कही चीडाववो नहि, ते छेवटे मधु मेही सुधी छे. आ रोगीओ सिवाय कोइने पाछळथी अंगमां खोड आवी होय, हाथ छेदायेलो होय, तेम पग नाक कान होठ विगेरे छेदायला होय, तथा काणो होय कुंट होय, तेवाने तेवा शब्दोए बोलाववाथी तेओ कोपायमान थाय छे, माटे तेवाने तेवां वचनथी बोलाववो नहि,

तेवाने जरुर पडतां केवी रीते बोलाववा ते कहे छे, ते भिक्षु कदाच गंडीपद विगेरे व्याधिवाळा माणसने जुए, अने तेने बोलाववो होय, तो तेनो कोइपण सारो गुण जोइने तेने उद्देशीने हे ओजस्वी ! हे तेजस्वी ! इत्यादि आमंत्रणे बोलाववो.

आ संबंधमां कृष्णावासुदेवनुं दृष्टांत छे.

एक सडेलो कुतरो राजमार्गमां पडेलो तेनी दुर्गंधथी कृष्णना माणसो आडे रस्ते उतर्या, पण कृष्णे पोते तेज रस्ते जइ तेनी दुर्गंधीनी उपेक्षा करी फक्त तेना मोढामां सुंदर दांतनी श्रेणी जोइ तेनी प्रशंशा करी, तेज प्रमाणे साधुए तेवा रोगामांथी कोइपण गुण शोधी तेने बोलाववो, एटले पराक्रमी तेजस्वी वक्ता यशस्वी सुरुप मनोहर रमणीय देखवा योग्य अथवा तेवो जे गुण होय, तेने उद्देशीने बोलाववो, के तेनाथी ते नाखुश न थाय.

तथा मुनिए कोट किल्ला घर विगेरे जोइने एम न कहेवुं के आ रुडा बनावेला छे, खुब बनाव्या छे, फायदाकारक छे, अथवा तमारे आवा करवा लायक छे, एवा प्रकारनी बीजी पण अधिकरणने अनुमोदनारी सावद्य भाषा बोलवी नहिं.

छतां जरुर पडे, तो कहेवुं, के महा आरंभथी आ करेल छे, तथा बहु महेनते करेल छे, तथा प्रासाद विगेरे रमणिक देखावा

योग्य छे, सरखी बांधणीवाळा शोभीता छे, विगेरे निरवद्य भाषा बोलवी.

से भिक्खू वा २ असणं वा० उवक्खडियं तहाविहं नो एवं वइज्जा, तं० सुकडेत्ति वा सुट्ठुकडे इ वा साहुकडे इ वा कल्लाणे इ वा करणिज्जे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाय एवं वइज्जा, तं०—आरंभकडेत्ति वा सावज्जकडेत्ति वा पयत्तकडे इ वा भद्दयं भद्देत्ति वा ऊसढं ऊसढे इ वा रसियं २ मणुन्नं २ एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ (सू० १३७)

साधुए कोइ जग्याए रस्सोइ तैयार थएली जोइ होय तो एम न कहेवुं के पकवान्न सारां कर्यां छे, सारां तळ्यां छे, सुंदर बनाव्यां छे, कल्याण करनारां छे, बीजाए आवां करवा योग्य छे, आवुं सावद्य वचन साधुए बोलवुं नहि.

पण जरुर पडतां तेवुं चारे प्रकारनुं अशन विगेरे जोइने कहेवुं के आरंभथी सावद्य प्रयासे बनावेलुं छे, तथा सारां होय तो सारां ताजां होय तो ताजां रसवाळां मनोज्ञ एम निर्दोष भाषा बोलवी. फरीथी अभाषणीय बतावे छे—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा मिगं वा पसुं वा पक्खि वा सरीसिवं वा जलचरं वा से त्तं परिवूढकायं पेहाए नो एवं वइज्जा—थूले इ वा पमेइले इ वा वट्टे इ वा वज्झे इ वा पाइमे इ वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं वा जाव जलयरं वा सेत्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वइज्जा परिवूढकाएत्ति वा उवचियकाएत्ति वा थिरसंघयणेत्ति वा चियमंससोणिएत्ति वा बहुपडिपुन्नइंदिइएत्ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा २ विरूवरूवाओ गाओ पेहाए नो एवं वइज्जा, तंजहा—गाओ दुज्झाओत्ति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा दम्मेत्ति वा गोरहत्ति वा वाहिमत्ति वा रहजोग्गत्ति वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भि० विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वइज्जा, तंजहा–जुवंगवित्ति वा धेणुत्ति वा रसवइत्ति वा हस्से इ वा महल्ले इ वा महव्वए इ वा संवहणित्ति वा, एअप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासिज्जा ॥ से भिक्खू वा० तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि वा रुक्खा महल्ले पेहाए नो एवं वइज्जा, तं०—पासायजोग्गाति वा तारणजोग्गाइ वा गिहजोग्गाइ वा फलिहजो० अग्गलजो० नावाजो० उदग० दोणजो० पीढचंगबेरनंगलकुलियजंतलट्ठीनाभिगंडीआसणजो० सयणजाणउवस्सयजोगाइं वा, एयप्पगारं० नो भासिज्जा ॥ से भिक्खु वा० तहेव गंतु० एवं वइज्जा तंजहा—जाइमंता इ वा दीहवट्टा इ वा महालया इ वा पाययसाला इ वा विडिमसाला इ वा पासाइया इ वा जाव पडिरूवाति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासिज्जा ॥ से भि० बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते नो एवं वइज्जा, तंजहा–पक्का इ वा पायखज्जा इ वा वेलोइया इ वा टाला इ वा वेहिया इवा, एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव नो भासिज्जा ॥ से भिक्खू० बहुसंभूया वणफला अंबा पेहाए एवं वइज्जा, तं०—असंथडा इ वा बहुनिवट्टिमफला इ वा बहुसंभूयां इ वा भूयरुवित्ति वा, एयप्पगारं भा० असा० ॥ से० बहुसंभूया ओसही पेहाए तहावि ताओ न एवं वइज्जा, तंजहा–पक्का इ वा नीलीया इ वा छवीइया इ वा लाइमा इ वा भज्जिमा इ वा बहुखज्जा इ वा, एयप्पगा० नो भासिज्जा ॥ से० बहु० पेहाए तहावि एवं वइज्जा, तं०—रुढा इ वा बहुसंभूया इ वा थिरा इ वा ऊसढा इ वा गब्भिया इ वा पसूया इ वा ससारा इ वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासि० ॥ (१३८)

For Private and Personal Use Only

ते साधु के साध्वी रस्तामां माणस बळद मृग पशु पक्षी सरीसृप जलचर कोइ पण पुष्ट शरीरवाळुं देखे तो आवुं न बोलवुं, के "आ स्थुल प्रमेदुर वृत्त अथवा वध करवा योग्य अथवा वहन करवा योग्य छे, अथवा मारीने रांधवा योग्य छे, अथवा देवताने बळी आपवा योग्य छे."

पण माणसथी लइने जलचर सुधीनुं कोइ पण पशु पंखी के जंतु परिवृद्ध (जाडा) शरीरवाळुं देखीने जरुर पडतां आवी रीते बोलवुं के आ जाडा शरीरनो छे, उपचित (पुष्ट) कायवाळो छे, स्थिर संघयणवाळो छे, अथवा लोही मांसे पुष्ट छे, अथवा पांच इंद्रियो पुरी छे, आवी निर्दोष भाषा बोले.

तेज प्रमाणे जुदा जुदा रुपवाळी गायोने साधु देखे, तो तेणे आवुं न कहेवुं, के आ गायो दोहवा योग्य छे, अथवा दोहवानो वखत छे, अथवा आ गोधलो (जुवान बळद) वाहन करवा जेवो छे, अथवा रथने योग्य छे, आवी सवाद्य भाषा न बोलवी, पण जरुर पडतां जुदी जुदी गायोने जोइ आ प्रमाणे बोलवुं के आ युवान गाय छे, अथवा रसवती धेनु छे, आ नानो बळद छे, आ मोटो छे, अथवा महाव्यय (मूल्य) वाळो छे, संवहन छे, आवो निरवद्य भाषा बोले.

तेज प्रमाणे साधु उद्यनमां जतां पर्वत वन विगेरेमां मोटां झाड देखीने आवुं न बोले के, आ महेल बनाववा योग्य, तोरण योग्य छे, घर योग्य, फलिहाने योग्य, अर्गला नाव के पाणी लाववाने परनाळ बनववा योग्य अथवा द्रोण बनाववा योग्य पीढ चंगबेर हळ कुलिकयंत्रनी लाकळी (घाणी) नाभि गंडि असाण विगेरे ओजारनी वस्तुओ बनाववा योग्य छे, तथा सुवानां पाटीआं गाडी गाडां उपाश्रय बनाववा योग्य छे. अथवा तेवुं कंइ पण बीजुं सावद्य वचन न बोले.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण जरुर पडतां तेवां वृक्षो बतावबां पडे, तो आ उत्तम जातिनां वृक्षो छे, जाडा थडवाळा छे, मोटां झाड विशाळ शाखावाळां विस्तीर्ण शाखावाळां देखावा योग्य रमणीय छे, आवी निरवद्य भाषा बोले.

ते साधु मार्गमां घणां फळवाळां झाडो देखे, तो आवुं न बोले के आ पाकां फळ छे, गोटली बंधायेलां फळ छे. ते खाळामां नाखीने कोद्रव के पराळना घासथी पकावीने खावा योग्य छे. ताथ बरोबर पाकेलां होवाथी झाड उपरथी तोडी लेवा योग्य छे, कारणके हवे वधारे वखत उपर रही शके तेम नथी. 'टाल' ते गोटली बंधाया विनानां कोमळ फळ छे, तथा आ फळोए पेशी संपादन करवाथी चीरवा योग्य छे, आवी फळ संबंधी सावद्य भाषा साधुए न बोलवी, पण जरुर पडतां नीचे प्रमाणे बोलवुं–आ फळना भारथी असमर्थ झाडो छे, घणां फळवाळां छे, बहु संभूत छे, तथा भूतरुप ते कोमळ फळो छे, आवां आंबानां झाड प्रधान होवाथी तेनो दृष्टांत आपेल छे, आवी निरवद्य भाषा साधुए बोलवी.

तथा पाकेली औषधि देखीने एम न बोलवुं, के आ पाकी छे, अथवा नीली आर्द्रा पाणीवाळी छालवाळी धाणी बनावा योग्य रोपवा योग्य, आ रांधवा योग्य भंजन करवा योग्य बहु खावा योग्य अथवा पुंख बनाववा योग्य छे. पण जरुर पडतां आम बोले के आ रुढा औषधि छे, आवी निरवद्य भाषा बोलवी. वळी—

से भिक्खू वा० तहप्पगाराइं सद्दाइं सुणिज्जा तहावि एयाइं नो एवं वइज्जा, तंजहा–सुसदेत्ति वा दुसदेत्ति वा, एयप्पगारं भासं सावज्जं नो भासिज्जा ॥ से भि० तहावि ताइं एवं वइज्जा, तंजहा—सुसद्दं सुसद्दित्ति वा दुसद्दं दुसद्दित्ति वा, एयप्पगारं असावज्जं जाव भासिज्जा, एवं रूवाइं किण्हेत्ति वा गंधाइं सुरभिगंधित्ति वा २ रसाइं तित्ताणि वा ५ फसाइं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कक्खडाणि वा ८ ॥ (सू० १३९)

कोइ जग्याए साधु शब्द सांभळे तो एम न बोले के आ सुंदर छे के खराब छे, अथवा मांगळिक छे के अमांगलिक छे, पण तेवा शब्दो बोलवानी जरुर पडे तो पछी शोभनने शोभन अने अशोभनने अशोभन कहे, ए प्रमाणे रुप (वर्ण) पांचने आश्रयी बे गंध सुरभि विगेरे तथा रस तीखा विगेरे पांच, अने कर्कश विगेरे आठ फरस आश्रयी पण विचारीने निरवद्य भाषा जरुर पडतां बोलवी.

से भिक्खू वा० वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च अणुवीइ निट्ठाभासी निसम्मभासी अतुरियभासी विवेगभासी समियाए संजए भासं भासिज्जा ९ एवं खलु० सया जइ (सू० १४०) त्तिबेमि २-१-४-२ भाषाध्ययनं चतुर्थम् २-१-४

उपर बधां सूत्रो कहीने छेवडनो सार कहे छे के ते साधु साध्वीए क्रोध मान माया लोभने दूर करी विचारी मुद्दानी वात निश्चय करीने धैयता राखी विवेकपूर्वक भाषा समिति युक्त पोते बनीने बोले आ भिक्षुनुं सर्वस्व छे.

चोथुं अध्ययन समाप्त थयुं.

चोथु कहीने पांचमुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, चोथामां भाषासमिति बतावी, त्यारपछी एषणासमिति कहेवाय छे. ते वस्त्रनी अंदर रहेली (तेने आश्रयी) कहे छे....

आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वारा उपक्रम विगेरे थाय छे, तेमां उपक्रमनी अंदर रहेल अध्ययनना अर्थाधिकारमां 'वस्त्र एषणा' बतावी छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार बताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पढमे गहणं बीए धरणं, पगयं तु दव्ववत्थेणं एमेव होइ पायं, भावे पायं तु गुणधारी ॥ ३१५ ॥

पहेलां उद्देशामां वस्त्रनी लेवानी विधि बतावी छे, बीजामां राखवानी विधि छे, नामनिष्पन्न निक्षेपामां वस्त्र एषणा छे, तेमां वस्त्रनो नाम विगेरे चार प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना सुगम छे, द्रव्य वस्त्र त्रण प्रकारनुं छे, एकेंद्रियथी बनेलुं ते रु विगेरेनुं बनावेलुं सुतराऊ कापड छे, विकलेंद्रियथी बनेलुं चीनांशुक (रेशमी) वस्त्र छे, पंचेंद्रियथी बनेलुं ते कंबळ रत्न विगेरे छे, अने भाव वस्त्र अढार हजार शीलांग (संपूर्ण ब्रह्मचर्य) छे, पण अहीं तो द्रव्य वस्त्रथी अधिकार छे, ते निर्युक्तिकारे बतावेल छे, तेज प्रमाणे वस्त्र माफक पात्रांनो चार प्रकारे निक्षेपो छे, एम मानीनेज आ गाथामां निर्युक्तिकारे अति टुंकाणमां पात्रांनो निक्षेपो अडधी गाथामां बताव्यो छे, तेमां द्रव्य पात्र ते एकइंद्रिय विगेरेथी बनेलुं, अने भावपात्र तो साधु पोनेज गुणधारी होय ते छे. हवे सूत्रानुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त सूत्र बोलवुं जोइए ते आ छे—

से भि० अभिकंखिज्जा वत्थं एसित्तए, से जं पुण वत्थं जाणिज्जा, तंजहा—जंगियं वा भंगियं वा सणियं वा पोत्तगं वा खोमियं वा तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं वा जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं धारिज्जा नो बीयं जा निग्गंथी सा चत्तारिसंघाडीओ धारिज्जा, एगं दुहत्थवित्थारं दो तिहत्थवित्थाराओ एगं चउहत्थवित्थारं, तहप्पगारेहिं वत्थेहिं असंधिज्जमाणेहिं, अह पच्छा एगमेगं संसिविज्जा ॥ (सू० १४१)

ज्यारे ते साधुने वस्त्रनी जरुर पडे, त्यारे आ प्रमाणे तपास करे, आ जंगियं—उंट विगेरेना उननुं बनावेलुं छे, तथा भंगिक ते विकलेंद्रियनी लाळनुं (रेशमी) वस्त्र छे, साणय ते शण झाळनी छाल विगेरेनुं बनावेलुं छे, पोत्तग ते ताड (बगरना) पांदळां

For Private and Personal Use Only

सीवीने बनावेलुं छे, (खोमियं) ते रुनुं बनावेलुं सुतराउ कापड छे, तूलकड 'आ लाकडाना तूल' थी बनावेलुं छे, एज प्रमाणे तेवुं बीजुं पण वस्त्र जरुर पडतां राखे, जेवा साधुए जेटलां वस्त्र राखवां ते कहे छे. जे साधु जुवान छे, बळवान् छे, निरोगी छे, दृढ शरीरवाळो छे, अने धैर्य जेनुं दृढ छे, आवो साधु शरीरना रक्षण माटे एक वस्त्र धारण करे, पण बीजुं नहि, पण बीजुं वस्त्र पोते आचार्य विगेरे माटे राखे, ते पोते धारण न करे (उपयोगमां ले नहि) पण जे बाळक होय, दुर्बल, वृद्ध अल्प शक्तिवाळो, अल्प धैर्यवाळो होय, ते साधु जेम समाधि रहे, तेम बे त्रण पण धारण करे, पण जिनकल्पी तो जेवी प्रथमथी प्रतिज्ञा करे, ते प्रमाणे राखे, तेने अपवाद मार्ग नथी.

साध्वीनां वस्त्रो.

साध्वीओ चार वस्त्रो राखे. एक बे हाथ परिमाणनुं ते उपाश्रयमां ओढीनेज बेसे, बे त्रण हाथ पहोळां होय तेमानुं एक उजळुं गोचरी समये ओढे अने बीजुं बहार स्थंडिल जवुं होय त्यारे ओढे, चोथुं वस्त्र चार हाथनुं होय ते समवसरण विगेरेमां (व्याख्यान सांभळवा जतां) अखा शरीरने ढांकवाने माटे राखे, कोइ वखत आवुं वस्त्र न मळे तो पूर्वनुं बीजा साथे सांधी ले अने ओढे.

से भि० परं अद्धजायणमेराए वत्थपडियाए नो अभिसंधारिज्ज गमणाए ॥ (सू० १४२)

वळी ते भिक्षु वस्त्र लेवाने माटे अडधा योजन (बेगाउ) थी वधारे दूर जवानो विचार न करे.

से भि० से जं० अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइं जहा पिंडेषणाए भाणियव्वं ॥ एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहण० तहेव पुरिसंतरकडा जहा पिंडेसणाए ॥ (सू० १४३)

आ सूत्रमां बंने विभागो जीवोने दुःख देइ जे वस्त्रो बनावेल होय ते संबंधी छे. तेमां प्रथम विभागमां एक साधुने उद्देशीने

बनावेल होय, तो आधाकर्मिक होवाथी पिंडैशणामां बताव्या प्रमाणे जाणवुं, के ते न कल्पे.

बीजा विभागमां घणा साधु एक साध्वी अथवा घणी साध्वीओ आश्रयी तेमज घणा श्रमण माहण आश्रयी बनावेल होय तो तेमने वस्त्र आप्या पछी पण साधुने न कल्पे. हवे उत्तर गुण आश्रयी कहे छे.

से भि० से जं० असंजए भिक्खुपडियाए कीयं वा धोयं वा रत्तं वा घट्ठं वा मट्ठं वा संपधूमियं वा तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं जाव नो० अह पु० पुरिसं० जाव पडिगाहिज्जा ॥ (सू० १४४)

साधुने उद्देशीने गृहस्थे खरीद्युं होय, धोयुं होय, रंग्युं होय, घस्युं होय, कोमळ बनाव्युं होय, धुपथी सुगंधीवाळुं बनाव्युं होय, ते ज्यांसुधी बीजा माणसने न आपे, त्यांसुधी न कल्पे, बीजाने आप्या पछी ते कल्पे.

से भिक्खू वा २ से जाइं पुण वत्थाइं जाणिज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तं—आईणगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणाणि वा आयाणि वा कायाणि वा खोमियाणि वा दुगुल्लाणि वा पट्टाणि वा मलयाणि वा पन्नुन्नाणि वा अंसुयाणि वा चीणंसुयाणि वा देसरागाणि वा अमिलाणि वा गज्जफलाणि वा फालियाणि वा कोयवाणि वा कंबलगाणि वा पावराणि वा अन्नयराणि वा तह० वत्थाइं महद्धणमुल्लाइं लाभे संते नो पडिगाहिज्जा ॥ से भि० आइण्णपाउरणाणि वत्थाणि जाणिज्जा, तं—उद्दाणि वा पेसाणि वा पेसलाणि वा किण्हमिगाईणगाणि वा नीलमिगाईणगाणि वा गोरमि० कणगाणि वा कणगकंताणि वा कणगपट्टाणि वा कणगखइयाणि वा कणगफुसियाणि वा वग्गाणि वा विवग्घाणि वा (विगाणि वा) आभरणाणि वा आभरणवि चित्ताणि वा, अन्नयराणि तह० आईणपाउरणाणि वत्थाणि लाभे संते नो० ॥ (सू० १४५)

ते साधु वळी महा धन मूल्यनां (किंमती) वस्त्र जाणे, तो ते मळतां होय तो पण ले नहि, 'आ जिन' ते उंदर विगेरेनां चामडां अथवा वाळनां बनेलां (धुंसा कहेवाय छे ते) तथा श्लक्ष्ण तेमां जुदी जुदी जातनां रंगित चित्र बनाव्यां होय, कल्याण (घणां सुंदर) वस्त्रो होय, 'आयाणि' कोइ ठंडा देशमां बकरानां वाळ घणा किंमती होय तेनां बनावेलां वस्त्र (शाल) होय, तथा कोइ देशमां इंद्र नील वर्ण (रंग) नो कपास थाय छे, तेनां बनावेलां क्षोमिक–सामान्य रुनां बनावेल (पण किंमती) होय, तथा गौड देशमां बनेल उत्तम रुनां बनावेल होय, पट्ट सूत्र नां बनावेल पट्ट वस्त्र, मलय देशना बनावेलां सूत्रनां मलय वस्त्र पन्नुन्न ते झाळनी छालना तंतुमांथी बनावेल, अंशुक तथा चिन अंशुक विगेरे जुदा जुदा देशमां बनेलां भारे किंमतनां वस्त्रो तथा आवां बीजी जातनां पण जे भारे वस्त्रो होय ते आ लोक तथा परलोकना अपायो छे, माटे भारे किंमतनुं वस्त्र मळतुं होय तो पण आत्मार्थी साधुए लेवुं नहि.

तथा ते साधुए अजिननां बनावेलां वस्त्रो लेवां नहि, जेमके 'उद्र' ते सिंधु (सिंध) देशमां एक जातनां माछलां थाय छे, तेना सुक्ष्म चामडाना वस्त्रो बनावेल होय, 'पेस' सिंधमांज एक जातनां पशु थाय छे तेना चामडामांथी बनावेल तथा पेसल—तेनाज चामडांना पण सूक्ष्म रुवांथी बनावेल होय तथा काळां नीलां गौरां अनेक जातिनां मृगो होय छे, तेना चामडानां बनावेलां, तथा 'कनक' ते वस्त्रमां सोनाना रसथी सुंदर कर्यां होय तथा कन कांतिकनी जेवां सुंदर होय, कनक रस पट्ट कर्यां होय तथा सोनानां रसथी स्तबक बनावी सुंदर बनाव्यां होय, तथा कनक स्पृष्ट विगेरे वस्त्रो पूर्वे थतां हशे, (हालमां तेना तार बनावी जोडे वणे छे, ते जरीवाळा दुपट्टा विगेरे बने छे) तथा वाघनां चामळांनां वस्त्र तथा वाघना चामळाथी विचित्र बनाव्युं होय, तथा आभरण प्रधान [दागीना माफक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेमां मोती हीरा जड्या होय-गुंथ्या होय] तथां आभरण विचित्र गिरि विडक विगेरेथी विभूषित कर्या हाय, तथा तेवां बीजां भारे चामडांथी बनावेल भारे किंमतनां सुंदर वस्त्रो मळतां होय तोपण लेवां नहि. हवे वस्त्र ग्रहणना अभिग्रहनी विशेष विधिने कहे छे.

इच्चेइयाइं आयतणाइं उवाइकम्म अह भिक्खू जाणिज्जा चउर्हि पडिमार्हि वत्थं एसित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा, से भि० २ उद्देसि वत्थं जाइज्जा, तं०-जंगियं वा जाव तूलकडं वा, तह० वत्थं सयं वा ण जाइज्जा, परो० फासुयं० पडि०, पढमां पडिमा १। अहावरा दुच्चा पडिमा-से भि० पेहाए वत्थं जाइज्जा, गाहावई वा० कम्मकरी वा से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा २ दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं वत्थं ?, तहप्प० वत्थं सयं वा० परो० फासुयं एस० लाभे० पडि०, दुच्चा पडिमा २। अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा० से जं तं पुण० अंतरिज्जं वा उत्तरिज्जं वा तहप्पगारं वत्थं सयं० पडि०, तच्चा पडिमा ३। अहावरा चउत्था पडिमा-से० उज्झियधम्मियं वत्थं जाइज्जा जं चऽन्ने बहवे समण० वणीमगा नावकंखंति तहप्प० उज्झिय वत्थ सयं परो० फासुयं जाव प०, चउत्थापडिमा ४ इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं जहा पिंडेसणाए ॥ सिया णं एताए एसणाए एसमाणं परो वइज्जा—आउसंतो समणा ! इज्जाहि तुमं मासेण वा दसराएण वा पंचराएण वा सुते सुततरे वा तो ते वयं अन्नयरं वत्थं दाहामो, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा नि० से पुव्वामेव आलोइज्जा—आउसोत्ति वा ! २ नो खलु मे कप्पइ एयप्पगारं संगारं पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं इयाणिमेव दलयाहि, से णेवं वयंतं परो वइज्जा-आउ० स० ! अणुगच्छाहि ती ते वयं अन्न० वत्थं दाहामो, से पुव्वामेव आलोइज्जा-आउसोत्ति ! वा २ नो खलु मे कप्पइ संगारवयणे पडिसुणित्तए०, से सेवं वयंत परो णेया वइज्जा—आउसोत्ति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा भइणित्ति वा ! आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो, अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं ४ समारंभ समुद्दिस्स जाव चेइस्सामो, एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा निसम्म तहप्पगारं वत्थं अफासुअं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ सिआ णं परो नेता वइज्जा—आउसोत्ति ! वा २ आहार एयं वत्थं सिणाणे वा ४ आघंसित्ता वा प० समणस्स णं दाहामो एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा नि० से पुव्वामेव आउ० भ० ! मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण वा जाव पघंसाहि वा, अभि० एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा पघंसित्ता दलइज्जा, तहप्प० वत्थं अफा० नो प० से णं परो नेता वइज्जा० भ० ! आहार एयं वत्थं सीओदगवियडेण वा २ उच्छोलेत्ता वा पहोलेत्ता वा समणस्स णं दाहामो०, एय० निग्घोसं तहेव नवरं मा एयं तुमं वत्थं सीओदग० उसि० उच्छोलेहि वा पहोलेहि वा, अभिकंखसि, सेसं तहेव जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से णं परो ने० आ० भ० ! आहरेयं वत्थं कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्सणं दाहामो. एय० निग्घोसं तहेव, नवरं मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव विसोहेहि, नो खलु मे कप्पइ एप्पगारे वत्थे पडिग्गाहित्तए, से सेवं वयं तस्स परो जाव विसोहित्ता दलइज्जा तहप्प० वत्थं अफासुअं नो प० ॥ सिया से परो नेता वत्थं निसिरिज्जा, से पुव्वा० आ० भ० ! तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जिस्सामि; केवली बूया आ०, वत्थं तेण बद्धे सिया कुंडले वा गुणे वा हिरण्णे वा सुवण्णे वा मणी वा जाव रयणावली वा पाणे वा बीए वा हरिए वा, अह भिक्खू णं पु० जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ॥ (सू० १४६)

हवे पछीनां कहेवातां आयतनोने उलंघीने साधु चार अभिग्रहवाळी प्रतिमाओने धारीने ते प्रमाणे वस्त्रोने शोधवानुं जाणे,

(१) उद्दिष्ट—में पूर्वे जे वस्त्र संकल्प्युं छे, ते याचिश, (२) प्रेक्षितं—में पूर्वे जे देख्युं छे, तेज याचीश पण बीजुं नहीं. (३) अंतर परिभोग अथवा उत्तरीय परिभोगवडे शय्यातरे वस्त्रने पहेरीने वापरी नांख्या जेवुं करी दीधुं होय ते लइश. (४) जे तद्दन फेंकी देवा जेवुं वस्त्र होय तेने याचिश. आ उपर बतावेलां चार सूत्रोनो समुदाय अर्थ छे. आ चारे प्रतिमाओनी बाकीनी विधि पिंडैषणा माफक जाणवी. (स्थविरकल्पीने चारे कल्पे, जिन कल्पीने पाछळनी बेज कल्पे, पण ते बधा जिनेश्वरनी आज्ञामां होवाथी परस्पर निंदे नहि.)

(णं वाक्यनी शोभा माटे छे) हवे साधु वस्त्र शोधवा जतां कोइ गृहस्थ एम वायदो करे, के तमे मास, दस दिवस के पांच दिवस पछी आवशो, तो हुं आपीश. आवुं कहे तो साधुए ते स्वीकारवुं नहि, पण कहेवुं के आपवुं होय तो हमणांज आपो, अमे वायदानुं स्वीकारता नथी. फरीथी गृहस्थ कहे के तो थोडीवार पछी आवजो हुं आपीश, ते पण स्वीकारवुं नहि. कहेवुं के भाइ! आपवुं होय तो हमणां आपो, ते वखते गृहस्थ पोतानी बेन विगेरेने बोलावी कहे, के वस्त्र घरमां छे ते लाव, आपणे साधुने ते वस्त्र आपी दइए अने आपणा माटे प्राणी विगेरेनो आरंभ करीने पछी आपणे बनावी लइशुं. आवुं वस्त्र 'पश्चात् कर्म' ना भयवाळुं होवाथी मळतुं होय छतां पण लेवुं नहि. तेज प्रमाणे गृहस्थ कहे, के आ वस्त्र स्नान करी सुगंधी द्रव्यवडे सुंदर बनावी आपीए, ते सांभळीने साधुए ना पाडवी, छतां गृहस्थ हठ करीने सुगंधीवाळुं बनावा जाय तो लेवुं नहि.

एज प्रमाणे गृहस्थ पाणीथी धोइने आपवा कहे, तो एमने एम याचवुं, पण ते हठ करे, तो ते लेवुं नहि. अथवा गृहस्थ कहे के तेमां कंद विगेरे छे, ते दूर करीने वस्त्र आपीए, ते वस्त्र मळे तो पण लेवुं नहि. वळी ते गृहस्थ निर्दोष वस्त्र आपे, तो

लेतां कहेवुं के हुं ते वस्त्रने बधे जोइ लउं, पण तेनी समक्ष एक छेडाथी बीजा छेडा सुधी जोया विना लेवुं नहि, कारण के जाया विना लेतां केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, कारण के तेमां कांइ पण कुंडळ, दोरो, चांदी, सोनुं, मणी, रत्नावळी विगेरे आभारण बांध्युं होय, अथवा सचित्त वस्तु, जंतु, बीज, भाजी होय तो दोष लागे, माटे साधुनी आ प्रतिज्ञा छे, के वस्त्र देखीने लेवुं

से भि० से जं० सअंडं० ससंताणं तहप्प० वत्थं अफा० नो प० ॥ से भि० से जं अप्पंडं जाव संताणगं अनलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं न रुच्चाइ तह अफा० नो प० ॥ से भि० से जं अप्पंड जाव संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चाइ, तह० वत्थं फासु० पडि० ॥ से भि० नो नवए मे वत्थेत्तिकट्टु नो बहुदेसिएण सिणाणेण वा जाव पघंसिज्जा ॥ से भि० नो नवए मे वत्थेत्तिकट्टु नो बहुदे० सीओदगवियडेण वा २ जाव पहोइज्जा ॥ से भिक्खू वा २ दुब्भिगंधे मे वत्थित्तिकट्टु नो बहु० सिणाणेण तहेव बहुसीओ० उस्सि० आलावओ ॥ (सू० १४७)

ते भिक्षु लेवाना वस्त्रने नाना जंतुनां इंडावाळुं समजे, अथवा करोळीयाना जाळावाळुं समजे तो मळवा छतां पण ले नहि, कदाच इंडा विनानुं होय, पण घणुं हीन (नानुं) होय तो काम पुरतुं न थाय, माटे अनल कहेवाय ते लेवुं नहि.

तथा अस्थिर (जीर्ण) होय, अथवा अध्रुव ते स्वल्पकाळनी अनुज्ञापना होय, तथा अप्रशस्त प्रदेशवाळुं होय, अथवा खंजर विगेरे कलंकवाळुं होय तो लेवुं नहि, तेज बतावे छे.

चत्तारि देविया भागा, दो य भागा य माणुसा । आसुरा य दुवे भागा, मज्झे वत्थस्स रक्खसो ॥ १ ॥
देवीएसुत्तमो लाभो, माणुसेसु अ मज्झिमो । आसुरेसु अ गेलन्नं, मरणं जाण रक्खसे ॥ २ ॥

चार देवता संबंधी भाग छे, अने बे भाग मनुष्य संबंधी छे, बे भाग असुर संबंधी छे, वस्त्रना मध्य भागमां राक्षसना भागो छे. (१) दैविकमां उत्तम लाभ छे, मनुष्यमां मध्यम छे, आसुर भागमां मांदापणुं छे, अने राक्षस भागमां मृत्यु छे, एवुं जाण-तेनी स्थापना आ प्रमाणे छे— लक्खण हीणो उवही, उवहणई नाणदंसण चरित्तं

लक्षणथी हीन जे उपधि छे, ते ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने हणे छे, तेथी हीन होय ते लेवुं नहि, तथा प्रशस्य मानवाळुं होय, पण ते आपतां दाता [देनार] नुं मन नाराज थतुं होय, तो ते साधुने कल्पे नहि.

आ प्रमाणे अनल अथिर अध्रुव अधारणीय ए चार पदोथी सोळ भागा थाय छे, तेमां प्रथमना पंदर अशुद्ध छे, पण चारे भांगे शुद्ध एवो सोळमो भांगोज काम लागे. माटे सूत्रमां अलं (समर्थ) स्थिर, ध्रुव धारणीय ए चार गुणवाळुं वस्त्र मळे तो लेवुं कह्युं छे.

हवे ते भिक्षु एम जाणे के मारुं वस्त्र नवुं नथी, माटे थोडा घणा पाणीथी सुगंधी द्रव्यथी थोडुं मसळीने के घणुं मसळीने सुगंधीवाळुं बनावे, अथवा मारुं वस्त्र नवुं न होवाथी थोडा पाणीथी धोइ लउं, एवुं पण न करे. अर्थात् आ बंने पाठो जिनकल्पीने आश्रयी छे. के भिक्षुने कपडुं मेलना लीधे गंधातुं होय तो पण ते मेल दूर करवा सुगंधी द्रव्यवडे के पाणीवडे धुवे नहि, पण स्थविरकल्पीने एटलुं विशेष छे के सुगंधीवाळुं बनाववा माटे नहि, पण लोकोनी निंद दूर करवा तथा रोगादिना कारणो दूर करवा प्रासुक पाणी विगेरेथी मेल दूर करवा यतनाथी धुवे पण खरो.

हवे धोयेलां कपडांने यतनाथी सुकाववानी विधि कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखिज्ज वत्थं आयावित्तए वा प०, तहप्पगारं वत्थं नो अणंतरहियाए जाव पुढवीए संतणए आया-

विज्ज वा प० ॥ से भि० अभि० वत्थं आ० प० त० वत्थं थूणंसि वा गिहेलुगंसि वा उसुयालंसि वा कामजलंसि वा अन्नयरे तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले नो आ० नो प० ॥ सेक्खू वा० अभि० आयावित्तए वा तह० वत्थं कुकियंसि वा भित्तंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अन्नयरे वा तह० अंतलि० जाव नो आयाविज्ज वा प० ॥ से भि० वत्थं आया० प० प० तह० वत्थं खंधंसि वा मं० मा० पासा० ह० अन्नयरे वा तह० अंतलि० नो आयाविज्ज वा० प० ॥ से० तमायाए एगंतमवक्कमिज्जा २ अहे झामथंडिल्लंसि वा जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिल्लंसि पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तओ सं० वत्थं आयविज्ज वा पया०, एवं खलु० सया जइज्जासि (सू० १४८) त्तिबेमि ॥ २–१–५–१ वत्थेसणस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

ते भिक्षु अव्यवहित जग्यामां वस्त्र न सुकवे, वळी सुकववा इच्छे, तो थांभा उपर. उंबरा उपर, ऊखळी उपर तथा स्नान पीठ (नावाहना ओटला) उपर न सुकवे, तथा कुक्यि भिंत, शिला, लेलु अथवा तेवा अधर स्थान उपर पडवाना भयथी सुकवे नहि, तथा स्कंध मांचो प्रासाद हवेली अथवा तेवा बीजा कोइ अधर भागमां पडवाना भयथी सुकावे नहि, पण जो सुकाववानी खास जरुर हो तो, एकांतमां जइने अचित्त जग्या जोइने ओघाथी पुंजीने आतापना विगेरे करे, आज भिक्षुनी सर्व सामग्री छे. (आमां कपडां सुकववानुं स्थान अचित्त जग्या बतावी, तथा अधर लटकतां राखवानी ना पाडी, तथा जमीन पर पडतां यतना न रहे, माटे जग्या पुंजीने एकांतमां सुकववां वधारे सारुं छे.)

पहेलो उद्देशो कहीने बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां वस्त्र लेवानी विधि बतावी, अने आ उद्देशामां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहेरवानी विधि कहे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ प्रथम सूत्र छे,

से भिक्खू वा० अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाइज्जा अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारिज्जा नो धोइज्जा नो रएज्जा नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारिज्जा अपलिउंचमाणो गामंतरेसु० ओमचेलिए, एवं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं ॥ से भि० गाहावइकुलं पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइकुलं निक्खमिज्ज वा पविसिज्ज वा, एवं बहिय विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा गामणुगामं वा दूइज्जिज्जा, अह पु० तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए नवरं सव्वं चीवरमायाए ॥

ते साधु साधुपणाने योग्य कपडां याचे अने जेवां लीधां होय तेवांज पहेरे, पण तेमां कंइ पण शोभा करे नहि, ते कहे छे, लीधेला वस्त्रने धुए नहि, रंगे नहि तथा बकुशपणुं धारण करीने धोइने रंगेलां कपडां काइ आपे तो पण लेइने पहेरे नहि तथा तेवां साधुने योग्य कपडां पहेरीने बीजे गाम जतां वस्त्रोने छुपाव्या विना सुखथीज विहार करे, कारणके प्राये आ असार वस्त्रनो धारण करनारो छे, आज साधुनुं संपूर्ण साधुपणुं छे, के आवां सादां कल्पनीय वस्त्र पहेरवां.

वळी ते भिक्षु गोचरी जाय तो वस्त्रो बधां साथे लेइ जाय तेज प्रमाणे स्थंडिल जाय अथवा अभ्यास करवा बहार जाय तो पण लेइने जाय, पण एटलुं ध्यान राखवुं के पिंडएषणामां कह्या मुजब वरसाद के धुमस वरसतां होय तो जिनकल्पी बहार न जाय अने स्थविरकल्पी जोइए तेटलांज वस्त्र बहार लइ जाय, (आ सूत्रो जिनकल्पी आश्रयी छे, तेम वस्त्रधारीनुं विशेषण होवाथी स्थविरकल्पीने पण लागु पडे, तो तेमां विरुद्ध नथी, पिंडैषणामां उपधिने लेइ जवानुं कह्युं. आ सूत्रमां वस्त्रोने आश्रयी कह्युं छे,)

For Private and Personal Use Only

हवे वापरवा लीधेलुं वस्त्र बगळतां शुं करवुं ते कहे छे.

से एगइओ मुहुत्तगं २ पाडिहारियं वत्थं जाइज्जा जाव एगाहेण वा दु० ति० चउ० पंचाहेण वा विप्पवसिय २ उवागच्छिज्जा, नो तह वत्थं अप्पणो गिण्हिज्जा नो अन्नमन्नस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा, नो वत्थेण वत्थपरिणामं करिज्जा, नो परं उवसंकमित्ता एवं वइज्जा—आउ० समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा ?, थिरं वा संतं नो पलिच्छिंदिय २ परट्ठविज्जा, तहप्पगारं वत्थं ससंधियं वत्थं तस्स चेव निसिरिज्जा नो णं साइज्जिज्जा ॥ से एगइओ एयप्पगारं निग्घोसं सुच्चा नि० जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं २ जाव एगाहेण वा० ५ विप्पवसिय २ उवागच्छंति, तह० वत्थाणि नो अप्पणा गिण्हंति नो अन्नमन्नस्स दलयंति तं चेव जाव नो साइज्जंति, बहुवयणेण वा भाणियव्वं, से हंता अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण वा ५ विप्पवसिय २ उवागच्छिस्सामि, अवियाइं एयं ममेव सिया, माइट्ठाणं संफासे नो एवं करिज्जा ॥ (सू० १५०)

कोइ साधु बीजा साधु पासे बे घडी वापरवा माटे वस्त्र मागेतो अने मागीने कारण प्रसंगे बीजे गाम विगेरे स्थळे गयो त्यां एकथी पांच दिवस सुधी रह्यो अने त्यां एकलो होवाथी सुवामां ते वस्त्र बगडी गयुं, पाछळथी ते वस्त्र लावीने जेनुं हतुं तेने तेवुं वस्त्र पाछुं आपे, तो तेना पूर्वना स्वामीए लेवुं नहि, लइने बीजाने पण आपवुं नहि, तेम कोइने उछीनुं पण आपवुं नहि, के तुं आ हमणां ले अने थोडा दिवस पछी बीजुं मने पाछुं आपजे. तथा ते वस्त्रनो ते समये पण बदलो न करे, तेम बीजा साधु पासे जइने आवुं बोलवुं पण नहि–के हे आयुष्यमन् ! श्रमण ! तुं आवा वस्त्रने पहेरवा के वापरवा इच्छे छे के ? पण ते वस्त्र जो कोइ

बीजो साधु कारण प्रसंगे एकलो जवा इच्छतो होय तो तेने ते वस्त्र आपवुं, कदाच ते वस्त्र जो जीर्ण थइ गयेलुं होय, तो तेना झीणा झीणा टुकला करीने परठवी देवुं, पण फाटेला वस्त्रने तेनो पूर्वनो स्वामी पहेरे नहि, पण ते बगाळनार साधुनेज पाछुं आपी देवुं अथवा कोइ एकलो जतो होय तो तेने आपी देवुं, आ प्रमाणे घणां वस्त्र आश्रयी (बहुवचनमां पण) जाणी लेवुं.

वळी ते साधुने आवीरीते वस्त्र पाछुं मळतुं जोइ बीजो साधु तेवो लालचथी उपरनो विषय समजीने हुं पण बीजानुं वस्त्र मुहूर्त माटे याचीने पांच दिवस सुधी बहार जइ वापरी आवीने बगाडी आवुं के ते वस्त्र पछी मारुंज थइ जाय ! आ कपट छे, माटे साधुए तेवुं न करवुं.

से भि० नो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करिज्जा विवण्णाइं न वण्णमंताइं करिज्जा, अन्न वा वत्थं लभिस्सामित्तिकट्टु नो अन्नमन्नस्स दिज्जा, नो पामिच्चं कुज्जा नो वत्थेण वत्थपरिणामं कुज्जा, नो परं उवसंकमितु एवं वदेज्जा-आउसो० ! समभिकंखसि मे वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा ?, थिरं वा संतं नो पलिच्छिंदिय २ परिट्ठविज्जा, जहा मेयं वत्थं पावगं परो मन्नइ, परं च णं अदत्तहारी पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स नियाणाय नो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छिज्जा, जाव अप्पुस्सुए, तओ संजियामेव गामाणुगामं दूइज्जिज्जा ॥ से भिक्खू वा० गामणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया, से जं पुण विहं जाणिज्जा इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थपडियाए संपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा जाव गामा० दूइज्जेज्जा ॥ से भि० दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा पडियागच्छेज्जा, ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउस० ! अहारेयं वत्थं देहि णिक्खिवाहि जहा रियाए णाणत्तं वत्थपडियाए, एयं खलु० सया जइज्जासि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(सू० १५१) त्तिबेमि वत्थेसणा समत्ता ॥ २-१-५-२

ते भिक्षु रंगवाळां वस्त्र कारण विशेषथी लीधां होय, तो चोर विगेरेना भयथी रंग विनानां न बनावे, उत्सर्गथी तो एज अधिकार छे के तेवां वस्त्र लेवांज नहि अने लीधां होय तो तेने रंग उतरवाप्रयत्न न करवो, अथवा वर्ण (खराब रंगनां) होय तो सारा रंगवाळां बनाववां नहि.

अथवा आ सादा वस्त्रने बदले सारुं मेळवीश, एवी इच्छाथी बीजाने आपी देवुं नहि, तेम प्रामित्य करवुं नहि, तथा वस्त्रथी वस्त्रनुं परिणाम करवुं नहि, तेम बीजा पासे जइने एवुं बोलवुं नहि, के हे आयुष्यमन् ! आ मारुं वस्त्र ओढवा पहेरवाने तुं इच्छे छे? अथवा सारुं होय तो टुकडा करीने फेंकी देवुं नहि, के जेथी मारुं वस्त्र बीजो गृहस्थ एम जाणे के ए खराब हतुं (माटे फेंकी दीधुं छे) वळी मार्गमां चोरना भयथी वस्त्रना रक्षण माटे उन्मार्गे डरीने न जाय तथा दोडवानी उत्सुकता राखवा विना इर्यासमिति पाळतो जाय अने गाम गाम विहार करे.

वळी रस्तामां जतां उज्जड मेदान जाणे, ज्यां वस्त्र लुंटनारा बहु चोरो वसता होय, तो तेमना डरथी पण उन्मार्गे न जाय, पण यतनाथी विहार करे, कदाच ते रस्ते जतां चोरो आवे अने वस्त्र मागे, अथवा लुंटी ले, तो शांतिथी उपदेश आपवो. न माने तो बाजुए परठवी देवुं अने फरी उपदेश देतां आपे तो लेवुं, पण कोइने कहेवुं नहि, तेम चोरने पकडववा नहि, वगेरे बधुं पूर्वे माफक जाणवुं

पांचमुं अध्ययन समाप्त थयुं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पात्राएषणा नामनुं छठ्ठं अध्ययन.

पांचमुं कहीने हवे छठुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. प्रथम अध्ययनमां पिंडविधि बतावी, ते आगममां कहेल विधिए वसतिमां आवीने वापरवुं, माटे बीजामां वसतिनी विधि बतावी, ते शोधवा माटे त्रीजामां इर्यासमिति कही, पिंडैषणामां नीकळेलाए केवी भाषा वापरवी, तेथी भाषासमिति कही, अने ते पडेला विना पिंड न लेवाय माटे पांचमामां वस्त्रएषणा कही, ते पिंडने पात्र विना लेवाय नहि, माटे आ संबंधवडे पात्र एषणा अध्ययन आव्युं, एना चार अनुयोगद्वारा थाय छे, तेमां नाम निष्पन्न निक्षेपामां पात्रएषणा अध्ययन छे, एनो निक्षेपो अर्थाधिकार एना पूर्वना अध्ययनमांज टुंकाणमां बताववा माटे निर्युक्तिकारे कहेलो छे, सूत्रानुगममां अस्खलितादि गुणयुक्त सूत्र उच्चारवुं जोइए ते आ छे.

से भिक्खू वा अभिकंखिज्जा पायं एसित्तए, से जं पुण पादं जाणिज्जा, तंजहा–अलाउयपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा, तहप्पगारं पायं जे निग्गंथे तरुणे जाव थिरसंघयणे से एगं पायं धारिज्जा नो बिइयं ॥ से भि० परं अद्धजोयणमेराए पायपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० से जं अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं ४ जहा पिंडेषणाए चत्तारि आलावगा, पंचमे बहवे समण० पगणिय २ तहेव ॥ से भिक्खू वा० अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहणे० वत्थेसणाऽऽलावओ ॥ से भिक्खू वा० से जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तं०– अयपा याणि वा तउपाया० तंबपाया० सीसगपा० हिरण्णपा० सुवण्णपा० रीरिअपाया० हारपुडपा० मणिकायकंसपाया०

For Private and Personal Use Only

संखसिंगपा० दंतपा० चेलपा० सेलपा० चम्मपा० अन्नयराइं वा तह० विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं अफासुयाइं नो० ॥ से भि० से जाइं पुण पाया० विरूव० महद्धणबंधणाइं, तं०—अयबंधणाणि वा जाव चम्मबंधणाणि वा, अन्नयराइं तहप्प० महद्धणबंधणाइं अफा० णो प० ॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइ कम्म अह भिक्खू जाणिज्जा चउहिं पडिमाहिं पायं एसित्तए तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू० उद्दिसिय २ पायं जाइज्जाः तंजहा—अलाउयपायं वा ३ तह० पायं सयं वा णं जाइज्जा जाव पडि० पढमा पडिमा १ । अहावरा० से० पेहाए पायं जाइज्जा, तं०—गाहावइं वा कम्म-करीं वा से पुव्वामेव आलोइज्जा, आउ० भ० ! दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं पादं तं०—लाउपायं वा ३, तह० पायं सयं वा पडि०, दुच्चा पडिमा २ । अहा० से भि० से जं पुण पायं जाणिज्जा संगइयं वा वेजइयंतियं वा तहप्प० पायं सयं वा जाव पडि०, तच्चा पडिमा ३ । अहावरा चउत्था पडिमा—से भि० उज्झियधम्मियं जाएज्जा जावऽन्ने बहवे समणा जाव नावकंखंति तह० जाएज्जा जाव पडि०, चउत्था पडिमा ४ । इच्चेइयाणं चउण्हं पडिमाणं अन्नयरं पडिमं जहा पिंडेस-णाए से णं एयाए एसणाए एसमाणं पासित्ता परो वइज्जा, आउ० स० ! एज्जासि तुमं मासेण वा जहा वत्थेसणाए से णं परो नेता व०—आ० भ० ! आहारेयं पायं तिल्लेण वा० घ० नव० वसाए वा अब्भंगित्ता वा तहेव सीओदगाइं कंदाइं तहेव ॥ से णं परो ने०—आउ० स० ! मुहुत्तगं २ जाव अच्छाहि ताव अम्हे असणं वा उवकरेसु वा उवक्खडेसु वा, तो ते वयं आउसो० ! सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दाहामो तुच्छए पडिग्गहे दिन्ने समणस्स नो सुट्ठु साहु भवइ, से पुव्वामेव आलोइज्जा- आउ० भइ० ! नो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा ४ भुत्तए वा०, मा उवकरेहि मा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउं एमेव दलयाहि, से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ उवकरित्ता उवक्खडित्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दलइज्जा तह० पडिग्गहगं अफासुय जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ सिया से परो उवणित्ता पडिग्गहगं निसिरिज्जा, से पुव्वामे० आउ० भ० ! तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि, केवली० आयाण० अंतो पडिग्गहगंसि पाणाणि वा बीया० हरि०, अह भिक्खूणं पु० जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडि० सअंडाइं सव्वे आलावगा भाणियव्वा जहा वत्थेसणाए, नाणत्तं तिल्लेण वा घ०१० नव० वसाए वा सिणाणादि जाव अन्नयरंसि वा तहप्पगा० थंडिलंसि पडिलेहिय २ पम० २ तओ० संज२ आमज्जिज्जा, एवं खलु० सया जएज्जा (सू० १५२) त्तिबेमि ॥ २-१-६-१

ते भिक्षु पात्र शोधवानी इच्छा करे, तो आ प्रमाणे प्रथम जाणे, के आ प्रमाणे पात्रां छे; तुंबडानां पात्र छे, लाकडानां पात्र छे, माटीनां पात्र छे, आमांथी कोइपण जातिनां पात्रां (मुख्यत्वे लाकडानां) होय, तो तरुण अने स्थिर संघयणवाळो बळवान साधु होय तो एक पात्र धारण करे, पण बे नहि, आ जिनकल्पी विगेरेने माटे छे, पण स्थविरकल्पी जुवान विगेरे शक्तिवान होय तोपण मात्र क सहित बीजुं पात्रुं धारण करे, तेमां संघाळामां रहेला साधुने एकमां आहार अने बीजामां पाणी लेवा काम लागे, अथवा आचार्य विगेरे माटे अशुद्ध वस्तु (मात्रु विगेरे) लेवा काम लागे. पोताना रहेवाना स्थानथी जरुर पडतां बे गाउ सुधी पात्रां लेवा जाय, पण वधारे नहि हवे ते गृहस्थ एक साधु घणी साध्वी एक साधु एक साध्वी, घणा साधु एक साध्वी, घणा साधु घणी साध्वीने उद्देशीने आरंभ करीने जो पात्रां तैयार कर्यां होय ते साधु साध्वीने सदोष होवाथी न कल्पे, पण जो श्रमण, माहण,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गामना भिखारी विगेरेने उद्देशीने बनावेलां होय तो पुरुषांतर थया पछी कल्पे, आ बधुं पिंडेषणामां बताव्या प्रमाणे जाणी लेवुं,

वळी ते भिक्षु एवी जातिनां जुदाजुदा रंगनां भारे मूल्यनां पात्रा जाणे ते न ले, ते बतावे छे.

लोढानां तथा त्रपु (कलाइना जेवी धातु) नां पात्रां, तांबाना पातरां, सीसानां, हिरण्य (चांदी) नां, सोनानां पातरां रीरिय हारपुड (बीजी जातिना लोढां) नां, मणिरत्ननां जडेलां के कांसानां पातरां संखसिंग हाथीदांत चेल सेल चामडानां तेवां बीजां कोइ पण जातिनां भारे मूल्यनां पातरां शोभीतां होय तो ते अप्रासुक जाणीने लेवां नहि. तेज प्रमाणे पातरानां बंधन उपर बताव्या प्रमाणे भारे मूल्यनां लोढाथी ते चामडा सुधीनां होय ते न लेवां, (प्रासुक होय छतां पण भारे मूल्यनां होवाथी ममत्व थाय. तथा चोरवाना कारणे असमाधि थाय, माटे साधुने तेवां पात्र तथा पात्र बंधननी मना छे.)

आ प्रमाणे पापस्थान निवारीने चार प्रतिमाओथी पात्रां शोधे. (१) अमुक पात्रुंज तुंबानुं, लाकडानुं के माटीनुं लइश, (२) देखेलुंज पातरुं याचीश (३) सगतिक ते पोते ते पात्राने वापर्युं होय तथा वेज्जयंतियं–ते बे त्रण पात्रामां पर्यायवडे वापर्युं होय तेवुं याचे (४) कोइ पण तेने न चाहे, तेवुं पोते ले.

आ प्रमाणे चार प्रतिज्ञामांनी कोइ पण प्रतिज्ञाए साधु पातरां शोधवा जाय त्यारे गृहस्थ कहे के हे साधु ! तमे पातरां लेवा एकमास पछी आवजो, पातरां तमने आपीश त्यारे साधुए कहेवुं के तेवु मुदत करेलां पात्रां न कल्पे, त्यारे वस्त्र एषणामां बताव्या प्रमाणे ओछी मुदतनो वायदो करे, त्यारे पण तेज उत्तर आपवो, ते बे घडीनी मुदत सुधीनो पण वायदो न स्वीकारवो, त्यारे कहे, के आपणे आपणा माटे नवां बनावीशुं. तैयार तेमने आपी दो, आवुं धणी पोते पोताना घरना माणसोने–बेन दीकरीने

For Private and Personal Use Only

कहे त्यारे पण साधुए ना पाडवी.

वळी गृहस्थ पोतानी बेन विगेरेने कहे के कोरुं पातरुं न आप, पण ते पात्राने तेल घी माखण छासवडे घसीने आप, तथा पाणीथी धोइने अथवा काचु पणी के कंद विगेरे खाली करीने आप, अथवा कहे के हे साधु! तमे बे घडी पछी फरीने आवो, तो अमे अशनपान खादिम स्वादिम तैयार करीए छीए, अथवा संस्कारवाळुं बनावीए छीए, तेथी हे आयुष्मन्! हे साधु! तमने भोजन पाणी सहित पातरां आपीशुं, एकला खाली पात्रां साधुने आपवाथी शोभा न वधे. आ सांभळीने साधुए कहेवुं के हे भव्यात्मन! अमने अमारा माटे बनावेलुं के वधारे रांधेलुं भोजन पाणी खावा पीवाने काम लागतुं नथी, माटे तैयार न करो, न संस्कारवाळुं बनावो, जो पात्रां आपवानी इच्छा होय, तो एमने एमज आपो.

आवुं कहेवा छतां गृहस्थ हठ करी साधु माटे रांधीने के संस्कारी बनावीने पात्रां भरी आपवा मांडे तो अप्रासुक जाणीने साधुए लेवां नहि, कदाच एमने एम पात्रां बहार लावीने मुके, तो तेने कहेवुं के हे गृहस्थ! हुं तमारा देखतांज आ पात्रां देखी लउं के तेनी अंदर नानां जंतुओ के बीज के वनस्पति होय तो केवळी प्रभु तेमां दोष बतावे छे, माटे साधुए प्रथम जोइ लेवां, अने जंतु विगेरेथी संयुक्त होय तो ते जीवो दूर करी शकाय तेम न होय तो अप्रासुक जाणीने पात्रां लेवां नहि, पण जो तेवां जंतु विगेरे न होय तो लेवां, (ते बधुं वस्त्रएषणा माफक जाणी लेवुं) आमां विशेष एटलुं छे के तेल घी नवनीत के वसा (छाश) थी धोइने ते चीकटवाळुं पात्रांनुं धोवण कोइ अचीत्त जग्या जोइने पडिलेही प्रमार्जीने परठवे. आज साधुनी साधुता छे के जयणाथी दरेक कार्य करे.

बीजो उद्देशो.

पहेला उद्देशा साथे आनो संबंध आ छे, के गया सूत्रमां पात्रांनुं जोवुं बताव्युं, अने अहीं पण तेनुंज बाकीनुं बतावे छे, आ संबंधे आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे.

से भिक्खू वा २ गाहावइकुलं पिंड० पविट्ठे समाणे पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं अवहट्टु पाणे पमज्जिय रयं तओ सं० गाहावइं० पिंड० निक्ख० प० प०, केवली०, आउ० ! अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा बीए वा हरि० परियावज्जिज्जा, अह भिक्खूणं पु० जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं अवहट्टु पाणे पमज्जिय रयं तओ सं० गाहावइ० निक्खमिज्ज वा २ ॥

ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी लेवां जतां पहेलां बरोबर रीते पात्रां तपासे, अने गोचरी लेतां पहेलां पण तपासे, अने कीडी विगेरे प्राणी चडेलुं जोए तो तेने संभाळीने बाजुए मुके, तथा रज पूंजीने साधु गृहस्थना घरमां पेसे, अथवा नीकळे, तेथी आपणा पात्रांनीज विधि छे, कारण के अहीं पण प्रथम पात्रां बरावर तपासीने पूंजीने पिंड लेवो, तेथी ते पण पात्रां संबंधीज विचार छे, प्र०—पात्रां शामाटे पूंजीने गोचरी लेवी ? उ—केवळी प्रभु पात्रां पूंज्या विना गोचरी लेतां कर्मबंध बतावे छे, ते आ प्रमाणे छे.

पात्रामां बेइंद्रिय विगेरे जीवो चडी जाय छे, अथवा बीजो अथवा रज होय तेवां पात्रामां गोचरी लेतां कर्मनुं उपादान थाय छे, माटेज साधुओने आ प्रतिज्ञा विगेरे पूर्वे बतावेल छे के, प्रथम पात्रां देखीने जीव जंतु के रज होय तो दूर करीने गृहस्थना

घरमां जवुं आववुं. वळी—

से भि० जाव समणे सिया से परो आहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाइत्ता नीहट्टु दलइज्जा, तहप्प० पडिग्गहगं परहत्थंसि वा परिपायंसि वा अफासुयं जाव नो प०, से य आहच्च पडिग्गहिए सिया खिप्पामेव उदगंसि साहरिज्जा, से पडिग्गहमायाए पाणं परिट्ठविज्जा, ससिणिद्धाए वा भूमीए नियमिज्जा ॥ से० उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा पडिग्गहं नो आमज्जिज्ज वा २अह पु० विगओदए मे पडिग्गहए छिन्नसिणेहे तह० पडिग्गहं तओ० सं० आमज्जिज्ज वा जाव पाया-विज्ज वा से भि० गाहा० पविसिउकामे पडिग्गहमायाए गाहा० पिंड० पविसिज्ज वा नि० एवं बहिया विहाभूरमीं वा गामा० दूइज्जिज्जा, तिव्वदेसीयाए जहा बिइयाए वत्थेसणाए नवरं इत्थ पडिग्गहे, एयं खलु तस्स० जं सव्वट्ठेहिं सहिए सया जएज्जासि (सू० १५४) त्तिबेमि ॥ पाएसणा सम्मत्ता ॥ २-१-६-२ ।

ज्यारे ते भिक्षु गृहस्थना घरमां गोचरी पाणी माटे गयेलो होय, ते समये पाणी याचतां कदाच ते गृहस्थ भूलथी अथवा द्वेष बुद्धिथी अथवा भक्तिना कारणे अथवा विमर्ष पाणाथी घरमां रहीने बीजा पात्रांमां के पोताना वासणमां थंडुं पाणी जुदुं लइने बहार काढीने वहोरावे, ते समये तेवुं काचुं पाणी पारका (गृहस्थ) ना हाथमां के वासणमां जाणे तो अ प्रासुक जाणीने न ले, पण कदाच भूलथी के ओचींतु गृहस्थे नांखी दीधुं होय तो तेज समये पाणी आपनार गृहस्थना वासणमांज पाछुं नांखी देवुं, पण कदाच ते न ले तो, कुवा विगेरेमां ज्यां ते जातीनुं पाणी होय त्यां परठववानी विधिए परठववुं, पण तेवा पाणीनो अभाव होय अथवा दूर होय तो ज्यां छाया होय के खाडो होय त्यां परठववुं अथवा जो बीजो घडो होय, तो ते घडो के पाणीनुं वासण कोइने

ज्यां बाधा न थाय त्यां ते घडो पाणी सुधांज मुकी दे, पण पाणी पाछुं आप्या पछी के खाली कर्या पछी तेने जलदी मुकाववा लूसवो नहि, पण पाणी नीतर्या पछी थोडो सुकातां तडके मुकवो के लूंछी नांखवो.

वळी गृहस्थना घरमां गोचरी पाणी लेवा जतां पोतानां बीजां पात्रां साथे लइ जा, तेज प्रमाणे परगाम विहार करतां भणवा जतां स्थंडिल जतां पोतानां पात्रां साथे लइ जवां ए बधुं वस्त्र एसणा माफक जाणवुं, पण फक्त अहीं पात्रां संबंधी जाणवुं.

विशेष ए ध्यानमां राखवुं, के वरसाद के झाकळ पडतुं होय तो पात्रां साथे न जवुं. आज साधुनी सर्व सामग्री छे के हमेशां यतनाथी वर्त्तवुं. इति पात्र एषणा.

छठुं अध्ययन समाप्त थयुं.

सातमुं अध्ययन अवग्रह प्रतिमा.

छठुं अध्ययन कहीने सातमुं कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, पिंड शय्या वस्त्र पात्र विगेरेनी एषणाओ अवग्रहने आश्रयी थाय छे, तेथी आवा संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोग द्वारा कहेवा जोइये, तेमां उपक्रमनी अंदर रहेल अर्थाधिकार आ छे, के साधुए आ प्रमाणे विशुद्ध अवग्रह लेवो, नामनिष्पन्न नियेपामां 'अवग्रह प्रतिमा' एवुं नाम छे, तेमां अवग्रहना नाम स्थापना निक्षेपा सुगम होवाथी छोडीने द्रव्य विगेरे चार प्रकारनो निक्षेपो निर्युक्तिकार बतावे छे.

दव्वे खित्ते काले भावेऽवि य उग्गहो चउद्धा उ । देविंद १ रायउग्गह २ गिहवइ ३ सागरिय ४ साहम्मी ॥ ३१६ ॥

द्रव्य अवग्रह क्षेत्र अवग्रह काळ अवग्रह अने भाव अवग्रह एम चार प्रकारनो अवग्रह छे.

अवग्रहनुं वर्णन.

अथवा सामान्यथी पांच प्रकारनो अवग्रह छे.

(१) देवेंद्रनो अवग्रह—ते लोकना मध्य भागमां रहेल मेरु पर्वतना रुचक प्रदेशथी दक्षिणना अर्ध भागमां रहेल जग्यानो. (२) राजा—ते चक्रवर्त्ती महाराजा के बादशाहनो भरत विगेरे क्षेत्र आश्रयी जे जग्या तेना वंशमां होय तेमां साधु विचरे ते. (३) गृहपति—ते गामडामां रहेनार महत्तर (पटेल) विगेरेनी पासे गामना महेल्ला विगेरेनो अवग्रह. (४) शय्यातर (घरधणी) नो तेनी खाली पडेली घंघशाळा विगेरेमां ज्यां साधु उतरे छे, ते (५) साधर्मिक ते साधुओ—जेओ मास कल्पवडे त्यां रह्या होय तेओनी पासे तेमनी मागेली जग्यामां उतरवुं ते वसति विगेरेनो अवग्रह १। जोजन छे, (बंने दिशामां २॥—२॥ गाउ जतां) चारे दिशामां जाय, आ प्रमाणे पांच प्रकारनो अवग्रह वसति विगेरे लेतां यथावसरे अनुज्ञा लेवा योग्य छे. हवे प्रथम बतावेल द्रव्यादि अवग्रह बतावता कहे छे—

दव्वुग्गहो उ तिविहो सचित्ताचित्तमीसओ चेव । खित्तुग्गहोऽवि तिविहो दुविहो कालुग्गहो होइ ॥ ३१७ ॥

द्रव्यनो अवग्रह त्रण प्रकारनो छे. शिष्य विगेरेनो सचित्त छे, रजोहरण विगेरेनो अचित्त अने शिष्य रजोहरण विगेरे साथे स्वीकारतां मिश्र अवग्रह छे, क्षेत्र अवग्रह पण सचित्त विगेरे त्रण प्रकारनोज छे, अथवा गाम नगर अरण्य भेदथी त्रण प्रकारनो छे,

काल अवग्रह ऋतुबद्ध (आठमास) तथा वर्षाकाळ (चारमास) नो अवग्रह एम बे भेदे छे-

हवे भाव अवग्रह बतावे छे-

मइउग्गहो य गहणुग्गहो य भावुग्गहो दुहा होइ । इंदिय नोइंदिय अत्थवंजणे उग्गहो दसहा ॥ ३१८ ॥

भाव अवग्रह बे प्रकारनो छे, मति अवग्रह अने ग्रहण अवग्रह छे, तेमां मति अवग्रह पण बे प्रकारनो छे, अर्थावग्रह अने व्यंजन अवग्रह छे, तेमां अर्थावग्रह इंद्रिय तथा नोइंद्रिय (मन) ना भेदथी छ प्रकारनो छे, अने व्यंजन अवग्रह चक्षु इंद्रिय अने मन छोडीने बाकी चार इंद्रियोनो अवग्रह छे, ते बधाए भेदवाळो दस प्रकारनो मतिभाव अवग्रह (मतिवडे पदार्थोनो जे समान्य बोध समजाय ते) छे, हवे ग्रहण अवग्रह बतावे छे-

गहणुग्गहम्मि अपरिग्गहस्स समणस्स गहणपरिणामो । कह पाडिहारियाऽपाडिहारिए होइ ? जइयव्वं ॥ ३१९ ॥

अपरिग्रहवाळो ते मुनि छे, तेने ज्यारे पिंड [गोचरी] वसति [स्थान] वस्त्र पातरां लेवानो विचार थाय, त्यारे ते ग्रहण भाव अवग्रह छे. ते वखते साधुने एवी बुद्धि होवी जोइए के केवी रीते ते वसति विगेरे मने शुद्ध मळी शके ? तथा प्रातिहारिक पाछुं अपाय ते पाट पाटला विगेरे अप्रतिहारक (पाछुं न अपाय ते गोचरी विगेरे) मने शुद्ध मळे तेमां यत्न करवो, अने प्रथम पांच प्रकारनो इंद्र विगेरेनो अवग्रह बताव्यो ते आ ग्रहण अवग्रहमां समजवो. आ प्रमाणे नाम निष्पन्न निक्षेपो थयो, हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे-

समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते ! अपसू परदत्तभोई पावं कम्मं नो करिस्सामित्ति समुट्ठाए सव्वं भंते !

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जेहिवि सद्धिं संपव्वइए तेसिंपि जाइं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय २ अपमज्जिय २ नो उग्गिण्हिज्जा वा परिगिण्हिज्ज वा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं जाइज्जा अणुन्नविय पडिलेहिय पमज्जिय तओ सं० उग्गिण्हिज्ज वा प० ॥ (सू० १५५)

श्रम सहन करे ते श्रमण [तपस्वी] छे, ते हुं आवी रीते बनुं, एम साधु विचारे ते कहे छे, 'अनगार' अग ते वृक्ष छे, तेनाथी जे बेने ते अगार [घर] छे, ते जेने न होय ते अनगार अर्थात् घरनो फांसो (ममत्व) जेणे छोड्यो होय, ते छे, 'अकिंचन' जेनी पासे कंइपण न होय ते अर्थात् निष्परिग्रह छे तथा 'अपुत्र' ते स्वजन बंधु रहित अर्थात् निर्मम छे एज प्रमाणे 'अपुश' ते बे पगवाळां चार पगवाळां विगेरेथी रहित छे, तथा परदत्तभोजी (गोचरी लावी खानारो) हुं बनीने पाप कर्म करीश नहि, आ प्रमाणे दीक्षा लइने पछी आवी प्रतिज्ञावाळो थाय ते बतावे छे, शिष्य गुरुने कहे छे. हे गुरु ! हुं सर्वथा अदत्तादाननुं पच्चक्खण करुं छुं. अर्थात् दांत शोधवा [खोतरवा] माटे जोइती सळी के तणखलुं पण पारकाए नहि आपेलुं नहि लउं–

अवां विशेषणो श्रमणनां लेवाथी बौद्ध बावा विगेरेमां श्रमणपणुं बहारथी नाम मात्र होवा छतां गुणोना अभावे तेमनामां श्रमणपणुं लीधुं नथी, पण उपर बतावेल अदत्तादा न त्याग करनार जैन साधुज श्रमण छे.

एवो अकिंचण साधु गाम अथवा राजधानीमां जइने पोते अदत्त ग्रहण न करे, न बीजा पासे लेवडावे, अने बीजा ग्रहण करनारनी प्रशंसा न करे, वळी जे साधुओ साथे पोते दीक्षा लीधो होय अथवा उतरेल होय तेओनां उपकरण पण तेमनी आज्ञा

For Private and Personal Use Only

विना ले नहि ते बतावे छे,

छत्र ते माथानुं ढांकणुं वरसादमां स्थंडिल जतां माथा उपर वर्षाकल्प (कांबळो) विगेरे नांखे ते छत्रक छे, अथवा कुंकण देश विगेरेमां घणो वरसाद पडे छे, तेवा देशमां कारण प्रसंगे छत्री वापरवानी आज्ञा छे, ते छत्र लेवुं होय अथवा चर्म छेदनक विगेरे कोइ पण चीज विना पूछे ले नहि, एक वार पण न ले, अनेकवार पण ले नहि.

साथेना साधुओनी वस्तु लेवानी विधि—

प्रथम जेनी वस्तु होय तेने पूछी लेवुं, अने पछी आंखेथी जोइने अने रजोहरण विगेरेथी पुंजीने एकवार के अनेकवार ले'

से भि० आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समहिट्ठए ते उग्गहं अणुन्नविज्जा-कामं खलु आउसो० ! अहालंदं अहापरिन्नायं वसामो जाव आउसो ! जाव आउसंतस्स उग्गहे जाव साहम्मिया एइतावं उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥ से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना उवागच्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए असणे वा ४ तेण ते साहम्मिया ३ उवनिमंतिज्जा, नो चेव णं परवडियाए ओगिज्झिय २ उवनि० ॥ (सू० १५६)

ते मुनि मुसाफरखानामां प्रवेश करीने अने विचार करीने यतिने योग्य क्षेत्र जोइने साधुओने जोइए तेटली वसति विगेरेनो अवग्रह याचे, कोनी पासे याचवुं ते कहे छे, जे घरनो मालिक होय अथवा मालिके जेने त्यां काम करवा राख्यो होय तेमनी पासे जइने क्षेत्र अवग्रह याचे, केवी रीते ? ते बतावे छे, साधु मालिक होय अथवा तेना गुमास्ता विगेरेने उद्देशीने कहे, हे आयुष्मन् !

तमारी इच्छा प्रमाणे तमे जेटलो काळ आज्ञा आपो, जेटली जग्या वापरवा आपो, ते प्रमाणे अमे अहीं रहीए, एटले हे गृहस्थ तमे जेटली जग्या वापरवा आपशो, तेटलो समय अमे तथा अमारा साधुओ आ जग्या वापरशुं, तेथी आगळ (पछी) विहार करीशुं,

पछी मालिके ते मकानमां उतरवानी जग्या आप्या पछी साधुए शुं करवुं ते कहे छे. ते जग्याए केटलाएक परोणा साधुओ एक समाचारी आचरनारा उद्युक्त विहारी आवे, तेमने पूर्वना मोक्षाभिलाषी साधुए उतरवा देवा, तथा विहार करता पोतानी मेळे त्यां तेवा उत्तम साधुओ आव्या होय तेमने अशन पान विगेरे चारे आहार लावीने तेमनी इच्छानुसार लेवा प्रार्थना करवी के आ हु आहार विगेरे लाव्यो छुं, आपनी इच्छा प्रमाणे लइने मारा उपर अनुग्रह करो. पण बीजा साधुना लावेला आहारनी परभारी निमंत्रणा पोते न करे, पण पोते जाते लावीने तेमनी इच्छानुसार आपे.

से आगंतारेसु वा ४ जाव से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ साहम्मिआ अन्नसंभोइआ समणुन्ना उवागच्छिज्जा जे तेण सयमेसित्तए पीढे वा फलए वा सिज्जा वा संथारए वा तेण ते साहम्मिए अन्नसंभोइए समणुन्ने उवनिमंतिज्जा नो चेवणं परवडियाए ओगिज्झिय उवनिमंतिज्जा ॥ से आगंतारेसु वा ४ जाव से किं पुण तत्थुग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ गाहावईण वा गाहा० पुत्ताणं वा सूई वा पिप्पलए वा कण्णसोहणए वा नहच्छेयणए वा तं अप्पणो एगस्स अट्ठाए पाडिहारियं जाइत्ता नो अन्नमन्नस्स दिज्ज वा अणुपइज्ज वा, सयंकरणिज्जंतिकट्टु, से तमायाए तत्थ गच्छिज्जा २ पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे कट्टु भूमीए वा ठवित्ता इमं खलु २ त्ति आलोइज्जा, नो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि पच्चप्पिणिज्जा ॥ (सू० १५७)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टीकाकारे आ सूत्रनो अर्थ पूर्व माफक होवाथी विशेष लख्यो नथी. ते साधु मुसाफरखाना विगेरेमां उतरेलो होय त्यां बीजा उत्तम साधुओ आवे. पण जो तेमनी समाचारी जुदी होय तो गोचरीनो व्हेवार न होवाथी फक्त पीठ फलक विगेरेनी निमंत्रणा करे, वळी ते घरमांथी घरधणी पासे के तेना पुत्र पासेथी कारण विशेषे सूइ अस्त्रो कान खोतरणी अथवा नयणी पोताना माटे याची होय, तो एके बीजाने आपवी नहि, तेम लेवी नहि, पण ज्यारे पोतानुं कार्य धूरुं थाय, त्यारे पोते जाते जइने पोताना हाथमां हथेळीमां राखीने कहे के आ तमारी वस्तु सूइ विगेरे लो, पण जो ते स्त्री विगेरे होय तो जमीन उपर मुकीने कहेवुं के आ तमारी वस्तु लो, पण साधुए गृहस्थ के स्त्रीने हाथोहाथ आपवी नहि (वखते लागी जाय)

से भि० से जं० उग्गहं जाणिज्जा अणंतरहियाए पुढवी जाव संताणए तह० उग्गहं नो गिण्हिज्जा वा २ ॥ से भि० से जं पुण उग्गहं थूणंसि वा ४ तह० अंतलिक्खजाए दुबद्धे जाव नो उगिण्हिज्जा वा २ ॥ से भि० से जं० कुलियंसि वा ४ जाव नो उगिण्हिज्ज वा २ ॥ से भि० खंधंसि वा ४ अन्नयरे वा तह० जाव नो उग्गहं उगिण्हिज्ज वा २ । से भि० से जं० पुण० ससागारियं० सखुड्डपसुभत्तपाणं नो पन्नस्स निक्खमणपवेसे जाव धम्माणुओगचिंताए, सेवं नच्चा तह० उवस्सए ससागारिए० नो उवग्गहं उगिण्हिज्जा वा २ ॥ से भि० से जं० गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथे पडिबद्धं वा नो पन्नस्स जाव सेवं न० ॥ से भि० से जं० इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा तहेव तिल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि निगिणाइ वा जहा सिज्जाए आलावगा, नवरं उग्गहवत्तव्वया ॥ से भि० से जं० आइन्नसलिक्खे नो पन्नस्स० उगिण्हिज्ज वा २, एयं खलु० ॥ (मू० १५८) उग्गहपडिमाए पढमो उद्देशो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधुए अवग्रह लेतां जोवुं के ते सचित्त जग्या न होय, तथा अधर जग्या होय त्यां न उतरे, बाळक तथा पशुओने खावा पीवानुं अपातुं होय, तेवी जग्यामां धर्म ध्यान विगेरे पंडित पुरुषने न थाय, माटे तेवुं मकान न याचवुं तेमज ते मकानमां थइने जवानो रस्तो होय, अथवा घरनां माणसो नोकर—चाकर विगेरे त्यां लडतां होय तथा तेल मसळतां होय, तथा स्नान विगेरे ठंडा उना पाणीथी करतां होय, त्यां न उतरवुं. आ बधुं पूर्वे शय्याना अंगे कहुं छे, ते प्रमाणे जाणवुं, पण अहीं विषय वसति अवग्रह संबंधी जाणवो.

इति प्रथम उद्देशः

बीजो उद्देशो.

पहेलो उद्देशो कह्यो, हवे बीजो कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां अवग्रह बताव्यो अने अहीं पण तेनुंज बाकी रहेलुं कहे छे. तेनुं आ सूत्र छे.

से आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा, जे तत्थ ईसरे० ते उग्गहं अणुन्नविज्जा कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिन्नायं वसामो जाव आउसो ! जाव आउसंतस्स उग्गहे जाव साहम्मिआए ताव उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो, तेण परं वि० से किं पुण तत्थ उग्गहंसि एवोग्गहियंसि जे तत्थ समणाण वा माह० छत्तए वा जाव चम्मछेदणए वा तं ना

For Private and Personal Use Only

अंतोहिंतो बाहिं नीणिज्जा बहियाओ वा नो अंतो पविसिज्जा, सुत्तं वा नो पडिबोहिज्जा, नो तेसिं किंचिवि अप्पत्तियं पडिणीयं करिज्जा ॥ (सू० १५९)

ते साधु धर्मशाळा विगेरेमां उतरेलो होय, त्यां पूर्वे ब्राह्मण विगेरे ते गृहस्थनी रजा लइ उतर्यो होय, तेज स्थानमां बीजी जग्याना अभावे उतरवुं पडे, तो ते स्थानमां उतरेला ब्राह्मण विगेरेनुं छत्र विगेरे जे कंइ उपकरण होय, ते मकाननी अंदर पडयुं होय तो बहार लइ जवुं नहि तेम बहारथी अंदर लाववुं नहि, तेम सूतेला ब्राह्मण विगेरेने जगाडवा नहि, तेमज तेमना मनमां पण अप्रीति थाय तेम न करवुं तथा तेमनी साथे विरोधभाव पण न करवो.

से भि० अभिकंखिज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए जे तत्थ ईसरे २ ते उग्गहं अणुजाणाविज्जा—कामं खलु जाव विहरिस्सामो, से किं पुण० एवोग्गहियंसि अह भिक्खू इच्छिज्जा अंबं भुत्तए वा से जं पुण अंबं जाणिज्जा सअंडं ससंताणं तह० अंबं अफा० नो प० ॥ से भि० से जं० अप्पंडं अप्पसंताणगं अतिरिच्छछिन्नं अव्वोच्छिन्नं अफासुयं जाव नो पडिगाहिज्जा ॥ से भि० से जं० अप्पंडं वा जाव संताणगं तिरिच्छछिन्नं वुच्छिन्नं फा० पडि० ॥ से भि० अंबभित्तगं वा अंबपेसियं वा अंबचोयगं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा भुत्तए वा पायए वा, से जं० अंबभित्तगं वा ५ सअंडं अफा० नो पडि० ॥ से भिक्खू वा २ से जं० अंबं वा अंबभित्तगं वा अप्पंडं० अतिरिच्छछिन्नं २ अफा० नो प० ॥ से जं० अंबडालगं वा अप्पंडं ५ तिरिच्छच्छिन्नं वुच्छिन्नं फासुयं पडि० ॥ से भि० अभिकंखिज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे जाव उग्गहंसि० ॥ अह भिक्खू इच्छिज्जा उच्छुं भुत्तए वा पा०. से जं० उच्छुं जाणिज्जा सअंडं जाव नो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प०, अतिरिच्छछिन्नं तहेव. तिरिच्छछिन्नेऽवि तहेव ॥ से भि० अभिकंखि० अंतरुच्छुयं वा उच्छुगंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुसा० उच्छुडा० भुत्तए वा पाय०, से जं० पु० अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा सअंडं नो प० ॥ से भि० से जं० अंतरुच्छुयं वा० अप्पंडं वा० जाव पडि० अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव ॥ से भि० ल्हसणवणं उवागच्छित्तए, तहेव तिन्निवि आलावगा, नवरं ल्हसुणं ॥ से भि० ल्हसुणं वा ल्हसुणकंदं वा ल्ह० चोयगं वा ल्हसुणनालगं वा भुत्तए वा २ से जं० लसुणं वा जाव लसुणबीयं वा सअंडं जाव नो प० एवं अतिरिच्छच्छिन्नेऽवि तिरिच्छछिन्ने जाव प० ॥ (सू० १६०)

ते भिक्षु कदाचित आम्र वनमां गृहस्थ पासे अवग्रह याचे, त्यां उतरीने कारण पडे आंबा (केरी) खावाने इच्छे, तो सडेला के कीडावाळा के करोळीयाना जाळांवाळा अप्रासुक होय ते लेवा नहि. तथा आंबा इंडां विनाना अने सड्या विनाना होय, पण जो तिरछा न छेद्या होय तथा अखंडित होय, तो तेने अप्रासुक जाणीने लेवा नहि, पण जो कीडा विनाना तीरछा चीरेला अने प्रासुक (अचित्त) होय तो कारण पडे ले, तेज प्रमाणे (अंबभित्ति) अळधां फाडीयां, (अंबपेसी) आंबानां नानां फाडीयां (अंबचोयग) आम्रछाल [सालग] रस, (डालग) केरीना झीणा टुकडा होय ते अचित्त होय तो लेवा.

आ प्रमाणे इक्षु सूत्रना त्रणे आलावा लेवा तथा अंतरुच्छु पर्वना मध्य भाग लेवा, आ प्रमाणे लसणनां त्रणे सूत्र लेवां, आमां जे वातो न समजाय ते निशीथ सूत्रना सोळमा उद्देशाथी जाणवी.

हवे अवग्रहना अभिग्रह संबंधी विशेष कहे छे.

से भि० आगंतारेसु वा ४ जावोग्गहियंसि जे तत्थ गाहावईण वा गाहा० पुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म अह

For Private and Personal Use Only

भिक्खू जाणिज्जा. इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं उग्गहं उग्गिण्हित्तए, तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा ४ अणुवीइ उग्गहं जाइज्जा जाव विहरिस्सामो पढमा पडिमा १ । अहावरा० जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं उग्गिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं उग्गहे उग्गहिए, उवल्लिसामि, दुच्चा पडिमा २। अहावरा० जस्स णं भि० अहं च० उग्गिण्हिस्सामि अन्नेसिं च उग्गहे उग्गहिए नो उवल्लिस्सामि, तच्चा पडिमा ३। अहावरा० जस्स णं भि० अहं च० ना उग्गहं उग्गिण्हिस्सामि, अन्नेसिं च उग्गहे उग्गहिए उवल्लिस्सामि, चउत्था पडिमा ४। अहावरा० जस्स णं अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए उग्गहं च उ०, नो दुण्हं नो तिण्हं नो चउण्हं नो पंचण्हं पंचमा पडिमा ५। अहावरा० से भि० जस्स एव उग्गहे उवल्लिइज्जा जे तत्थ अहासमन्नागए इक्कडे वा जाव पलाले तस्स लाभे संवसिज्जा तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा नेसज्जिओ वा विहरिज्जा, छट्ठा पडिमा ६। अहावरा स० जे भि० अहासंथडमेव व उग्गहं जाइज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव तस्स लाभे संते०, तस्स अलाभे उ० ने० विहरिज्जा, सत्तमा पडिमा ७ । इच्चेयासिं सत्तण्हं पडिमाणं अन्नयरं जहा पिंडेसणाए ॥ (सू० १६१)

ते साधु धर्मशाळा विगेरेमां अवग्रह मागीने उतर्या पछी त्यां रहेनारा गृहस्थो विगेरेना पूर्वे बतावेला दोषो त्यजीने तथा हवे पछी जे कर्म उपादानना कारणो बतावसे ते छोडीने अवग्रह लेवाने समजे.

ते भिक्षु सात प्रतिमा [अभिग्रह विशेष] वडे अवग्रह ले, तेमां पहेली पडिमा आ छे के ते साधु धर्मशाळा विगेरेमां उतरवा पहेलां चिंतवी राखे के मारे आवो उपाश्रय मळे तोज उतरवुं ते सिवाय नहि.

बीजा साधुने आवो अभिग्रह होय छे के हुं बीजा साधुओ माटे अवग्रह याचीश अथवा बीजाए याचेला अवग्रहमां रहीश. प्रथमनी प्रतिमामां सामान्य छे अने आ प्रतिमा तो गच्छमां रहेला उद्युक्त विहारीने होय, तेओ साथे गोचरी करता होय अथवा न पण करता होय–तो पण साथे उतरता होवाथी एक बीजा माटे वसति याचे छे.

त्रीजी प्रतिमावाळो साधु एमो विचार करे के हुं पोते बीजाने माटे अवग्रह याचीश, पण बीजाना याचेलामां रहीश नहि. आ प्रतिमा आहालंदिक साधुओने माटे छे. कारण के तेओ गच्छवासी आचार्य पासे सूत्र अर्थ भणता होवाथी आचार्य माटे मकान याचे छे.

चोथी प्रतिमामां ए अभिग्रह छे. के हुं बीजाने माटे अवग्रह याचीश नहि. पण बीजाए मागेला अवग्रहमां रहीश, आ अभिग्रह गच्छमां रहेला अभ्युदत विहारी गच्छमां रहीने जिनकल्पी थवाने माटेज अभ्यास करता होय तेमने माटे छे.

पांचमी प्रतिमा आ प्रमाणे छे के हुं पोतेना माटे अवग्रह याचीश, पण बीजा त्रण, चार, पांच माटे अवग्रह नहि याचुं, आ जिनकल्पी थवाने माटे अभिग्रह छे.

हुं अवग्रह याचीश पण त्यांज उत्कट विगेरे संथारो लइश; नहि तो उत्कुटुक अथवा बेठेलो के उभेलो आखी रात पुरी करीश. आ छट्ठी प्रतिमा जिनकल्पी विगेरेने छे.

सातमी प्रतिमा उपर प्रमाणे छे के हुं उपर बतावेल संथारो करवा शिलादिक विगेरे तैयार हशे तेज लइश. आमां विशेष एटलुं छे के तैयार होय तोज ले, नहि तो बेठे बेठे के उभे उभे रात्री पुरी करे. आ पण जिनकल्पी विगेरेनी छे.

आ साते प्रतिमा वहेनारा साधुओ जिनकल्पी विगेरे जिनेश्वरनी आज्ञामां होवाथी यथाशक्ति पाळता होवाथी वधारे पाळनारो होय ते पोताने उंचो न माने तेम बीजानी निंदा न करे. ए बधुं पिंडएषणा माफक जाणवुं.

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं–इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं पंचविहेउग्गहे पन्नत्ते, तं०–देविंदउग्गहे १ रायउग्गहे २ गाहावइउग्गहे ३ सागारियउग्गहे ४ साहम्मियउग्ग० ५ एवं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं (सू० १६२) उग्गहपडिमा सम्मत्ता ॥ अध्ययनं समाप्तं सप्तमम् ॥ २–१–७–२ ॥

सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के भगवान महावीरे आ उद्देशामां बतावेलो देवेंद्र विगेरेनो अवग्रह सारी रीते समजीने साधुए पाळवो. (ए साधुनी साधुता छे) अवग्रह प्रतिमा नामनुं सातमुं अध्ययन समाप्त थयुं तथा आचारांगनी पहेली चूला समाप्त थइ.

सप्तसप्तिकाख्या द्वितीया चूला ।

पहेली चूलिकानां सात अध्ययन कह्यां हवे बीजी चूलिका कहे छे तेनो पहेली साथे आ प्रमाणे संबंध छे.

गइ चूलामां वसतिनो अवग्रह बताव्यो, ते स्थानमां रहीने केवा स्थानमां कार्योत्सर्ग तथा स्वाध्याय उच्चार पेसाब विगेरे करवो ते अहींआ बतावे छे. आ चूलामां सात अध्ययन छे एवुं निर्युक्तिकार बतावे छे.

सत्तिक्कगाणि इक्कस्सरगाणि पुव्व भणियं तहिं ठाणं । उद्धट्ठाणे पगयं निसीहियाए तहिं छक्कं ॥ ३२० ॥

सात अध्ययनोमां बीजा उद्देशा नथी, माटे एक सरवाळा छे. तेमां पहेलुं अध्ययन स्थान नामनुं छे. तेनी व्याख्या अहीं करे छे. आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोगद्वार थाय छे, [ए पूर्वे बतावेल छे] उपक्रममां अध्ययननो अर्थाधिकार आ छे,

के साधुए केवा स्थानमां आश्रय लेवो, नाम निष्पन्न निक्षेपामां स्थान ए नाम छे. एना नाम विगेरे चार निक्षेपा थाय छे, तेमां अहीं द्रव्यने आश्रयी उद्धर्वस्थानवडे अधिकार छे. ते निर्युक्तिकार कहे छे. उद्धर्वस्थानमां प्रस्ताव छे. बीजुं अध्ययन निशीथिका छे. तेनां छ प्रकारे निक्षेप छे, ते तेना स्थानमां कहीशुं. हवे सूत्र कहे छे.

से भिक्खू वा० अभिकंखेज्जा ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसिज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा, से जं पुण ठाणं जाणिज्जा सअंडं जाव मक्कडासंताणयं तं तह० ठाणं अफासुयं अणेस० लाभे संते नो प०, एवं सिज्जागमेण नेयव्वं जाव उदयपमूयाइंति ॥ इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म २ अह भिक्खू इच्छिज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए, तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिज्जा अवलंबिज्जा काएण विप्परिकम्माइ सवियारं ठाणं ठाइस्सामि पढमा पडिमा। अहावरा दुच्चा पडिमा— अचित्तं खलु उवसिज्जजेज्जा अवलंबिज्जा काएण विप्परिकम्माइ नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि दुच्चा पडिमा। अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवस्सज्जेज्जा अवलंबिज्जा नो काएण विपरिकम्माइं नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामित्ति तच्चा पडिमा। अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा नो अवलंबिज्जा काएण नो परकम्माइं नो सवियारं ठाणं ठाइस्सामित्ति वोसट्ठकाए वोसट्ठकेसमंसुलोमनहे संनिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामित्ति चउत्था पडिमा, इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं जाव पग्गहियतरायं विहरिज्जा, नो किंचिवी वइज्जा, एयं खलु तस्स० जाव जइज्जासि त्तिबेमि (सू० १६३) ॥ ठाणासत्तिक्कयं सम्मत्तं ॥ २-२-८ ॥

पूर्वे बतावेलो साधु जो स्थानमां रहेवाने इच्छे, तो गाम विगेरेमां प्रवेश करे. त्यां इंडावाळुं तथा करोळीयाना जाळावाळुं

मकान जो अप्रासुक मळे, तो मळतुं होय तो पण न ले, तेज प्रमाणे बीजां सूत्रो पण शय्या माफक समजी लेवां, ते ज्यां सुधी पाणी तथा कंदथी व्याप्त होय तो पण ते लेवां नहिं, हवे प्रतिमाना उद्देशने आश्रयी कहे छे, एटले पूर्वे बतावेला दोषोवाळां तथा हवे पछी कहेवाता दोषोवाळां पण स्थानो छोडीने चार प्रतिमाओ वडे साधु रहेवा इच्छे, ते कारणभूत अभिग्रह विशेष चार प्रतिमाओ छे तेनुं स्वरुप अनुक्रमे बतावे छे.

(१) कोइ साधुने आवोज अभिग्रह होय के हुं अचित्त उपाश्रयनुं स्थान याचीश, तेज प्रमाणे कोइ अचित्त भींत विगेरेने कायावडे टेको लइश, वळी परिस्पंद करीश, एटले हाथपग विगेरेथी आकुंचन विगेरे करीश, [लांबा पहोळा करीश,]

(२) बीजी प्रतिमामां विशेष आ छे, के आकुंचन प्रसारण तथा भींतनो टेको विगेरे लइश, पण पाद विहरण (पगेथी चालवानुं) मकानमां पण नहि करूं.

(३) त्रीजीमां आकुंचन प्रसारण करे, पण पाद विहरण के टेको लेवानुं न करे.

(४) लांबा पहोळा हाथ विगेरे न करे, तेम न चाले, न 'टेको' ले, पण ते कायानो मोह सर्वथा मुकनारो थाय, तथा वाळ दाढी मूछ लोम नख विगेरे पण न हलावे. आवी रीते संपूर्ण कायोत्सर्ग करनारो मेरु पर्वत माफक निष्पकंप रहे, ते वखते जो कोइ आवीने तेना केश विगेरे खेंचे, तो पण स्थानथी चलायमान थाय नहि; आ चारमांनी कोइ पण प्रतिमा धारण करेलो बीजी प्रतिमा धारेलाने हलको न माने, तेम पोते अहंकारी न बने तेम एवुं वचन पण न बोले, के हुं श्रेष्ठ छुं, बीजो उतरतो छे.

आ प्रमाणे प्रथम अध्ययन समाप्त थयुं.

निषीथिका—'बीजुं अध्ययन'

पहेलुं अध्ययन कहीने बीजुं कहे छे, तेनो संबंध आ छे के गया अध्ययनमां स्थान बताव्युं, ते केवुं होय तो भणवाने योग्य थाय, अने ते स्वाध्याय भूमिमां शुं करवुं, शुं न करवुं, ते अहीं कहेशे. आ संबंधे आ अध्ययन आव्युं छे. एना चार अनुयागद्वार थाय छे, तेनुं नाम निष्पन्ननिक्षेपामां "निषीथिका" एवुं नाम छे, आ निषीथिकानो नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव छ प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना पूर्व माफक छे, द्रव्य निषीथनो आगमथी ज्ञशरीर भव्यशरीर छोडीने जे द्रव्य प्रच्छन्न (छानुं) होय ते छे, [टीकाना संशोधके टीपणामां लख्युं छे के निशीथ निषीध बंनेनुं प्राकृतमां एक 'निसीह' शब्द वडे बोलतुं होवाथी एज प्रमाणे निक्षेपानुं वर्णन छे, तेज प्रमाणे निषीधिका निशीथिका बंने नामनुं एकपणुं छे. क्षेत्र निषीथ ते 'ब्रह्मलोक' नामना देवलोकमां रिष्ट विमाननी पासे 'कृष्ण राजाओ' जे क्षेत्रमां छे, ते तथा जे क्षेत्रमां निषीथनुं वर्णन चाले ते—काळनिषीथ ते कृष्ण [काळी अंधारी] रात्रिओ अथवा जे काळे निषीथनुं वर्णन चाले,

भावनिषीथ 'नो आगमथी' आ कहेवातुं सूत्रनु अध्ययनज छे, कारण के ते आगमनो एक देश छे, नाम निष्पन्न निक्षेपो पुरो थयो, हवे सूत्रानुगममां सूत्र कहे छे,

से भिक्खू वा २ अभिकं० निसीहियं फासुयं गमणाए, से पुण निसीहियं जाणिज्जा—सअंडं तह० अफा० नो चेइस्सामि ॥ से भिक्खू० अभिकंखेज्जा निसीहियं गमणाए, से पुण नि० अप्पपाणं अप्पबीयं जाव संताणयं तह० निसीहियं फासुयं चेइस्सामि, एवं सिज्जागमेणं नेयव्वं जाव उदयप्पसूयं।२ ॥ जे तत्थ दुवग्गा तिवग्गा चउवग्गा पंचवग्गा वा अभिसंधा-

रिंति निसीहियं गामणाए ते नो अन्नमन्नस्स कायं आलिंगिज्ज वा विलिंगिज्ज वा चुंबिज्ज वा दंतेहिं वा नहेहिं वा अच्छिदिज्ज वा वुच्छि०, एयं खलु० जं सव्वट्ठेहिं सहिए समिए सया जएज्जा, सेयमिणं मन्निज्जासि त्तिबेमि ॥ (सू० १६४) निसीहियासत्तिक्कयं ॥ २-२-९ ॥

ते उत्तम साधु रहेला स्थानमां अयोग्यताना कारणे बीजे स्थळे भणवानी जग्याए जवा इच्छे, तो त्यां इंडां वगेरे पड्यां होय तो अप्रासुक जाणीने न जाय, पण इंडां विनानी फासु जग्या होय ते ग्रहण करे, आ प्रमाणे बीजां सूत्रो पण शय्या माफक समजवां ते पाणीथी उत्पन्न थयेलां कंद विगेरे पड्यां होय तो ते जग्याए पण भणवा न बेसे. त्यां गया पछीनी विधि कहे छे-त्यां गयेला बे त्रण के वधारे साधु होय तो परस्पर एकेकनी कायानो स्पर्श न करे, तेम जेनाथी मोहनो उदय थाय तेम वळगे पण नहि, तथा कंदर्प प्रधान जेमां छे एवुं मुख चुंबन विगेरे न करे, (मोढाने मोढुं न लगाडे) आज वर्त्तन साधुनुं सर्वस्व छे, अने तेथीज बधां परलोकना प्रयोजनवडे युक्त छे, तथा ते प्रमाणे वर्त्तनार पांच समिति पाळतो जींदगी सुधी संयम अनुष्ठान आचरे, अने आज परम कल्याण छे, एवुं उत्तम साधु माने.

निषीधिका नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं

उच्चार प्रश्रवण—त्रीजुं अध्ययन.

हवे त्रीजुं सप्तैकक अध्ययन कहे छे, तेनो पूर्वना अध्ययन साथे आ प्रमाणे संबंध छे, ते गया अध्ययनमां निषीधिका कही

छे, त्यां केवी जमीन उपर स्थंडील मात्रुं (झाडा पेसाब) करवुं ते बतावे छे, एना नाम निष्पन्न निक्षेपामां उच्चार प्रश्रवण एवुं नाम छे, तेनी निरुक्तिने माटे निर्युक्तिकार कहे छे,

उच्चावइ सरीराओ उच्चारो पसवइत्ति पासवणं। तं कह आयरमाणस्स होइ सोही न अइयारो ? ॥ ३१२ ॥

शरीरमांथी जोरथी दूर करे. अथवा मेल साफ करे [चरे] ते उच्चार (विष्ठा) छे, तथा प्रकर्षथी श्रवे (नीकळे) ते पेसाब एकिका (आ शब्द केटली जग्याए तेज रुपे वपराय छे, एटले निशाळमां छोकराने पेशाब करवा जवुं होय तो मास्टरने कहे के मास्टर एकी जाउं ?) आ स्थंडिल तथा मात्रुं केवी रीते करे तो अतिचार न लागे ते पछीनी गाथामां बतावे छे,

मुणिणा छक्कायदयावरेण सुत्तभणियंमि आगासे। उच्चारविउसग्गो, कायव्वो अप्पमत्तेणं ॥ ३१२ ॥

छ जीव निकायना रक्षणमां प्रयत्न करनार साधुए हवे पछी कहेवाता सूत्र प्रमाणे स्थंडिलमां उच्चार प्रश्रवण अप्रमत्तपणे करवां. निर्युक्ति अनुगम पछी सूत्र अनुगम कहे छे,

से भि० उच्चारपासवणकिरियाए उव्वाहिज्जमाणे सयस्स पायपुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाइज्जा ॥ से भि० से जं पु० थंडिल्लं जाणिज्जा सअंडं० तह० थंडिलंसि नो उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा ॥ से भि० जं पुण थं० अप्पपाणं जाव संतणयं तह० थं० उच्चा० वोसिरिज्जा ॥ से भि० से जं० अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स वा अस्सि० बहवे साहम्मिया स० अस्सि प० एगं साहम्मिणिं स० अस्सिप० बहवे साहम्मिणीओ स० अस्सि० बहवे समण० पगणिय २ समु० पाणाइं ४ जाव उद्देसियं चेएइ, तह० थंडिल्लं पुरिसंतरकडं जाव बहियानीहडं वा अनी० अन्नयरंसि वा

तहप्पगारंसि थं० उच्चारं नो वोसि० ॥ से भि० से जं० बहवे समणमा० कि० व० अतिही समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं जाव उद्देसियं चेएइ, तह० थंडिलं पुरिसंतरगडं जाव बहियाअनीहडं अन्नयरंसि वा तह० थंडिलंसि नो उच्चारपासवण०, अह पुण एवं जाणिज्जा—अपुरिसंतरगडं जाव बहिया नीहडं अन्नयरंसि तहप्पगारं० थं० उच्चार० वोसि० ॥ से० जं० अस्सिंपडियाए कयं वा कारियं वा पामिच्चियं वा छन्नं वा घट्ठं वा मट्ठं वा लित्तं वा संमट्ठं वा संपधूवियं वा अन्नयरंसि वा तह० थंडि० नो उ० ॥ से भि० से जं पुण थं० जाणेज्जा, इह खलु गाहावइ वा गाहा० पुत्ता वा कंदाणि वा जाव हरियाणि वा अंतराओ वा बाहिं नीहरंति बहियाओ वा अंतो साहरंति वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उच्चा० ॥ से भि० से जं पुण० जाणेज्जा—खंधंसि वा पीढंसि वा मंचंसि वा मालंसि वा अट्टंसि वा पासायंसि वा अन्नयरंसि वा० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं पुण० अणंतरहियाए पुढवीए ससिणिद्धाए पु० ससरक्खाए पु० मट्टियाए मक्कडाए चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुयाए कोलावासंसि वा दारुयंसि वा जीवपइट्ठियंसि वा जाव मक्कडासंताणयंसि अन्न० तह० थं० नो उ० ॥ (सू० १६७)

कोइ साधु कोइ वखते टट्टी पेसाब करवानी ताकीदे पीडातो होय अने रस्तामां तेवी छुटनी जग्या न मळे तो तेणे कुंडी अथवा तेवु योग्य साधन समाधि माटे मेळवी तेमां स्थंडिल जइ परठवी आववुं, पण जो पोतानी पासे हाजर न होय तो बीजा साधु पासे याचवुं अने तेनी प्रतिलेखना विगेरे करीने ने उपयोगमां लेवुं, आथी एम सूचव्युं के स्थंडिल पेसाबने रोकवा नहि, वळी शंका थाय पहेलांज बने त्यां लगी साधुए नीकळवुं, अने ज्यां स्थंडिल जाय त्यां प्रथम देखे के इंडा के नानाजंतु कीडीओ

के करोळीयानां जाळां वगेरे नथी, जो इंडां विगेरे होय तो त्यां टट्टी न जाय, हवे ते साधु एम जाणे के कोइ माणसे एक अथवा घणा साधु साध्वीने आश्रयी स्थंडिलनी जग्या बनावी होय, अथवा श्रमण माहण विगेरेने उद्देशीने बनावी होय, तो ते जग्याने बीजा पुरुषे स्वीकारी होय के न स्वीकारी होय तो पण मूल गुणथी दोषित होवाथी तेमां उच्चार प्रश्रवण न करवुं.

ते साधुए यावंतिक स्थंडिलमां अपुरुषांतर कृतमां स्थंडिल न जाय; पण बीजाए वापर्या पछी तेनो उपयोग पोते पण करे, वळी उत्तर गुण अशुद्ध ते खरीद करी होय, बदले लीधी होय विगेरे कारणे दोषित होवाथी तेमां स्थंडिल न जाय, अथवा स्थंडिलनी जग्यामांथी कंद विगेरेने छोकरां विगेरे बहार काढे, अथवा, ते जग्यामां कंद् विगेरे नांखे तो तेमां साधुए स्थंडिल न जवुं तथा स्कंध पीठ मांचडो माळो अट्टप्रासाद विगेरेनी अधर जग्या के उंची जग्या के नीची जग्या ज्यां समाधिथी न बेसाय तेवी जग्याए स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे सचित्त पृथ्वी विगेरे उपर स्थंडिल न जवुं भिनी होय, सचित्त रजवाळी होय, माटी करोळीयानां जाळां, सचित्त पत्थरनी शिला, माटीनां ढेफां, धुळना कीडावाळुं लाकडुं के नानां जतुंथी व्याप्त करोळीयाना जाळानां समुदायथी व्याप्त होय के तेवुं कंइ पण अप्रासुक स्थान होय त्यां स्थंडिल न जवुं.

से भि० से जं० जाणे०—इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा जाव बीयाणि वा परिसाडिंसु वा परिसाडिंति वा परिसाडिस्संति वा अन्न० तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० इह खलु गाहावई वा गा० पुत्ता वा सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा कुलत्थाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा पइरिंसु वा पइरिंति वा पइरिस्संति वा अन्नयरंसि वा तह० थंडि० नो उ० ॥ से भि० २ जं० आमोयाणि वा घासाणि वा भिलुयाणि वा विज्जुलयाणि वा

खाणुयाणि वा कडयाणि वा पगडाणि वा दरीणि वा पदुग्गाणि वा समाणि वा २ अन्नयरंसि तह० नो उ० ॥ से भिक्खू० से जं० पुण थंडिलं जाणिज्जा माणुसरंधणाणि वा महिसकरणाणि वा वसहक० अस्सक० कुकुंडक० मक्कडक० हयक० लावयक० वट्टयक० तित्तिरक० कवोयक० कविंजलकरणाणि वा अन्नयरंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० वेहाणसट्ठाणेसु वा गिद्धपट्ठठा० वा तरुपडणट्ठाणेसु वा० मेरुपडणठा० विसभक्खणयठा० अगणिपडणट्ठा० अन्नयरंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वादे वकुलाणि वा सभाणि वा पवाणि वा अन्न० तह० नो उ० ॥ से भिक्खू० से जं पुण जा० अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० तिगाणि वा चउक्काणि वा चचराणि वा चउम्मुहाणि वा अन्नयरंसि वा तह० नो उ० ॥ से भि० से जं० जाणे० इंगालदाहेसु खारदाहेसु वा मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० । से जं जाणे० नइयायतणेसु वा पंकाययणेसु वा ओघाययणेसु वा सेयणवहंसि वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से भि० से जं जाणे० नवियासु वा मट्टियखाणिआसु नवियासु गोप्पहेलियासु वा गवाणीसु वा खाणीसु वा अन्नयरंसि वा तह० थं० नो उ० ॥ से जं जा० डागवच्चंसि वा सागव० मूलग० हत्थंकरवच्चंसि वा अन्नयरंसि वा तह० नो उ० वो० ॥ से भि० से जं असणवणंसि वा सणव० धायइव० केय-इवणंसि वा अंबव० असोगव० नागव० पुन्नागव० चुल्लगव० अन्नयरेसु तह० पत्तोवेएसु वा पुप्फोवेएसु वा फलोवेएसु वा बीओवेएसु वा हरिओ वेएसु वा नो उ० वो० ॥ (सू० १६६)

साधु साध्वीए नीचली जग्याए स्थंडिल न जवुं—ते बतावे छे-जे जग्यामां गृहस्था अथवा तेना पुत्रो विगेरे कंद बीज विगेरे त्रणे काळमां नांखता होय, तथा गृहस्थलोक अथवा तेना पुत्रो विगेरेए शाली चोखा व्रीही मग अडद कलथी जव जवजव वाव्यां होय, वावता होय अथवा वाववाना होय; अथवा ज्यां आमोक ते कचराना ढगला (उकरडा) मां घास भूमिराजीओ-भिलुक सूक्ष्मभूमिराजीओ विज्जल स्थाणु तथा कडय मगर्त्ता-मोटाखाडा, तथा दरीप्रदुर्ग भींतो तथा कील्ला बुरुज आ बतावेला स्थान वखते सम होय कोइ जग्याए विषम होय (माटी विगेरे पडवानो डर होय) तेथी तेवी जग्याए स्थंडिल जतां पोते पडी जाय तो आत्मविराधना थाय, अने बीजा जीवो नीचे चगदाइ जतां संयम विराधना थाय तथा माणसोने माटे रांधवानी जग्या (चूला) होय, अथवा भेंस बळध घोडा कुकडां माकडां (वांदरा) हय लावक वट्टय तितर कबुतर कपिंजल विगेरे पशु पक्षी माटे खावा पीवानुं अथवा शीखवानुं के तेवुं बीजुं कंइ पण कार्य थतुं होय तथा ते स्थानमां तेमने रखातां होय ते जग्याए स्थंडिल जवाथी लोक विरुद्ध प्रवचननो उपघात विगेरे थाय माटे त्यां न जवुं, वळी आपघात करवानां स्थान जेमां झाडे फांसो खाय लोक मरतां होय, गीध विगेरे पक्षीओ पासे काया चुंथावी मरवा लोही चोपडी सुतां होय, झाड उपरथी नीचे कूदीने मरतां होय, अथवा झाड माफक स्थिर थइ अनशन वडे मरतां होय, मेरु (पर्वत) उपरथी पडीने मरतां होय, तथा विषभक्षण करी मरतां होय, अग्निमां बळी मरतां होय, अथवा तेवां बीजां मरवांनां स्थान होय, त्यां साधुए स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे आराम [जेमां काळो विशेष होय] उद्यान वन वनखंड देवल सभा परब विगेरेनी जग्यामां स्थंडिल न जाय, अट्टालक चरिय दरवाजा गोपुर अथवा तेवा गाम शहेरना कोट कील्लानां स्थान होय त्यां स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे त्रिकोण चतुष्क [ज्यां त्रण के चार रस्ता मळतां होय] के चातारो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होय तेवा स्थानमां पण स्थंडिल न जवुं, तेज प्रमाणे अंगारा पाळवानी जग्या, खारो तैयार करवानी जग्या अथवा मळदां बाळवानी जग्या, ज्यां मळदानां पगलां होय, देरीओ होय. अथवा कबरो होय अथवा तेवा बीजा कोइ पण स्थानमां स्थंडिल न जवुं, तथा जे जग्याए पाणी पवित्र मानी लोक नहातां होय तेवा लौकिक तीर्थ स्थानमां, तथा पंकायतन ज्यां माटी पवित्र मानी लोक आळोटतां होय, ओघायतन एटले परंपराथी ज्यां लोको पवित्र स्थान मानता होय अथवा जे रस्तेथी तळावमां पाणीनी नीको होय त्यां स्थंडिल न जवुं, तथा माटी खोदवानी नवी खाण होय, अथवा गायोनी प्रहेलो अथवा खवडाववानुं स्थान होय, अथवा बीजी खाणो होय त्यां स्थंडिल न जवुं तथा डाग (पांदडांवाळुं शाख,) तथा बीजा शाख तथा मूळा थवानी जग्यामां हत्थंकरनी जग्यामां स्थंडिल न जवुं, तथा अशन वन शणनुं वन धावडोनुं वन केतकीनुं वन आंबानुं, अशोकनुं नाग पुन्नाग चुल्लक विगेरेनुं वन होय, तथा पांदडां फूल फळ बीज भाजी विगेरेथी युक्त स्थान होय त्यां साधुए स्थंडिल न जवुं

प्र० त्यारे केवी रीते स्थंडिल जवुं ? ते कहे छे—

से भि० सयपायगं वा परपायगं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि असंलोयंसि अप्पपाणंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसरिज्जा, से तमायाए एगंतमवक्कमे अणाबाहंसि जाव संताणयंसि अहारामंसि वा झामथंडिल्लंसि वा अन्नयरंसि वा तह० थंडिल्लंसि अचित्तंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरिज्जा, एयं खलु तस्स० सया जइज्जासि (सू० १६७) त्तिबेमि ॥ उच्चारपासवणसत्तिक्कओ सम्मत्तो ॥

ते साधु पोतानुं के कारण प्रसंगे बीजानु पात्रुं (तृपणी के तुंबडी पहोळा मोढानी) लइ जाय अने ज्यां लोको न जुए अथवा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न आवे तथा जीवात न होय, तेवा आराम के रहेवाना मकानमां एकांतमां बेसी माटीनी कुंडी विगेरेमां टट्टी के पेसाब करीने ते कुंडी विगेरेने लइ ज्यां निर्जीव स्थान होय त्यां परठवे, आज साधुनुं सर्वस्थ अने समाधि छे के स्वपरने पीडा न थाय, तेम स्थंडिल जवुं.

"शब्द सप्तक"—चोथुं अध्ययन.

त्रीजा साथे चोथानो आ प्रमाणे संबंध छे, के पहेलामां स्थान, बीजामां स्वाध्याय, त्रीजामां स्थंडिल विगेरेनी विधि बतावी. ते त्रणेमां रहेला साधुने अनुकूल के प्रतिकूल शब्दो संभळाय तो ते सांभळीने साधुए राग द्वेष न करवो, आ संबंधे आवेला आ अध्ययनना चार अनुयोग्यद्वारमां नाम निष्पन्न निक्षेपामां "शब्द सप्तक" एवुं नाम छे, एना नाम स्थापना सुगम निक्षेपाने छोडी द्रव्य निक्षेपो निर्युक्तिकार पाछली अडधी गाथावडे बतावे छे.

[दव्वं संठाणाई भावो वन्नकसिणं स भावो य] । दव्वं सद्दपरिणयं भावो उ गुण य कित्ती य ॥ ३२३ ॥

नो आगमथी द्रव्य व्यतिरिक्तमां शब्द पणे जे भाषा द्रव्यो परिणत थाय छे, ते अहिआं लेवां, भावशब्द तो आगमथी जेने शब्दोमां उपयोग होय, अने नो आगमथी अहिंसादि लक्षणवाळा गुणो समजवा, कारण के आ हिंसा जुठ विगेरथी दूर रहेवुं, ते गुणोथी प्रशंसा पामे छे अने कीर्त्ति तो जे तीर्थंकर प्रभुने चोत्रीश अतिशय प्रकट थतां बीजा करतां अधिक रुप संपदायुक्त पोते थवाथी लोकमां आ अर्हन् देव छे, एम प्रसिद्ध थाय ते कीर्त्ति छे.

For Private and Personal Use Only

नियुक्ति अनुगम पछी तुर्त सूत्र आ अनुगममां सूत्र कहेवुं, ते छे.

से भि० मुइंगसद्दाणि वा नंदीस० झल्लरीस० अन्नयराणि वा तह० विरूवरूवाइं सद्दाइं विततांइं कन्नसोयणपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं— वीणासद्दाणी वा विपंचीसं० पिप्पी (बद्धी) सगस० तूणयसद्दा० वणयस० तुंबवीणियसद्दाणि वा ढुंकुणसद्दाइं अन्नयराइं तह० विरूवरूवाइं० सद्दाइं विततांइं कण्णसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं–तालसद्दाणि वा कंसतालसद्दाणि वा लत्तियसद्दा० गोधियस० किरिकिरियास० अन्नयरा० तह० विरूव सद्दाणि कण्ण० गमणाए ॥ से भि० अहावेग० तं० संखसद्दाणि वा वेणु० वंसस० खरमुहिस० परिपिरियास० अन्न्य० तह० विरूव० सद्दाइं झुसिराइं कन्न० ॥ (सू० १६८)

पूर्वे बतावेलो भिक्षु जो वितत, तत, घन पोकळ, एवा वाजींत्रना चार भेदवाळा मधुर शब्दोने सांभळे, (तो तेने राग थाय) ते सांभळवानी इच्छाथी पोते ते तरफ न जाय.

वितत एटले मृदंग नन्दी झालर विगेरे छे तथा वीणा विपंची बद्धीसक (सरणाइ) विगेरे तंत्रीनां वाजां छे. वीणा विगेरेनो भेद तंत्रीनी संख्याथी जाणवो.

घन एटले हस्तताल कांसी विगेरे छे. लत्तिकानो अर्थ कांसी छे अने गोहिका एटले काख अने हाथमां राखीने वगाळवानुं वाजुं छे.

किरिकिरिया ते वांस विगेरेनी कांबीनुं वाजुं छे, शुषिर ते शंख, वेणु विगेरे पोकल वाजां छे. पण खरमुही ते तोहाडिक छे अने पिरिपिरिचय ते कोलियकना पुटथी जडेली वांस विगेरेनी नळी छे. आवां कोइ पण वाजींत्र वागतां होय तो साधुए ते तरफ

न जवुं. वळी—

से भि० अहावेग० तं० वप्पाणि वा फलिहाणि वा जाव सराणि वा सागराणि वा सरसरपंतियाणि वा अन्न० तह० विरूव० सद्दाइं कण्ण० ॥ से भि० अहावे० तं० कच्छाणि वा णूमाणि वा गहणाणि वा वणाणि वा वणदुग्गाणि पव्वयाणि वा पव्वयदुग्गाणि वा अन्न० । अहा० त० गामाणि वा नगराणि वा निगमाणि वा रायहाणाणि वा आसमपट्टणसंनिवेसाणि वा अन्न० तह० नो अभि० ॥ से भि० अहावे० आरामाणि वा उज्जाणाणि वा वणाणि वा वणसंडाणि वा देवकुलाणि वा सभाणि वा पवाणि वा अन्नय० तह०सद्दाइं नो अभि० ॥ से भि० अहावे० अट्टाणि वा अट्टालयाणि वा चरियाणि वा दाराणि वा गोपुराणि वा अन्न० तह० सद्दाइं नो अभि० ॥ से भि० अहवे० तंजहा–तियाणि वा चउक्काणि वा चच्चराणि वा चउम्मुहाणि वा अन्न० तह० सद्दाइं नो अभि० ॥ से भि० अहावे० तंजहा–महिसकरणट्ठाणाणि वा वसभक० अस्सक० हत्थिक० जाव कविंजलकरणट्ठा अन्न० तह० नो अभि० ॥ से भि० अहावे० तंज० महिसजुद्धाणि वा जाव कविंजलजु० अन्न० तह० नो ॥ से भि० अहावे० तं० जूहियठाणाणि वा हयजू० गयजू० अन्न० तह० नो अभि० ॥ (सू० १६९)

ते साधु कदाच कोइपण जातना शब्दोने खांभळे के वप्र ते क्यारा छे एटले तेनी सुंदरतानुं वर्णन सांभळे अथवा ते खेतरना क्यारा विगेरेमां मधुर गायन विगेरे थतुं होय तो ते सांभळवानी इच्छाथी त्यां न जाय वप्रथी जाणवुं के तेज प्रमाणे फलिह सरोवर सागर तलावडीओ जोवा साधुए न जवुं तथा त्यां वाजींत्र वागतुं होय तो पण सांभळवा न जवुं. तेज प्रमाणे कच्छ,णूम गहन वन अथवा वनमांना पर्वतो अथवा पर्वतनाकिल्ला किल्ला पण जोवा न जवुं तथा गाम नगर निगम राजधानी आश्रम पाटण सन्निवेश

विगेरेमां मधुर शब्दो सांभळवा न जवुं तथा आराम उद्यान वन वनखंड देरां सभा परब विगेरेमां वाजां सांभळवा न जवुं तथा अट्ट अट्टालक चरित दरवाजा तथा नगरना दरवाजे शब्द सांभळवा न जवुं तथा त्रिक चोक चोतरो चोमुख स्थानमां न जवुं तथा पाडा बळद घोडा हाथी विगेरेनां.

ते कपिंजल सुधीनां कळा शीखववाना स्थानमां जोवा न जवुं तथा ज्यां तेमनुं मैथुन थतुं होय त्यां न जवुं, तेम तेमनुं युद्ध थतुं होय अथवा तेमनी क्रिया थती होय ते जोवा न जवुं

से भि० जाव सुणेइ, तंजहा–अक्खाइयठाणाणि वा माणुम्माणियट्ठाणाणि वा महताऽऽहयनट्टगीयवाईयतंतीतलतालतुडिय-पडुप्पवाइयट्ठाणाणि वा अन्न० तह० सद्दाइं नो अभिसं० ॥ से भि० जाव सुणेइ, तं०–कलहाणि वा डिंबाणि वा डमराणि वारज्जाणि वा वेर० विरुद्धर० अन्न० तह० सद्दाइं नो० ॥ से भि० जाव सुणेइ खुड्डियं दारियं परिभुत्तमंडियं अलंकियं निवुज्झमाणिं पेहाए एगं वा पुरिसं वहाए नीणिज्जमाणं पेहाए अन्नयराणि वा तह० नो अभि० ॥ से भि० अन्नयराइं विरूव० महासवाइं एवं जाणेज्जा तंजहा–बहुसगडाणि वा बहुरहाणि वा बहुमिलक्खूणि वा बहुपच्चंताणि वा अन्न० तह० विरूव० महासवाइं कन्नसोयपडियाए नो अभिसंधारिज्जा गमणाए ॥ से भि० अन्नयराइं विरूव० महूस्सवाइं एवं जाणिज्जा तंजहा–इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा डहराणि वामज्झिमाणि वा आभरणविभूसियाणि वा गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा मोहंताणि वा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा परिभायंताणि वा विछड्डियमाणाणि वा विगोवयमाणाणि वा अन्नय० तह० विरूव० महु० कन्नसोय० ॥ से भि० नो इहलोइएहिं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्देहिं नो परलोइएहिं स० नो सुएहिं स० नो असुएहिं स० नो दिट्ठेहिं सद्देहिं नो अदिट्ठेहिं स० नो कंतेहिं सद्देहिं सज्जिज्जा नो गज्झिज्जा नो मुज्झिज्जा नो अज्झोववज्जिज्जा, एयं खलु० जाव० नएज्जासि (सू० १७०) त्तिबेमि ॥ सद्दसत्तिक्कओ ॥ २-२-४ ॥

तेज प्रमाणे ज्यां कथाओ कहेवाती होय, मापा तोल विगेरे थतुं होय अथवा तेनुं वर्णन थतुं होय त्यां न जवुं तथा मोटा अवाजे नाटक गीत वाजींत्र तंत्री त्रीतल ताल त्रुटेतर्थी थतुं होय त्यां सांभळवा न जवुं तथा कजीआ वालकोना खेल डमर अथवा बे राज्योनी लडाइ होय अथवा बहारवटीया राज्य विरुद्ध फरता होय, तेवुं सांभळे तो त्यां न जाय.

अथवा ते साधु एम सांभळे, के कोइ सुंदर बालिकाने आखा शरीरे स्नान करावी वस्त्राभूषणथी शणगारी घोडा उपर बेसाडेली छे तो त्यां न जवुं.

अथवा कोइ पुरुषने वध करवा लइ जता होय तेवुं अथवा दुःख देवा संबंधी बीजुं कंइ सांभळवा मळे त्यां न जाय,

अथवा ते साधु महा पाप आश्रवनां स्थान ते घणां गाडां रथो विगेरेथी युक्त म्लेच्छो अथवा हलका प्रकारना माणसो युक्त होय, त्यां कानने आनंद पमाडनार सांभळवानुं मळशे तेवी बुद्धिए न जाय,

तेज प्रमाणे ज्यां महोत्सवो होय के जेनी अंदर स्त्री पुरुष बुढा बाळक अथवा मध्यम वयनां माणसो सुंदर वस्त्रालंकार पहेरीने गायनो विगेरेनी क्रिया करे छे, त्यां सांभळवानी बुद्धिथी न जाय. हवे बधा परमार्थ टुंकमां समजावे छे.

ते साधु आलोक अने परलोकना महा दुःखना भयथी डरेलो एटले आ लोकमां सांभळवाना रसमां मनुष्य विगेरेथी भय छे,

For Private and Personal Use Only

अने परलोकमां परमाधामी (जमडा) ना मार खावा पडशे एम विचारीने मोह छोडे, अथवा आ लोक के परलोकना स्त्रीना के देवीना शब्दोमां न ललचाय, तथा तेवा शब्दो सांभळ्या होय, के नहि, अथवा साक्षात् मळ्या होय के नहि, तो पण तेमां राग न करे, तेमां गृद्धता न करे, तेमां मुंझाय नहि, न तल्लीन थाय, अर्थात् जे कानने कबजामां राखी मधुरमां आनंद न माने, तितना कडवा शब्दोमां खेद न माने. तेज तेनुं पूर्ण साधुपणुं छे.

जो तेम इंद्रियोने कबजामां न राखी शब्दो सांभळवा जाय, तो भणवुं गणवुं न थाय, तथा राग द्वेष थाय, ए प्रमाणे बीजा पण आ लोक परलोक संबंधी दुःखो जाणीने विचारवा.

रूप सप्तक नामनुं पांचमुं अध्ययन

चोथुं सप्तक कहीने हवे रुप सप्तक कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया उद्देशामां श्रवण इंद्रिय आश्रयी रागद्वेषनी उत्पत्ति निषेधी. तेम अहीं आंखने आश्रयी निषेधशे, आ संबंधे आवेला अध्ययनना नाम नि—निक्षेपामां (रुप सप्तक एकक) नाम छे.

रुपना चार प्रकारे निक्षेपा छे—

नाम स्थापना सुगमने छोडीने द्रव्यभाव निक्षेपा कहेवा निर्युक्तिकार गाथा कहे छे.

दव्वं संठाणाई भावो वन्न कसिणं सभावो य। [दव्वं सद्द (रूव) परिणयं भावो उ गुणा य कित्ती य] ॥ ३२४ ॥

नो आगमथी द्रव्य व्यतिरिक्तमां पांचे स्थानो परिमंडळ (पूर्ण गोळो) विगेरे आकारो छे, अने भावरुप बे प्रकारे वर्णथी तथा स्वभावथी छे, तेमां वर्णथी बधा (पांचे) वर्णो छे अने स्वभाव रुप ते अंदरमां रहेला क्रोध विगेरेथी भापण चढावी कपाळमां सळ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाडीने आंख लाल करीने अनुचित वचन बोलवां, एथी विपरीत प्रसन्न थइने रागनां वचन बोलवां, कह्युं छे के—

रुट्ठस्स खरा दिट्ठी उप्पलधवला पसन्नचित्तस्स । दुहियस्स ओमिलायइ गंतुमणस्सुस्सुआ होइ ॥ १ ॥

क्रोधीने आंख लाल होय, अने प्रसन्न थएलानी कमळ जेवी धोळी होय, दुःखी जीवनी मींचायला जेवी होय, अने जवा इच्छनारनी खांख उत्सुक होय.

से भि० अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं० गंथिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा कट्ठकम्माणि वा पोत्थकम्माणि वा चित्तक० मणिकम्माणि वा दंतक० पत्तछिज्जकम्माणि वा विविहाणि वा वेढिमाइं अन्नयराइं० विरू० चक्खुदंसणपडियाए नो अभिसंधारिज्ज गमणाए, एवं नायव्वं वा जहा सद्दपडिमा सव्वा वाइत्तवज्जा रूवपडिमावि ॥ (सू० १७१) पञ्चमं सत्तिक्कयं ॥ २-२-५ ॥

ते भाव साधु गोचरी विगेरेना कारणे बहार फरतां जुदी जुदी जातिनां रुपो जुए, तेमां मोह न करे, हवे ते रुपोनी विगत बतावे छे. फुलो विगेरेथी साथीओ विगेरे गुंथीने बनाव्यो होय, तथा वस्त्र विगेरे वींटीने पुतळी विगेरे बनावेल होय, तथा अमुक चीजो पुरीने पुरुष विगेरेनो आकार बनाव्यो होय, तथा कपडांना ककडा शीवीने कांचळी विगेरे बनावे-ते संघातिम छे, लाकडानां रथ विगेरे काष्ट कर्म छे. तथा पुस्तको, लेपनुं काम, चित्रो, तथा जुदां जुदां मणि रत्नोवडे साथीआ विगेरे बनावेल होय, हाथी-दांतनी पुतळी विगेरे होय, पांदडां छेदीने आकार बनाव्यो होय, आ प्रमाणे अनेक मनोहर वस्तुओ देखीने आंखने प्रसन्न करवानी इच्छाथी न जाय, अर्थात् जवुं तो दूर रहो पण मनमां अभिलाषा पण देखवानी न करे, तथा पूर्वे शब्दोना अधिकारमां बताव्युं ते

For Private and Personal Use Only

प्रमाणे अहीं पण योजवुं के आलोक संबंधी के परलोक संबंधी सांभळ्युं होय के न सांभळ्युं होय, देख्युं होय के नहि देख्युं होय, तो ते ते दरेक जातिना रुपमां राग गृद्धता, मोह के तल्लीनता न करवी, जो रुपमां राग विगेरे करशे तो आ लोकमां मनुष्य विगेरेथी अने परलोकमां परमाधामीना मार पडशे.

परक्रिया नामनुं छठुं अध्ययन.

रुप अध्ययन कहीने परक्रिया नामनुं छठुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे.

गयां बे अध्ययनमां रागद्वेषनी उत्पत्तिनां निमित्त मधुर शब्द अने रुपनो निषेध बताव्यो, तेनेज अहीं बीजे प्रकारे कहेशे, आवे संबंधे आवेला अध्ययनना नाम निष्पन्न निक्षेपामां परक्रिया एवुं आदान पदवडे नाम छे, तेमां प्रथम पर शब्दनो छ प्रकारनो निक्षेप अडधी गाथावडे कहे छे.

छक्कं परइक्कि त १ दन्न २ माएस ३ कम ४ बहु ५ पहाणे ६ ।

'पर' शब्दनो छ प्रकारे निक्षेपो छे, नाम स्थापना सुगम छे, अने द्रव्यादि पर पण एकेक छ प्रकारे छे.

१ तत्पर २ अन्यपर ३ आदेशपर ४ क्रमपर ५ बहुपर ६ प्रधानपर छे. तेमां प्रथम द्रव्यपर तेजरुपे वर्त्तमानमां विद्यमान होय, जेमके एक परमाणुथी बीजो परमाणु जुदो छे अन्यपर ते अन्यरुपे पर छे, जेमके एक बे अणुवाळो, त्रण अणुवाळो तेमज बे अणुवाळो एक अणुवाळो के त्रण अणुवाळो छे, आदेशपर ते आदेश (आज्ञा) अपाय छे ते, जेमके कोइ कार्यमां मजुर विगेरेने रखाय छे ते आदेशपर छे, पण 'क्रमपर' तो चार प्रकारे छे, तेमां द्रव्यथी क्रम पर ते एक प्रदेशिक द्रव्यथी बे प्रदेशिक द्रव्य छे

ए प्रमाणे बे अणुकथी त्रण अणुक विगेरे छे. क्षेत्रना एक प्रदेशमां रहेल तेनाथी बे प्रदेश अवगाहमां रहेलुं छे, तथा कालथी एक समयनी स्थितिवाळाथी बे समयनी स्थितिवाळुं विगेरे छे, भावथी क्रम पर ते एक गुण काळथी बे गणुं काळुं विगेरे छे. ए प्रमाणे बधा रंगमां जाणवुं.

"बहु पर" ते बहुपणे पर एटले एकथी बीजुं बहु होय ते जाणवुं जेमके

जीवा पुग्गल समया दव्व पएसा य पज्जवा चेव । थोवाणंताणंता विसेसअहिया दुवेणंऽता ॥ १ ॥

जीव सौथी थोडा छे तेवी पुद्गलो अनंतगुणा छे, तेनाथी समयो द्रव्यना प्रदेशो अने तेनां पर्यायो अनंत तथा विशेष अधिक छे. फक्त बेमां अंनंतगणा छे.

प्रधानपर ते बे पगवाळामां तीर्थंकर छे तथा चोपगामां सिंह विगेरे अने अपदमां अर्जुन, सुवर्ण, फणस विगेरे झाडो छे, ए प्रमाणे क्षेत्रकाळ भाव पर विगेरेने पण तत्पर विगेरे छ प्रकारे क्षेत्र विगेरे प्रधानपणाथी पहेलांनी माफक पोतानी बुद्धिए योजवां

सामान्यथी तो जंबूद्वीपक्षेत्रथी पुष्कर विगेरे क्षेत्रो पर छे तथा काळ पर ते वरसादनी रुतुथी शरद रुतु छे, भावपर औदयिकथी औपशमिक विगेरे छे. हवे सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारवुं जोइए ते आ छे.

परकिरियं अज्झत्थियं संसेसियं नो तं सायए नो तं नियमे, सिया से परो पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं संवाहिज्ज वा पलिमद्दिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं कुसिज्ज वा रइज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे । से सिया परो पायाइं तिल्लेण वा घ० वसाए वा वा मक्खिज्ज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा अब्भिगिज्ज वा नो तं २। से सिय परो पायाइं लुद्धेण वा कक्केण वा चुन्नेण वा वण्णेण वा अल्लोढिज्ज वा उव्वलिज्ज वा नो तं २। से सिया परो पायाइं सीओदगवि यडेण वा २ उच्छोलिज्ज वा पहोलिज्ज वा नो तं०। से सिया परो पायाइं अन्नयरेण विलेवण जाएण आलिंपिज्ज वा विलिंपिज्ज वा नो तं। से सिया परो पायाइं अन्नयरेण धूवणजाएण धूविज्ज वा पधू० नो तं २। से सिया परो पायाओ आणुयं वा कंटयं वा नीहरिज्ज वा विसोहिज्ज वा नो तं० २। से सिया परो पायाओ पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा विसो० नो तं० २। से सिया परो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जिज्ज वा नो तं सायए नो तं नियमे। से सिया परो कायं लोट्टेण वा संवाहिज्ज वां पलिमदिज्ज वा नो तं० २। से सिया परो कायं तिल्लेण वा घ० वसा० मक्खिज्ज वा अब्भंगज्ज वा नो तं० २। से सिया परो कायं लुद्धेण वा ४ उल्लोढिज्ज वा उव्वलिज्ज वा नो तं० २। से सिया परो कायं सीओ० उसिणो० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २। से सिया परो कायं अन्नयरेण विलेवणजाएण आलिंपिज्ज वा २ नो तं० २। से० कायं अन्नयरेण धूवणजाएण धूविज्ज वा प० नो तं० २। से० कायंसि वणं आमज्जिज्ज वा २ नो तं २। से० वणं संवाहिज्ज वा पलि० नो तं०। से० वणं तिल्लेण वा घ० २ मक्खिज्ज वा अब्भं० नो तं० २। से० वणं लुद्धेण वा ४ उल्लोढिज्ज वा उव्वलेज्ज वा नो तं० २। से सिया परो कायंसि वणं सीओ० उ० उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २। से० सि वणं वा गंडं वा अरइं वा पुलयं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थजाएणं अच्छिदिज्ज वा विच्छिदिज्ज वा नो तं० २। से सिया परो अन्न० जाएण आच्छिदित्ता वा विच्छिदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २। से० कायंसि गंडं वा अरइं वा पुलइयं

वा भगंदलं वां आमज्जिज्ज वा २ नो तं० २ । से० गंडं वा ४ संवाहिज्ज वा पलि० नो तं० २ । से० कायं० गंडं वा ४ तिल्लेण वा ३ मक्खिज्ज वा २ नो तं० २ । से० गंडं वा लुद्धेण वा ४ उल्लोढिज्ज वा उ० नो तं० २ । से गंडं वा ४ सीओदग २ उच्छोलिज्ज वा प० नो तं० २ । से० गंडं वा ४ अन्नयरेणं सत्थजाएणं अच्छिदिज्ज वा वि० अन्न० सत्थ० अच्छिदित्ता वा २ पूयं वा २ सोणियं वा नीह० विसो० नो तं सायए २ । से सिया परो कायंसि सेयं वा जल्लं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २ । से सिया परो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहम० नीहरिज्ज वा नो २ नो तं० २ । से सिया परो दीहाइं वालाइं दीहाइं वा रोमाइं दीहाइं भमुहाइं दीहाइं कक्खरोमाइं दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पिज्ज वा संठविज्ज वा नो तं २ । से सिया परो सीसाओ लिक्खं वा जूयं वा नीहरिज्ज वा वि० नो तं० २ । से सिया परो अंकंसि वा पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता वा पायाइं आमज्जिज्ज वा पम०, एवं हिट्ठिमो गामो पायाइ भाणियव्वो । से सिया परो अंकंसि वा २ तुयट्टावित्ता हारं वा अद्धहारं वा उरत्थं वा गेवेयं वा मउडं वा पालंबं वा सुवन्नसुत्तं वा आविहिज्ज वा पिणहिज्ज वा नो तं० २ । से० परो आरामंसि वा उज्जाणंसि वा नीहरित्ता वा पविसित्ता वा पायाइं आमज्जिज्ज वा प० नो तं साइए ॥ एवं नेयव्वा अन्नमन्नकिरियावि ॥ (सू० १७२) ॥

अहीं साधुथी पर कोइपण गृहस्थ होय, ते कंइपण क्रिया साधुना अंग उपर करे, तो ते समये साधुए ते क्रियाने कर्मबंधननुं कारण जाणीने तेने मनथी पण इच्छे नहिं. तेम वचनथी के कायाथी पण न करवा दे.

आ पर क्रियाने खुलासाथी समजावे छे, कोइ अन्य श्रावक धर्म श्रद्धायी साधुना पग उपर लागेली धुळने कर्पट विगेरेथी दूर

करे अथवा तेवुं बीजुं कंइ प्रमार्जन विगेरे करे तेने साधु मन, वचन, कायाथी सारुं न जाणे, तेम बोले. मसळे, तो पण सारुं न जाणे तेम तेल विगेरेथी के बीणा पदार्थथी अभ्यंगन करे अथवा लोधर विगेरेथी उद्वर्त्तन करे तथा ठंडापाणी विगेरेथी छंटकाव करे तेम कोइ सुगंधी द्रव्यथी लेप करे तेम विशिष्ट धुपथी शरीर सुगंधी बनावे अथवा पगमां लागेलो कांटो काढे अथवा पगमांथी खराब परु के लोही काढे तो तेने सारुं मन वचन कायाथी न जाणे जेवी रीते पगनुं कह्युं, ते प्रमाणे अंगनां पण कृत्य जाणी लेवां. तेज प्रमाणे गुमडां आश्री पण जाणवुं तथा शरीरमां नस्तर विगेरे मारीने के मलम विगेरे लगाडीने गुमडां विगेरे सारां करे तो ते मन वचन कायाथी अनुमोदे नहिं.

अथवा शरीर उपरथी परसेवो के मेल दूर करे तो पण सारुं न माने तथा आंखनो काननो दांतनो के नखनो मेल दूर करे तो सारुं न माने, तेम माथाना के शरीरना वाळ रोम के भांपणाना के काखना वाळ के गुह्यभागना वाळ कापे के सरखा करे तो सारुं न माने वळी ते साधुने अंकमां अथवा पल्यंकमां तेज प्रमाणे हार अर्धहार कंठी गळचवो पहेरावे अथवा मुकुट के झुमखा पहेरावे. कंदोरो पहेरावे तेने सारुं न जाणे; ते वखते साधु आराम अथवा उद्यानमां होय त्यां गृहस्थ आवीने उपरनी क्रिया करे तो साधु तेने सारुं न जाणे.

से सिया परो सुद्धेणं असुद्धेणं वा वइबलेण वा तेइच्छं आउट्टे से० असुद्धेण वइबलेणं तेइच्छं आउट्टे ॥ सेसिया परो गिलाणस्स सचित्ताणि वा कंदाणि वा मूलाणि वा तयाणि वा हरियाणि वा खणित्तु कड्ढित्तु वाकड्ढावित्तु वा तेइच्छं आउट्टाविज्ज नो तं सा० कडुवेयणा पाणभूयजीवसत्ता वेयण वेइंति, एयं खलु० समिए सया जए सेयमिणं मन्निज्जासि

(सू० १७३) त्तिबेमि ॥ छट्ठओ सत्तिकओ ॥ २-२-६ ॥

ते साधुने बीजो कोइ माणस शुद्ध अथवा अशुद्ध वचनबळ ते मंत्र विगेरेथी रोग समावे (विंछु विगेरे उतारे) तो पोते सारु जाणे नहिं तथा बीजो मांदा साधुनी दवा माटे कंदमूळ विगेरे खोदीने खोदावीने लावीने दवा करे तो तेने सारुं न जाणे बनी शके तो दुःख भोगवतां आवी भावना भाववी के पूर्वे जीवे कर्म कर्या छे अने तेनां फळ भोगवे छे माटे बीजा कंदमूळ विगेरेने दुःख दइने तथा बीजा प्राणीओने शरीर मन संबंधी पीडा आपीने पोते फरीथी दुःख भोगवशे, कारणके प्राणी भूत जीव सत्त्वो छे, ते हाल दरेक पोताना पूर्वे करेला कृत्यना विपाकने भोगवे छे कह्युं छे के

पुनरपि सहनीयो दुःखपाकस्त्वयायं न खलु भवति नाशः कर्मणां सञ्चितानाम् । इति सहगणयित्वा यद्यदायाति सम्यक्, सदसदिति विवेकोऽन्यत्र भूयः कुतस्ते ? ॥ १ ॥

हे साधु! तारे आ दुःखनो विपाक सहेवो जोइए; कारणके पूर्वे करेला कर्मोनो संचय करेलो छे ते समजीने हवे पछी जे जे सुख दुःख आवे ते समभावे सहन कर, ए सिवाय बीजे तारो विवेक क्यांथी होय? आ प्रमाणे छट्ठाथी तेरमा सुधी सात अध्ययन समाप्त छे.

पूर्वे कह्या प्रमाणे बीजाए करेली क्रिया अनुमोदवी नहिं. तेम अहीं सातमा अध्ययनमां अन्य अन्य क्रिया पण करवानी निषेध करे छे. आ प्रमाणे छट्ठा सातमा अध्ययननो संबंध छे, नाम नि. निक्षेपामां अन्यो अन्य क्रिया एवुं नाम छे तेनी बाकी रहेली अडधी गाथाने निर्युक्तिकार कहे छे.

अन्ने छक्कं तं पुण तदन्नमाएसओ चेव ॥ ३२५ ॥

अन्यना छ प्रकारे निक्षेपा छे. नाम-स्थापना सुगम छे. द्रव्य अन्य निक्षेपामां पर शब्दमां जे खुलासो कर्यो छे तेम अहीं पण जाणवुं. अहीं परक्रिया के अन्य क्रिया कारण प्रसंगे गच्छवासीने करवी पडे तेमां जयणा राखवी, गच्छमांथी नीकळेलाने औषध विगेरे क्रियानुं प्रयोजन नथी, ते निर्युक्तिकार बतावे छे.

जयमाणस्स परो जं करेइ जयणाए तत्थ अहिगारो । निप्पडिकम्मस्स उ अन्नमन्नकरणं अजुत्तं तु ॥ ३२६ ॥
सत्तिक्काणं निज्जुत्ती समत्ता ॥

साधुए जयणाथी काम करवुं करावकुं रागद्वेष न करवा, पण जीनकल्पीने ते घटतुं नथी, तेओ दवा विगेरेथी, दूर छे,
से भिक्खू वा २ अन्नमन्नकिरियं अज्झत्थियं संसेइयं नो तं सायए २ ॥ से अन्नमन्नं पाए आमज्जिज्ज वा० नो तं०, सेसं
तं चेव, एयं खलु० जइज्जासि (सू० १७४) त्तिबेमि ॥ सप्तमम् ॥ २-२-७ ॥

अन्यो अन्य एटले परस्पर क्रिया ते साधुए मांहो मांहे पण खास कारण विना चोळवुं चांपवुं दाबवुं विगेरे न करवुं. जरुर पडे करतां राग द्वेष न करवो.

आप्रमाणे बीजी चूलिका समाप्त थइ.

भावना नामनी त्रीजी चूलिका.

बीजी कहीने हवे त्रीजी चूलिका कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, के आ आचारांग सूत्रनो विषय प्रथम वर्धमान स्वामिए कह्यो, ते उपकारी होवाथी तेनी वक्तव्यता खुलासाथी कहेवा तथा पंचमहाव्रत लीधेला साधुए पिंड शय्या विगेरे (संयम शरीर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्षार्थे) लेवा, ते बे चूलिकामां बताव्युं. तेज प्रमाणे महाव्रतोने बराबर पाळवा माटे भावना भाववी, ते आ त्रीजी चूलिकामां कहेशे. तेथी आवा संबंधे आवेली आ चूलिका (चूडा) ना चार अनुयोग द्वार कहेवा, तेमां उपक्रम द्वारमां रहेलो आ अर्थाधिकार छे, के अप्रशस्त भावना त्यागीने प्रशस्त भावना भाववी, नामनि–निक्षेपामां 'भावना' ए नाम छे, तेना नाम स्थापना विगेरे चार प्रकारनो निक्षेप छे, नाम स्थापना सुगमने छोडी द्रव्यादि निक्षेपो निर्युक्तिकार कहे छे.

दव्वं गंधंगतिलाइएसु सीउण्हविसहणाईसु । भावंमि होइ दुविहा पसत्थ तह अप्पसत्था य ॥ ३२७ ॥

नो आगमथी, द्रव्य भावना व्यतिरिक्तमां जोइ वगेरेना फूलो विगेरे गंधवाळा द्रव्यथी जे तेल वगेरे द्रव्य (पदार्थ) मां जे वासना (सुगंधी) लावे, ते द्रव्य वासना छे, तथा शीतमां उछरेलो माणस शीत (ठंड) सहे, उष्ण देशमां उछरेलो ताप सहे, तथा कसरत करनारो अनेक कायकष्ट सहे, तेज प्रमाणे बीजा कोइ पण पदार्थ वडे अथवा पदार्थनी जे भावना (धर्म समज्या विनानी) होय ते द्रव्य भावना छे, अने भाव संबंधी जे प्रशस्त अ प्रशस्त भेद वडे बे प्रकारनी भावना छे, तेमां प्रथम अप्रशस्त कहे छे,

पाणिवहमुसावाए अदत्तमेहुणपरिग्गहे चेव । कोहे माणे माया लोभे य हवंति अपसत्था ॥ ३२८ ॥

जीवहिंसा जूठ चोरी मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया अने लोभ ए नव पापोमां प्रथम शंकाथी अने पछी वारंवार निष्ठुर थइने निःशंकपणे वर्त्ते, ते अप्रशस्त भावना कह्युं छे केः—

करोत्यादौ तावत्सघृणहृदयः किञ्चिदशुभं, द्वितीयं सापेक्षो विमृशति च कार्यं च कुरुते । तृतीयं निःशङ्को विगतघृणमन्यत्प्रकुरुते, ततः पापाभ्यासात्सततमशुभेषु प्रमते ॥१॥

For Private and Personal Use Only

सुज्ञपुरुषो भव्यात्माओने बचाववा उपदेश आपे छे के जीवहिंसा विगेरे पापो बाळक बुद्धिना माणसो प्रथम डरीने छुपां करे छे. के रखेने मारी लोकमां निंदा थशे, पण त्यां कुटेव न छुटे तो पछी अपेक्षा विचारी कुयुक्ति लगाडीने जाहेर पाप करे छे, त्यार पछी निःशंक थइने लज्जा दयाने छोडी नवां नवां पाप करे छे, अने छेवटे पापना अभ्यासथी हमेशां पापमांज रमे छे.

प्रशस्त भावना.

दंसणनाणचरित्ते तववेरग्गे य होइ उ पसत्था । जा य जहा ता य तहा लक्खण वुच्छं सलक्खणओ ॥ ३२९ ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र तप वैराग्य विगेरेमां जे प्रशस्त भावना होय छे, ते प्रत्यकने लक्षणथी कहीश.

दर्शन भावना.

तित्थगराण भगवओ पवयणपावयणिअइसइड्डीणं । अभिगमणनमणदरिसणकित्तणसंपूअणाथुणणा ॥ ३३० ॥

तीर्थंकर प्रभु बार अंग (जैन सिद्धांत) जेनुं बीजुं नाम गणिपिटक (भगवंतना वचन रुप रत्नोने राखवानो पेटारो) तथा प्रावचनि ते गणधरो तथा महान् प्रभाविक आचार्यो युग प्रधानो तथा अतिशय ऋद्धिवाळा केवळज्ञानी मनःपर्यव तथा अवधिज्ञानी तथा चौदपूर्वी तथा आमर्श औषधि लब्धिधारक मुनिओ विगेरेनुं बहु मान करवा सामे जइने दर्शन करवुं तेमना उत्तम गुणोने प्रशंसवा. सुगंधथी पूजन स्तोत्र वडे स्तवन करवुं, (आमां देव मनुष्यने जे उचित होय ते करवु.)

आ प्रमांणे हमेशां करवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे,

जम्माभिसेयनिक्खमणचरणनाणुप्पया य निव्वाणे । दियलोअभवणमंदरनंदीसरभोमनगरेसुं ॥ ३३१ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अट्ठावयमुज्जिंते गयग्गपयग्गपयए य धम्मचक्के य । पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वंदामि ॥ ३३२ ॥

तीर्थंकरोनी जन्मभूमि, दीक्षा लेवाना वरघोडामां, चारित्र लीधुं ते जग्या, तथा केवळ ज्ञान तथा निर्वाण भूमि, तथा देवलोकमां मेरु पर्वत, नंदीश्वर द्वीप विगेरे तथा पाताळनां भवनोमां जे शाश्वता जिनेश्वरनां बिंबो छे, तथा अष्टापद गिरनार दशाणर्णकूटमां तथा तक्षशिलामां धर्म चक्रना स्थानमां, तथा अहिछत्रा नगरीमां ज्यां धरणेंद्रे पार्श्वनाथ प्रभुनो महिमा कर्यो छे, तथा रथावर्त्त पर्वत्त ज्यां वज्र स्वामिए पादपोपगमन अणशण कर्युं छे, तथ ज्यां वर्धमान स्वामीने आश्रयी चमरेंद्रे उत्पतन कर्युं छे. आ बधा स्थानोमां जइने यथायोग्यपणे वंदन पूजन स्तवन ध्यान करवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे.

गणियं निमित्त जुत्ती संदिट्ठी अवितहं इमं नाणं । इय एगंतमुवगया गुणपच्चइया इमे अत्था ॥ ३३३ ॥

गुणमाहप्पं इसिनामकित्तणं सुरनरिंदपूया य । पोराणचेइयाणि य इय एसा दंसणे होइ ॥ ३३४ ॥

जैन सिद्धांतने जाणनारा जे महान साधुपुरुषो छे. तेमनामां गुणने आश्रयी आ बाबतो छे, जेमके बीजगणित विगेरेमां कोइ पार पामेलो होय तथा ज्योतिषना आठे अंगमां प्रवीण होय तथा दृष्टिवाद नामना बारमां अंगमां बतावेल तमाम दर्शनोनी बतावेली जुदी जुदी युक्तिओने पोते जाणे अथवा द्रव्यना संयोगोने अथवा हेतुओने जाणे.

तथा सम्यग् ("अविपरीत") दृष्टि होय के जेथी देवताओथी पण पोते चलयमान् न थाय.

तथा अवितथ जेनुं ज्ञान होय आवा पवित्र आचार्य विगेरेना गुणोनी प्रशंसा करतां पोताना आत्मानी श्रद्धा निर्मळ थाय छे, तेज प्रमाणे कोइ पण गुणनुं वर्णन करतां ते पवित्र पुरुषना गुणो मळे छे, तथा मंदबुद्धिवाळाने तेवा गुणोनुं कीर्तन न थाय तो

For Private and Personal Use Only

तेवा पूर्व महर्षिनां नामो लेवाथी पण धर्ममां श्रद्धा थाय छे, अथवा तेवा पुरुषने सुरनरना स्वामिओए पूज्या ते कथा सांभळतां अथवा पुराणां चैत्योने पूजवाथी के तेवी बीजी क्रिया करवाथी तेओने गुणोनी वासना मळवाथी दर्शन शुद्धि थाय छे, ते दर्शननी प्रशस्त भावना छे.

ज्ञान भावना.

तत्तं जीवाजीवा नायव्वा जाणणा इहं दिट्ठा । इह कज्जकरणकारगसिद्धी इह बंधमुक्खो य ॥ ३३५ ॥
बद्धो य बंधहेउ बंधणबंधप्फलं सुकहियं तु । संसारपवंचोऽवि य इहयं कहिओ जिणवरेहिं ॥ ३३६ ॥
नाणं भविस्सई एवमाइया वायणाइयाओ य । सज्झाए आउत्तो गुरुकुलवासो य इय नाणे ॥ ३३७ ॥

जीनेश्वरनुं वचन जेवी रीते पदार्थो छे तेवी रीते संपूर्ण पदार्थोनुं वर्णन करे छे, तेथी ते प्रवचन कहेवाय छे. अने ते ज्ञान

भणवाथी मोक्षनुं प्रधान अंग सम्यकदर्शन प्रगट करे छे. कारण के तत्त्वोनुं स्वरुप जाणीने तेमां श्रद्धा करवी तेज सम्यग दर्शन छे. जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर बंध, निर्जरा अने मोक्ष ए नव तत्त्वो छे, ते नव पदार्थोने नवतत्त्व ज्ञानना अर्थीए बरोबर जाणवा जोइए अने ते जाणवानुं साधन जिनेश्वरना वचनमांज छे.

वळी आ जिनवचनमांज परमार्थ रुप छेवटनुं कार्य मोक्ष छे ते मोक्ष मेळववानी क्रिया करवामां महान उपकारक सम्यगदर्शन ज्ञान—चारित्र मुख्यपणे छे,

कारक (क्रिया करनारो) साधु सम्यग दर्शन विगेरेनुं अनुष्ठान बरोबर करनार छे अने ते प्रमाणे क्रिया करवाथी आज जैन दर्शनमां छेवटे मोक्षनी प्राप्ति छे तेज क्रियासिद्धि जाणवी तेने बतावे छे.

प्रथम कर्मबंधननुं स्वरूप जाणवुं अने तेमां विरक्त थवुं तेथी कर्मक्षय थतां मोक्ष प्राप्ति थाय, आवी क्रिया बौद्ध विगेरे दर्शनमां न होवाथी मोक्षनी क्रियासिद्धि पण अशक्य छे.

आ प्रमाणे प्रथम ज्ञान भणवाथी अने ते प्रमाणे वर्त्तवाथी ज्ञान भावना थाय छे तथा आठ प्रकारना कर्मना पुद्गलोथी जीव दरेक प्रदेशे बंधाएलो छे, तथा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय अने योगो कर्म बंधनना हेतुओ छे अने आठ प्रकारना कर्मवर्गणानुं रुप पूर्वे कह्या प्रमाणे बंधन छे अने ते उदय आवतां एनुं फळ चार गतिवाळा संसारमां भ्रमण करीने सुख दुःखने भोगववानुं छे. आ बधुं जिनवचमांज कहेलुं छे.

अथवा दुनियामां जे कंइ सुभाषित हितकारक वचन छे ते अहीं प्रवचनमां कहेलुं छे ते ज्ञानभावना छे. वळी आ जिनवचनमां आ संसारनुं जे विचित्र स्वरुप छे ते विस्तारथी कह्युं छे.

तथा हुं निर्मळ भावे भणीश तो मारुं ज्ञान वधारे निर्मळ थशे एवी ज्ञानभावना भाववी अर्थात् रोज रोज नवुं नवुं ज्ञान संपादन करवुं, आदि शब्दथी एकाग्रचित्त विगेरे गुणो आ ज्ञानथी थाय छे. वळी अज्ञानी जे कर्म करोडो वरसे खपावे छे तेने ज्ञानी एक श्वासोश्वासमां खपावे छे.

आवां कारणोथी ज्ञान भणवुं, एटले ज्ञाननो संग्रह थाय. कर्मनी निर्जरा थाय भूली न जवाय अने स्वाध्याय करतां चित्तमां आनंद रहे आ कारणोथी ज्ञानभावना वडे दरेक साधुने गुरुकुळवास थाय छे ते बतावनारी गाथा कहे छे.

" णाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणे चरित्ते य। धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न मुञ्चन्ति ॥ १ ॥ "

ज्ञाननो भागी थाय, श्रद्धा अने चारीत्रमां स्थिर चित्तवाळो थाय, आवां कारणोथी जेओ गुरुकुळवास नथी मुक्ता, तेवा पुरुषोने धन्य छे. आवी ज्ञाननी भावना जाणवी. हवे चारित्रनी भावना कहे छे.

साहुमहिंसाधम्मो सच्चमदत्तविरई य बंभं च । साहु परिग्गहविरई साहु तवो बारसंगो य ॥ ३३८ ॥
वेरग्गमप्पमाओ एगत्ता (ग्गे) भावणा य परिसंगं । इय चरणमणुगयाओ भणिया इत्तो तवो वुच्छं ॥ ३३९ ॥

अहिंसादि लक्षणवाळो जैनधर्म श्रेष्ठ छे. आ पहेला व्रतनी भावना छे तथा आ जिनेश्वर वचनमां निर्मळ सत्य छे तेवुं बीजे नथी. आ बीजा महाव्रतनी भावना छे, त्रीजा व्रतनी भावनामां अहीं पारको माल न लेवानुं बरोबर बताव्युं छे, चोथा महाव्रतनी भावनामां ब्रह्मचर्यनी नववाडो पाळवानुं अहीं बताव्युं छे, पांचमां महाव्रतनी भावनामां जरुरनां उपकरण सिवाय परिग्रहनुं त्यागपणुं सर्वोत्तम जिन वचनमां बताव्युं छे

बार प्रकारनो तप पण अहीं इंद्रियोना विजय माटे तथा कर्मो खपाववा माटे अहीं बताव्यो छे.

वैराग्य भावनामां संसारनां देखीतां सुखो परिणामे तथा अंतरदृष्टिए जोतां दुःखरुप छे माटे विष्टा समान जाणीने दूरथी त्यागवा योग्य छे एम भाववुं.

अप्रमाद भावनामां जाणवुं के जे जीवो दारु विगेरेना कुव्यसनमां के क्रोधादि करीने के इंद्रियोने वश थइ केवां दुःख भोगवे छे ते विचारी पांचे प्रमादोने छोडवानुं अहीं छे. एकाग्रभावनामां आ गाथा विचारवी.

" एको मे सासओ अप्पा, णाणदंसणसंजुओ । सेसा मे बहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १ ॥ "

जे कोइ संसारी जीव के साधु देखीता मनोहर विषयोथी मुंझाइने विह्वलथाय अथवा तेवा सुंदर विषयोना वियोगमां घेलो थाय तेवा पुरुषने चित्तामां अपूर्व शान्ति प्राप्त करवा आ उपदेश छे के तुं तारा हृदयमां आ प्रमाणे विचार, के मारो आत्मा निरंतर रहेनारा जन्म मरणथी मुक्त ज्ञान दर्शनना लक्षणवाळो छे, बाकीनुं जे कंइ शरीर विगेरे चलायमान देखाय छे ते कर्मना संयोगथी मने मळेलुं छे, हुं तेनाथी जुदो छुं मारुं स्वरूप चेतन छे अने शरीर विगेरे जड छे. (आ निश्चय नयनी भावना जाणवी.)

आ भावनाओ रुषिओनुं अंग छे अने चारित्रने आश्रयी (टेको आपनार) छे.

(हवे तपनी भावना कहे छे.)

किह मे हविज्जऽवंझो दिवसो ? किं वा पहू तवं काउं ? । को इह दव्वे जोगो खित्ते काले समयभावे ? ॥ ३४० ॥

साधुए निर्मळ चारित्र पाळवा हंमेशां चिंतवनकरवुं के विगइओ विगेरे त्यागीने मारो दिवस हंमेशां क्यारे सफळ थशे ? तथा हुं क्यो तप करवाने शक्तिवान छुं ? तथा क्या द्रव्य विगेरेमां मारो निर्वाह थशे ? आवुं चिंतववुं, तेमां बने त्यांसुधी साधुए द्रव्यमां उत्सर्गथी वाल चणा विगेरे वापरवा, क्षेत्रमां ज्यां घी दुध मळे के लुखा रोटला मळे तो पण संतोषथी विहार करवो, काळमां ठंडीमां के उनाळामां विहार करवो तथा भवमां हुं साजो होवाथी आ तप करवाने शक्तिवान छुं आवी रीते द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी विचारी यथाशक्ति उपकरण विगेरे जोइतांज राखीने परिसहो सहेवा तप करवो. तत्त्वार्थसूत्रना छठ्ठा अध्यायमां २३ मा सूत्रमां कह्युं छे के यथाशक्ति त्याग अने तप करवो.

उच्छाहपालणाए इति (एव) तवे संजमे य संघयणे । वेरग्गेऽणिच्चाई होइ चरित्ते इहं पगयं ॥ ३४१ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा अणसर विगेरे तपस्यामां पोतानुं बळ अने वीर्य न गोपवतां उत्साह राखवो अने लीधेला तपने पुरो पाळवो.

" तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झिअव्वयधुवम्मि । अणिगूहिअबलविरिओ सव्वत्थामेसु उज्जमइ ॥ १ ॥
किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं । होइ न उज्जमिअव्वं सपच्चवायंमि माणुस्से ? ॥ २ ॥ "

तीर्थंकर दिक्षा लेतांज चार ज्ञानी थाय छे, देवता पूजे छे, निश्चेमोक्षमां जवाना छे, आटलुं छतां पण पोतानुं घातीकर्म खपाववा बळ वीर्यने न गोपावतां अघोर तपश्चर्या करे छे. तो ते सिवायना बीजा सारा साधुओ दुःखनो क्षय करवा अने मनुष्य जीवन अनेक विघ्नोवाळुं छे तो तेमणे शामाटे पुरो उद्यम न करवो जोइए ? आवी तपनी भावना भाववी, संयम भावना इंद्रियो अने मनने वश राखवा माटे छे तथा संघयण ते वज्र रुषभ विगेरेमां तपनो निर्वाह थइ शके तेवी भावना भाववी.

आ प्रमाणे बार भावनाओ भाववाथी आत्म निर्मळ थाय छे, एम भावनानुं स्वरुप अनेक प्रकारे थाय छे ते शि[illegible]योने जाणवा माटे लख्युं छे. पण चालु वातमां तो चारित्र भावना साथे प्रयोजन छे, माटे वीर प्रभुनुं चरित्र निर्युक्तिनो अनुगम कहीने सूत्रनुं उच्चारण करतां कहे छे.

महावीर प्रभुनुं चरित्र.

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि हुत्था, तंजहा—हत्थुत्तराइं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहिरए हत्थुत्तराहिं जाए हत्थुत्तराहिं मुंडे भविता आगाराओ अणगारियं पव्वइए हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुन्ने अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पने, साइणा भगवं परिव्वुए (सू० १७५)

ते काळ ते समय एटले विक्रम संवतना ४७० वरस पहेलां महावीर प्रभुनो जन्म थयो एवी हालनी गणतरी छे अने नव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महिना अने साडासात दिवस पहेलां महावीर स्वामि माताना उदरमां आव्या हता तेने जैनमतमां प्रभुनुं च्यवन थयुं विगेरे वातो कहे छे.

जैनोमां दरेक तीर्थंकरनां पांच कल्याणक छे एटले च्यवन जन्म दिक्षा केवळज्ञान अने मोक्ष छे महावीर प्रभुने एक माताना गर्भमांथी बीजी माताना गर्भमां मुक्या तेने गर्भापहार कहे छे टुंकाणमां समजाववा प्रथम चंद्रनक्षत्र कहे छे.

महावीर प्रभुने च्यवन गर्भापहार जन्म दिक्षा केवळज्ञान ए उत्तराफाल्गुनीमां थयां छे अने भगवाननो मोक्ष स्वाति नक्षत्रमां थयो छे. ते विस्तारथी पछीना सूत्रमां छे.

समजे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए समाए वीइक्कंताए सुसमदुस्समाए समाए वीइक्कंताए दूसमसुसमाए समाए बहु विइक्कंताए पन्नहत्तरीए वासेहिं मासेहि व अद्धनवमेहिं सेसेहिं जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं महाविजयसिद्धत्थपुप्फुत्तरवरपुंडरीयदिसासोवत्थिपवद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं पालइत्ता आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहकुंडपुरसंनिवेसंमि उसभदत्तस्स महाणस्स कोडालसगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरस्स गुत्ताए सीहुब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिसि गब्भं वक्कंते; समणे, भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए या वि हुत्था, चइस्सामित्ति जाणइ चुएमित्ति जाणइ चयमाणे न याणेइ, सुहुमे णं से काले पन्नत्ते तवो णं समणे भगवं महावीरे हियाणुकंपएणं देवेणं जीयमेयंतिकट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं बासीहिं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राइंदिएहिं वइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसाओ उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसंसि नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगुत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करित्ता सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करित्ता कुच्छिसि गब्भं साहरइ, जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसंसि उस० को० देवा० जालंधरायणगुत्ताए कुच्छिसि गब्भं साहरइ, समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था—साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ साहरिज्जमाणे न याणइ साहरिएमित्ति जाणइ समणाउसो ! । तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसलाए खत्तियाणीए अहऽन्नया कयाई नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं जे से गिम्हाण पढमे मासे दुच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं हत्थु० जोग० समणं भगवं महावीरं अरोग्गा अरोग्गं पसूया । जण्णं राइं तिसलाख० समणं० महावीरं अरोया अरोयं पसूयात ण्णं राइं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहिं देवीहि य उवयंतेहिं उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देवसन्निवाए देवकहक्कहए अप्पिजलगभूए यावि हुत्था । जण्णं रयणिं० तिसलाख० समणं० पसूया तण्णं रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं च १ गंधवासं च २ चुन्नवासं च ३ पुप्फवा० ४ हिरन्नवासं च ५ रयणवासं च ६ वासिंसु, जण्णं रयणिं तिसलाख० समण० पसूया तण्णं रयणिं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिणो देवा य य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सूइकम्माइं तित्थयराभिसेयं च करिंसु, जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए ख० कुच्छिसि गब्भं आगए तओ णं पभिइ त कुलं विपुलेणं हिरन्नेणं सुवन्नेणं धन्नेणं माणिक्केणं मुत्तिएणं संखसिलप्पवालेणं अईव २

परिवड्ढाइ, तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणित्ता निव्वत्तदसाहंसि वुक्कंतंसि सुइभूयंसि विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडाविंति २ त्ता मित्तनाइसयणसंबंधिवग्गं उवनिमंतंति मित्त० उवनिमंतित्ता बहवे समणमाहणकिवणवणीमगाहिं भिच्छुंडगपंडरगाईण विच्छड्डुंति विग्गोविंति विस्साणिंति दायारेसु पज्जभाइंति विच्छड्डित्ता विग्गो० विसाणित्ता दाया० पज्जभाइत्ता मित्तनाइ० भुंजाविंति मित्त० भुंजावित्ता मित्त० वग्गेण इममेयारूवं नामधिज्जं कारविंति=जओ णं पभिइ इमे कुमारे ति० ख० कुच्छिसि गब्भे आहूए तओ णं पभिइ इमं कुलं विपुलेणं हिरन्नेणं० संखसिलप्पवालेण अतीव २ परिवड्ढाइ ता होउ णं कुमारे वद्धमाणे, तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधाइपरिवुडे, तं-खीरधाईए १ मज्जणधाईए २ मंडणधाईए ३ खेलावणधाइए ४ अंकधा० ५ अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकुट्टिमतले गिरिकंदरसमुल्लीणेविव चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ, तओ णं समणे भगवं० विन्नायपरिणय (मित्ते) विणियबत्तालभावे अप्पुस्सुयाइं उरालाइं माणुसगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्दफरिसरसरूवगंधाइं परियारेमाणे एवं च णं विहरइ ॥ (सू० १७६)

श्रमण भगवान महावीर आ अवसर्पिणीना चोथा आराने छेडे पंचोतेर वरसने साडाआठ महिना बाकी रहे छे, ते ग्रीष्मरुतुना चोथे महिने आठमे पखवाडीए अषाढ शुद छट्ठने दिवसे महाविज्य सिद्धार्थ पुष्पोपत्तर वर पुंडरिकदिशा सौवस्तिक वर्धमान नामना महाविमानमांथी देवता संबंधी वीस सागरोपमनुं आयु पुरुं करीने भव तथा स्थितिनो क्षय थतां चवीने आ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रना दक्षिण अर्धभरतमां दक्षिण ब्राह्मणकुंडस्थानमां कोडालगोत्री रुषभदत्त ब्राह्मणना घरमां जालंधर गोत्रनी देवानंदा ब्राह्मणीनी

कुखमां सिंहना बच्चानी माफक अवतर्या. ते समये श्रमण भगवान महावीर त्रण ज्ञान सहित हता तेथी देवलोकमां जाण्युं के हुं च्यवीश गर्भमां अवतर्या पछी जाणे के हुं चव्यो, पण चववानो काळ थोडो होवाथी तेनुं ज्ञान थतुं नथी के हुं चवुं छुं.

त्यार पछी महावीर प्रभुने खरी भक्तिथी देवताए पोताना हंमेशना आचार प्रमाणे ८२ दिवस थया पछी आसो (गुजराती भादरवो) तेरसना ते ब्राह्मणीना कुख मांथी त्यांथी थोडे दूर आवेला क्षत्रियकुंड नगरमां ज्ञातवंशीय काश्यप गोत्रना सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी भार्या वाशिष्ठ गोत्रनी त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुखमां अशुभ पुद्गलो दूर करीने शुभ पुद्गलो मुकीने भगवानने आ गर्भमां मुक्या अने त्रिशला क्षत्रियाणीनो गर्भ देवानंदानी कुखमां मुक्यो.

प्रभुने ज्यारे एक गर्भमांथी बीजे मुकवाना हता त्यारे त्रण ज्ञानवाळा होवाथी पोते जाणे के मने लइ जशे तेम लइ जतां न जाणे के लइ जाय छे. अने त्यां लइ गया पछी मुके ते पण जाणे के मने मुक्यो. (अवधि ज्ञानीने आज जणाय छे. के आ प्रमाणे अमुक देवता करे छे, करशे के कर्युं.) वळी गणधरो पोताना शिष्योने कहे छे, हे आयुष्यमन् श्रमण! ते काळ ते समयने विषे ९ मास ने साडासात दिवसनी बंने गर्भ स्थानमां गर्भ स्थिति पुरी करीने ग्रीष्मरुतुमां पहेलो मास बीजुं पखवाडीयुं चैत्र शुद १३ ना दिवसे निरोगी त्रिशला माताए निरोगी पुत्र श्रमण भगवान् महावीरने जन्म आप्यो.

प्रभुना जन्म समये मधरात पछी भुवनपति वानव्यंतर जयोतिषी वैमानिक देवदेवीओना आववाथी आकाशमां एक महान् द्रव्य प्रकाश अने कोळाहळ थयो.

अने ते समये देवदेवीओए आवीने सुगंधी जळ, सुगंधी वस्तु, चुर्ण फुल सोनारुपानी अने रत्ननी वृष्टि करी.

जे रात्रीए भगवान जन्म्या ते समये देवदेवीए महावीर प्रभुनुं जन्म संबंधी सूतिकर्म विगेरे कर्युं अने मेरु पर्वत उपर प्रभुने लइ जइने जन्माभिषेक कर्यो.

वळी प्रभु माताना गर्भमां हता ते समये प्रभुना पुन्योदयथी देवताए तेमना मातापिताना घरमां नवारसीयुं धन लावीने नाख्युं तथा बीजी दरेक रीते मातपितानुं धन, सोनुं चांदी रत्न शंख माणेक मोती परवाळां बधी रीते वध्यां तेथी पूर्वे करेला विचार प्रमाते पुत्र जन्मनुं दस दिवसनुं सूति कार्य कर्या पछी बारमे दिवसे चार प्रकारनो आहार तैयार करावीने मित्र ज्ञाति स्वजन तथा संबंधी वर्गने बोलावीने तथा श्रमण ब्राह्मण भिक्षुक विगेरेने तथा आंधळां पांगळां विगेरे दरदीओने बोलावी तेमने इच्छित आपीने मन संतुष्ट करीने मातापिता ए बधांनी समक्ष पोताना पुत्रनुं नाम तेना गुण प्रमाणे एटले आ पुत्र वृद्धि करनार छे एवुं अनुभवेलुं अने विचार करी राख्या प्रमाणे जाहेर करीने वर्धमान राख्युं, त्यार पछी महावीर प्रभु माटे दुध धवरावनार स्नान करावनार शणगार करावनार खेलावनार खोळामां बेसाडनार एवी पांच धावमाताओ राखी अने ए पांच माताओ उपरांत तेमना पुन्योदयथी मनोहर शान्त मुद्रावाळा प्रभुने जोइने प्रसन्न थइने अनेक स्त्रीओ पोताना खोळामां रमाडवा लेती आ प्रमाणे लोकोने आनंद पमाडता मणीरत्नोथी विभूषित घरमां जेम पर्वतनी गुफामां चंपकनुं झाड उछरे तेम मोटा थाय.

प्रभुनी युवावस्था.

धीरे धीरे बाळ अवस्था दूर थतां विशेष ज्ञान पामीने अनुभववाळा प्रभु उत्सुकता छोडीने मनुष्य संबंधी पांचे इंद्रियोनां सुंदर कामभोगने भोगवतां शब्द स्पर्श रस रुप गंध विगेरेने अनुभवे छे अने काळ सुखे निर्गमन करे छे.

समणे भगवं महावीरे कासवगुत्ते तस्स णं इमे तिन्नि नामधिज्जा एवमाहिज्जंति; तंजहा—अम्मापिउसंति वद्धमाणे १ सहसमुइए समणे २ भीमं भयभेरवं उरालं अवेलयं परीसह—सहत्तिकट्टु देवेहिं से नामं कायं समणे भगवं महावीरे ३, समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिया कासवगुत्तेणं तस्स णं तिन्नि नाम० तं०—सिद्धत्थे इ वा सिज्जसे इ वा जसंसे इ वा, समणस्स णं० अम्मा वासिट्ठस्सगुत्ता तीसे णं तिन्नि ना० तं०—तिसला इ वा विदेहदिन्ना इ वा पियकारिणि इ वा समणस्स णं भ० पित्तिअए सुपासे कासवगुत्तेणं, समण० जिट्ठे भाया नंदिवद्धणे कासवगुत्तेणं, समणस्स णं जेट्ठा भइणी सुदंसणा कासवगुत्तेणं, समणस्स णं भग० भज्जा जसोया कोडिन्नागुत्तेणं, समणस्स णं० धूया कासवगो त्तेणं तीसे णं दो नामधिज्जा एवमा०—अणुज्जा इ वा पियदंसणा इ वा, समणस्स णं भ० नत्तूइ कोसीया गुत्तेणं तीसे णं दो नाम० तं—सेसवई इ वा जसवई इ वा, (सू० १७७)

प्रभुना अने तेमना कुटुंबना नामो.

काश्यप गोत्रीय प्रभुनुं मातापिताए वर्धमान नाम पाड्युं, स्वभावीक गुणोथी श्रमण नाम पाड्युं अने भयंकर भूत विगेरेना तथा बीजा देव मनुष्योना बधाए परिसहो सह्या माटे देवोए श्रमण भगवान माहावीर एवुं नाम पाड्युं.

भगवान महावीरना पिता काश्यप गोत्रना तेमनां त्रण नाम हतां—सिद्धार्थ, श्रेयांस, यशस्वी.

भगवाननी माता वशिष्ट गोत्रनी; तेना त्रण नाम छे, त्रिशला, विदेहदिन्ना प्रियकारिणि.

भगवानना काका सुपार्श्व. मोटा भाइ नंदिवर्धन, मोटी बेहेन सुदर्शना ए बधा काश्यप गोत्रीय हता. भगवाननी भार्या यशोदा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौडिन्य गोत्रनी हती. भगवाननी पुत्री काष्यप—गोत्रीनी तेना बे नाम छे—अनवद्या, प्रियदर्शना. भगवाननी दौहित्री कौशिक गोत्रनी तेना बे नाम–शेषवती, यशोमती.

समणस्स णं० ३ अम्मापियरो पासवच्चिज्जा समणोवासगा यावि हुत्था, ते णं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालइत्ता छण्हं जीवनिकायाण सारक्खनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरिहित्ता पडिक्कमित्ता अहारिहं उत्तरगुणपायच्छित्ताइं पडिवज्जित्ता कुससंथारगं वा दुरूहित्ता भत्तं पच्चक्खायंति २ अपच्छिमाए मारणंतियाए संलेहणासरीरए झुसियसरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ना, तओ णं आउक्खएण भव० ठि० चुए चइत्ता महाविदेहे वासे चरमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति (सू० १७८)

भगवानना मा बाप पार्श्व परंपराना श्रमणोना उपासक हता, तेओ घणां वर्ष श्रमणोपासकपणुं पाणी छ कायना जीवनी रक्षणार्थे (पापनी) आलोचना करी निंदी गर्ही पडिकमी यथायोग्य प्रायश्चित लइ दर्भ संस्तारक उपर बेसी भक्त प्रत्याख्यान करी छेल्ली मरण पर्यंतना शरीर–संलेखना वडे शरीर शोषी काल समये काल करी ते शरीर छोडी अच्युत कल्पमां देवपणे उत्पन्न थयां. त्यांथी आयु क्षय थतां चवीनेमहाविदेह क्षेत्रमां छेल्ले ऊसासे सिद्धबुद्ध मुक्त थइ निर्वाण पामी सर्व दुःखनो अंत करशे.

तेणं कालेणं २ समणे भ० नाए नायपुत्ते नायकुलनिव्वत्ते विदेहे विदेहजच्चे विदेहसूमाले तीसं वासाइं विदेहंसित्तिकट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइन्ने चिच्चा हिरन्नं चिच्चा सुवन्नं चिच्चा बलं चिच्चा वाहणं चिच्चा धणकणगरयणसंतसारसावइज्जं विच्छड्डित्ता विग्गोवित्ता विसाणित्ता दायारेसु णं दाइत्ता परिभाइत्ता संवच्छरं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दलइत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तरा० जोग० अभिनिक्खमणाभिप्पाए यावि हुत्था,—संवच्छरेण होहिइ अभिनिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स। तो अत्थसंपयाणं पवत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥ एगा हिरन्नकोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा। सूरोदयमाईयं दिज्जइ जा पायरासुति ॥ २ ॥ तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ। असिइं च सयसहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥ ३ वेसमणकुंडधारी देवा लोगंतिया महिड्ढीया। बोहिंति य तित्थयरं पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ ४ ॥ बंभंमि य कप्पंमी बोद्धव्वा कण्हराइणो मझे। लोगंतिया विमाणा अट्ठसु वत्था असंखिज्जा ॥ ५ ॥ एए देवनिकाया भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं। सव्वजगज्जीवहियं अरिहं! तित्थं पवत्तेहि ॥ ६ ॥ तओ णं समणस्स भ० म० अभिनिक्खमणाभिप्पायं जाणित्ता भवणवइवा० जो० विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं २ रूवेहिं सएहिं २ नेवत्थेहिं सए० २ चिंधेहिं सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलसमुदएणं सयाइं २ जाणविमाणाइं दुरुहंति सया० दुरूहित्ता अहाबायराइं पुग्गलाइं परिसाडंति २ अहासुहमाइं पुग्गलाइं परियाइंति २ उड्ढं उप्पयंति उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहे णं ओवयमाणा २ तिरिएणं असंखिज्जाइंदीवसमुद्दाइं वीइक्कममाणा २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, २ जेणेव उत्तरखत्तिय कुंडपुरसंनिवेसे तेणेव उवागच्छंति उत्तरखत्तियकुडपुरसंनिवेस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए तेणेव झति वेगेण ओवइया, तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं २ जाणविमाणं पट्ठवेति सणियं २ जाणविमाणं पट्ठवेत्ता सणिय २ जाणविमाणाओ पच्चोरुहइ सणियं २ एगंतमवक्कमइ एगंतमवक्कमित्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणइ २ एगं महं नाणामणिकणग-

For Private and Personal Use Only

रयणभत्तिचित्तं सुभं चारु कंतरुवं देवच्छंदयं विउव्वइ, तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं नाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सीहासणं विउव्वइ, २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पायाहिणं करेइ २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदइ, तेणेव उवागच्छइ सणियं २ पुरत्थाभिमुहं सीहासणे निसीयावेइ सणियं २ निसीयावित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं‍भंगेइ गंधकासाईएहिं उल्लोलेइ २ सुद्धोदएण मज्जावेइ २ जस्स णं मुल्लं सयसहस्सेणं तिपडोलतित्तिएणं साहिएणं सीतेण गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिपइ २ ईसिं निस्सासवायवोज्झं वरनयरपट्टणुग्गयं कुसलनरपसंसियं अस्सलालापेलवं छेयारियकणगखइयंतकम्मं हंसलक्खणं पट्टजुयलं नियंसावेइ २ हारं अद्धहारं उरत्थं नेवत्थं एगावलिं पालंबसुत्तं पट्टमउडरयणमालाउ आविंधावेइ आविंधावित्ता गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समलंकरेइ २ त्ता दुच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ एगं महं चंदप्पहं सिवियं सहस्सवाहणियं विउव्वति, तंजहा–ईहामिगउसभतुरनरमकरविहगवानरकुंजररुरुसरभचमरसद्दूलसीहवणलयभत्तिचित्तलयविज्जाहरमिहुणजुयलजंतजोगजुत्तं अच्चीसहस्समालिणीयं सुनिरूविय मिसिमिसिंतरूवगसहस्सकलियं ईसिं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं मुत्ताहलमुत्ताजालंतरोवियं तवणीयपवरलंबूसपलंबंतमुत्तदामं हारद्धहारभूसणसमोणयं अहियपिच्छणिज्जं पउमलयभत्तिचित्तं असोगलयभत्तिचित्तं कुंदलयभत्तिचित्तं नाणालयभत्ति० विरइयं सुभं चारुकंतारूवं नाणामणिपंचवन्नघंटापडायपडिमंडियग्गसिहरं पासाइयं दरिसणिज्जं सुरूवं–सीया उवणीया जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स। ओसत्तमल्लदामा जलथलयदिव्वकुसुमेहिं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ १ ॥ सिबियाइ मज्झयारे दिव्वं वररयणरूवचिंचइयं । सीहासणं महरिहं सपायपीढं जिणवरस्स ॥ २ ॥ आलइय मालमउडो भासुरबुंदी वराभरणधारी । खोमियवत्थ नियत्थो जस्स य मुल्लं सयसहस्सं ॥ ३ ॥ छट्ठेण उ भत्तेणं अज्झवसाणेण सुंदरेण जिणो । लेसाहिं विसुज्झंतो आरुहई उत्तमं सीयं ॥ ४ ॥ सीहासणे निविट्ठो सक्कीसाणा य दोहि पासेहिं । वीयंति चामराहिं मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥ ५ ॥ पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं साहट्टु रोमकूवेहिं । पच्छा वहंति देवा सुरअसुरा गरुलनागिंदा ॥ ६ ॥ पुरओ सुरा वहंती असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि । अवरे वहंति गरुला नागा पुण उत्तरे पासे ॥ ७ ॥ वणसंडं व कुसुमियं पउमसरो वा जहा सरयकाले सोहइ कुसुमभरेणं इय गगणयलं सुरगणेहिं ॥ ८ ॥ सिद्धत्थवणं व जहा काणायारवण व चंपयवणं वा । सोहइ कु० ॥ ९ ॥ वरपडहभेरिझल्लरिसंखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं । गयणयले धरणियले तूरनिनाओ परमरम्मो ॥ १० ॥ ततविततं घणझुसिरं आउज्जं चउव्विहं बहुविहीयं वाइंति तत्थ देवा बहूहिं आनट्टगसएहिं ॥ ११ ॥ तेण कालेणं तेणं समएणं जे से हेमताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तरानक्खत्तेणं जोगोवगएणं पाईणगामिणीए छायाए विइयाए पोरिसीए छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं एगसाडगमायाए चंदप्पभाए सिवियाए सहस्सवाहिणियाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणिज्जमाणे उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निगच्छइ २ जेणेव नायसंडे उज्जाणे तेणे व उवागच्छइ २ ईसिं रयणिप्पमाणं अच्छोप्पेणं भूमिभाएणं सणियं २ चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ २ सणियं २ चंदप्पभाओ सीयाओ सहस्सवाहिणिओ पच्चोयरइ २ सणियं २ पुरत्थाभिमुहे सीहासणे निसीयइ आभरणालंकारं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओमुअइ, तओ णं वेसमणे देवे भत्तुव्वायपडिओ भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं आभरणालंकारं पडिच्छइ, तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नवायपडिए वइरामएणं थालेण केसाइं पडिच्छइ २ अणुजाणेसि भंतेत्तिकट्टु खीरोयसागरं साहरइ, तओ णं समणे जाव लोयंकरित्ता सिद्धाणं नमुक्कारं करेइ २ सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मंतिकट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ २ देवपरिसं च मणुयपरिसं च आलिक्खचित्तभूयमिव ठवेइ—दिव्वो मणुस्सघोसो तुरियनिनाओ य सक्कवयणेणं। खिप्पामेव निलुक्को जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ॥ १ ॥ पडिवज्जितु चरित्तं अहोनिसं सव्वपाणभूयहियं। साहट्टु लोमपुलाया सव्वे देवा निसामिंति ॥ २ ॥ तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवनाणे नामं नाणे समुप्पन्ने अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहिं सन्नीणं पचिंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं मणोगयाइं भावाइं जाणेइ। तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइए समाणे मित्तान्नाइं सयणसंबंधिवग्गं पडिविसज्जेइ, २ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—बारस वासाइं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति, तंजहा—दिव्वा वा माणुस्सा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहिआसइस्सामि, तओ णं स० भ० महावीरे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता वोसिट्ठचत्तदेहे दिवसे मुहुत्तसेसे कुम्मारगामं समणुपत्ते, तओ णं स० भ० म० वोसिट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं एवं संजमेणं पग्गहेणं संवरेणं तवेणं बंभचेरवासेणं खंतीए मुत्तीए समिईए गुत्तीए तुट्ठीएठाणेणं कमेणं सुचरियफलनिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, एवं वा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति—दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाउले अव्वहिए अदीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहिआसेइ, तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस वासा वीइक्कंता तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दुच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वेसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं पाईणगामिणीए छयाए वियत्ताए पोरीसीए जंभियगामस्स नगरस्स बहिया नईए उज्जुवालियाए उत्तरकूले सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि उड्ढंजाणूअहोसिरस्स झाणकोट्ठोवगयस्स वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे सालरुक्खस्स अदूरसामंते उक्कुडुयस्स गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेण भत्तेणं अपाणएणं सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स निव्वाणे कसिणे पडिपुन्ने अव्वाहए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाण-दंसणे समुप्पन्ने, से भगवं अरहं जिणे केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पज्जाए जाणइ, तं-आगाइं गइं ठिइं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं जाणमाणे पासमाणे एवं च णं विहरइ, जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स निव्वाणे कसिणे जाव समुप्पन्ने तण्णं दिवसं भवणवइवाणमंतरजोइसियविमाणवासिदेवेहि य देवीहि य उवयंतेहिं जाव उप्पिंजलग-भूए यावि हुत्था; तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्नवरनाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमिक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खइ, तओ पच्छा मणुस्साणं, तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्ननाणदंसणधरे गोयमाईणं समणाणं पंच महव्व-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याइं सभावणाइं छज्जीवनिकाय आतिक्खति भासाइ परूवेइ, तं—पुढवीकाए जाव तसकाए, पढमं भंते ! महव्वयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं से सहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणाइवायं करिज्जा ३ जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा —

ते काले ते समये जगत्ख्यात, ज्ञात (सिद्धार्थ) पुत्र, ज्ञातवंशोत्पन्न, विशिष्ट देहधारी, (त्रीशला) पुत्र, कंदर्पजेता, गृहवासथी उदास एवा श्रमण भगवान् महावीरे त्रीश वर्ष घरवासमां वसी, माबाप कालगत थइ देवलोक पहोंचतां पोतानी प्रतिज्ञा समाप्त थइ जाणी सोनुं, रुपुं, सेनावाहन, धनधान्य, कनकरत्न, तथा दरेक कीमती द्रव्य छोडी (दानार्थे) अर्पण करी, दान दइ, शीयाळाना पेला मासमां पेले पक्षे मागसर वदि १०ना दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रना योगे दीक्षा लेवानो अभिप्राय कर्यो.

ते पछी भगवाननो निष्क्रमणाभिप्राय जाणीने चारे निकायना देवो पोतपोताना रूप, वेष तथा चिन्हो धारण करी सघळी रुद्धि, द्युति, तथा बळ साथे पोतपोताना विमानोपर चडी बादर पुद्गलो पलटावी सूक्ष्म पुद्गलोमां परणमावी उंचे उपडी अत्यंत शीघ्रता अने चपळतावाळी दिव्य देवगतिथी नीचे उतरता तिर्यक्लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघीने ज्यां जंबूद्वीप छे, त्यां आवी क्षत्रियकुंड नगरना इशान कोणमां उतावळा आवी पहोंच्या.

त्यारबाद शक्र नामे देवना इंद्रे धीमे धीमे विमानने त्यां थापी, धीमे धीमे तेमांथी उतरी, एकांते जइ मोहोटो वैक्रिय समुद्घात करी एक महान् मणि—सुवर्ण तथा रत्नजडित, शुभ मनोहर रूपवाळुं देवच्छंदक (ओरडो) विकुर्व्युं (बनाव्युं) ते

For Private and Personal Use Only

देवच्छंदकनी वचोवच मध्य भागे एक तेजुंज रमणीय पादपीठिका सहित एक महान् सिंहासन विकुर्व्युं. पछी ज्यां भगवान हता, त्यां आवीने भगवाननी त्रणवार प्रदक्षिणा करी वांदी नमी भगवानने लइ ज्यां देवच्छंदक हतुं त्यां आवी धीमे धीमे पूर्व दिशा सामे भगवानने सिंहासनमां बेसाडया पछी शतपाक अने सहस्रपाक तैलोवडे मर्दन करी गंधकाषायिक वस्त्रवडे लुंछीने पवित्र पाणीथी नवरावी लक्षमूल्यवाळुं थंडुं रक्तगोशीर्षचंदन घसी तैयार करी तेना वडे लेपन कर्युं. त्यारबाद निश्वासना लगारेक वायुथी चलायमान थनारा, वखणायलां नगर के पाटणमां बनेलां, चतुर जनोमां वखणाएलां, घोडानां फीण जेवां मनोहर, चतुर कारीगरोए सोनाथी खचेला, हंस समान स्वच्छ बे वस्त्रो पहेराव्यां. पछी हार, अर्धहार उरस्थ, एकावळि प्रालंब, सूत्रपट्ट, मुकुट तथा रत्नमाळादि आभरणो पहेराव्यां. पछी जूदी जूदी जातनी फूलनी माळाओथी पुष्पतरुना माफक शणगार्या. पछी इंद्रे पाछो बीजीवार वैक्रिय समुद्घात करी हजार जण उपाडी शके एवी एक महान् चंद्रप्रभा नामे शिबिका विकुर्वी. ए शिबिकानुं वर्णन आ प्रमाणे छे—ए शिबिका इहामृग, बळद, घोडा, नर, मगर. पक्षी, वानर, हाथी, रुरु, सरभ, चमरीगाय, वाघ, सिंह, वननी लताओ, तथा अनेक विद्याधरयुग्मना यंत्रयोगे करी युक्त हती तथा हजारो तेज राशिओथी भरपूर हती, रमणीय अने झग झगायमान हजारो चित्रामणोथी भरपूर अने देदीप्यमान अने आंखथी सामे नहि जोइ शकाय तेवी हती अनेक मोतीओथी विराजित सुवर्णमय प्रतरवाळी हती तथा झूलती मोतीओनी माळा, हारो अर्द्धहार, विगेरे भूषणोथी शोभती हती, अतिशय देखवा लायक हती, पद्मलता, अशोकलता विगेरे अनेक लताओथी चित्रित हती. शुभ तथा मनोहर आकारवाळो हती. अनेक प्रकारनी पंचवर्णी मणिओवाळी घंटा तथा पताकावडे शोभीता अग्रभागवाळी हती तथा मनोहर देखवालायक अने सुंदर आकारवाळी हती.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते काले ते समये शियाळाना प्रथम मासे प्रथम पक्षे मागशर वदि १० ना सुव्रत नामनो दिवसे विजय मुहूर्ते उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रो आवतां पूर्वमां छाया वळतां छेल्ला पहोरमां पाणी वगरना बे अपवासो करी एक पोतनुं वस्त्रधारी सहस्र वाहिनी चंद्रप्रभा नामनी शिबिका उपर चडी देव मनुष्य तथा असुरोनी पर्षदाओ साथे चालता चालता क्षत्रियकुंडपुर संनिवेशना मध्यमां थइने ज्यां ज्ञातखंड नामे उद्यान हतुं त्यां भगवान आव्या. आवीने धीमे धीमे भूमिथी एक हाथ उंची शिबिका स्थापी धीमे धीमे तेमांथी उतर्या, उतरीने धीमे धीमे पूर्वाभिमुख सिंहासन पर बेसी आभरण-अलंकार उतारवा लाग्या. त्यारे वैश्रवण देवे गोदोहासने रहो सफेदवस्त्रमां भगवानना ते आभरणालंकार ग्रहण कर्या. पछी भगवाने जमणा हाथथी जमणा अने डाबा हाथथी डाबा केशोनो पंचमुष्टिथी लोच कर्यो. त्यारे शक्रदेवेंद्रे गोदोहासने रही भगवानना ते वाळ हीराना थाळमां ग्रहण करीने भगवानने जणावीने क्षीर समुद्रमां पहोंचाड्या.

ए प्रमाणे भगवाने लोच कर्या पछी सिद्धोने नमस्कार करी "मारे कंइ पण पाप नहिं करवुं" एम ठराव करी सामायिक चारित्र स्वीकार्युं. ए वेळा देवो तथा मनुष्योनी पर्षदाओ चित्रामणनी माफक (गडबड रहितपणे स्तब्ध) बनी रही.

ए रीते भगवाने क्षायोपशमिक सामायिक चारित्र लीधा पछी तेमने मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी अढी द्वीप तथा बे समुद्रना पर्याप्त अने व्यक्त मनवाळा संज्ञि पंचेंद्रियोना मनोगत भाव जाणवा लाग्या.

पछी प्रव्रजित थयेला भगवाने मित्र, ज्ञाति, सगा तथा संबन्धीओने विसर्जित करी एवो अभिग्रह लीधोके "बार वर्ष लगी हुं कायानी सार संभाल नहि करतां जे कंइ देव, मनुष्य के तिर्यंचो तरफथी उपसर्गो थशे ते बधा रुडी रीते सहीश, खमीश अने

For Private and Personal Use Only

आत्मामां समभाव राखीश.

आवो अभिग्रह लइ शरीरनी ममताथी रहित थया थका एक मुहुर्त जेटलो दिवस होतां कुमार गामे आवी पहोंच्या; पछी भगवान उत्कृष्ट आलय, उत्कृष्ट विहार तेमज तेवाज संयम, नियम, संवर, तप, ब्रह्मचर्य, क्षांति, त्याग, संतोष समिति गुप्ति, स्थान कर्म तथा रूडा फळवाळा निर्वाण अने मुक्तिना आत्मा पोताने भावता थका विचरवा लाग्या.

एम विचरतां जे कांइ देव, मनुष्य तथा तिर्यंचो तरफथी उपसर्ग थया ते सर्वे भगवाने स्वच्छभावमां रही अणपीडातां अदीनमन धरी अदीनवचन कायाए गुप्त रही सम्यक् रीते सह्या–खम्या तथा आत्माना समभावमां रह्या.

आवी रीते विचरतां भगवानने बार वर्ष व्यतिक्रम्या. हवे तेरमा वर्षनी अंदर उनाळाना बीजे मासे बीजे पक्षे वैशाकसुदी १०ना सुव्रत नामना दिने विजयमुहुर्ते उत्तराफाल्गुनीना योगे पूर्व दिशाए छाया वळतां छेल्ले पहोरे जंभिकगामनी बाहेर रुजुवालिका नदीना उत्तर किनारे श्यामाक गाथापतिना काष्ठकर्म स्थळमां व्यावृत्त नामना चैत्यना इशानकोणमां शाळवृक्षनी पासे अर्धा उभा रही गोदोहासने आतापना करतां थकां तथा पाणी वगरना बे उपवासे जंघाओ उंची राखी माथुं नीचे घाली ध्यान कोष्टमां रहेतां थकां शुकल ध्यानमां वर्त्ततां छेवटनुं संपूर्ण प्रतिपूर्ण अव्याहत निरावरण अनंत उत्कृष्ट केवलज्ञान तथा केवलदर्शन उपन्युं

हवे भगवान अर्हन्, जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वभाववदर्शी थइ देव, मनुष्य तथा असुरप्रधान (आखा) लोकना पर्याय जाणवा लाग्या, एटले के तेनी आगति–गति, स्थिति, च्यवन, उपपात, खाधुं पीधुं, करेलुं करावेलुं, प्रगट काम, छानां काम, बोलेलुं कहेलुं के मनमां राखेलुं एम आखा लोकमां सर्व जीवोना सर्व भाव जाणता देखता थका विचरवा लाग्या.

जे दिने भगवानने केवलज्ञान दर्शन उपन्यां, ते दिने भवनपत्यादि चारे जातना देवदेवीओ आवतां जतां आकाश देवमय तथा धोळुं थइ रह्युं.

ए रीते उपजेलां ज्ञान दर्शनने धरनार भगवाने पोताने तथा लोकने संपूर्णपणे जोइने पहेलां देवोने धर्म कही संभळाव्यो, अने पछी मनुष्यने.

पछी उपजेला ज्ञान दर्शनना धरनार श्रमण भगवान महावीरे गौतमादिक श्रमण निर्ग्रन्थोने भावना सहित पांच महाव्रत तथा पृथ्विकाय विगेरे छ जीवनिकाय कही जणाव्या.

(पांच पांच भावना सहित पांच महाव्रत)

दीक्षा लेनार साधुए आम बोलवुं.—पहेलुं माव्रत–हे भगवान्! हुं सर्व प्राणातिपात त्याग करुं छुं, ते ए रीते के सूक्ष्म के के बादर,त्रस के स्थावर जीवनो यावज्जीव पर्यंत मन वचन कायाए करी त्रिविधे त्रिविधे पोते घात न करीश,बीजा पासे न करावीश अने करताने रुडुं न मानीश तथा ते जीवघातने पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं गरहुं छुं अने तेवा स्वभावने वोसरावुं छं भावना कहे छे.

इरियासमिए से निग्गंथे नो अणइरियासमिएत्ति, केवली बूया०—अणइरियासमिए से निग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणिज्ज वा वत्तिज्ज वा परियाविज्ज वा लेसिज्ज वा उद्दविज्ज वा, इरियासमिए से निग्गंथे नो इरियाअसमिइत्ति पढमा भावणा १। अहावरा दुच्चा भावणामणं परियाणइ से निग्गंथे, जे य मणे पावए, सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेय करे भेयकरे अहिगरणिए पाउसिए पारियाए पाणाइवाइए भूओवघाइए, तहप्पगारं मणं नो पधारिज्जा गमणाए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणं परिजाणइ से निग्गंथे, जे य मणे उपावएत्ति दुच्चा भावणा २ । अहावरा तच्चा भावणा—वइं परिजाणइ से निग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया जाव भूओवघाइया तहप्पगारं वइं नो उच्चारिज्जा, जे वइं परिजाणइ से निग्गंथे, जाव वइ अप्पावियत्ति तच्चा भावणा ३ । अहावरा चउत्था भावणा—आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए से निग्गंथे, नो अणायाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, केवली बूया०—आयाणभंडमत्तनिक्खेवणाअसमिए से निग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणिज्जा वा जाव उद्दविज्ज वा तम्हा आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए से निग्गंथे, नो आयाणभंडनिक्खेवणाअसमिएत्ति चउत्था भावणा ४ । अहावरा पंचमा भावणा—आलोइयपाणभोयणभोई, से निग्गंथे नो अणालोइयपाणभोयणभोइ, केवली बूया०—अणालोईयपाणभोयणभोई मे निग्गंथे पाणाणि वा ४ अभिहणिज्ज वा जाव उद्दविज्ज वा तम्हा आलोइयपाणभोयणभोई से निग्गंथे नो अणालोइयपाणभोयणभोइत्ति पंचमा भावणा ५ । एयावता महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ, पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ अहावरं दुच्चं महव्वयं पच्चक्खामि, सव्वं मुसावायं वइदोसं, से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं भासिज्जा नेवन्नेणं मुसं भासाविज्जा अन्नंपि मुसं भासंतं न समणुमन्निज्जा तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि जाव वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति—तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइभासी से निग्गंथे नो अणणुवीइभासी, केवली बूया०—अणणुवीइभासी से निग्गंथे समावज्जिज्ज मोसं वयणाए; अणुवीइभासी से निग्गंथे नो अणणुवीइभासित्ति पढमा भावणा । अहावरा दुच्चा भावणा—कोहं परियाणइ से निग्गंथे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो कोहणे सिया, केवली बूया—कोहप्पत्ते कोहत्तं समावइज्जा मोसं वयणाए, कोहं परियाणइ से निग्गंथे न य कोहणे सियत्ति दुच्चा भावा । अहावरा तच्चा भावणा—लोभं परियाणइ से निग्गंथे णो अ लोभणए सिया, केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावइज्जा मोसं वयणाए लोभं परियाणइ से निग्गंथे नो य लोभणए सियत्ति तच्चा भावणा । अहावरा चउत्था भावणा—भयं परिजाणइ से निग्गंथे नो भयभीरुए सिया, केवली बूया—भयपत्ते भीरू समावइज्जा मोसं वयणाए, भयं परिजाणइ से निग्गंथे नो भयभीरुए सिया चउत्था भावणा ४ । अहावरा पंचमा भावणा—हासं परियाणइ से निग्गंथे नो य हासणए सिया, केव० हासपत्ते हासी समावइज्जा मोसं वयणाए, हासे परियाणइ से निग्गंथे नो हासणए सियत्ति पंचमी भावणा ५ । एतावता दोच्चे महव्वए सम्मं काएण फासिए जाव आणाए आराहिए यावि भवइ दुच्चे भंते! महव्वए ॥ अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं पच्चखामि सव्वं अदिन्नादाणं' से गामे वा नगरे वा रन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं अन्नंपि, गिण्हंतं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए जाव वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइ मिउग्गहं जाई से निग्गंथे नो अणणुवीइमिउग्गहं जाई से निग्गंथे, केवली बूया—अणणुवीइ मिउग्गहं जाइ निग्गंथे अदिन्नं गिण्हेज्जा, अणुवीइ मिउग्गह जाइ से निग्गंथे नो अणणुवीइ मिउग्गहं जाइत्ति पढमा भावणा १ । अहावरा दुच्चा भावणा—अणुन्नविय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो अणणुन्नविअ पाणभोयणभोइ, केवली बूया—अणणुन्नविय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे अदिन्नं भुंजिज्जा, तम्हा अणुन्नविय पाणभोयणभोइ से निग्गंथे नो अणणुन्न-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विय पाणभोयणभोइत्ति दुच्चा भावणा २ । अहावरा तच्चा भावणा–निग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि एतावताव उग्गहणसीलए सिया, केवली बूया–निग्गंथेणं उग्गहंसि अणुग्गहियंसि एतावता अणुग्गहणसीले अदिन्नं ओगिण्हिज्जा, निग्गंथेणं उग्गहं उग्गहियंसि एतावताव उग्गहणसीलएत्ति तच्चा भावणा । अहावरा चउत्था भावणा–निग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं २ उग्गहणसीलए सिया, केवली बूया–निग्गंथेणं उग्गहंसि उ अभिक्खणं २ अणुग्गहणसीले अदिन्नं गिण्हिज्जा, निग्गंथे उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं २ उग्गहणसीसएत्ति चउत्था भावणा । अहावरा पंचमा भावणा–अणुवीइ मिउग्गहजाइ से निग्गंथे साहम्मिएसु, नो अणणुवीइ मिउग्गहजाइ, केवली बूया–अणणुवीइ मिउग्गहजाइ से निग्गंथे साहम्मिएसु अदिन्नं अगिण्हिज्जा अणुवीइमिउग्गहजाइ से निग्गंथे साहम्मिएसु नो अणणुवीइमिउग्गहजाती इइ पंचमा भावणा, एतावया तच्चे महव्वए सम्मं० जाव आणाए आराहए यावि भवइ. तच्चे भंते ! महव्वयं ॥ अहावरं चउत्थं महव्वयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं, से दिव्वं वा माणुस्सं वा तिरिक्खजोणियं वा नेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा तं चेवं अदिन्नादाणवत्तव्वया भणियव्वा जाव वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति तत्थिमा पढमा भावणा–नो निग्गंथे अभिक्खणं २ इत्थीणं कहं कहित्तए सिया, केवली बूया–निग्गंथेणं २ इत्थीणं कहं कहेमाणे संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलीपन्नत्ताओ धम्माओ भंसिज्जा, नो निग्गंथे णं अभिक्खणं २ इत्थीणं कहं कहित्तए सियत्ति पढमा भावणा १ । अहावरा दुच्चा भावणा—नो निग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं २ इंदियाइं आलोइत्तए निज्झाइत्तए सिया, केवली बूया—निग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं २ इंदियाइं आलोएमाणे निज्झाएमाणे संतिभेया संति विभंगा जाव धम्माओ

For Private and Personal Use Only

भंसिज्जा नो निग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं २ इंदियाइं आलोइत्ताए निज्झाइत्तए सियत्ति दुच्चा भावणा २। अहावरा तच्चा भावणा—नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सुमरित्ताए सिया, केवली बूया—निग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा, नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्ताए सियत्ति तच्चा भावणा ३। अहावरा चउत्था भावणा—नाइमत्तपाणभोयणभोई से निग्गंथे न पणीयरसभोयणभोई से निग्गंथे केवली बूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से निग्गंथे पणियरसभोयणभोई संतिभेया जाव भंसिज्जा, नाइमत्तपाणभोयणभोई से निग्गंथे नो पणीयरसभोयणभोइत्ति चउत्था भावणा ४। अहावरा पंचमा भावणा—नो निग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया, केवली बूया—निग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे संतिभेया जाव संसिज्जा, नो निग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सियत्ति पंचमा भावणा ५, एतावया चउत्थे महव्वए सम्मं काएण फासेइ जाव आराहिए यावि भवइ चउत्थं भंते! महव्वयं॥ अहावरं पंचमं भंते! महव्वयं सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतमचित्तं वा नेव सयं परिग्गहं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं गिण्हाविज्जा अन्नंपि परिग्गहं गिण्हंतं न समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि, तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति, तत्थिमा पढमा भावणा—सोयओ णं जीवे (मणुन्ना) मणुनाइं सद्दाइं सुणेइं मणुन्नामणुन्नेहिं सद्देहिं नो सज्जिज्जा नो रज्जिज्जा नो गिज्झेज्जा नो मुज्झि (च्छे) ज्जा नो अज्झोववज्जिज्जा नो विणिधायमावज्जेज्जा, केवली बूया—निग्गंथं णं मणुन्नामणुन्नेहिं सद्देहिं सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलि-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पन्नत्ताओ धम्माओ भंसिज्जा, न सक्का न सोउ सद्दा, सोतविसयमागया । रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ सोयओ जीवे मणुन्नामणुन्नाइं सद्दाइं सुणेइ पढमा भावणा १ । अहावरा दुच्चा भावणा—चक्खूओ जीवो मणुन्नामणुन्नाइं रूवाइं पासाइ मणुन्नामणुन्नेहिं रूवेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा,–न सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं । रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ चक्खूओ जीवो मणुन्ना २ रूवाइं पासाइ, दुच्चा भावणा । अहावरा तच्चा भावणा—घाणओ जीवे मणुन्ना २ इं गंधाइं अग्घायइ मणुन्नामणुन्नेहिं गंधेहिं नो सज्जिज्जा नो रज्जिज्जा जाव नो विणिघायमावज्जिज्जा केवली बूया—मणुन्नामणुन्नेहिं गंधेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा,—न सक्का गंधमग्घाउं, नासाविसयमागयं । रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ घाणओ जीवो मणुन्ना २ इं गंधाइं अग्घायइत्ति तच्चा भावणा ३ । अहावरा चउत्था भावणा जिब्भाओ जीवो मणुन्ना २ इं रसाइं अस्साएइ, मणुन्नामणुन्नेहिं रसेहिं नो सज्जिज्जा जाव नो विणिघायमावज्जिज्जा केवली बूया—निग्गंथे णं मणुन्नामणुन्नेहिं रसेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया जाव भंसिज्जा,—न सक्का रसमस्साउं, जीहाविसयमागयं । रागद्दोषा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥ १ ॥ जीहाओ जीवो मणुन्ना २ इं रसाइं अस्साएइत्ति चउत्था भावणा ४ । अहावरा पंचमा भावणा—फासुओ जीवो मणुन्ना २ इं फासाइं पडिसेवेएइ मणुन्नामणुन्नेहिं फासेहिं नो सज्जिज्जा जाव नो विणिघायमावज्जिज्जा, केवली बूया–निग्गंथे णं मणुन्नमणुन्नेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवली पन्नत्ताओ धम्माओ भंसिज्जा,—न सक्का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फासमवेएउं, फासविसयमागयं । रागदोसा० ॥ १ ॥ फासओ जीवो मणुन्ना २ इं फासाइं पडिसंवेएति पंचमा भावणा ५ । एतावता पंचमे महव्वते सम्मं अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ, पंचमं भंते ! महव्वयं । इच्चेएहिं पंचमहव्वएहिं पणवीसाहि य भावणाहिं संपन्ने अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गंसम्मं काएण फासित्ता पालित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहित्ता यावि भवइ ॥ (सू० १७९)

तेनी आ पांच भावना छे.

प्रथम भावना—मुनिए इर्यासमिति सहित थइ वर्त्तवुं पण रहित थइ न वर्त्तवुं; कारण के केवळज्ञानी कहे छे के जे इर्यासमिति रहित होय ते मुनि प्राणादिकनो घात विगेरे करतो रहे छे माटे निर्ग्रंथे इर्यासमितिथी वर्त्तवुं. ए पहेली भावना

बीजी भावना ए के निर्ग्रंथ मुनिए मन ओलखवुं एटले के जे मन पाप भरेलुं, सदोष (भूंडी) क्रिया सहित, कर्मबंधकारि, छेद करनार, भेद करनार, कलहकारक, प्रद्वेष भरेलुं, परितप्त तथा जीव–भूतनुं उपघातक होय–तेवा मनने नहि धारवुं, बीजी भावना.

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे वचन ओळखवुं एटले के जे वचन पाप भरेलुं सदोष (भूंडी) क्रियावाळुं. यावत् भूतो पघातक होय—तेवुं वचन नहि उच्चारवुं. एम वचन जाणीने पापरहित वचन उच्चारवुं ए त्रीजी भावना.

चोथी भावना ए के, निर्ग्रंथे भंडोपकरण लेतां राखतां समिति सहित थइ वर्त्तवुं पण रहितपणे न वर्त्तवुं. केमके केवली कहे छे के आदान भांड निक्षेपणा समिति–रहित निर्ग्रंथे प्राणादिकनो घात विगेरे करतो रहे छे. माटे निर्ग्रंथे ते समिति सहित थइ वर्त्तवुं. ए चोथी भावना छे.

For Private and Personal Use Only

पांचमी भावना ए के निर्ग्रंथे आहारपाणी जोइने वापरवां, वगर जोए न वापरवां. केमके केवली कहे छे के वगर जोए आहारपाणी वापरनार निर्ग्रंथ प्राणादिकनो घात विगेरे करे माटे निर्ग्रंथे आहारपाणी जोइने वापरवां. नहि के वगर जोइने ए पांचमी भावना.

ए भावनाओथी महाव्रत रुडीरीते कायाए स्पर्शित, पालित, पार पमाडेलुं, किर्त्तित, अवस्थित अने आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे.

ए पहेलुं प्राणातिपात विरमणरूप महाव्रत छे ते हुं स्वीकारुं छुं

बीजुं महाव्रत—" सघळुं मृषावादरुप वचनदोष त्याग करुं छुं एटले के, क्रोध, लोभ, भय, के हास्यथी यावज्जीव पर्यंत त्रिविधे त्रिविधे एटले मन वचन कायाए करी मृषाभाशण करुं नहि, करावुं नहि. अने करताने अनुमोदुं नहि; तथा ते मृषाभाषणने पडिक्कमु छु. निंदु छुं गर्हु छुं अने तेवा स्वभावने वोसरावुं छुं तेनी आ पांच भावना छे

त्यां पेली भावना आ, निर्ग्रंथे विमासीने बोलवुं. वगर विचारे न बोलवुं; केमके केवळी कहे छे के वगर विमासे बोलनार निर्ग्रंथ मृषा वचन बोली जाय माटे निर्ग्रंथे विमासीने बोलवुं, नहि के वगर विमासे ए पेली भावना. बीजी भावना ए के निग्रंथे क्रोधनुं स्वरुप जाणी क्रोधी न थवुं केमके केवली कहे छे के क्रोधी जीव मृषा बोली जाय माटे निर्ग्रंथे क्रोधनुं स्वरुप जाणी क्रोधी न थवुं ए बीजी भावना. त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे लोभनुं स्वरुप जाणी लोभी न थवुं; केमके केवली कहे छे के लोभी जीव मृषा बोली जाय माटे निर्ग्रंथे लोभी न थवुं ए त्रीजी भावना. चोथी भावना ए के निर्ग्रंथे भयनुं स्वरुप जाणी भयभीरु न थवुं; केमके केवली कहे छे के भीरु पुरुष मृषा बोली जाय माटे भीरु न थवुं ए चोथी भावना. पांचमी भावना ए के हास्यनुं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वरुप जाणी निर्ग्रंथे हास्य करनार न थवुं; केमके केवली कहे छे के हास्य करनार पुरुष मृषा बोली जाय माटे निर्ग्रंथे हास्य करनार न थवुं. केमके केवली कहे छे के हास्य करनार पुरुष मृषा बोली जाय माटे निर्ग्रंथे हास्य करनार न थवुं ए पांचमी भावना.

ए भावनाओथी महाव्रत रुडी रीते कायाए करी स्पर्शित अने यावत् आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे. ए बीजुं महाव्रत.

त्रीजुं महाव्रत—" सर्व अदत्तादान तजुं छुं, एटले के गाम नगर के अरण्यमां रहेलुं थोडुं के झाझुं, नानुं के महोटुं, सचित्त के अचित्त अणदीधेलुं [वस्तु] हुं यावज्जीव त्रिविधे त्रिविधे एटले मन-वचन-कायाए करी लउं नहि, लेवरावुं नहि, लेनारने अनुमत थउं नहि. तथा अदत्तादानने पडिक्कमुं छुं यावत् तवा स्वभावने वोसरावुं छुं."

तेनी आ पांच भावनाओ छे.—त्यां पहेली भावना आ के निर्ग्रंथे विचारीने परिमित अवग्रह मागवो, पण वगर विचारे अपरिमित अवग्रह न मागवो, केमके केवळी कहे छे के वगर विचारे अपरिमित अवग्रह मागनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ जाय. माटे विचारीने परिमित अवग्रह मागवो. ए पेहेलो भावना

बीजी भावना ए के निर्ग्रंथे रजा मेळवीने आहारपाणी वापरवा. पण रजा मेळव्या वगर न वापरवा; केमके केवळी कहे छे के वगर रजा मेळवे आहारपाणी वापरनार निर्ग्रंथ अदत लेनार थइ पडे माटे रजा मेळवीने आहारपाणी वापरवा ए बीजी भावना.

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे अवग्रह मागतां प्रमाण सहित(काळक्षेत्रनी हद बांधी) अवग्रह लेवो. केमके केवळी कहे छे के प्रमाण विना अवग्रह लेनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ जाय माटे प्रमाण सहित अवग्रह लेवो ए त्रीजी भावना.

चोथी भावना ए के निर्ग्रंथे अवग्रह मागतां वारंवार हद बांधनार थवुं. केमके केवळी कहे छे के वारंवार हद नहि बांधनार

पुरुष अदत्त लेनार थइ जाय माटे वारंवार हद बांधनार थवुं ए चोथी भावना.

पांचमी भावना ए के विचारीने पोताना साधर्मिक पासेथी पण परिमित अवग्रह मागवो; केमके केवळी कहे छे के तेम न करनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ जाय. माटे साधार्मिक पासेथी पण विचारीने परिमित अवग्रह मागवो. नहि के वगर विचारे अपरिमित. ए पांचमी भावना.

ए भावनाओथी महाव्रत रुडी रीते यावत् आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे. ए त्रीजुं महाव्रत.

चोथुं महाव्रत—"सर्व मैथुन तजुं छुं एटले के देव मनुष्य तथा तिर्यंच संबन्धी मैथुन हुं यावज्जीवत्रिविधे त्रिविधे करुं नहि." इत्यादि अदत्तादान माफक बोलवुं.

तेनी आ पांच भावनाओ छे.—त्यां पहेली भावना ए के निर्ग्रन्थे वारंवार स्त्रीनी कथा कथा करवी नहि; केमके केवळी कहे छे के वारंवार स्त्री कथा करतां शांतीनो भंग थवाथी निर्ग्रन्थ शांतिथी तथा केवळी भाषित धर्मथी भ्रष्ट थाय. माटे निर्ग्रन्थे वारंवार स्त्री कथाकारक न थवुं ए पहेली भावना.

बीजी भावना ए के निर्ग्रन्थे स्त्रीओनी मनोहर इन्द्रियो जोवी के चिंतववी नहि. केमके केवळी कहे छे, के तेम करतां शांति भंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय. माटे निर्ग्रन्थे स्त्रीओनी मनोहर इंद्रियो जोवी के तपासवी नहि. ए बीजी भावना.

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रन्थे स्त्रीओ साथे पूर्वे रमेली रमत—क्रीडाओ याद न करवी; केमके केवळी कहे छे के ते याद करतां शांति भंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय, माटे निर्ग्रन्थे स्त्रीओ साथे पूर्वे रमेली रमत गमतो संभारवी नहि. ए त्रीजी भावना.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोथी भावना ए के निर्ग्रन्थे अधिक खानपान न वापरवुं तथा झरता रसवाळुं खानपान न वापरवुं; केमके केवळी कहे छे के अधिक तथा झरता रसवाळुं खानपान भोगवतां शांति भंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय माटे अधिक आहार के विशेश घी दूधवाळो आहार निर्ग्रन्थे न करवो ए चोथी भावना.

पांचमी भावना ए के निर्ग्रंथे स्त्री, पशु, तथा नपुंसकथी वेरायेल शय्या तथा आसन न सेववां; केमके केवळी कहे छे के तेवां शय्या–आसन सेवतां शांतिभंग थवाथी निर्ग्रंथ धर्म भ्रष्ट थाय माटे निर्ग्रंथे स्त्री, पशु पंडकथी वेरायेल शय्या आसन न सेववां. ए पांचमी भावना. ए रीते महाव्रत रुडीरीते कायाए करी स्पर्शित तथा यावत् आराधित थाय छे ए चोथुं महाव्रत.

पांचमुं महाव्रत—"सर्व परिग्रह तजुं छुं. एटले के थोडुं के घणुं, नानुं के मोटुं, सचित के अचित, हुं पोते लउं नहि बीजाने लेवरावुं नहि, अने लेताने अनुमत थाउं नहीं यावत् तेवा स्वभावने वोसरावुं छुं.

तेनी आ पांच भावनाओ छे.—त्यां पेली भावना ए के कानथी जीवे भला भूंडा शब्द सांभळतां तेमां आसक्त, रक्त, गृद्ध, मोहित, तल्लीन के विवेकभ्रष्ट न थवुं. केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांति भंग थवाथी शांति तथा केवलिभाषित धर्मथी भ्रष्ट थवाय छे.

बीजी भावना ए के चक्षुथी जीवे भला भूंडां रूप देखतां तेमां आसक्त के यावत् विवेकभ्रष्ट न थवुं. केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांति भंग थवाथी यावत् धर्म भ्रष्ट थवाय छे,

त्रीजी भावना ए के नाकथी जीवे भला भूंडा गंध सूंघतां तेमां आसक्त के यावत् विवेकभ्रष्ट न थवुं. केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांतिभंग थवाथी यावत् धर्म भ्रष्ट थवाय छे.

For Private and Personal Use Only

चोथी भावना ए के जीभथी जीवे भल भूंडां रस चाखतां तेमां आसक्त के विवेकभ्रष्ट न थवुं; केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय छे.

पांचमी भावना ए के भला भूंडा स्पर्श अनुभवतां तेमां आसक्त के विवेकभ्रष्ट न थवुं; केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांति भंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय छे.

ए रीते महाव्रत रुडी रीते कायाथी स्पर्शित, पाळित पार पहोंचाडेल, कीर्त्तित, अवस्थित अने आज्ञाथी आराधित पण थाय ए पांचमुं महाव्रत. ए महाव्रतोनी पचीश भावनावडे संपन्न अणगार सूत्र, कल्प तथा मार्गने यथार्थ पणे रुडी रीते कायाथी स्पर्शी, पाळी, पार पहोंचाडी, कीर्त्तित करी आज्ञानो आराधक पण थाय छे.

विमुक्ति अध्ययन.

भावना नामनुं त्रीजुं कहीने विमुक्ति नामनुं चोथुं अध्ययन कहे छे, तेनो आ प्रमाणे संबंध छे, त्रीजामां महाव्रतनी भावनाओ बतावी छे, तेम अहीं पण अनित्य भावना कहे छे, आ संबंधे आवेला अध्ययनना चार अनुयोगद्वारो थाय छे, तेमां उपक्रममां रहेल अर्थाधिकार बताववा निर्युक्तिकार कहे छे.

अणिच्चे पव्वए रुप्पे भुयगस्स तदा (या) महासमुद्दे य । एए खलु अहिगारा अज्झयणंमी विमुत्तिए ॥ ३४२ ॥

आ अध्ययनमां अनित्यत्व, पर्वत, भुजंगपणुं अने समुद्रनो एम पांच अधिकार छे, ते यथायोग्य सूत्रमांज कहीशुं.

नामनिष्पन्न नि. मां विमुक्ति नाम छे, एना नामादि निक्षेपा उत्तराध्ययनसूत्रना विमुक्ति (विमोक्ष) अध्ययनमां बताव्या

प्रमाणे जाणवा, तेथी अहीं टुंकाणमां निर्युक्तिकार कहे छे.

नो चेव होइ मुक्खो, सा उ विमुत्ति पगयं तु भावेणं । देसविमुक्का साहू, सव्वविमुक्का भवे सिद्धा ॥ ३ ४३ ॥

जे मोक्ष तेज विमुक्ति छे, एना निक्षेपा मोक्ष माफक जाणवा, अहीं अधिकार भाव विमुक्तिनो छे, भाव विमुक्ति देश अने सर्व एम बे भेदे छे, देशथी सामान्य साधुथी मांडीने भवस्थ (शरीरधारी) केवली सुधी जाणवा, सर्व विमुक्ति तो आठ कर्मना क्षय थवाथी सिद्धो जाणवा, सूत्रानुगममां सूत्र उच्चारवुं, ते कहे छे—

अनित्य अधिकार.

अणिच्चमावासमुविंति जंतुणो, पलोयए सुच्चमिणं अणुत्तरं । विउसिरे विन्नु अगारबंधणं, अभीरु आरंभपरिग्गहं चए ॥१॥

जेमां जीव रहे ते आवास छे, एटले मनुष्य विगेरे भवमां मळेलुं शरीर छे. तेने प्राणीओ वारंवार मेळवे छे, के जे चार गतिमां जीव ज्यां ज्यां उत्पन्न थाय छे, त्यां अनित्य भाव पामे छे, (अर्थात् गतिमां एके निश्चळ स्थान नथी) आ प्रमाणे जिनेश्वरनुं वचन समजीने विद्वान पुरुष पुत्र स्त्री धन धान्य विगेरेवाळुं घरनुं बंधन छोडे, तथा साते प्रकारना भव छोडीने परिसह उपसर्गथी न डरतो सावद्यकृत्य तथा बाह्य अभ्यंतर परिग्रह छोडे

पर्वत अधिकार.

तहागयं भिक्खुमणंतसंजयं. अणेलिसं विन्नु चरंतमेसणं । तुदंति वायाहि अभिद्दवं नरा, सरेहिं संगामगयं व कुंजरं ॥ २ ॥

प्रथम श्लोकमां बतावेल अनित्य भावना भावेलो, घर बंधन छोडेलो, आरंभ परिग्रह रहित अनंत काय विगेर एकेंद्रियादि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनंता जीवोनी यातना करवाथी अनंत संयत बनेलो एवा उत्तम साधुने जिनेश्वरना वचनमां प्रवीण शुद्ध गोचरीने लेतो जाणीने तेवा उत्तम गुणोथी रहित माणसो पापथी हणायेल आत्मावाळाबनीने कथवां वचनोवडे पीडे छे. तथा तेओ माटीनां ढेफां विगेरेथी जेम लडाइमां गयेला हाथीने तीरो मारे तेम ते उत्तम साधुने पीडे छे.

तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए,ससद्दफासा फरुसा उईरिया । तितिक्खए नाणि अदुट्ठचेयसा, गिरिव्व वाएण न संपवेयए ॥ ३ ॥

पूर्वे कहेला अनार्य जेवा पुरुषोए पीडेलो एटले कडवां कठोर वचनोए आक्रोश करीने अति ठंड ताप विगेरेथी दुःखी करीने हीलना करी होय, तो पण मुनि तेने समता भावे सहे, कारण के ज्ञानी साधु समजे छे के में पूर्वे करेला अशुभ कृत्यो कर्म रुपे उदयमां आव्या छे, एम मानीने चित्तमां कुविकल्प न करतां पर्वत माफक धैर्य राखीने तेनाथी कंपे नहि, अर्थात् वायुथी पहाड न कंपे, तेम पोते दुःख देनारथी कजीओ न करे, तेम चारित्र मुकी न दे.

रुपानुं दृष्टांत.

उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे, अकंतदुक्खी तस थावरा दुही । अलूसए सव्वसहे महामुणी, तहा हिसे सुस्समणे समाहिए ॥ ४ ॥

परिसह उपसर्गोने सहतो अथवा इष्ट अने अनिष्ट विषयोनी उपेक्षा करतो माध्यस्थभाव धारीने गीतार्थ साधुओ साथे वसे, ते अशाता वेदनीय दुःखथी पीडाता त्रस थावर जीवोने पोते न पीडतो पृथ्वी माफक सर्व सहेनार तथा बरोबर रीते त्रण जगत्ना स्वभावने जाणनार महामुनि बनीने पोते विचरे, तेथी तेने सुश्रमणनी उपमा आपी छे,

विऊ नए धम्मपयं अणुत्तरं, विणीयतण्हस्स मुणिस्स झायओ । समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा, तवो य पन्ना य जसो य वड्ढइ ॥५॥

For Private and Personal Use Only

विद्वान ते काळने जाणनारो, नमेलो (विनयवान) प्रधान एवां क्षांति विगेरे धर्म पदोने जाणीने तृष्णाने दूर करेल. धर्मध्यान ध्यावतां अने बधी धर्म क्रियामां उपयोग राखतां तेनो तप तथा कीर्ति वधे छे.

दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा, महव्वया खेमपया पवेइया। महागुरु निस्सयरा उईरिया, तमेव तेउत्तिदिसं पगासगा ॥६॥

भावदिशा तु एकेंद्रियादि सर्व जीवोने विषे क्षेमपद ते रक्षणस्थान रुप व्रतोने अनंत ज्ञानी जीनेश्वरे बताव्यां छे, ते सामान्य माणसथी न पळाय माटे महागुरु छे, अने ते व्रतो पाळवाथी पूर्वनां चीकणां कर्मोने पण दूर करे छे, तथा अज्ञान अंधकार दूर करवाथी त्रिदिशामां प्रकाश पडे छे, ते जेम अग्नि उपर नीचे अने तीरछो प्रकाश करे छे, एम आ महाव्रतो पण कर्म अंधकारने दूर करवाथी प्रकाशक छे.

मूळ गुणोनी स्तुति करी उत्तर गुणो वर्णवे छे,

सिएहिं भिक्खुअसिए परिव्वए, असज्जमित्थीसु चइज्ज पूयणं। अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं, न मिज्जइ कामगुणेहिं पंडिए ॥७॥

सिता ते आठ कर्मे करीने अथवा राग द्वेष विगेरेना कारणरूप गृहपाशथी बंधायेला गृहस्थो अथवा अन्य दर्शनीओ छे, तेमना पाशामां साधु पोते रागद्वेषथी न फसाय, अने पोताना संयम अनुष्ठानमां रक्त रहे; तथा स्त्रीओ साथे प्रसंग न राखतां पूजन तजे, अर्थात् सत्कार मान पाननो अभिलाषी न थाय, तथा आलोक तथा परलोकमां सुख छे एम मानीने विषय सुख विगेरेनो पण अभिलाषी न थाय, आ प्रमाणे मनोज्ञ शब्दो विगेरेथी पण लोभाय नहि. तेज पंडित छे. एटले परिणामे कडवां फळ विषय अभिलाषमां छे एम जाणनारोज दीर्घदर्शी मुनि छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहा विमुक्कस्स परिन्नचारिणो, धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो । विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं, समीरियं रूप्पमलं व जोइणा ॥८॥

उपर कहेला बोध प्रमाणे मूल उत्तर गुण धारीने पाळवाथी विमुक्त थयेल तथा मळेला ज्ञानथी ज्ञपरिज्ञावडे सद्‌असद्‌नो विवेक समजीने चालनारो एटले प्रथम ज्ञानथी विचारीने पछी क्रिया करे छे, तथा संयममां धैर्य राखे, अशाता वेदनीय उदयमां आवतां दुःख आवे तो समताथी सहे, न खेद करे, तेमज तेनी शांति माटे वैद्य औषधनी पण घणी झंखना न करे, आवा भिक्षुनां पूर्वे करेलां कर्मो जेम रूपानो मेल अग्निथी दूर थाय छे, तेम तपश्चर्या विगेरेथी दूर थाय छे.

—: सापनी चामडीनुं दृष्टांत :—

से हु परिन्नासमयंमि वट्टई, निराससे उवरय मेहुणा चरे । भुयंगमे जुन्नतयं जहा चए, विमुच्चई से दुहसिज्ज माहणे ॥९॥

उपर कहेला मूळ उत्तर गुण धारक साधु पिंडएषणा अध्ययनमां बतावेला अर्थ प्रमाणे परिज्ञा समये वर्त्ते छे, बोले तेवुं पाळे छे, तथा आ लोक परलोकनी आशंसा (आकांक्षा) रहित तथा मैथुनथी दूर, एटले पांचे महाव्रत पाळनारो होय तेने जेम साप जुनी कांचळीने त्यागीने निर्मळ थाय, तेम पोते दुःख शय्या ते नरक विगेरेना भ्रमणथी मुकाय छे.

—: समुद्रनुं दृष्टांत. :—

जमाहु ओहं सलिलं अपारयं, महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं । अहे य णं परिजाणाहि पंडिए, से हु मुणी अंतकडेत्ति वुच्चई

तीर्थंकर अथवा गणधरो भुजाथी मोटो समुद्र तरवो दुर्लभ छे, ए दृष्टांते उपदेश आपे छे के जेम समुद्र पाणीथी भरेलो छे, तेम आश्रव द्वारो छे, मिथ्यात्व विगेरे पार विनानुं पाणी छे, तेथी संसार सागर तरवो दुष्कर छे एम ज्ञपरिज्ञा वडे जाणीने

For Private and Personal Use Only

प्रत्याख्यान परिज्ञावडे तुं परिहर अर्थात् सद्असद् ना विवेकने जाणनार हे पंडित मुनि ! तुं महाव्रतरुपनाववडे संसार-सागरने तरी जा, आ प्रमाणे जाणीने वर्ते छे तेज अलंकृत मोक्षमां जनार छे. ॥ १० ॥

जहा हि बद्धं इह माणवेहिं, जहा य तेसिं तु विमुक्ख आहिए । अहा तहा बन्धविमुक्ख जे विऊ, से हु मुणी अंतकडेत्ति वुच्चइ

मिथ्यात्व विगेरे जे प्रकारे प्रकृति स्थिति विगेरेथी आत्मा साथे जडपुद्गळने कर्मरुपे एकमेक करी बांध्या छे, तेने आ संसारमां मनुष्यो सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र वडे तोडे छे, तेज मोक्ष कह्यो छे, आ प्रमाणे बंध अने मोक्षनुं बरोबर स्वरूप जाणीने ते प्रमाणे वर्तनार कर्मनो अंतकृत मुनि कहेवाय छे. ॥ ११ ॥

इमंमि लोए परए य दोसुवि, न विज्जई बंधण जस्स किंचिवि । से हु निरालंबणमप्पइट्ठिए, कलंकलीभावपहं विमुच्चइ ।१२।

त्तिबेमि ॥ विमुत्ती सम्मत्ता ॥ २–४ ॥ आचारांगसूत्रं समाप्तं ॥ ग्रन्थाग्रं २५५४ ॥

आ लोक अने परलोकमां जेने जरापण बन्धन नथी, ते निरालंबन अर्थात् आ लोक परलोकनी आशंसा रहित क्यांय पण न बंधायेलो अशरीरी [सिद्ध] छे, तेज संसारमां गर्भादि रुप कलंक भावथी मुकाय छे. अर्थात् केवळीने के सिद्धोने फरी जन्म नथी—आ प्रमाणे प्रभु पासे जाणीने हुं कहुं छुं. हवे नयो कहे छे—

पूर्वे ज्ञान क्रियाना एकांत नयने अनुचित ठरावी सर्व नय संमत जैन शासन छे एम बताव्युं छे त्यांथी जाणवुं.

आचारटीकाकरणे यदाप्तं, पुण्यं मया मोक्षगमैकहेतुः । तेनापनीयाशुभराशिमुच्चैराचारमार्गप्रवणोऽस्तु लोकः ॥ १ ॥

आचारांग सूत्रना अंतमां नीचली त्रण गाथाओ छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयारस्स भगवओ चउत्थ–चूलाइ एस निज्जुत्ती । पंचमचूलनिसीहं तस्स य उवरिं भणीहामि ॥ ३४४ ॥
सत्तहिं छहिं चउचउहि य पंचहि अट्ठट्ठ चउहि नायव्वा । उद्देसएहिं पढमे सुयखंधे नव य अज्झयणा । ३४५ ॥
इक्कारस तिति दोदो दोदो उद्देसएहिं नायव्वा । सत्तय अट्टयनवमा इक्कसरा हुंति अज्झयणा ॥ ३४६ ॥
तथा महापरिज्ञा नामनुं अध्ययन विच्छेद जवाथी तेनी निर्युक्तिनुं विवरण टीकाकारे न करवाथी नीचे मुकी छे—

पाहण्णे महसद्दो परिमाणे चेव होइ नायव्वो । पाहण्णे परिमाणे य छव्विहो होइ निक्खेवो ॥ १ ॥
दव्वे खित्ते काले भावंमि य होती या पहाणा उ । तेसि महासद्दो खलु पाहण्णेणं तु निप्फन्नो ॥ २ ॥
दव्वे खेत्ते काले भावंमि य जे भवे महंता उ । तेसु महासद्दो खलु पमाणओ होंति निप्फन्नो ॥ ३ ॥
दव्वे खेत्ते काले भावपरिण्णा य होइ बोद्धव्वा । जाणणओववक्खणओ य दुविहा पुणेक्केक्का ॥ ४ ॥
भावपरिण्णा दुविहा मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य । मूलगुणे पंचविहदुहाविहा पुण उत्तरगुणेसु ॥ ५ ॥
पाहण्णेण उ पगयं परिण्णाएय तहय दुविहाए । परिण्णाणेसु पहाणे महापरिण्णा तओ होइ ॥ ६ ॥
देवीणं मणुईणं तिरिक्खजोणीगयाण इत्थीणं । तिविहेण परिचाओ महापरिण्णाए निज्जुत्ती ॥ ७ ॥

आचाराङ्गसूत्र समाप्त थयुं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्रीआचारांगसूत्रं समाप्तम्

For Private and Personal Use Only

P. 2708